CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding JKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

2·3

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अगस्त १९४२

श्री स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती पुस्तकालय,
मोरप
पो० खीरी, जि० शाहाबाद।

सम्पादक
श्रीगिरिधारीलाल शर्मा 'गर्ग'

प्रकाशक
पाटलिपुत्र-प्रकाशन
पटना सिटी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री स्वामी सहजानन्द सरस्वती पुस्तकालय, पक्वार

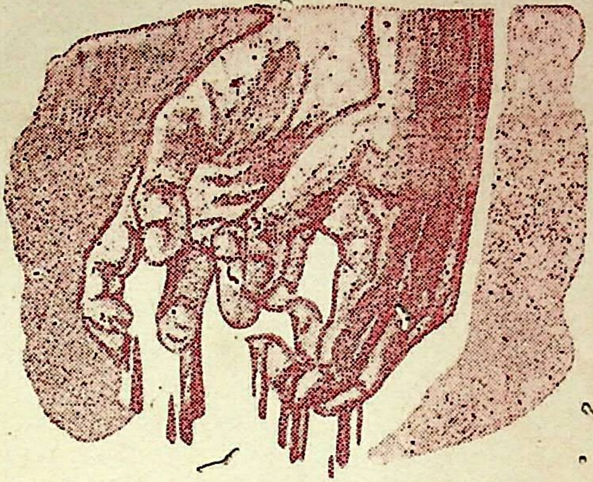

उन नर-पिशाचों को

जिन्होंने

निर्दोष मासूम बच्चों के ताजे लहू से अपने हाथों में मेहँदी रचाई,
हजारों सुहागिनों के सुहाग-सिन्दूर पोंछ कर अपने मस्तक पर
विजय का टीका लगाया, माँ-बहिनों की इज्जत लूट कर
अपनी इज्जत में चार चाँद लगाए, अनगिनत
माताओं की गोद सूनी कर अपने
घर में बधावे बजाए,
देश की भावी
पीढ़ी
जिन्हें
जयचन्द और
विभीषण के नाम से
सदा याद करती रहेगी
जी हाँ,
नौकरशाही के टुकड़ेखोरों, देश के उन्हीं गद्दारों को
उनके 'यश'! को फैलाने वाला, उनके काले कारनामों का यह इतिहास
घृणा-सहित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अगस्त-क्रान्ति-संबंधी सारा साहित्य यदि एक स्थान पर इकट्ठा किया जाय तो कई बड़े-बड़े पोथे तैयार हो जायँ। उपयुक्त समय पर यह होगा भी; तब तक 'पत्र'-पुष्पं' पाठकों की सेवा में यह एक छोटा-सा प्रयास। समय की कमी के कारण हम इसे जो रूप देना चाहते थे, न दे सके। स्थान-स्थान पर कुछ गलतियाँ रह गई हैं। पाठक सुधार लेंगे।

इस पुस्तक की सारी सामग्री कांग्रेस कमीटी तथा स्वतन्त्र संस्थाओं की रिपोर्टों, प्रतिष्ठित प्रत्यक्ष-दर्शियों के बयानों से इकट्ठी की गई है। दैनिक 'आज', 'संसार', भारत' 'हिन्दुस्तान स्टैन्डर्ड', 'पत्रिका' और साप्ताहिक 'अभ्युदय' 'योगी' आदि पत्रों से हमें बहुत सहायता मिली है। अतः हम उनके कृतज्ञ हैं।

—सम्पादक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"अंग्रेजो ! भारत छोड़ो !!"

[अ]गस्त सन् १९४२ ई० ! गुलामी की जंजीरों में [वि]वश भारत ने एक हुँकार भरी और जंजीरों [झकझोर डा]ला डाला। सन् १८५[७] के स्वाधीनता संग्राम [के बाद], ब्रिटिश साम्राज्यशाही के बंधनों से मातृभूमि [की मु]क्ति के लिए, उस ढंग का दूसरा प्रयास—, कहीं अधिक व्यापक और भयंकर। गुलामी [की ज]ंजीर को तोड़ फेंकने के प्रयत्न में हजारों वीर [सपू]तों ने हँसते-हँसते अपना शीश मातृभूमि के [चरणों] पर न्योछावर कर दिया ; अनगिनत माताओं [की] गोदें सूनी हो गयीं, हजारों भारतीय नारियों के [सुहाग का] सिन्दूर सदा के लिए धुल गया। शान्ति [और] व्यवस्था के ठेकेदारों ने गाँव के गाँव जला कर [राख] कर दिये, निर्ममतापूर्वक कोड़े बरसाकर मासूम [बच्चों] के शरीर क्षत-विक्षत कर डाले, ... [माता]ओं का सतीत्व अपहरण ... इस ... ऐसे-ऐसे घोर अमानुषिक अत्याचार किये, जो दुनिया के इतिहास में अपना सानी नहीं रखते। जब तक भारत के एक बच्चे की भी धमनियों में लहू दौड़ता रहेगा, वह इस अपमान और अत्याचार को नहीं भूल सकेगा।

सन् १९४२ की देश-व्यापी महान् क्रान्ति भारतीय स्वाधीनता - संग्राम के इतिहास का एक गौरव-पूर्ण समुज्ज्वल अध्याय है, जिससे भारतीयों को नयी चेतना, नयी स्फूर्ति और नयी प्रेरणा ... रहेगी। इस क्रान्ति के इतिहास के पी[छे] ... इतिहास है। इसे ठीक से समझने के लिए ... कुछ सालों की घटनाओं पर एक सरसरी ... पड़ेगी। ... सन् १९३... ... ...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उन्होंने देश को यह सलाह दी कि सरकार को कहा जाय कि अगर वह छः महीनों के भीतर हिन्दुस्तान की आजादी के सवाल को हल नहीं कर देती है तो सितंबर में हिन्दुस्तान अपनी आजादी की अन्तिम लड़ाई अवश्य छेड़ देगा। किन्तु, कई कारणों से कॉंग्रेस ने इस सुझाव को स्वीकार नहीं किया। लेकिन, सचमुच सितंबर १६३६ के आते न आते विश्व-व्यापी समर आरंभ होगया।

उस समय कॉंग्रेसी प्रान्तों में कॉंग्रेसी बहुमत और कॉंग्रेसी मन्त्रि-मण्डल था ; जनता के प्रतिनिधियों से विचार-विमर्ष किए बिना ही भारत के विदेशी ब्रिटिश-शासकों ने भारत को भी इस विश्व-व्यापी महायुद्ध में धर घसीटा। राष्ट्र ने इसे अपना अपमान समझा। कॉंग्रेस बराबर ब्रिटिश सत्ता से कह रही थी कि भारत को स्वतंत्र कर दो, फिर मित्र की हैसियत से ब्रिटेन का साथी बनकर भारत अपनी सन्तानों को आधुनिक युद्धास्त्रों के सामने राख बनने के लिये झोंक देगा। लेकिन, मदोन्मत्त ब्रिटिश अधिकारियों ने भारत की इस मांग को ठुकरा दिया। वाध्य होकर कॉंग्रेस को कौन्सिलों से अपने सदस्यों को वापस चले आने का आदेश देना पड़ा।

चालीस करोड़ भारतीयों की सद्भावना, सहयोग और सहानुभूति की तनिक भी परवाह न कर ब्रिटेन अपने युद्धोद्योग में जुट पड़ा। देश आर्डिनन्सों के शिकंजे में कस दिया गया।

भारत में उत्तेजना फै[illegible]ी, असन्तोष चोटी चूमने लग[illegible] उधर युद्ध की लप[illegible] दिन-दिन भीषण रूप से बढ़ती जारही थीं। हिट[illegible]र की फौज एक के बाद दूसरे [illegible]श को रौंद कर बढ़[illegible] जा रही थी। फ्रांस के [illegible]के बाद इग्लैंड में दिन गिने जारहे थे। अंगरेज [illegible]पशोपेश में थे। और [illegible]ब, जापान भी युद्ध में [illegible] देखते-देखते पूर्व में अंगरेजों का सुदृढ़ गढ़ [illegible] हाथ से निकल गया। इसके बाद तो ऐस[illegible] [illegible] लगा कि अंगरेजी हुकूमत हिन्दुस्तान [illegible]ों की मेहमान है। भारत[illegible] असहयोग [illegible] विरू[illegible]या होता

की नींद निस्सन्देह हराम होगई। वे [illegible] सोचने लगे कि किस तरह भारत के साधन[illegible] भारतीयों को मुट्ठी में किया जाय। भा[illegible] अप्रसन्न रखने के काम को खतरनाक [illegible] चर्चिल की सरकार ने सर स्ट्रैफोर्ड क्रिप्स को [illegible] स्तान की आजादी की एक योजना [illegible] भारत भेजा।

क्रिप्स-प्रस्ताव

सन् '४२ के मार्च के प्रारंभ में ही इस [illegible] की अफवाहें उड़ने लगीं कि बृटिश सरकार [illegible] सम्मति से यह निश्चय किया है कि भ[illegible] स्वशासन की दिशा में कुछ वास्तविक अ[illegible] दिया जाय, जो यहाँ के सभी दलों और [illegible] लोगों को समान रूप से स्वीकृत हो। इस[illegible] ११ मार्च को हाउस ऑफ कामंस में एक [illegible] वक्तव्य दिया गया, जिसमें कहा गया—

"जापानियों की प्रगति से भारत में एक [illegible] स्थिति उत्पन्न हो गई है। अतः ब्रिटेन का [illegible] है कि आक्रमणकारियों से देश की र[illegible] लिये भारतीय जीवन की सभी शक्तियों को ए[illegible] किया जाए। अगस्त १६४० ई० में भारत [illegible] जानेवाले हमारे उद्देश्य और नीति को घोषित [illegible] हुए एक वक्तव्य दिया गया था। संक्षेप में, [illegible] प्रकार का वादा था कि युद्ध के बाद, ज[illegible] शीघ्र हो सके, भारत को पूर्ण स्वतंत्रता तथा इ[illegible] एवं अन्य उपनिवेशों (Dominions) की [illegible] नता के आधार पर औ[illegible]निवेशिक स्वराज्य (D[illegible] nion Status) प्रा[illegible] होगा। यह औपनि[illegible] स्वराज्य एक ऐसे [illegible]विधान के अंतर्गत रहेग[illegible] भारतीयों की आपस[illegible] स्वीकृति द्वारा तैयार [illegible] भारतीय राष्ट्रीय जीवन के सभी प्रमुख उपादा[illegible] समान रूप से मान्य होगा।

ब्रिटेन का कर्त्तव्य

"लेकिन, यह अल्पमतों और अ[illegible] की रक्षा के लिए जो हमारा कर्त्तव्य है उसे[illegible] [illegible] के प्रति जो हमारा संधि का ब[illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रा करने की दशा में ही संभव हो सकेगा। ही भारत उप-महादेश के भाग्य के साथ जो पुराना संबंध है, उससे उत्पन्न कुछ छोटे सवालों को तय करने के बाद ही यह हो ।

लेकिन, साथ ही हमें भय है कि इस उपस्थित घड़ी में किसी जन-घोषणा से लाभ की हानि ही अधिक होगी। अत: हमें सर्व यह निश्चित कर लेना होगा कि हमारा सर्वमान्यता के एक युक्ति संगत और व्याव- मार्ग में सहायक होगा और इस प्रकार की रक्षा के लिये सभी विचारों और शक्तियों त्रीकरण में भी सहायक होगा।

यदि हम कोई ऐसी घोषणा करें, जो भारतीय तिक जगत के आवश्यक तत्वों द्वारा ठुकरा य और वह ऐसे समय में जब कि दुश्मन भारत वाजे पर आए हुए हैं, दृढ़ वैधानिक और ायिक झगड़ों को उत्तेजित करे तो, हम अपने का अहित ही करेंगे।

अत: हम ब्रिटिश युद्ध-मंत्रि-मंडल के एक सदस्य भारत भेजने का प्रस्ताव करते हैं, जो वहाँ कर अपने व्यक्तिगत विचार-विमर्श के द्वारा सब-सम्मत, उचित और अंतिम समाधान से को अवगत करा कर अपनी उद्देश्य-सिद्धि कर । लॉर्ड प्रीवी सील तथा पार्लामेंट के नेता सर क्रिप्स ने यह कार्य करना स्वीकार कर है।"

यह एक शुभ चिह्न था। ब्रिटिश-सरकार एक आगे बढ़ी। किंतु इसमें दो बातें ध्यान देने —एक तो, भारत को अपनी स्कीम पेश करने मौका देने के बजाय ब्रिटिश सरकार ने अपनी पेश की; दूसरा, वर्त्तमान में कुछ न करके अनिश्चित भविष्य के लिए वादा किया गया, अलावे, १९४० के वक्तव्य का हवाला तो नि- अनावश्यक चीज थी। फिर भी, भारत उत्सु- पूर्वक क्रिप्स-प्रस्ताव की प्रतीक्षा करता रहा। मार्च महीना समाप्त होते-न-होते लॉर्ड प्रीवी सील, सर स्टाफर्ड क्रिप्स, जिन्होंने कुछ ही दिन पहले मॉस्को में अँगरेजी राजदूत का कार्य किया था, विमान द्वारा भारत भेजे गए। भारत पहुँचते ही सर क्रिप्स कांग्रेस, हिंदू महासभा, मुस्लिम लीग, सिखों, आदि के नेताओं तथा देशी रजवाड़ों की परिषद् (Princes Chamber) के सदस्यों एवं कुछ दूसरे प्रमुख लोगों से मिले। सभों से मिलने के बाद २४ मार्च को ब्रिटिश युद्ध मंत्रिमंडल का भारत का नया विधान संबंधी निम्नलिखित प्रस्ताव घोषित किया गया :—

नव-भारतीय संघ

"भारत के भविष्य के संबंध में की गई प्रतिज्ञाओं की पूर्त्ति के लिए ब्रिटिश सरकार ने इस देश में (ब्रिटेन में) तथा भारत में प्रकट की गई व्यग्रतापर विचार किया है और यह निश्चय किया है कि भारत में यथाशीघ्र स्वशासन (Self-Government) की स्थापना के लिए प्रस्तावित अग्रगति को संक्षेप में और स्पष्ट रूप से जनता के सामने उपस्थित किया जाय। इसका उद्देश्य एक नव भारतीय संघ की स्थापना का है, जो एक उपनिवेश राज्य (Dominion) की स्थापना करेगा। यह उपनिवेश संयुक्त-राज्य (United Kingdom) और दूसरे उपनिवेशों के साथ—राजा के प्रति समान रूप से उत्तरदायी होते हुए—सम्मिलित रहेगा; किंतु इसको इनके साथ सभी प्रकार से बराबरी का अधिकार प्राप्त होगा। अपने गृह और बाह्य कार्यों में किसी भी प्रकार से किसी के भी अधीन नहीं होगा।

घोषणा

अत:, ब्रिटिश सरकार निम्नलिखित ... ज्यों करती है :—

(क) युद्ध समाप्त होते ही भारत के ... जाने के नया विधान तैयार करने के लिए ... स्वराज्य निर्वाचित समिति की स्थापना के ... लिखे ... होगा ...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निर्मातृ-समिति में देशी रजवाड़ों को सम्मिलित करने के लिए भी गुंजायश की जायगी।

(ग) नीचे लिखी शर्त्तों के अंदर ब्रिटिश सरकार शीघ्र ही उस विधान को स्वीकार करने तथा कार्यरूप में लागू करने का वादा करती है।

(i) अँगरेजी भारत के किसी भी प्रांत को, जो नए विधान को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हो, अपनी वर्त्तमान वैधानिक स्थिति को कायम रखने का अधिकार; यदि वह पीछे चल कर नए विधान को स्वीकार करना चाहे, तो इसके लिए भी गुंजायश।

ऐसे नहीं स्वीकार करनेवाले प्रान्तों के साथ, यदि वे चाहें, तो ब्रिटिश सरकार एक नये विधान के द्वारा समझौता करने को तैयार रहेगी, जिसके द्वारा उन्हें भी वही पूरा अधिकार मिलेगा, जो भारतीय संघ को प्राप्त होगा।

(ii) ब्रिटिश सरकार और विधान निर्मातृ समिति के बीच जो संधि की शर्त्तें तय होंगी, उनके अंतर्गत अँगरेजों के हाथ से भारतीयों के हाथ में दायित्व के पूर्णरूपेण हस्तरित किए जाने के संबंध में सभी आवश्यक बातें होंगी। ब्रिटिश सरकार द्वारा किए गए वादों के अनुसार जातिगत और धर्मगत अल्पमतवालों के स्वार्थ का इसमें विधन रहेगा; किन्तु भारतीय संघ के ऊपर, ब्रिटिश कॉमनवेल्थ के दूसरे राज्यों के साथ भविष्य में इसका क्या संबंध रहेगा, इसके लिए कोई दबाव नहीं डा[illegible]ा जायगा।

[illegible]ई देशी राज्य विधा[illegible] के अंतर्गत रहेगा या [illegible]हेगा इसका निश्चय हो[illegible] पर संधि की शर्त्तों पर विचार करना आवश्यक होजायगा— [illegible]ई परिस्थिति में ऐसा करना आवश्य[illegible]

[illegible] तक कि प्रमुख जातियों के भारतीय [illegible] निश्चय नहीं करेंगे, [illegible]

विधान-निर्मातृ समिति

प्रांतीय निर्वाचनों का परीक्षा-फल ज्ञात[illegible] ही, जो युद्ध समाप्त होने पर आवश्यक[illegible] प्रांतीय व्यवस्थापिका, परिषदों के पूरे चैंबर एक निर्वाचन क्षेत्र के रूप में विधान[illegible] समिति का चुनाव करेंगे, जिससे आनुपातिक [illegible]निधित्व रहेगा। इस समिति के सदस्यों की [illegible] निर्वाचकों की संख्या का दसवाँ भाग रहेगा।

देशी राज्यों का प्रतिनिधित्व

देशी राज्यों को अपनी जनसंख्या [illegible] अनुपात में प्रतिनिधि भेजने को आमंत्रित[illegible] जायगा, जिस अनुपात में अँगरेजी भारत [illegible]निधि चुने जाएँगे और उनका भी वही [illegible] होगा, जो अँगरेजी भारत के प्रतिनिधियों का[illegible]

(ङ) इस नाजुक समय में, जो आज [illegible] के सामने उपस्थित है और तबतक, जबतक [illegible] विधान तैयार नहीं हो जाता, ब्रिटिश सरकार [illegible] की रक्षा का उत्तरदायित्व अपने विश्व-युद्ध [illegible] के एक भाग के तौर पर आवश्यक रूप में [illegible] ऊपर लेगी। इसके द्वारा रक्षा के साधन[illegible] नियंत्रण और हुक्म उसीका रहेगा; किंतु भ[illegible] सैनिक, नैतिक एवं दूसरे (material) साध[illegible] पूरी तौर पर संघठन करना, जुटाना, भारतीय [illegible] के सहयोग के साथ भारत सरकार का [illegible] होगा। ब्रिटिश सरकार चाहती है कि भारतीय [illegible] के प्रमुख समुदायों एवं दलों के नेतागण [illegible] देश, कामनवेल्थ और संयुक्त-राष्ट्र की परामर्श [illegible] समिति में अविलंब और प्रबल योगदान दे[illegible] इसके लिये उन्हें आमंत्रित भी करती है। इस[illegible] वे भारत की भावी स्वतंत्रता के लिए एक आ[illegible] एवं महत्वपूर्ण कार्य में अपनी कार्यकारी [illegible] रचनात्मक सहायता देने योग्य होसकेंगे।"

पत्रों और संवाद-समितियों के हाथ में [illegible] घोषणा का मसविदा देते हुए सर स्टैफोर्ड ने [illegible] [illegible] भारत के भविष्य के संबंध में तथा [illegible] [illegible] की रक्षा की प्रत्यक्ष समस्[illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में ब्रिटिश सरकार की एक घोषणा के रूप ।" आप ने कहा कि यह एक प्रस्ताव है, ब्रिटेन के युद्ध-मंत्रिमंडल ने भारतीय नेताओं सम्मुख उपस्थित किया है । इसका अभी प्रकाशन ब्रिटिश सरकार की किसी घोषणा प्रकाशन नहीं होगा, बल्कि ब्रिटिश सरकार इसे ा के रूप में उपस्थित करने को तभी तैयार जब भारतीय जनता के विभिन्न दलों और ायों को यह आम तौर पर मान्य होगा ।

त्र-प्रतिनिधियों द्वारा प्रश्न किये जाने पर ने इसे स्पष्ट कर दिया कि नव भारतीय संघ को द मिलनेवाला है, किसी भी प्राँत को भारतीय से अलग रहने का अधिकार उसमें सम्मिलित भारतीय संघ कॉमनवेल्थ के दूसरे सदस्यों, में ग्रेट-ब्रिटेन भी है, के साथ अपना भविष्य ाता तय करने के मामले में बिलकुल स्वतंत्र । भारतीय संघ को इस बात में भी स्वतंत्रता कि वह कॉमनवेल्थ के ही भीतर रहे या बाहर । आपने युद्ध बंद होने (Cessation cstilities) की व्याख्या करते हुए कहा कि की समाप्ति' (termination of war) इसमें अंतर है । युद्ध बंद होने और युद्ध का सा समाप्ति के बीचएक-दो वर्ष का समय लग है । विचार असल में यह है कि युद्ध बंद ही जहाँ तक जल्द संभव हो सके, विधान-निर्मातृ ते बना दी जाय । हमलोग भारत पर कुछ नहीं हैं—यहाँ तक कि समय की कोई अवधि हीं ।

रकार की स्थापना के संबंध में आपने कहा— विस्तार के साथ तय करना गवर्नर जनरल का । हमने न तो उस दायित्वको उनके हाथसे लेने कोशिश ही की है और न हमें लेना ही चाहिए । ऊपर कोई भी प्रतिबंध लागू नहीं, किंतु यदि हें तो शासन-परिषद का भारतीयकरण कर हैं । असल उद्देश्य यह है कि वर्तमान समय रतीयों को सरकार का अधिक-से-अधिक व सौंपा जाय, जो वर्तमान विधान, जिसे युद्ध व ाप्ति तक बदला नहीं जा सकता, के भीतर इस

होगा । लेकिन, कुछ थोड़े से परिवतन किए जा सकते हैं, खासकर शासन-परिषद् के सदस्यों के चुनाव में—विशेषकर यह शर्त्त रहेगी कि कम से कम दस वर्षों के अनुभववाले तीन युद्ध-विभाग के व्यक्ति रखे जाएँगे । इस घोषणा का असली मकसद, जहाँ तक संभव हो सके, सुरक्षा-विभाग के लिए जगहें रिजर्व करते हुए भारतीय नेताओं के हाथ में शक्ति सौंप देना है । सर स्टैफड ने आगे कहा – वर्त्तमान विधान के अंतर्गत जहाँतक गवर्नरल-जेनरलका अधिकार है, वे भारतीय नेताओं के साथ मिलकर अपना शासन-संघटित करने का यत्न करेंगे । सरस्टैफर्ड ने इसे भी स्पष्ट कर दिया कि इस 'प्रस्ताव को पूरे-का-पूरा स्वीकार करना होगा, अथवा पूरे-का-पूरा अस्वीकार करना होगा ।' किसी एक भाग को स्वीकार और दूसरे को अस्वीकार नहीं किया जा सकता है । यदि सभी दलवाले मिलकर भी चाहेंगे, तब भी भारत का सुरक्षा विभाग भारतीयों के हाथ में नहीं दिया जा सकता है । यह भारत की सुरक्षा के हित में बहुत बुरी बात होगी । यह भारत के बचाव (defence) को असंगठित कर देगा, जिसका फल भारत के हक में प्राणघातक सिद्ध होगा ।

प्रस्ताव थोड़े में यों है—

युद्ध की अवधि में

(१) यहाँ तक कि यदि सभी दलवाले चाहें तो भी भारत का (defence) पूर्णतः सरकार के हाथों में ही रहेगा ।

(२) वायसराय की शासन-परिषद् का पूर्ण भारतीयकरण, होगा (defence) के विभाग को छोड़कर, जो कमांडर-इन-चीफ के हाथों में, ज्यों-का-त्यों रहेगा ।

युद्ध के बाद

(१) भारत को—प्रांतों के अलग होने जाने के अधिकार के साथ—पूर्ण औपनिवेशिक स्वराज्य (Dominion Status) प्राप्त होगा ।

(२) ब्रिटिश ... [illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(३) एक या अधिक भारतीय संघ बनाने की गुंजायश।

(४) प्रस्तावित भारतीय संघ या संघों के लिए एक विधान-निर्मातृ समिति की स्थापना।

जिस किसी नेता से इस प्रस्ताव पर सर क्रिप्सने बातें की, सभों ने इसे दोषयुक्त बतलाया। खासकर के युद्ध के दिनों में तो भारत को कुछ दिया ही नहीं गया था, युद्ध के बाद के लिए वादा अवश्य किया गया था, जिसका कोई मतलब नहीं।

महात्मा गाँधी ने इसे एक दिवालिए बैंक के नाम बाद में भजनेवाला चेक (Post-dated Cheque of a liquidated Bank) बतलाया; हिंदू महा-सभा के नेताओं ने कहा कि यह तो यूरोप के बाल-कन प्रदेशों की भाँति भारत को टुकड़ों में बाँटने का प्रस्ताव है; उदार-दली नेताओं ने भी आत्म-निर्णय के प्रश्न की ओट में देश के इस प्रस्तावित विभाजन का विरोध किया।

राष्ट्रपति आजाद और सर क्रिप्स, राष्ट्रप्रति आजाद, पं० नेहरू और सर क्रिप्स, भारत के तत्का-लीन प्रधान सेनाध्यक्ष जेनरल बैवेल, मौलाना साहब और पं० नेहरू तथा प्रेसिडेंट रूजवेल्ट के व्यक्तिगत राजदूत श्री फिलिप्स तथा पंडित नेहरू में कई बार कई दिनों तक बातें हुईं जिसमें कांग्रेस के नेताओं ने कई प्रस्ताव की गुत्थियों के सुलझाव की स्पष्टी-करण की माँग की। एक बार यह भी अफ़वाह फैली कि समझौता होगया; पर तुरत ही खबर मिली कि बात वैसी नहीं है। अंत में यह भी सुनने में आया कि सर क्रिप्सने मौलाना आजाद से कई बातें बतलाई थीं, वे उनसे भी वे बाद में मुकर गए। इस प्रकार क्रिप्स-मिशन असफल रहा और वे १३ अप्रील को बैरंग विलायत वापस चले गए।

क्रांति का सूत्रपात

क्रिप्स-प्रस्ताव ठुकरा दिया गया। उन्हीं दिनों गाँधीजी ने देखा कि विदेशी सैनिकों का भारत में निरंतर आगमन जारी है—अंगरेज, अमेरिकन, ... सैसिक धा... प्रवाह-

अँगरेजों की नीयत से और भी सशंकित हो आप आसन्न जापानी आक्रमण, भारत की उसकी स्वतंत्रता और भारत के प्रति अँ सरकार के रुख पर अधिक गंभीरता पूर्वक लगे। आपके मस्तिष्क में बहुत-सी बातें उठीं, आपने धीरे-धीरे एक-एक कर 'हरिजन' में करना शुरू किया। २६ अप्रील के 'हरिज आपने एक लेख लिखा, जिसका शीर्षक था— में विदेशी सेना'। लेख का आशय था—

भारत में विदेशी कैदी पहले से मौजूद हैं निरंतर अमेरिका और संभवतः चीन से भी का आगमन जारी हो गया है। इससे अशांत हो उठा है। क्या भारतीयों की अ सेना शिक्षित कर तैयार नहीं की जा सकती दुनिया के और देश के सैनिकों जैसा वे वीर नहीं हो सकते ? फिर विदेशी क्यों ? हम जा अमेरिका की सहायता का क्या अर्थ है। इसका अर्थ ब्रिटेन के साथ-साथ अमेरिका का नहीं, तो प्रभाव अवश्य होगा। भारत की तथाकथित सुरक्षा में भारतीय स्वतंत्रता की झलक नहीं दिखलाई देती है। यह तो अँ साम्राज्य की सुरक्षा की विशुद्ध तैयारी है। अँगरेज भारत को अपने भाग्य के छोड़ दें, जैसा कि उन्होंने सिंगापुर को छोड़ था, तो अहिंसात्मक भारत को कुछ खोना पड़ेगा। शायद, जापानी भारत को योंही छो यदि भारत के सभी प्रमुख दल अपने मतभेद डालें, जैसा कि संभवतः वे करेंगे ही, तो भारत को शांति के मार्ग में सहायता कर सकने की में होगा और इस प्रकार अंततः विश्व-शांति के में निर्णयक भाग ले सकेगा। लेकिन जब अँ मजबूर होकर भारत छोड़ेंगे, उस हालत में सब असंभव नहीं। ब्रिटेन के लिए यह कितनी का कार्य होगा, यदि वह पश्चिम की लड़ा अपना तन-मन-धन लगावे और पूर्व को बलपर खड़ा होने को छोड़ दे। इसकी कोई नहीं कि इस युद्ध में वह अपने विशाल सा ...र सकेगा।....जो कुछ भी हों, भारत

...Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्रिटेन की भी वास्तविक रक्षा अँगरेजों के भारत से समय रहते शांतिपूर्ण तरीके से चले जाने से ही होगी।"

इस प्रश्न का कि अँगरेज शासकों को भारत छोड़ देने के लिए कह कर क्या आप जापानियों को भारत पर आक्रमण के लिए आमंत्रित नहीं कर रहे हैं, महात्मा गाँधी ने ३ मई को नीचे लिखा जवाब दिया—

"मैं ऐसा नहीं कर रहा हूँ। मेरा यह निश्चित मत है कि अँगरेजों की उपस्थिति ही जापानियों को आक्रमण के लिए आमंत्रित कर रही है। यदि अँगरेज भारत छोड़कर चले जायँ, तो जापानियों को अपने कार्य-क्रम पर फिर से विचार करना पड़ेगा।"

'प्रत्येक अँगरेज के प्रति' शीर्षक लेख में आपने १७ मई के 'हरिजन' में लिखाः है—

'मैं सभी अँगरेजों से कहूँगा कि वे मेरी उस अपील का, कि अँगरेज तत्क्षण सभी एशियाई तथा अफ्रीकी देशों से, कम-से-कम भारत से हट जायँ, समर्थन करें। यह विश्व की सुरक्षा तथा नाजीवाद और फासिस्टवाद के सर्वनाश के लिए आवश्यक है। जापान भी इसी के अंतर्गत आ जाता है। यह भी उन्हीं दोनों की नकल है। मेरी अपील की स्वीकृति से सभी सशस्त्र शक्तियों के सैनिक कार्य-क्रम बिगड़ जायँगे, यहाँ तक कि ग्रेट ब्रिटेन के सैनिक परामर्शदाता भी हत-बुद्धि हो जाएँगे। यदि मेरी अपील मान ली गई तो मेरा विश्वास है कि भारत और अफ्रिका में अँगरेजों के स्वार्थ के मारे जाने से उनका जो नुकसान होगा वह आज जो ब्रिटेन को युद्ध के ऊपर खर्च करना पड़ रहा है, उसकी तुलना में कम ही होगा। और यदि नैतिकताको भी इसमें जोड़ दें, तो ब्रिटेन, और अंततः विश्व को लाभ ही लाभ है।"

गाँधीजी ने आगे लिखा, बहुत आदमी मेरे इस विचार से शायद सहमत न हों। मैंने किसी से राय भी नहीं ली है। मेरा तो सिर्फ अँगरेजों की कार्रवाई से ही वास्ता है। जब अमेरिका से गुलामी की प्रथा उठी, तो बहुत-से गुलामों ने भी इस[illegible] किया था; फिर भी बावजूद उनके विरोधों के यह प्रथा उठी ही। इस गुलामी प्रथा को उठाने के लिए अमेरिका के उत्तरी और दक्षिणी राज्यों में भयानक मार-काट मची और खून बहाया गया। यद्यपि हब्शियों की हालत पहले से अब अच्छी है; पर वे उच्च समाज से एकदम बहिष्कृत हैं। मैं इससे भी ऊँची चीज चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि बिना खून-खराबी के ही कुछ तय होजाय; भले ही हम में से कुछ विरोध करते रहें, रोते-चिल्लाते रहें।"

३१ मई को गाँधीजी ने 'मित्रतापूर्ण सम्मति'—शीर्षक एक लेख में 'हरिजन' में लिखा—"आप कहते हैं, आप सभी प्रकार के खतरे अपने ऊपर लेना चाहते हैं। प्रत्येक वीर पुरुष यही करेगा। इस बीच क्या आपका यह कर्तव्य नहीं कि जहाँ तक संभव हो सके खतरे को कम करने के लिये हम मार्ग प्रशस्त करें। हमें जनता को कायरता का परित्याग करने के लायक बनाना होगा तथा उसे इस प्रकार तैयार करना होगा कि वे महसूस करें कि हमारे लिए अपने पाँव पर खड़ा होना संभव है। जैसा कि बहुत लोग सोचते हैं, उन्हें जापानी सहायता के संबंध में, अथवा वह सहायता यदि ली ही गई तो जापानी अधिपत्य के संबंध में नहीं सोचना चाहिये।............अँगरेजी शक्ति से मुक्ति पाने के लिए जनता को किसी भी हालत में जापानियों का सहारा नहीं लेना चाहिये। यह तो रोग से भी बढ़कर भयानक दवा है। किंतु जैसा कि मैंने पहले कहा है, इस संघर्ष में सबसे बड़े रोग से अपनी रक्षा के लिए हमें सब प्रकार का खतरा लेना है।.........मैं समझता हूँ कि इस दव के लिए हमें भारी कीमत देनी होगी; पर मुक्ति के लिए यदि किसी भी प्रकार की कीमत चुकानी पड़ी, तो वह बहुत बड़ी नहीं होगी।"

एक पत्र-संवाददाता के प्रश्न का, कि अपनी वर्तमान नीति के कारण, जो उनके लेखों से प्रकट होती है, गाँधीजी अपनी उस घोषणा पर कि मैं चीन का मित्र हूँ, जोपा[illegible] रहे हैं?—जवाब [illegible] में [illegible] सलाह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देते समय चीन को मैं भूला नहीं हूँ। बल्कि, चूँकि चीन मेरे दिमाग में है, मैं महसूस करता हूँ कि भारत के लिए चीन को मदद करने में एक ही कारगर रास्ता है, और वह यह कि ब्रिटेन को भारत को स्वतंत्र करने के लिए मजबूर किया जाय और स्वतंत्र भारत को युद्धोद्योग में पूरी मदद देने दिया जाय।"

'हरिजन' के उसी अंक में आपने यह भी लिखा कि मैं जापान का समर्थक नहीं और न जापान परस्त ही हूँ। उसी अंक में एक दूसरे लेख—'कोई गुप्त बात नहीं'—में गाँधीजी ने उस प्रश्न का उत्तर दिया—खबर है कि आप कोई बहुत बड़ी कार्रवाई करने की तैयारी कर रहे हैं, वह आपकी कौन-सी कार्रवाई होगी? गाँधीजी ने लिखा—"गुप्त बातों में कभी भी मेरा विश्वास नहीं रहा और न अभी ही है। सचमुच ही मेरे मस्तिष्क में बहुत-से विचार विचर रहे हैं; किंतु अभी तत्काल मैं उन्हें सिर्फ विचरने ही दे रहा हूँ। जहाँ तक मेरे लिये संभव हो सकेगा, मैं सर्व प्रथम भारत और विश्व के जनमत को अपने विचारों से अवगत करा दूँगा। और, जब मैं संतोषप्रद रूप से यह कार्य पूरा कर चुकूँगा, तो मुझे शायद कुछ करना पड़े। यदि काँग्रेस मेरे साथ रहेगी, जनता मेरे साथ रहेगी तो वह कुछ एक बहुत बड़ी चीज होगा। लेकिन, मैं जो कुछ भी करूँगा, करने के पहले अँगरेजों को इससे वाकिफ कर दिया जायगा। मुझे मौलाना साहब से बात करनी है। पं० नेहरू के साथ भी बात-चीत अभी पूरी नहीं हो पाई है। स्वभावतया मैं सारी काँग्रेस को अपने साथ ले जाना चाहूँगा और यदि मुझसे हो सका तो मैं सारे भारतवर्ष को अपने साथ ले जाना चाहूँगा।......अत: बिना पूर्ण रूप से विचार-विनिमय किये मैं कुछ भी नहीं करूँगा।"

इस समय तक प्राय: सारा बर्मा जापानियों के हाथ में चला गया था। उस समय जो भारतीय बर्मा में, खासकर रंगून में थे, उन्हें उन स्थानों को खाली कर देने के लिए सैनिक आदेश मिला। परन्तु, जिस रूप में उन्हें खाली करने को बाध्य होना पड़ा, उसकी आलोचना करते हुए २८ अप्रील को अखिल भारतीय काँ[illegible] [illegible] जिसपर एक [illegible] सैनिकों के तथाकथित बलात्कार की बात कही गयी थी, सरकार के द्वारा प्रतिबंध लगा दिया गया।

६ जुलाई को वर्धा में काँग्रेस कार्य समिति की बैठक हुई। गाँधीजी ने वहाँ कार्य समिति के सदस्यों के सामने अपने विचार तथा प्रस्ताव रखे। गाँधीजी के प्रस्ताव को कुछ मामूली हेर-फेर के साथ कार्य समिति ने स्वीकार कर लिया। १४ जुलाई को कार्य समिति ने १७०० शब्दों का एक प्रस्ताव प्रकाशित किया, जिसमें अँगरेजों से शीघ्र भारत छोड़ देने की अपील की गई थी :—

"दिन-प्रति दिन घटनेवाली घटनाएँ और भारत की जनता जिस परिस्थिति में होकर गुजर रही है उसका अनुभव, काँग्रेस-जनों की उस राय को मजबूत बनाता है कि भारत में अँगरेजी राज्य का शीघ्र अंत हो जाना चाहिये—सिर्फ इसलिये नहीं कि विदेशी राज्य अच्छा-से-अच्छा होने पर भी अनिष्टकारी है और शासित लोगों के कष्टों को और बढ़ाता ही जाता है, बल्कि इसलिये कि गुलाम भारत अपनी रक्षा के लिये तथा युद्ध की गति को फेरने के लिये, जो आज मानवता का नाश कर रहा है, कोई भी कारगर उपाय नहीं कर सकता है। इस प्रकार यह भारत के हक में ही आवश्यक नहीं है, बल्कि विश्व की सुरक्षा के लिये तथा नाजीवाद, फासिस्टवाद, सैनिकवाद तथा साम्राज्यवाद के और भी दूसरे-दूसरे रूपों तथा एक राष्ट्र के दूसरे राष्ट्र पर आक्रमण के नाश के लिये भी आवश्यक है।

विश्व-युद्ध आरंभ होने के समय से ही काँग्रेस दृढ़तापूर्वक बाधा नहीं पहुँचाने की नीति को बरतती आ रही है। अपने सत्याग्रह को निष्फल बना देने का खतरा उठाकर भी काँग्रेस ने जान-बूझ कर इसे सांकेतिक (Symbolic) रूप दिया, इस आशा से कि बाधा नहीं पहुँचाने की इस नीति को तार्किक चरमसीमा तक बरते जाने के बाद शासकों द्वारा इसकी कीमत आँकी जायगी और वास्तविक शक्ति जनप्रिय प्रतिनिधियों के हाथ सौंपी जायगी; ताकि सारी दुनिया की मानव स्वतंत्रता, जो आज कुचल दिये जाने के खतरे में है, प्राप्त करने की [illegible] राष्ट्र अपना पूरा सहयोग दे सके।

R.j.Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काँग्रेस ने यह भी आशा की थी कि अस्वीकृति (Negativity) रूप में ऐसा कुछ भी नहीं किया जायगा, जिससे भारत के पाँवों में जो ब्रिटेन की गुलामी की जंजीर पड़ी हुई है, वह और भी कस दी जाय।

किंतु ये उम्मीदें आखिर चूर-चूर होगयीं। असफल क्रिप्स-प्रस्ताव ने साफ तौर पर यह बतला दिया कि भारत के प्रति अँगरेजी सरकार के रुख में कुछ भी फर्क नहीं आया है और भारत पर से अङ्गरेजी गुलामी का पंजा किसी भी प्रकार हटने को नहीं है। सर स्टाफर्ड क्रिप्स के साथ समझौते की बातचीत में काँग्रेस के प्रतिनिधियों ने अपनी पूरी कोशिश लगाई। राष्ट्रीय माँग के अनुकूल कम-से-कम अधिकार भी माँगे; पर सब व्यर्थ। इस विफलता से ब्रिटिश-विरोधी दुर्भावना में बहुत ही तीव्र और व्यापक प्रगति हुई है और जापानियों की विजय पर लोगों ने संतोष लाभ किया है। कार्य-समिति इसे भयानक आशंका की दृष्टि से देखती है; क्योंकि यदि इस मनोवृत्ति को रोका नहीं गया तो यह एक दिन आक्रमण की निष्क्रिय स्वीकृति के रूप में परिणत हो जायगी। समिति की राय है कि आक्रमण को अवश्य ही रोका जाय; क्योंकि यदि इसके सामने सर झुकाया गया, तो उसका अर्थ होगा भारतीय जनता का अधःपतन और उनकी गुलामी की अविच्छिन्नता। काँग्रेस मलाया, सिंगापुर और बर्मा के अनुभवों का परित्याग करना चाहती है और चाहती है कि जापानियों अथवा किसी भी विदेशी-शक्ति द्वारा भारत-विरोधी अथवा भारत पर किये गये आक्रमण का सफल मुकाबला किया जाय।

काँग्रेस ब्रिटिश-विरोधी वर्त्तमान विद्वेष की भावना को शुभ-कामना में बदल देगी और विश्व की जनता तथा राष्ट्रों की आजादी के लिये जो संयुक्त प्रयत्न हो रहा है उसमें स्वेच्छापूर्वक भाग ले सकेगी और इसके लिये संसार को जो जोखिम उठाना पड़े, कष्ट सहन करना पड़े, त्याग करना पड़े उसमें भी साथ देगी। लेकिन यह तभी संभव हो सकेगा, जब भारत को स्वतंत्र कर दिया जाय।

काँग्रेस के प्रतिनिधियों ने पूरी कोशिश की है कि साँप्रदायिक समस्या का कोई समाधान निकल आवे। पर विदेशी-शक्ति की उपस्थिति ने इसे असंभव कर दिया है। इस विदेशी शक्ति का बराबर का यही प्रयत्न रहा है—मत भेद कायम रखो। और राज्य करो—divide and rule। विदेशी शासन और हस्तक्षेप के विदा हो जाने के बाद ही वर्त्तमान अवास्तविकता वास्तविकता को स्थान देगी और सभी दलों की भारतीय जनता भारतीय समस्याओं का सामना करेगी और आपस में मिल-जुल कर [illegible] किए गए आधार पर इन्हें हल करेगी। वर्त्तमान राजनीतिक दल, जिनकी स्थापना मुख्यतः अँगरेजी शक्ति का ध्यान आकर्षित करने के लिए तथा उस पर प्रभाव डालने के लिए ही हुई है, तब शायद नष्ट हो जाएँ। सर्वप्रथम भारत के इतिहास में लोग इस बात को स्वीकार करेंगे कि देशी राजा, जागीरदार, जमींदार और दूसरे संपत्तिशाली, लखपती-करोड़पति खेतों और फैक्टरियों में काम करनेवाले किसानों और मजदूरों से ही अपनी संपत्ति हासिल करते हैं और उन्हीं के हाथ में शक्ति और अधिकार जाना चाहिये। भारत से अंगरेजी शासन के विदा हो जाने के पश्चात देश के जवाबदेह व्यक्ति और महिलाएँ मिलकर प्राँतीय सरकारों का संघटन करेंगी। ये लोग भारतीय जनता के सभी प्रमुख विभागों के प्रतिनिधि होंगे। अंततः येही लोग एक स्कीम ढूँढ़ निकालेंगे जिसके द्वारा एक विधान, निर्मात्री परिषद् की स्थापना होगी और जो भारत सरकार के, भारतीय जनता के सभी विभागों द्वारा स्वीकृत होने योग्य विधान तैयार करेगी। स्वतंत्र भारत के प्रतिनिधि तथा ग्रेट ब्रिटेन के प्रतिनिधि तब एक जगह बैठेंगे और भविष्य में मित्र के रूप में आक्रमण का मुकाबला करने के आवश्यक समान्त कार्य में इन दोनों देशों के संबंध और सहयोग का निपटारा होगा। काँग्रेस की [illegible] की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संयुक्त सदिच्छा तथा उसकी शक्ति के बल पर इस योग्य हो जाय कि वह कारगर रूपमें आक्रमण का मुकाबला कर सके। अंगरेजी शासन के भारत से विदा हो जाने का प्रस्ताव करते हुए काँग्रेस बिलकुल नहीं चाहती कि ग्रेट ब्रिटेन को अथवा दूसरी मित्र शक्तियों को युद्धोद्योग में किसी भी प्रकार तंग किया जाय, अथवा भारत-विरोधी आक्रमण को प्रोत्साहित किया जाय, अथवा जापान या धुरी राष्ट्रों की मदद से कोई दूसरी शक्ति चीन पर और भी दबाव डाल सके। ऐसा कोई भी कार्य करना काँग्रेस नहीं चाहती। मित्र शक्तियों के रक्षा-साधन को भी किसी प्रकार हानि पहुँचाने का काँग्रेस का विचार नहीं। अतः काँग्रेस को इस बात में कोई उज्र नहीं कि भारत में मित्र शक्तियों के सशस्त्र सैनिक यदि वे रहना चाहें, जापानी और दूसरे प्रकार के आक्रमण को रोकने तथा चीन की रक्षा और मदद के लिए, रहें।

भारत से अँगरेजी शक्ति के विदा हो जाने के प्रस्ताव का यह अर्थ कदापि नहीं कि वे अँगरेज भी यहाँ से बोरिया-बधना लेकर विदा हो जायँ जो इसे अपना घर बना कर रहना चाहते हैं और यहाँ के नागरिक बनकर दूसरों के साथ बराबरी के भाव से रहना चाहते हैं। यदि इस प्रकार की विदाई शुभेच्छा के साथ होती है, तो इसका परिणाम होगा—एक सुदृढ़ अस्थायी सरकार तथा संयुक्त राष्ट्र की स्थापना, जो आक्रमण का मुकाबला कर सकेगी और चीन की मदद भी।

काँग्रेस इस बात को महसूस करती है कि इस मार्ग में खतरे हैं। पर किसी भी देश को स्वतंत्रता प्राप्त करने में ऐसे खतरे उठाने ही पड़ते हैं; खास कर वर्तमान ऐसे नाजुक समय में, इनसे भी बड़े खतरे और भय से अपने देश की और इससे भी आगे बढ़ कर सारे विश्व की स्वतंत्रता की रक्षा के लिए यह आवश्यक है।

अतः कांग्रेस जहाँ एक ओर राष्ट्रीय उद्देश्य की प्राप्ति के लिए अधीर है [illegible] री ओर वह जहाँ कोई कारवाई [illegible] भव हो सका वह ऐसा कोई भी काम नहीं करना चाहती जिससे कि संयुक्त राष्ट्र परेशान होजाय। कांग्रेस ब्रिटिश सरकार के सामने सिर्फ अपना यह तर्क उपस्थित करना चाहती है कि वह इसके (कांग्रेस) उचित और न्याय्य वर्तमान प्रस्ताव को मान ले, जो सिर्फ भारत के हक में ही ठीक नहीं बल्कि ब्रिटेन के हक में भी और संयुक्त राष्ट्र, जो विश्व-स्वतंत्रता की अपनी नीति की घोषणा करते हैं, उसके हक में भी ठीक है।

यदि काँग्रेस की यह अपील व्यर्थ गई, तो कांग्रेस १६२० से आज तक की अपनी सारी अहिंसात्मक शक्ति का उपयोग करने के लिए अनिच्छापूर्वक मजबूर होगी, अपने राजनीतिक अधिकार और स्वतंत्रता की रक्षा के लिए। और ऐसा व्यापक संघर्ष निश्चय ही महात्मा गांधी के नेतृत्व में आरम्भ होगा। चूँकि यह प्रश्न भारत की जनता साथ ही संयुक्त राष्ट्र की जनता के लिए भी बहुत ही महत्वपूर्ण है, अतः कार्य समिति इसे अंतिम निर्णय के लिए अ० भा० काँग्रेस कमिटी के समक्ष उपस्थित करती है और इस प्रश्न पर विचार करने के लिए अ० भा० काँग्रेस कमिटी की एक बैठक ७ अगस्त, १६४२ को बंबई में होगी।"

कार्य समिति ने अपनी इसी बैठक में बर्मा खाली करने तथा सरकारी प्रतिबंध आदि के संबंध में भी एक प्रस्ताव स्वीकृत किया।

जुलाई में कार्य समिति की बैठक समाप्त हो जाने के बाद ही गांधीजी से देशी और विदेशी बहुत से पत्र प्रतिनिधि मिले और उनसे तरह-तरह के प्रश्न किए, जिनमें एक प्रश्न था—क्या आप जेल जाना चाहेंगे? जवाब मिला—मैं जेल जाना नहीं चाहूँगा। इस संघर्ष में जेल जाने का कोई प्रश्न नहीं उठता। अब तक निस्संदेह हमलोग जेल जाते रहे हैं, किंतु इस बार ऐसी कोई भी बात नहीं होगी। मेरा विचार संघर्ष को संभवतः जितना छोटा बन सके, बनाना है। दूसरा प्रश्न हुआ—यदि आप जेल भेज दिए गए तो क्या अनशन आरम्भ कर दीजियेगा? जवाब मिला—जैसा कि मैंने कहा है, इस बार जेल जाने [illegible] मेरा विचार नहीं; किंतु यदि कहीं मुझे जेल में

R.i.Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ही ठूँस दिया गया तो म क्या करूँगा, यह कहना कठिन है ; किंतु मैं अनशन भी कर सकता हूँ जैसा कि मैंने अबतक किया है ; यद्यपि मैं इस चीज को टालने का भरसक यत्न करूँगा।

एक दूसरा प्रश्न हुआ—यदि अँगरेज भारत से विदा नहीं हुए, तो उपद्रव तो अवश्य ही होगा ? गाँधीजी ने कहा—आप देखते हैं, विद्वेष तो पहले से फैला हुआ है, वह और भी बढ़ जायगा। यदि आंदोलन का सूत्रपात हुआ और अँगरेजों ने अनुकूल उत्तर दिया, तो शीघ्र ही विद्वेष शुभेच्छा में परिणत हो जासकता है। किंतु यदि उन्होंने कोई अनुकूल उत्तर नहीं भी दिया, तो जब जनता विदेशी गुलामी से अपने को मुक्त करने को लिये यत्न करेगी, विद्वेष अपना दूसरा रास्ता नहीं खोज निकालेगा, बल्कि आज जो भी विद्वेष विद्यमान है, वह धीरे-धीरे अच्छे रास्ते पर ही आ जायेगा। इसपर एक ने कहा—पर पिछले ही सप्ताह श्री एमरी ने हमें कहा है कि भारत के लिये हमलोग कुछ भी नहीं करने जा रहे हैं ? गाँधीजी ने जवाब दिया—मुझे डर है, हमें यही जवाब संभवतः अधिक कड़े शब्दों में सुनने का दुर्भाग्य प्राप्त होगा। किंतु यह जनता के एक दल के दृढ़ विचार को नहीं बदल सकता ; क्योंकि उसने अपने रास्ते पर चलने का दृढ़ निश्चय कर लिया है।

एक और प्रश्न हुआ—क्या आप इसे अच्छा नहीं समझते कि जब तक हम जर्मनों और जापानियों से निपटारा न करलें, आ अपने आंदोलन को स्थगित रखें ?

गाँधीजी ने जवाब दिया—नहीं, मैं जानता हूँ कि आप मुझे छोड़कर जर्मनों से निपटारा नहीं कर सकते। यदि हम स्वतंत्र होजायँ, तो हम आपको अपने तरीके से शत-प्रति-शत सहयोग देंगे। आश्चर्य की बात है कि इतनी आसान बात लोग नहीं समझ पा रहे हैं। ब्रिटेन को स्वतंत्र भारत से आज कोई सहायता नहीं मिल रही है। कल ज्यों ही हम स्वतंत्र हो जाएँगे ब्रिटेन को एक नैतिक शक्ति प्राप्त हो जायगी। साथ ही, स्वतंत्रराष्ट्र के रूप में एक शक्ति श भी। इससे इंगलैंड की शक्ति प्रथम श्रेणी की हो जायगी, यह स्वयंसिद्ध बात है।

यद्यपि कार्य समिति के प्रथम और महत्वपूर्ण प्रस्ताव में स्पष्ट शब्दों में अँगरेजों की भारत से विदाई की माँग का उद्देश्य युद्धोद्योग को बढ़ाना और आक्रमण-विरोधी भावना को मजबूत बनाना ही बतलाया गया था ; फिर भी अँगरेज और अमेरिकन पत्रों ने इस प्रस्ताव की कड़ी टीका-टिप्पणी की। जब कि प्रस्ताव का उद्देश्य धुरी-राष्ट्रों की पराजय और चीन की मदद था, फिर भी हठवादी लोग इसे धुरी-राष्ट्रों को प्रोत्साहन और चीन के प्रतिकूल बतलाने लगे। इसका मुख्य कारण यह था कि साम्राज्यवादी ब्रिटेन अपने साम्राज्यवादी विचारों का परित्याग करनेवाला नहीं और अमेरिका, यद्यपि ऊपर-ऊपर प्रजातंत्र का समर्थक मालूम पड़ रहा है, भीतर-ही-भीतर यह साम्राज्यवादी भावनाओं से भरा हुआ है। और उसे मालूम है कि ब्रिटेन के सफलतापूर्वक विश्व पर शासन करने से ही हमारा बाजार आबाद रहेगा, हम सफलता-पूर्वक इस दुनिया में रह सकेंगे।

उसी समय असोशियेटेड प्रेस के एक प्रश्न 'क्या इस मामले में काँग्रेस बात-चीत करने को तैयार है?' —का जवाब देते हुए गाँधीजी ने कहा—अँगरेजों के भारत छोड़ देने के प्रस्ताव पर अब अधिक बात-चीत की गुंजायश नहीं रह गई है। वे या तो स्वतंत्रता को स्वीकार करें, या नहीं करें। यदि इसकी स्वीकृति हो जायगी, तो बहुत-सी बातें हो सकती हैं। क्योंकि अपने सिर्फ इसी एक कार्य से अँगरेज सारा नकशा ही बदल देंगे और लोग, जो अब तक बार-बार अपनी आशा खोते रहे हैं, उसका पुनः संचार हो जायगा। अतः जब कभी भी भारत की आजादी स्वीकार कर ली जाती है, अँगरेजों के लिए भारत के और विश्व के भी इतिहास में वह एक महत्वपूर्ण दिन होगा। और जैसा कि मैंने कहा है, इससे विश्व का भाग्य ही पलट जायगा।

इसी प्रश्न का उत्तर देते हुए राष्ट्रपति मौलाना अबुल कलाम आजाद ने २० जुलाई को कहा—इस प्रस्ता[illegible] सम्बन्ध [illegible]दी से है। [illegible] हाँ है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यह एक मौलिक प्रश्न है, जिसे संयुक्त-राष्ट्र को स्वीकार करना ही चाहिये। और यदि इस प्रश्न का सम्बन्ध युद्ध के दिनों की व्यवस्था से है, तब तो मैं कहूँगा कि प्रस्ताव में इसके ऊपर विचार करने के लिए काफी गुंजायश रखी गयी है।

'यदि संयुक्त राष्ट्र ने भारत की स्वतंत्रता की गारंटी करते हुए एक घोषणा कर दी, तो क्या आप इतने से ही संतुष्ट हो जायँगे ?—इस प्रश्न का उत्तर देते हुए मौलाना साहब ने कहा कि यह तो घोषणा की रूप-रेखा पर निर्भर करता है। फिर भी मैं आश्वासन दे सकता हूँ कि जिस प्रकार की घोषणा की बात आप कहते हैं, उस पर कोई कारण नहीं कि काँग्रेस पूरा-पूरा विचार नहीं करे।

ब्रिटिश युनाइटेड प्रेस ने भी गाँधीजी से इस संबंध में कुछ प्रश्न पूछे।

प्रश्न—जब कि जापानी सीमा पर पहुँचे हुए हैं क्या गाँधीजी चाहेंगे कि अँगरेज भारत छोड़ दें ?

उत्तर—जिस किसी ने मेरे लेखों को पढ़ा है, उसे ऐसा प्रश्न ही नहीं करना चाहिये; क्योंकि उसमें स्पष्ट कर दिया है कि युद्ध काल में मित्र-सैनिक पूरी शक्ति के साथ भारत में अपना कार्य करेंगे।

प्रश्न—जापान के भारत पर अधिकार कर लेने के बाद क्या आप उससे असहयोग करेंगे ?

उत्तर—जब तक मित्र सैनिक भारत भूमि पर युद्ध करते रहेंगे, जापानियों के अधिकार की कोई चर्चा ही फिजूल है। यदि जापानियों ने मित्र-राष्ट्रों को हरा ही दिया और भारत पर अधिकार जमाने में वे सफल ही होगये, तो मैं पूर्ण असहयोग की सलाह दूँगा।

अन्तिम प्रश्न का जवाब देते हुए गाँधीजी ने कहा कि जापानियों के सामने आत्म-समर्पण करने की अपेक्षा मैं गोली से उड़ा दिया जाना अधिक पसंद करूँगा। देशरत्न डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ने उसी प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा—यदि हमें मरना ही है, तो हम इज्जत के साथ मरेंगे; पर हम अपने शासकों की अदल[illegible] [illegible]ने।

[illegible]

आदि सभी काँग्रेस नेताओं ने भी कुछ ऐसी ही बातें कहीं। इसी बीच गांधीजी ने कायदे-आजम जिना को भी संबोधित करते हुए 'हरिजन' में एक लेख-लिखा, जिसका उन्होंने अपना वही 'पाकिस्तान' वाला प्रश्न उठाकर जवाब दिया।

'न्यूज क्रानिकल' के एक प्रतिनिधि के प्रश्न का —क्या आप अपने आंदोलन के संबंध में बतला सकते हैं कि वह किस प्रकार का होगा ?—जवाब देते हुए आपने कहा—आंदोलन के कार्य-क्रम में जन-आंदोलन के अँतर्गत की विशुद्ध अहिंसात्मक सारी बातें आ जाती हैं। किंतु मेरा यह इरादा नहीं कि एक साथ ही बहुत-सारे कार्य-क्रमको इसमें निहित कर लिया जाय।······मैं विशेष विवरण के साथ अभी कुछ भी नहीं कह सकता। इसका कारण यह नहीं कि मैं कुछ छिपाना चाहता हूँ; बल्कि यह है कि अभी तक कोई खास कार्यक्रम तय ही नहीं किया गया है। आपने यह भी कहा कि यह हमारा सबसे बड़ा आंदोलन होगा और अ० भा० काँग्रेस कमिटी ने यदि प्रस्ताव को मान लिया, तो उसके बाद आंदोलन शुरू करने में एक या दो सप्ताह से अधिक की देरी नहीं लगेगी। आपने इसे एकदम स्पष्ट कर दिया कि जैसा कि पहले भी आंदोलन छेड़ने से पहले मैंने समय दिया है, इस बार भी समय दूँगा; यदि वायसराय ने मुझे दिल्ली बुलाया, तो वहाँ भी जाऊँगा; यदि हजारों-लाखों काँग्रेस जनों के साथ मैं जेल भी चला गया, तब भी आंदोलन रुकेगा नहीं और दिनों दिन जोर ही पकड़ता चला जायगा।

'शिकागो डेली न्यूज' के प्रतिनिधि के प्रश्न का जवाब देते हुए आपने कहा कि कार्य समिति' के प्रस्ताव से हो सकता है कि अमेरिका हमारा दुश्मन होजाय, किंतु आजतक के किसी भी आंदोलन में मैंने यह नहीं सोचा कि दुनिया भर के लोग हमारे साथ सहानुभूति प्रदर्शित करेंगे। आपने यह भी कहा कि यदि कुछ अमेरिकनों को ऐसा विश्वास है कि इस परिस्थिति में आंदोलन चलाना उचित नहीं, तो उनका यह विश्वास उनकी अज्ञानता के कारण है। यदि आज कोई व्यक्ति मुझे विश्वास दिलादे कि युद्ध [illegible] में भारत की आजादी की घोषणा से ब्रिटेन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के युद्धोद्योग में किसी प्रकार की बाधा पहुँचेगी, तो मैं इस संबंध में विवाद करना चाहूँगा। और यदि मुझे तक द्वारा विश्वास दिला दिया गया, तो मैं आंदोलन को रोक भी दूँगा।

इसके बाद एक-एक कर गांधीजी के कई लेख 'हरिजन' में निकले—देशी राजाओं को संबोधित करते हुए, ब्रिटिश गवर्नमेंट को संबोधित करते हुए, अमेरिका को संबोधित करते हुए।

इसके बाद अखिल भारतीय काँग्रेस कमिटी का वह महत्त्वपूर्ण अधिवेशन हुआ। ४ अगस्त को कार्यसमिति की बैठक हुई। ५ को उसने अ० भा० काँग्रेस कमिटी के लिये एक प्रस्ताव प्रकाशित किया। प्रस्ताव में कहा गया कि यह ७ अगस्त को अ० भा० काँग्रेस कमिटी के समक्ष रखा जायगा। उसका आशय यह था·········अ० भा० काँग्रेस कमिटी पूरी दृढ़ता के साथ भारत से अँगरेजों की विदाई की माँग करती है। भारत की स्वाधीनता की घोषणा के साथ ही एक अस्थायी सरकार की स्थापना होगी और स्वतंत्र भारत संयुक्त-राष्ट्र का मित्र बन कर रहेगा और स्वाधीनता के उसके संघर्ष में उसके साथ सभी मुसीबतों में हाथ बँटायेगा। अस्थायी सरकार की स्थापना देश के प्रमुख दलों के सहयोग से ही होगी। इस प्रकार यह भारत के विभिन्न दलों की एक प्रतिनिधि सरकार होगी, जिसका प्राथमिक कार्य होगा, भारत की रक्षा और किसी भी आक्रमण का विरोध। साथ ही, इसका कर्त्तव्य होगा खेतों और फैक्टरियों में काम करनेवालों की भलाई तथा उनकी उन्नति के कार्य करना, जिनके हाथों में ही सारी ताकत चली जायगी।

अस्थायी सरकार विधान-निर्मातृ परिषद् के लिए एक स्कीम तैयार करेगी, जो भारत सरकार के लिए सभी दलों को मान्य एक विधान तैयारी करेगी।

भारत की स्वतंत्रता सारे एशियाई देशों की विदेशी गुलामी से मुक्ति की दिशा में एक संकेत होगा।

स्वतंत्र भारत प्रसन्नता पूवक एक विश्व-संघ का सदस्य होना चाहेगा, जो स्वतंत्रता का होगा, और अंतराष्ट्रीय समस्याओं के समाधान में दूसरे देशों के साथ बराबरी के आधार पर सहयोग करेगा। ऐसे संघ का कोई भी राष्ट्र सदस्य हो सकता है, जो इसकी मौलिक नीति को मानेगा।

अ० भा० काँग्रेसी कमिटी इस अंतिम क्षण में भी, विश्व-स्वतंत्रता के हक में, ब्रिटेन और संयुक्त राष्ट्र के प्रति की गई अपनी अपील को दुहराती है। लेकिन, कमिटी इसे महसूस करती है कि राष्ट्र को साम्राज्यवाद के विरुद्ध अपने जोर लगाने के प्रयत्न में कोई उसे रोक नहीं सकता। अत: कमिटी भारत के स्वतंत्रता के जन्म सिद्ध अधिकार को स्वीकृत करती है और प्रस्ताव करती है कि अहिंसा के आधार पर जन-व्यापक आंदोलन छेड़ा जाय, ताकि विगत २२ वर्षों के शांतिपूर्ण संघर्ष से देश ने जो अहिंसात्मक शक्ति प्राप्त की है, उसका सदुपयोग होसके। यह संघर्ष निश्चय ही गांधीजी के नेतृत्व में होगा और कमिटी उनसे प्रार्थना करती है कि वे नेतृत्व अपने हाथों में लें और राष्ट्र को इस कार्य में मार्ग दिखावें।

कमिटि भारतवासियों से अपील करती है कि इसके चलते उनपर जो भी खतरे और मुसीबतें आवें, उनका सामना वे धैर्य और अध्यवसाय के साथ करें और गाँधीजी के नेतृत्व में दृढ़ता पूर्व आगे बढ़े तथा अनुशासित सैनिक की नाई उनके आदेशों का अनुसरण करें। उन्हें याद रखना होगा कि इस आंदोलन का आधार अहिंसा है। इस आन्दोलन के बीच ऐसा भी समय आ सकता है कि जब आदेश जारी करना संभव नहीं हो, चाहे जनता तक आदेश पहुँच ही नहीं सके और न कोई काँग्रेस कमिटी ही कार्य कर रही हो। जब ऐसा होजायगा, तो प्रत्येक स्त्री और पुरुष, जो इस आंदोलन में भाग लेरहे होंगे, जो साधारण आदेश जारी किए जा चुके रहेंगे, उनके अंतर्गत कार्य करने को स्वतंत्र होंगे। प्रत्येक भारतवासी, जो स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए युद्ध कर रहे हैं, वे अपना नेता आप होंगे। अ० भा० काँग्रेस कमीटी इस बात को भी स्पष्ट कर देना [illegible] कि [illegible] अपने हाथ में [illegible] विजय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होने पर शक्ति सभी भारतीयों के हाथ में रहेगी।

कमिटी अहिंसा के आधार पर गाँधीजी के नेतृत्व में व्यापक जन-आंदोलन चलाने की स्वीकृति देती है और उनसे प्रार्थना करती है कि वे राष्ट्र का नेतृत्व करें तथा उसका मार्ग-प्रदर्शन करें।"

८ अगस्त को १० बजे रात में अ० भा० काँग्रेस कमिटी का अधिवेशन समाप्त हुआ। अधिवेशन को संबोधित करते हुआ महात्मा गाँधी ने कहा—

यह संघर्ष आरंभ करने के पूर्व मैं वायसराय महोदय से मिलने की भरसक चेष्टा करूँगा।

महात्मा गाँधी ने सभी भारतीयों को संबोधित कर कहा कि वे यह महसूस करें कि हम स्वतंत्र हैं। आपने पत्रों को संबोधित कर कहा कि वे अपना प्रकाशन स्थगित कर दें और जब भारत स्वतंत्र हो जायेगा, वे अपना प्रकाशन फिर आरंभ करेंगे। सरकारी कर्मचारियों को संबोधित करते हुए आपने कहा कि उन्हें शीघ्र इस्तीफा देने की कोई जरूरत नहीं; हाँ, वे सरकार को लिखदें कि हम कांग्रेस के साथ हैं। विद्यार्थियों और शिक्षकों को संबोधित करते हुए आपने उनसे तैयार रहने को कहा। अधिवेशन समाप्त होने के पूर्व मौलाना आजाद ने घोषणा की कि मैं प्रेसिडेंट रूजवेल्ट, चीन तथा लंदन स्थित रूसी राजदूत को प्रस्ताव की नकल भेजने जारहा हूँ। आपने कहा कि यदि हमारे सभी प्रयत्न असफल हो जाएँगे, तभी भारतीय कोई दृढ़ कदम आगे बढ़ाएँगे। चाहे कुछ भी होजाय, अपने संघर्ष में डूब जाएँ या तैर कर किनारे लगें, विजयी होवें या पराजित, उन्हें अपना संघर्ष चलाना ही है।

महात्मा गाँधी ने आसन्न आंदोलन को 'खुला विद्रोह' बताया और मौलाना साहब ने काँग्रेस के प्रस्ताव को एक चेतावनी बतलाई। इसके बाद अधिवेशन समाप्त हो गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

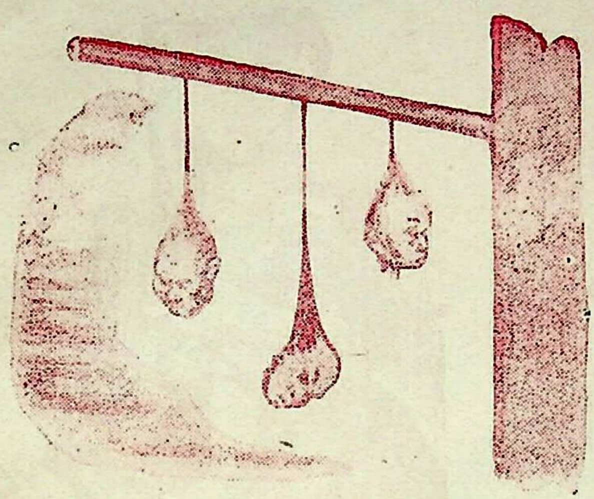

"नगर के रास्तों पर जापानियों ने चीनियों के सिर काट कर लटका दिये।

जापानियों और नाजियों की नृशंसता और बर्बरता के संबंध में हिन्दुस्तान में बहुत डट कर प्रचार किया गया।

लेकिन,

सभ्यता का दम भरनेवालों ने हिन्दुस्तान में स्वयं क्या नहीं किया!

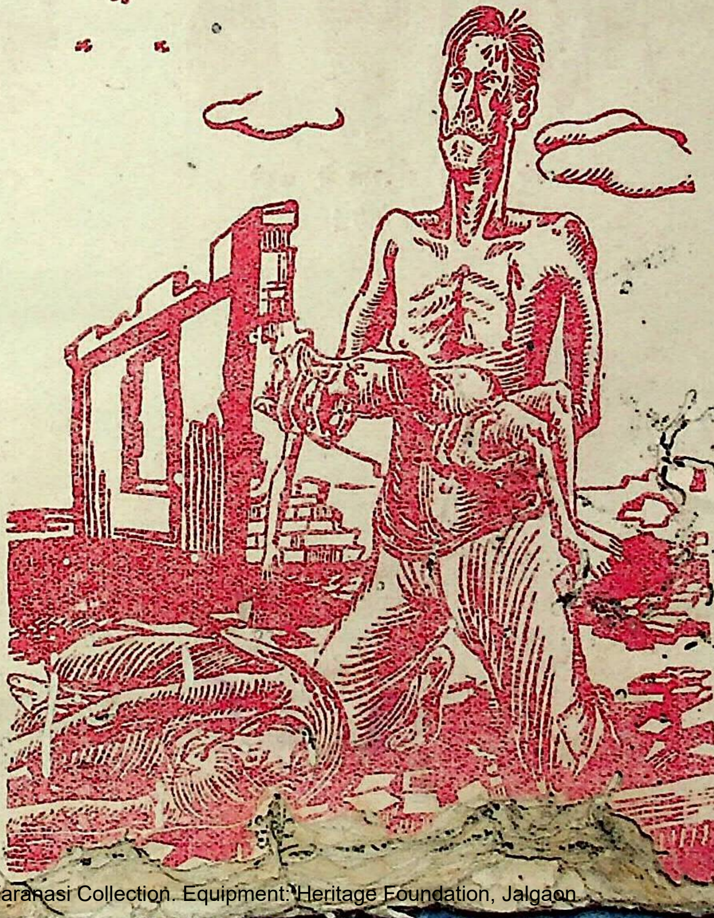

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

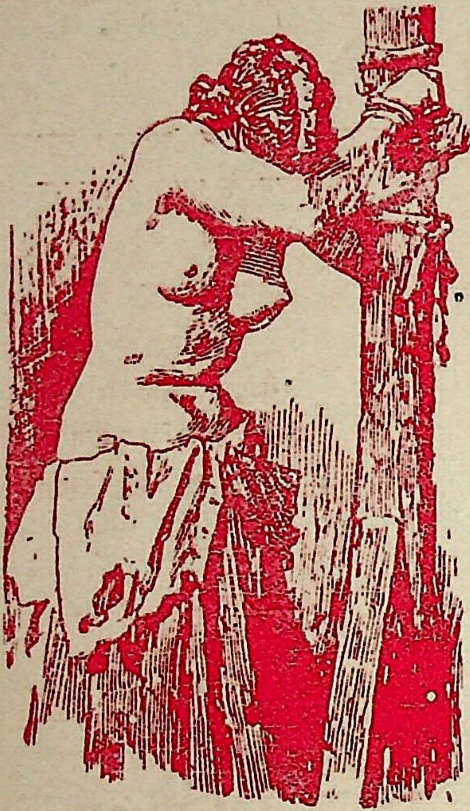

सतीत्व की रक्षा के अपराध में खम्भे से बाँधी हुई एक देवी !

बच्चा और मातृत्व दोनों ही खतरे में

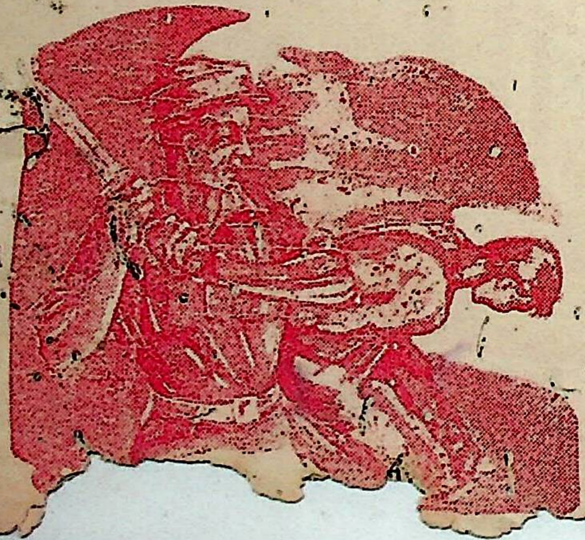

"अच्छा होता यदि हम इन चित्रों को प्रकाशित न करते—
आपको
इन्हें देखकर कष्ट ही पहुँचेगा—
मानवता के नाम पर आप
मल्ला उठेंगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

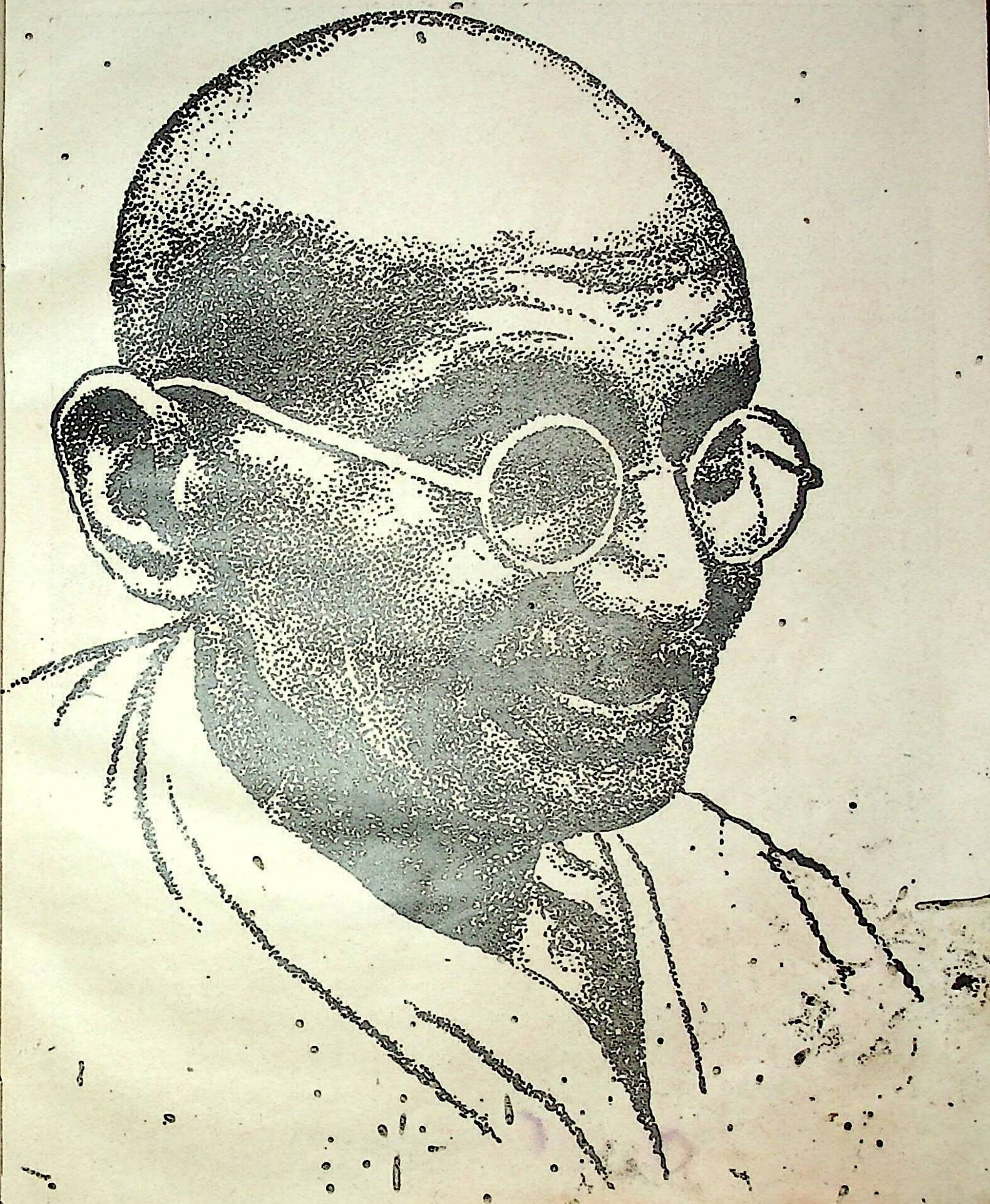

विश्व-वंद्य महात्मा गाँधी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राष्ट्रमाता कस्तूर बा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संसार के शहीदों के प्रति !

साथियो !

तुम्हारे और मेरे बीच में समुद्र लहरा रहा है और तूफ़ान गरज रहे हैं। लेकिन, मैं अपनी कल्पना में देख रहा हूँ—तुम्हारे रक्तरंजित तटों पर आज़ादी की निर्भीक ध्वजायें लहरा उठी हैं ! मैं देख रहा हूँ—

कब्रों में सोये हुये मुर्दों का दिल फिर धड़क उठा है, उनकी नसों में खून फिर उबल उठा है, उनकी खोई हुई सांस फिर लौट आई है।

और वे मुर्दे आज तन कर खड़े हो गये हैं और घूंसा तान कर कह रहे हैं—"आज़ादी या मौत !"

मुर्दो !

और ज़ोर से नारा लगाओ—"आज़ादी या मौत !" इतने ज़ोर से कि युग-युग का पिसा हुआ ग़ुलाम फिर से मनुष्य बन जाय और परम्परा और दासता की जंजीरों को एक झटके में तोड़ दे !

और उसके बाद गुलामी की राख से प्रेम की छाया उठ कर बन्दी-गृहों का द्वार खोल दे और मनुष्य की आत्मा को चाँदनी से नहला दे !

यह तुम्हें मेरा सन्देश है !

साथियो !

"शैली"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

९ अगस्त, सन् '४२ की सुबह

महात्मा गांधी और अन्य नेता कैसे गिरफ्तार हुए

९ अगस्त सन् '४२ की सुबह थी। वह अभागा धुंधला प्रभात जिस दिन भारत की आजादी की लड़ाई ने सहसा एक नये मोड़ पर शानदार कदम रक्खा था। गाँधीजी और अन्य नेताओं की गिरफ्तारी के बाद जो भी घटनायें हुईं वे मुझे अच्छी तरह याद हैं। क्योंकि मैं भी उन लोगों में से था जो दैवयोग से उस दिन रात भर गिरफ्तारियाँ देखने के लिये जागते रहे।

जब ८ अगस्त को १०-३० बजे रात को गोवालिया तालाब पर अखिल भारतीय काँग्रेस कमीटी की बैठक खत्म हुई, उस समय वहाँ लगभग एक सौ रिपोर्टर मौजूद थे। हिन्दुस्तानी, अमेरीकन, अंग्रेज और चाइनीज; 'टाइम एंड लाइफ' का विलफिशर, अमेरिका का ग्रोवर, शिकागो न्यूज का स्टील, ये सब तो लड़ाई के मोर्चे से भाग कर बम्बई आये थे।

मगर जब रात को वे अपनी रिपोर्टें सेन्सर आफिस में लेकर गये तो उन्होंने समझा कि 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव पास होगया और अब उनका काम लगभग खत्म हो चुका। आधी रात को समुद्री तार भेज देने के बाद वे सोने चले गये; कुछ 'ताज' में कुछ पोद्दार रोड के बङ्गले में।

अमेरिकन और अंग्रेज सम्वाददाता सो रहे थे। 'टाइम्स आफ इण्डिया' के सम्वाददताओं को 'इलस्ट्रेटेड वीकली' के समाचार-स्तम्भ के लिये कुछ सूचनायें तैयार करनी थीं। वे भी अपना काम समाप्त कर सोने चले गये। मगर क्रानिकल, फ्री प्रेस और असोशियीटेड प्रेस के सम्वाददाता अब भी टाइपराइटर खटका रहे थे और न केवल उस बैठक के शब्द मगर वहाँ का वातावरण पूरी तरह शब्दों में चित्रित कर रहे थे। वे खाना पीना छोड़कर कई रातों से जग रहे थे।

उसके बाद सब से पहला खतरे का संकेत मिला। असोशियेटेड प्रेस की नई दिल्ली की खबर में वह प्रस्ताव आया जो वाइसराय की कौन्सिल में पास हुआ था। उसके शब्द और उसका रवैया अच्छा नहीं दीख पड़ा। एक सम्वाददाता ने टेलीफोन उठाया और सरदार पटेल को बुलाकर यह खबर दी—"मैं समझता हूँ हम लोगों को अब जेल के लिये बिस्तर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाँध लेना चाहिये।" सरदार ने हँस कर जवाब दिया —"मगर यह कोई नहीं जानता था कि तैयारी इतनी जल्दी हो जायगी।"

कल्याण उठा और रामचन्द्र को टेलीफोन करने लगा। थोड़ी-सी कोशिश के बाद वह बोला—"कुछ ख़राबी मालूम देती है" दूसरे ने उठाया और नम्बर घुमाकर बोला—'कनेक्शन टूट गया है।' हमलोगों की निगाह घड़ी पर गई। अभी डेढ़ बजे थे।

क्या सचमुच यही बात है? हम सब ताज्जुब में पड़ गये। दस साल पहले जब गांधीजी गिरफ्तार हुये थे तो टेलीफोन कट गये थे। क्या इतिहास अपने को दोहरा रहा है?

मगर केवल ताज्जुब में पड़े रहना भी पर्याप्त नहीं थ, हमें पूरा पता लगाना था। एक छोटा सम्वाददाता "फ्री प्रेस" के दफ्तर में दौड़ा गया, दूसरा असोशियेटेड प्रेस में गया। दोनों जगह से खबरें आईं कि टेलीफोन कटे हैं। हम समझ गये कि यह गिरफ्तारी की भूमिका है।

मगर टाइम्स ऑफ इन्डिया के दफ्तर में इसकी दूसरी ही प्रतिक्रिया हुई। एक अमेरिकन सम्वाददाता जब तार भेजने चला तो उसने देखा कि टेलीफोन बन्द है। वह उसका कारण न समझ पाकर झल्ला उठा और बोला—"ये टेलीफोनवाले कभी अपना काम ठीक नहीं चला पाते।"

अपनी रिपोर्टें पूरी करके 'सम्वाददाता लोग' साढ़े तीन बजे निकल पड़े। आचार्य और कल्याण बिड़ला हाउस गये जहाँ गाँधीजी ठहरे थे और किन्नी सरदार पटेल के घर पर चला गया। दूसरे सम्वाददाताओं ने बताया कि स्टेशन पर पुलिस का बहुत सख्त पहरा है।

बिड़ला हाउस के दरवाजे पर क्रानिकल और असोशियेटेड प्रेस के सम्वाददाता कड़ी ठंढ में इन्तजार कर रहे थे। भीतर रोशनी जल गई थी। गांधीजी दो बजे सोने गये थे, मगर वह जल्दी जग भी उठे थे। पर पुलिस का कहीं नामो-निशान नहीं था। पाँच बज गये थे और ठिठुरते हुए सम्वाददाताओं ने वापस जाने को सोची। ज्योंही उनकी टैक्सी चलने को हुई कि पुलिस की लारियाँ दीख पड़ीं। उसी समय गोरखा चौकीदार ने कहा कि तालियाँ खो गई हैं। पुलिसवाले चोरों की तरह दीवार फांद कर भीतर कूदने लगे। १० मिनट बाद दरवाजा खुला और सम्वाददाता भीतर घुस गये। गांधीजी को खबर मिल गई थी। उस समय वे बकरी का दूध औरसन्तरे के रस से नाश्ता कर चुके थे। उसके बाद उन्होंने अपना प्यारा-"वैष्णव जन तो तेने कहिये" और कुरान की आयतें सुनीं। उनके बिस्तर में और चीजों के साथ-साथ गीता, कुरान, एक उर्दू प्रारम्भिक और एक गुजराती भजनों का संग्रह था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

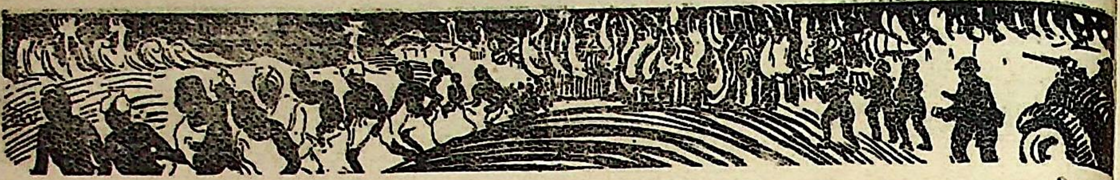

हमलोगों को खबर मिल गई थी। अब भाग कर आफ़िस में खबर देनी थी। मगर पुलिस खबर नहीं फैलने देना चाहती थी। हमलोग किसी तरह उसकी आखों में धूल झोंक कर भाग निकले।

उस बीच में दफ्तर खबरों से खाली नहीं रहा। पौने पाँच बजे सरदार-गृह का सम्वाददाता यह खबर लेकर आया कि शङ्करराव देव गिरफ्तार हो गये। अब हमें निश्चय हो गया कि पूरी वर्किंग कमेटी गिरफ्तार हो गई है। हमारा अतिरिक्त अंक फौरन तैयार हो गया। सवा छः बजे दफ्तर के फाटक पर एक क्रानिकल का पोस्टर लग गया कि वर्किङ्ग कमेटी गिरफ्तार हो गई। और, पौने सात बजे तमाम हौकर गिरफ्तारी की खबर लेकर दौड़ गये। फल यह हुआ कि जब सात बजे पुलिस की लारियाँ बन्दी नेताओं को लेकर विक्टोरीया टर्मिनस की ओर चली तो वहाँ अपार जनसमूह "इन्कलाब जिन्दाबाद" से विद्रोहियों का स्वागत करने के लिये तैयार था।

इस बीच में आदरणीय, ऊँची-ऊँची तनख्वाह पानेवाले गोरे सम्बाददाता अपने मुलायम बिस्तरे पर सोते रहे। उनकी नींद में ही भारत के इतिहास ने अपना एक पन्ना उलट दिया। कुछ लोग १० बजे जागे और उन्हें मालूम हुआ कि वे मौका चूक गये।

मुझे याद है कि जब मैंने १० बजे एक मित्र अमेरिकन सम्वाददाता को फोन किया तो वह बोला—गांधी और नेहरू गिरफ्तार हो गये। तुम भी अच्छे दोस्त हो कि यह सब हो गया और तुमने मुझे जगाया भी नहीं। पहले क्यों नहीं फोन किया?

"कैसे कर सकता था?" मैंने जवाब दिया—"पुलिस ने तो टेलीफोन काट दिया था?"

"सचमुच!" वह असमंजस में बोल रहा था—"मगर यह तो फासिज्म है। ऐसी बातें तो नाजी जर्मनी में भी न होती होंगी!"

"यही तो बात है, भाई!" मैंने उसे जवाब दिया और टेलीफोन रख दिया।

('वायस आफ इन्डिया' से)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अहमदनगर किले के पथ पर

कांग्रेस कार्य-समिति के सदस्यों को गिरफ्तार कर कैसे अहमदनगर पहुँचाया गया

अब अहमदनगर किले की असली डायरी आरंभ होती है। जब हमलोग स्टेशन पर उतरे, हमलोगों को बस गाड़ी में बैठाकर ले जाया गया, जिसकी छत बहुत नीची थी। मौलाना और हम शेष लोगों को अपना सिर इतना झुकाना पड़ा कि हम लोगों की देह प्रायः दोहरी हो गई।

रास्ते की कुछ घटनाएँ कहने लायक हैं। ज्यों ही ट्रेन विक्टोरिया टरमिनस स्टेशन से आगे बढ़ी, कुछ हल्ला हुआ। गांधीजी आगेवाले डब्बे में थे। पूछने पर कि क्या हमलोग उनके पास जा सकते हैं, उत्तर मिला--थोड़ी देर में। इसी बीच हम लोगों को नाश्ता कराया गया। नाश्ता की मात्रा काफी थी और उसमें कई किस्म की चीजें थीं। कुछ नासपातियाँ भी थीं—देशी नहीं, असली। अब हमें पता चला कि हम लोगों की संख्या प्रायः तीस थी। बंबई के मित्र भी वहाँ एकत्र थे।

थोड़ी ही देर बाद हमलोग अलग-अलग हो गये। मेहरअली हमलोगों के डब्बे में बातचीत कर रहे थे कि एक लम्बे अंगरेज ने हम लोगों के डब्बे में झाँका। वह सर्ज की पोशाक और फेल्ट हैट पहने था और स्टेशन प्लैटफार्म पर प्रातः ६ से ७ बजे तक इधर से उधर संतोष की मुखमुद्रा लिए—स्पष्टतः पूर्व निश्चत प्रोग्राम को पूर्णतः कार्यान्वित होता देख—टहल रहा था। उसने पूछा—'क्या यहाँ बंबई के कोई सज्जन हैं?' मेहरअली का पता पाने पर उसने उन्हें अपने डब्बे में चलने को कहा। मेहरअली ने उससे नम्रता से कोई बहाना करते हुए थोड़ी देर ठहरने को कहा और यह भी कहा कि 'आप इन बातों में थोड़ी उदारता दिखला सकते हैं।' उस अफसर ने, जिसने पहले से ही धमकी की आकृति बना रखी थी, कहा—'उदारता। नाश्ते में तो सब साथ ही थे, फिर भोजन में भी एक घंटा और मिलेगा।' मेहरअली ने उत्तर दिया—'जरा नम्रता से बोलिए। अगर आप नम्रता से बातें करेंगे तो हम आपके साथ दुगुनी नम्रता से व्यवहार करेंगे। मैं दो ही मिनट में चला जाऊँगा।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

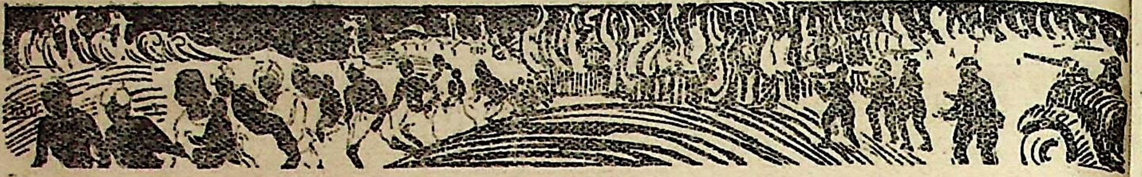

थोड़ी देर के बाद उस अफसर ने कहा—'माई व्वाय (मेरे लड़के) अब चलो।' इस पर मेहरअली क्रुद्ध हो गए। वे तनकर खड़े हो गए। वह छोटे कद के नहीं कहे जा सकते, फिर भी अपने विरोधी की गर्दन तक ही पहुँच सके और अपना सिर ऊपर उठा कर बोले—'तुम मुझे व्वाय कहते हो, जानते हो मैं कौन हूँ ?'

अफसर ने उत्तर दिया—'तुम जानते हो, मैं कौन हूँ ?'

'तुम्हें मालूम होना चाहिए मैं बंबई का मेयर हूँ।'

'मैं तुम्हें बैठा सकता हूँ।'

थोड़ी देर के वाक्-युद्ध के बाद जबकि मेहरअली तीन बार उठ-बैठकर अफसर की ऊँचाई के मुकाबले अपनी ऊँचाई का अंदाज लगा रहे थे, अफसर ने अपना दाहिना हाथ उनके बाएँ कंधे पर हौले से रखा और उनको जोर से नीचे की ओर दाबा।

हाथा-पाई की नौबत आती मालूम पड़ी। थोड़ी देर की गर्मागर्म बातचीत के बाद, जिसमें मेहरअली बंबई का मेयर होते हुए व्याय कहे जाने का प्रतिरोध कर रहे थे, अफसर ठंढ़ा पड़ गया और अपना होश संभालकर बोला—'मैंने माई व्याय (मेरे लड़के) अच्छे अर्थ में कहा था।'

उसने सचमुच उसी अर्थ में शब्द व्यवहार किया था। किंतु मेहरअली को अपनी आपत्ति बनी हुई थी। उस डब्बे में हम चार व्यक्ति थे। पाँचवे या छठे व्यक्ति मेहरअली ही थे। अफसर तंग रास्ते को घेरे हुआ था। हाथापाई अवश्यंभावी मालूम पड़ी। कई बार संबोधित करने पर बड़ी कठिनाई से मैं मेहरअली का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर सका और उनसे कहा कि अफसर कि इस सफाई को मान लीजिए कि उसने उस प्रीति-सूचक शब्द का व्यवहार अच्छे अर्थ में किया है।

शीघ्र ही झगड़ा खतम हो गया; किन्तु इसका अनुवर्ती परिणाम अभी बाकी ही था। मेरा हस्तक्षेप मेरे कुछ साथियों को पसंद नहीं आया और मैंने उनकी टिप्पणियाँ शांतिपूर्वक सुन लीं। थोड़ी देर के बाद, जब मैं आगे के डब्बे में जा रहा था, बीच के डब्बे में मैंने देखा, वह अफसर अपने सहायकों के साथ बैठा हुआ है। उसकी दृष्टि जब मेरी ओर आकृष्ट हुई तो मैंने उसे मेहरअली की संतुष्टि के लिए उनसे कुछ कहने को कहा; क्योंकि आरंभ से ही उसकी आकृति कुछ धमकानेवाली मालूम पड़ती थी। उसने कहा कि मेहरअली के साथ मेरा झगड़ा निबट चुका है और उनके साथ वह पंद्रह मिनटों तक शांतिपूर्वक

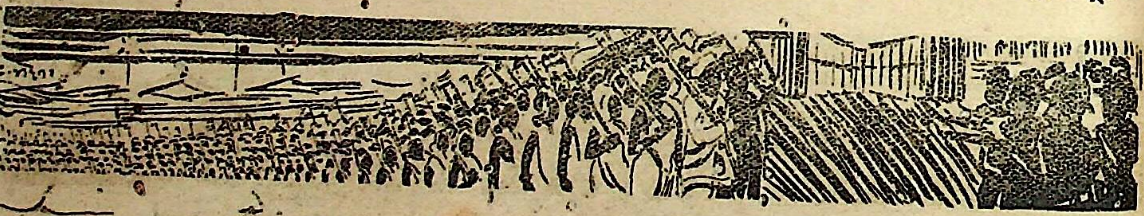

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

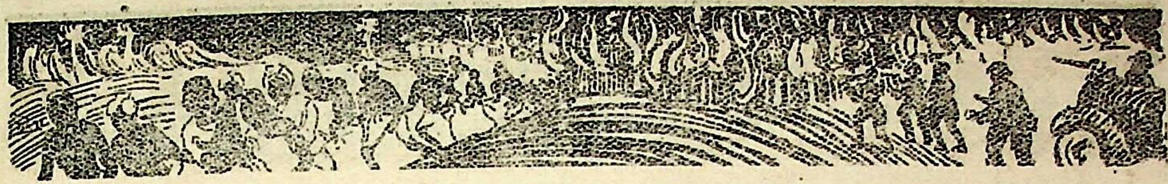

बातचीत भी कर चुका है। उसने मेरी कार्रवाई पर अपनी कृतज्ञता प्रकाशित की, जिसके उत्तर में मैंने कहा कि बढ़ती हुई लड़ाई को देखकर चुप होकर बैठा भी तो नहीं जा सकता। उसने मेरे कथन का उत्तर दिया—'ओह, नहीं', चाहे उसका जो अर्थ निकले। पूछने पर पता लगा कि उसका नाम मि० शार्पर था और वह रेलवे सी० आई० डी० पुलिस का इंसपेक्टर जेनरल था।

यह बात मैं जोर देकर कहूँगा कि मि० शार्पर का यह कथन कि मेहरअली और हम सब भोजन के समय एकत्र होंगे सच नहीं था; क्योंकि बंबई वाले मित्र पूना जाने के लिए किरकी में ही उतार लिए गए। क्या इस बात की उसको जानकारी नहीं थी। तब भी उसने १२ बजे (भोजन के समय) एक घंटे के लिए हमलोगों के एकत्र होने का वादा क्यों किया था?

मैं पूर्व ही कह चुका हूँ कि उस अफसर के प्लेट-फार्म पर टहलने के समय सरकार का प्रोग्राम प्रायः पूरा हो रहा था, वह इस बात की संतुष्टि का अनुभव कर रहा था। प्रायः मैंने इसलिए कहा है कि श्री गोविन्दवल्लभ पंत ने ५ बजे तड़के पुलिस द्वारा परेशान होने से अस्वीकार कर दिया था, इसलिए वह और उनके साथी-अतिथि हरेकृष्ण मेहताब जो राजा शिन्नलाल गोविन्दलाल के वहाँ दबोलकर रोड में ठहरे हुए थे, पीछे छूट गए थे। वे लोग दिन में आर्थर रोड जेल में रखे गए थे और पीछे पूना होते हुए मोटर से अहमदनगर लाए गए थे। वे हमारे कैंप में दूसरे दिन पहुँचे।

अब ट्रेन की बात सुनिए। हमलोगों ने दो जत्थों को अपने पीछे छोड़ दिया था—एक चिंदवद में गाँधीजी के साथ तथा दूसरा किरकी में बंबई के मित्रों का। इनमें से एक को पुलिस लादे लिए जा रही थी; क्योंकि वह आरंभ से ही असहयोग कर रहे थे। ट्रेन किरकी से चली और शीघ्र ही पूना पहुँच गई। वहाँ कुछ लड़के ट्रेन में बैठे लोगों का नाम ले-लेकर जय-जयकार कर रहे थे; क्योंकि गिरफ्तारी की खबर आठ ही बजे सबेरे रेडियो द्वारा फैल गई थी। इसका पता हम लोगों को रास्ते के एक स्टेशन पर खड़े लोगों से लग गया था।

'जय-जय' की आवाज कानों में आई ही थी कि मैंने गाड़ी के दरवाजे की ओर आते हुए जवाहरलाल के पैरों की आहट सुनी। वे ऊँचे स्वर में बोल रहे थे—'लाठी चार्ज' रोको। छिः बच्चों पर लाठी चार्ज!' किन्तु रास्ते को एक लंबे-तगड़े हिन्दुस्तानी पुलिस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अफसर ने, जो नागरिक भेष में था, इस तरह रोक रखा था कि एक मक्खी के लिए भी वाहर निकलना मुश्किल था। मैं इस दृश्य को देखने के लिए अपने डब्बे से बाहर आ निकला।

पुलिस अफसर को अपने स्थान से हटाना असंभव समझ और उससे कुछ क्षणों के संघर्ष के बाद जवाहरलाल डब्बे में लौट आए और अपने साहसी स्वभाव के अनुसार खिड़की से प्लाटफार्म पर कूद पड़े। वह अपराधी सारजेंट के पास पहुँचने ही वाले थे कि सर्वव्यापी और दुनिवार्य मि० सार्पर उनसे मिला और उन्हें अपनी वाहों में जकड़ लिया। जवाहरलाल ने मि० शार्पर के लौह आलिंगन से छुटकारा पाने की बड़ी कोशिश की; किन्तु उनके क्रोध का शिकार वना एक मूर्ख हिन्दुस्तानी सिपाही जो उनके घूँसे और मुक्के की पहुँच के अंदर आ गया था।

स्थिति की वढ़ती हुई गंभीरता देख शंकरराव देव खिड़की से कूदे और स्पष्टत: जवाहरलाल को छुड़ाने के लिए उनकी ओर लपके—साथ ही वे उन्हें छुड़ाने के लिए भी हल्ला कर रहे थे। किन्तु उनकी प्रगति एक पुलिस के आदमी ने रोक दी। उसने उनकी लंगोटी पकड़ उनके हाथ-पांव सहित उन्हें ऊपर उठा लिया और अपने डब्बे में रख दिया। जवाहरलाल भी ऐसे ही अपने डब्बे में पहुँचाए गए और ट्रेन पूने से रवाना हुई।

हमलोग कहाँ जा रहे थे ? यह तो पता लग गया था कि गांधीजी पूना आगा खाँ पैलेस में ले जाए गए हैं और यह भी साफ था कि बंबई के मित्र सब यरवदा जेल में। गांधीजी, सरोजिनी, मीराबेन तथा महादेव के साथ चिंचवद स्टेशन पर उतार लिए गए थे। तब हम लोग कहाँ ले जाए जा रहे थे ? किसी किले के विषय में कानाफूसी हो रही थी। पर पता नहीं कैसा किला था। मैंने शंकरराव से पूछा कि धोंद-मनमद लाइन पर कौन-सा किला पड़ता है ? यह तो निश्चित था कि धोंद से हमलोगों का रास्ता बदलेगा। हमलोग वहाँ उतरकर अपने-अपने प्रांत को भेजे जाएँगे अथवा धोंद-मनमद लाइन में कहीं रखे जाएँगे। इस लाइन पर केवल वीसापुर में एक जेल है। किन्तु हमलोग तो किले की खोज में थे—वह किला अहमदनगर में था।

मुझे अपने गंतव्य स्थान—अहमदनगर फोर्ट—को ढूढ़ निकालने में कोई कठिनाई नहीं हुई। ट्रेन में भोजन के बाद हमलोग प्राय: डेढ़ वजे किले में पहुँच गए। हमलोगोंको १२ बजे भोजन करने की बात कही गई। इससे अपने निर्दिष्ट स्थान को ढूँढ़ने में हमलोगोंको आसानी हुई। धोंद स्टेशन निकट आने पर हमलोगोंको मि० शार्पर ने, जिसका व्यवहार अब मित्रतापूर्ण हो चुका था, बतलाया कि हमलोगोंको अहमदनगर ही जाना था। हमलोग बस में किले तक गए। दरवाजे पर एक अंगरेज संतरी दिखाई पड़ा। भीतरी दरवाजे पर हमलोग उतारे गए। हमलोगों के पीछे का दरवाजा बंद हुआ और आगे का खुला !

—डॉ० पट्टाभि की 'फेदर्स एण्ड स्टोन्स' से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीयुत शरच्चन्द्र बोस

आपको काफी अर्से तक नजरबन्द रखा गया।

"मधुर" मृत्यु का नृत्य देखकर, देने लग जा ताल
"अपना सीस पिरोकर कर दे पूरी माँ की माल।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अगस्त-क्रान्ति के एक सेनानी

कॉमरेड जयप्रकाशनारायण

बाधाओं की घोर घटा को घिरने दो परवाह नहीं।
विघ्नों के सम्मुख झुक जावे, ऐसे सिर की चाह नहीं॥
धर्म-कर्म की वेदी पर हूँ बलि, मुझको कुछ चाह नहीं।
अंग-अंग कट गिरे देश पर, घटे अतुल उत्साह नहीं॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गिरफ्तारी के पूर्व राष्ट्रपति आज़ाद का एक पत्र

कल सुबह तक बम्बई शहर की दूरी और फैलाव में मुझे दो चार मिनट की फुरसत न मिली कि मैं अपने सफ़र के दौरान में लिखे हुये ख़त को अजमल ख़ाँ से डाक में छुड़वा सकूँ।

मगर आज अहमदनगर की ऊंची दीवारों से घिरी हुई इस छोटी-सी दुनिया में इतना अपनापन है कि मुझे लगता है कि मैं मजमूनों के ढेर लगा दूं।

नौ महीने से पहले, दिसम्बर सन् १९४१ में नैनी सेन्ट्रल जेल के दरवाजे खोल कर मुझे बाहर भेज दिया गया था। कल ९ अगस्त, १९४२ को अहमदनगर के फाटकों ने फिर मुझे अन्दर कैद कर लिया। दुनिया के इस रङ्ग-रूप से भरे हुये स्टेज पर न जाने कितने दरवाजे बन्द होने के लिये खुलते और न जाने कितने खुलने के लिये बन्द होते रहते हैं। यूँ ऊपरी तौर से तो ९ महीने का वक्त बहुत लम्बा नहीं है। सपनों की दुनिया में दो चार करवटें बदलने में ही इतना वक्त कट जाता है। मगर जब मैं ख्याल करता हूँ तो ऐसा मालूम होता है कि तवारीख का एक पूरा जमाना गुजर गया है। कोई नहीं कह सकता कि यह कहानी जो आज शुरू हुई है कब और कैसे खत्म होगी।

४ अगस्त को जब मैं बम्बई पहुँचा तो मुझे हल्का बुखार और सरदर्द था। फिर आते ही मुझे काम में जुट जाना पड़ा। मेरी तबीयत चाहे जितनी खराब हो मगर मैं रोजाना का कार्यक्रम में रद्दोबदल नापसन्द करता हूँ। ५ अगस्त से ७ अगस्त तक वर्किंग कमेटी की बैठक हुई। अखिल भारतीय काँग्रेस कमेटी की बैठक ७ अगस्त को दोपहर से शुरू हुई। घटनाओं की सरगर्मी कुछ ऐसी थी कि तीन दिन तक लगातार बैठकें चल सकती थीं। सच तो यह है कि लोगों का इरादा तीन दिन तक मीटिंग करने का था। मगर मैंने कोशिश की कि वह दो दिन से ज्यादा न बढ़े। ८ अगस्त को मैंने २ बजे से ११ बजे रात तक लगातार मीटिंग की और काम खत्म कर दिया।

थका हुआ मैं घर पहुँचा। मैंने देखा मेरे मेजबान कुछ परेशान से हैं और मेरा इन्तजार कर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहे हैं। जनाब मेजबान साहब कुछ दिनों से बीमार थे और उन्हें कुछ दिमागी तकलीफें थीं। मैं उनसे सियासी बहसें इसीलिये नहीं करता था कि वे कहीं और परेशान न हो जाँय। उन्होंने वर्किंग कमेटी से भी इस्तीफा दे दिया था। मगर मैंने इस्तीफे की मंजूरी अभी नहीं दी थी, साथ ही साथ उन्हें शामिल होने का न्योता भी नहीं दिया था। उन्होंने बताया कि कुछ लोग आकर मेरा इन्तजार कर रहे थे और खबर छोड़ गये हैं कि गिरफ्तारी की खबर झूठ नहीं है। कुछ विश्वस्त सूत्रों से पता चला कि गिरफ्तारी की सारी तैयारियाँ हो चुकी हैं और इसी रात को किसी वक्त भी गिरफ्तारी हो सकती है।

मगर पिछले दो महीनों से गिरफ्तारियों की अफ़वाहें इतनी फैल रही थीं कि मैं उन्हें सुनते सुनते ऊब गया था।

मैंने यह ठीक समझा कि उनकी यह परेशानी दूर कर दी जाय। इसलिये मैंने कहा – "आजकल के जमाने में ऐसी अफ़वाहें तो फैलाना साधारण बात है। कैसे उन पर यकीन किया जाय? फिर अगर वही होनेवाला है तो उस पर बहस क्यों की जाय? लाइये कुछ खाने को दीजिये, फिर कम-से-कम बचे हुए वक्त में आराम से सोया जाय।"

मैं ठीक चार बजे उठ गया, मगर बदन भारी था और सर में कुछ दर्द भी था। मैंने जेनस्पीन की दो टिकियाँ लीं और चाय पी ली। कुछ महत्वपूर्ण खतों को लिखने के लिये मैंने कलम उठाई थी। ये खत प्रेसीडेन्ट रुजवेल्ट वगैरह को भेजे जानेवाले थे। सामने के आसमान में अंधेरे की धुंधली रोशनी साफ़ नजर आती थी। ठंडी और नरम हवा सुबह की सोंधी खुशबू बिखेर रही थी। सुबह की ताजगी ने मेरी नसों की थकावट को खींच लिया।

धीमे-धीमे कुछ आलस-सा आने लगा। मैंने कलम रख दी और पलंग पर लेट रहा। एकाएक मालूम हुआ कि सड़क पर मोटरें आ रही हैं। मैंने देखा कि कुछ मोटर अहाते में आईं और धीरू के बँगले ओर बढ़ीं। मैंने समझा मैं ख्वाब देख रहा हूँ और मैं फिर सो गया। मुश्किल से १५ मिनट बाद किसी ने मेरा पैर दबाया। मैंने देखा धीरू खड़ा है। "पुलिस कमिश्नर के साथ दो फौजी अफ़सर आये हैं और उन्होंने यह कागज भेजा है" वह बोला। यही खबर काफी थी; मगर फिर भी मैं कागज पलटने लगा।

मैंने धीरू से कहा कि मुझे तैयार होने में डेढ़ घन्टे लगेंगे; तब तक उनसे रुकने को कहो। मैं नहाया।

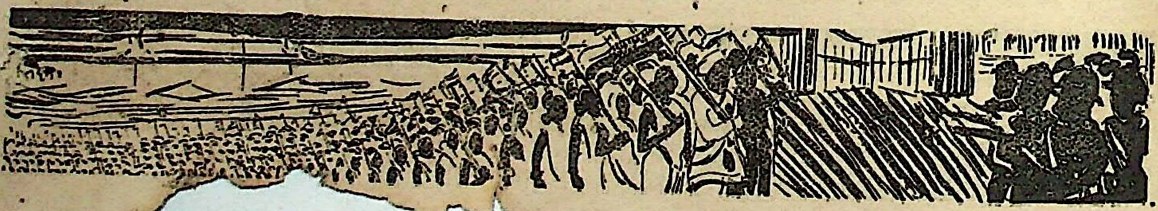

Kangri University Haridwar Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

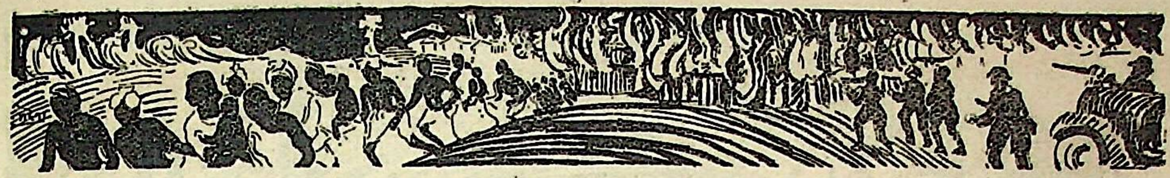

मैंने कपड़े बदले और कुछ खत लिखे। मुझे सवा छः बज गये

मोटर जब सड़क पर आई तो सुबह खिलखिला कर हंस रही थी। समुद्र की लहरें अठखेलियाँ कर रही थीं। सुबह की हवा फूलों से खुशबू चुरा कर लहरों पर छितरा रही थी। एक झोंका मोटर से गुजरा और मेरी याददास्त में हफ़ीज का एक शेर जिन्दा हो उठा।

जब मोटर विक्टोरिया टर्मिनस पर पहुँची तो पीछे से मिलिटरी ने उसे घेर लिया और हालांकि रेल का वक्त गुजरा जा रहा था मगर मुसाफिरों को स्टेशन के भीतर जाने की इजाजत नहीं थी। सिर्फ एक प्लेटफार्म पर कुछ चहलपहल थी। एक इञ्जिन एक रेस्तोराँ के डब्बे को घसीट कर ला रहा था जो हम कैदियों के लिये था।

भीतर जाने पर मैंने देखा कि गिरफ्तारीयाँ बहुत बड़े पैमाने पर हुई हैं। बहुत लोग आ गये थे और जो बचे थे वह भी धीरे-धीरे लाये जा रहे थे। कुछ लोग जो मुझसे पहले आये थे, उनके चेहरे से जागने की थकावट झलक रही थी। कुछ की शिकायत थी कि वे दो बजे सोने गये और चार बजे जगा लिये गये। मैंने पूछा—"सोई हुई किस्मत का क्या हाल है? कोई उसे भी जगा रहा है या नहीं।"

एक रात में दुनिया कितनी बदल गई थी। शाम को लोगों के दिल में उमंगों की रंगीनियाँ थी हसरतों की हलचल थी—कहकहों के फूल थे। और अब कफस था, बेड़ियाँ थीं, गुलामी थी।

काश कि हम अपने गुस्से को जाहिर कर पाते? इन बैठकों में फँसे रहने के बजाय, इन रिवाजों में बंधे रहने के बजाय अगर अबतक हम गदर की आवाज़ उठा देते.......

अब सभी की जुबान पर अहमदनगर का नाम था; क्यों कि हम पूना में उतारे गये और आगे सिर्फ अहमदनगर था। अहमदनगर ज्यादा दूर नहीं था। यह बहुत जल्दी आ जायगा—मगर हमारे सफर की मंजिल अहमदनगर तो नहीं है...

करीब दो बजे हम अहमदनगर पहुँचे। प्लेटफार्म पर सिर्फ कुछ मिलिटरी अफसर थे। स्टेशन से किले तक सीधी सड़क है। हमको बीच में कोई मोड़ नहीं मिला। मैं सोचने लगा हमारी मंजिल की राह भी इतनी सीधी है। जब एक बार चल पड़े तो मुड़ने का सवाल ही नहीं उठता!

हम से उतरने के लिये कहा गया। इन्सपेक्टर जेनरल पुलिस ने हमारे नामों की सूची मिलिटरी अफसर को दे दी। अब हमारी जिम्मेदारी पुलिस से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हट कर फौज के पास चली गई और एक नई दुनिया की शुरुआत हुई।

आँगन के बीच में एक झन्डे का बाँस लगा था। जब मैंने उसकी ऊँचाई देखने के लिये सर उठाया तो निगाहें सूने आसमान से टकरा गईं। आँगन के उत्तरी कोने में एक कब्र है। उस पर कुछ पेड़ों की डालें उदासी से सर झुकाए हुए थीं। उसके सरहाने एक पत्थर लगा है जिसके ऊपर की कालिख से मालूम होता था कि यहाँ कोई चिराग जला करता था।

यह नहीं मालूम था कि यह कब्र किसकी थी। चांद बीबी की तो हो नहीं सकती; क्योंकि उसका मकबरा बाहर पहाड़ी पर था। हो सकता है कब्र में जिन्दगी सो रही हो। मुझे डर था कि कहीं हम कैदियों के शोरगुल से उसका मुर्दा उठ खड़ा न हो।"

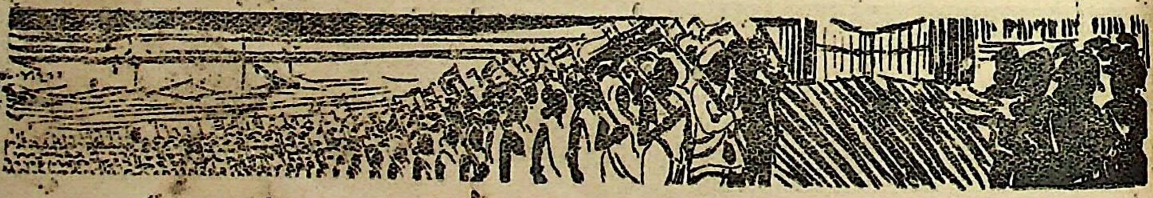

... Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आग भड़क उठी

मासूम बच्चों को गोलियों से भूना गया !

"मेरे जीवन की यह अन्तिम लड़ाई है। इस निश्चय को किसी भी हालत में मैं बदल नहीं सकता। इस आन्दोलन से कोई अपने को अलग नहीं रख सकता। रचनात्मक कार्य करनेवाले सब इस स्वतंत्रता-संग्राम में पूरा-पूरा हिस्सा लेंगे। कल से सब हिन्दुस्तानी अपने को आजाद समझें और उसी तरह से व्यवहार करें। या तो हिन्दुस्तान को हम आजाद करके रहेंगे या शहीद होकर मरेंगे।"

—महात्मा गाँधी

भारतवर्ष के अप्रतिम और बेजोड़ राष्ट्रनायक और पिता महात्मा गाँधी का ८ अगस्त १९४२ की मध्य-रात्रि को दिया गया यही उपर्युक्त आखिरी संदेशा था। वह गाँधीजी नहीं बोले थे वरन् उनके रूप में युग बोला था। ८ अगस्त १९४२ के ऐतिहासिक प्रस्ताव को पास करने के बाद राष्ट्रनायकों, काँग्रेस कमेटी के सदस्यों और बंबई की विशाल आम जनता को कोई कल्पना तक नहीं थी कि दो ही घंटे में काँग्रेस के ऊपर एक भयंकर और प्रलयकारी आक्रमण होने जारहा है।

९ अगस्त को ग्वालिया मैदान बम्बई का दृश्य अपूर्व था। १९४२ के आन्दोलन में यह स्थान अमरता प्राप्त कर चुका है। ९ तारीख की सुबह यह चर्चा तमाम बम्बई नगर में फैल चुकी थी कि जो नेतागण नेशनल वालेन्टीयर्स का पैरेड देखने आने वाले हैं, वे तमाम सुबह ही गिरफ्तार करके अनिश्चित जगह पर ले जाये गये हैं। जनता में चारों ओर सनसनी छाई हुई थी। तमाम वालेण्टियर्स और देश सेविकायें आकर्षक नारंगी रंगके ड्रेस में पैरेड के लिये पंक्तियों में जमा हो गयीं। पुलिस भी पहले से ही ग्वालिया मैदान पर तैनात थी। इतने में एक मोटर धीरे से आई जिसमें भूलाभाई देसाई के पुत्र थे। उन्होंने आकर तिरंगे झण्डेवाले एक दक्षिणी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कांग्रेसी को छुट्टी दी और झण्डा अपने हाथ में ले लिया। उस समय तिरंगे झंडे के आसपास कोई भी नेता नहीं थे। जो प्रमुख व्यक्ति वहाँ थे उनमें से कुछ के नाम ये हैं—श्री टी० एस० अविनाश लिंगम्, एम० एल० ए० (कोयमबटूर) श्री सी० के० गोविन्दन नैयर, एम० एल० ए० (केरल) और उन्हीं के दो मित्र थे, जो झण्डे के पास ही बैठे हुए थे।

झपट कर एक यूरोपियन सार्जेण्ट उपरोक्त चारों में से एक प्रमुख के पास पहुँच कर बोला—"इस ग्वालिया मैदान पर पुलिस और मिलिटरी ने कब्जा कर लिया है, इसलिये आप अपने तमाम वालेण्टियर्स को यहाँ से हटा लें वरना यहाँ अश्रु गैस का प्रयोग किया जायगा।" कोचीन रियासत के प्रजामण्डल के प्रेसीडेण्ट मि० नीलकण्ठ ऐयरने सार्जेण्ट से कहा कि इस मजमे का जिम्मेदार व्यक्ति मैं नहीं हूँ, इसलिये आपको उस व्यक्ति से जाकर कहना चाहिये जो इसका संचालन कार्य कर रहा हो। सारजेण्ट ने इस बात पर रत्ती भर भी ध्यान नहीं दिया और एकदम पुलिसको आदेश दे दिया। मि० ऐयर ने श्रीमती अरुणा आसफअली से सार्जेण्ट की तमाम बातें कहीं और यह भी कहा कि लड़के और लड़की वालेण्टीयरों को यहाँ से हटा देना चाहिये। क्योंकि यहाँ खतरे का अन्देशा है। वहां से लड़के और लड़कियाँ सब हटा दी गयीं और इसके बाद श्रीमती अरुणा का भाषण आरंभ हुआ।

शीघ्र ही पुलिस और कुछ उनके साथ लायी हुई गाड़ियों ने मैदान पर पूर्ण कब्जा कर लिया। उन सभी के पास अश्रु गैस के थैले थे और वे उनके सामान को वैगनों में रखे हुए थे। उनमें से छोटे थैले पुलिस ने अपने हाथों में ले लिये। पुलिस सार्जेण्ट ने फिर दुबारा हुक्म दिया कि भीड़ तितर बितर हो जाय; किन्तु वहाँ से कोई भी एक इञ्च तक न हटा।

श्रीमती अरुणाने तब तक अपना भाषण समाप्त कर लिया था। राष्ट्रीय झण्डा खम्भे के ऊपर हवा में शान के साथ फहरा रहा था।

पुलिस ने एक साथ भीड़ पर अश्रु गैस छोड़ दी। जैसे ही अश्रु गैस छोड़ी गयी कि भीड़ के नेता ने लोगों को हुक्म दिया—"सब लोग लेट जाँय" हुक्मके साथ ही सब वालेण्टियर्स लेट गये और दो मिनिट तक उसी हालत में रह कर सब फिर उठ कर बैठ गये। पुलिसने फिर दुबारा अश्रु गैसका प्रयोग किया; किन्तु दूसरी बार भी उनकी

Rajguru Math Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

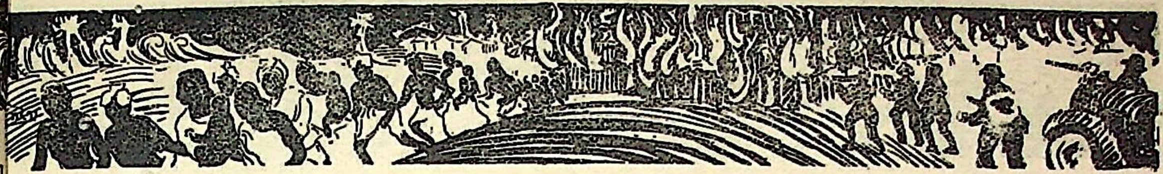

हिकमत बेकार ही गई। अब पुलिसको पता लगा कि अश्रु गैस से काम नहीं चलेगा। बस उन्होंने अपनी लाठियाँ सँभालीं। भीड़के कुछ प्रमुख नेता गिरफ्तार भी कर लिये गये। लाठी की मार से भीड़ तितर-बितर होने लगी। श्री ऐयर इस समय अश्रु गैस से जलती हुई आँखों को मल ही रहे थे कि लट्ठ आकर उनके हाथ में लगे। मृदुला बहिन पटेल को भी कई लट्ठ लगे किन्तु इस हालत में भी उन्होंने श्री ऐयर से यही कहा कि गिरफ्तार होने की आवश्कता नहीं है। आपको तो काँग्रेस का सन्देश तमाम देश भर में फैलाना है।

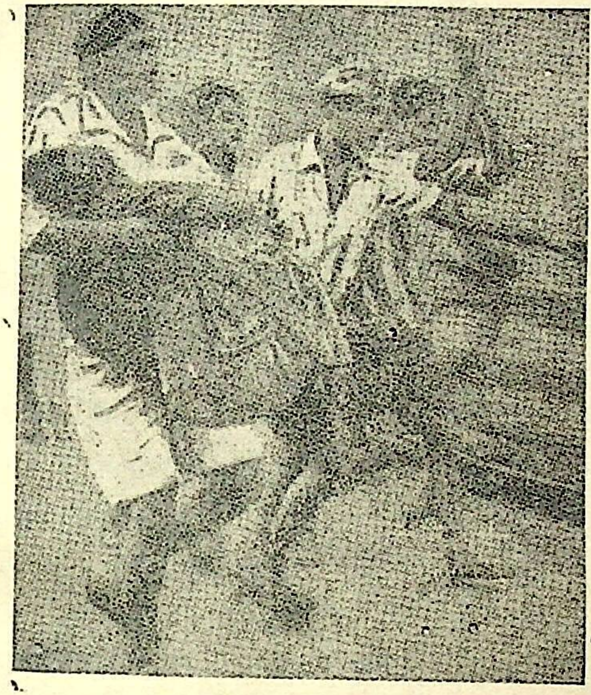

अश्रु-गैस के प्रयोग से बेहोश एक महिला-वालिण्टियर को उठा कर ले जा रहे हैं।

बंबई की इस घटना का समाचार रेडियो द्वारा दो ही घण्टे में देश भर में फैल गया। करीब पन्द्रह दिनों से बंबई की जनता सरदार बल्लभभाई पटेल की क्रान्तिकारी वाणी सुन रही थी और राष्ट्रीय क्रान्ति की प्रेरणा प्राप्त कर चुकी थी। इसलिये अचानक इस आक्रमण से वह घबरायी नहीं। सरदार का यह सन्देश कि "बीस वर्ष तक जो तालीम प्राप्त की है, उसका इस समय उपयोग करना होगा" जनता के कानों में गूंज रहा था। ऐसा कोई प्रसंग आते ही हड़ताल करने के लिये जनता पहले से ही काफी अभ्यस्त हो चुकी थी। अतएव नेताओं की गिरफ्तारी की प्रथम प्रतिक्रिया सारे नगर में पूर्ण हड़ताल के रूप में प्रकट हुई।

आँधी चल पड़ी

यह हड़ताल सिर्फ व्यापारी-बाजार तक ही सीमित नहीं थी; फिर भी ट्राम और बस-सर्विस-

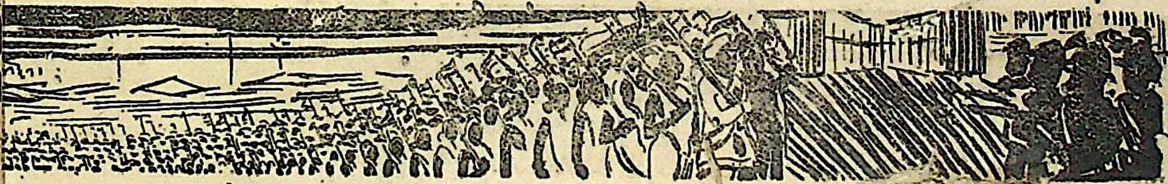

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वालों ने पहले उसमें सहयोग नहीं दिया। जनता इससे सख्त नाराज हुई। फलस्वरूप असंख्य बसें जला दी गईं और ट्राम का यातायात भी बन्द कर डाला गया। मोटरों का चलना बन्द हो गया और तार तथा टेलिफोन के खंभे उखाड़ डाले गये। रास्ते आने-जाने लायक न रहें, इसलिये उन्हें तोड़ने-फोड़ने और विभिन्न प्रकार की बाधाएँ डालने की चेष्टा की गई। इस तरह नेताओं की गिरफ्तारी के बाद थोड़ी ही देर में बंबई में रोष की प्रचण्ड-अग्नि प्रज्वलित हो उठी।

पहला बलिदान

अपने प्रिय नेताओं को चुपके-चुपके ले जाकर गुप्त स्थानों में सीखचों के अन्दर बन्द करनेवाले और जनता में आतंक फैलानेवाले प्रत्येक सरकारी अफसर के प्रति जनता का क्रोध उग्र हो उठा।

मध्याह्न में दो बजे प्रार्थना-समाज के पास गोली चली और एक नवयुवक शहीद हुआ। फलस्वरूप जनता और भी क्रोधित हो उठी और जनता तथा पुलिस के बीच स्थान-स्थान पर संघर्ष हुआ, जिससे गोलियाँ खाकर ३५ आदमी शहीद हुए।

और इसके बाद किस प्रकार सैनिकों ने निःशस्त्र और नेतृत्वहीन जनता का दमन किया और उन पर कैसे-कैसे अत्याचार ढाये, वह अङ्गरेजी राज्य के इतिहास को हमेशा कलंकित करता रहेगा। बन्दूक के जोर पर जनता से जघन्य से जघन्य कार्य कराये गये। इन अत्याचारों से बच्चे और स्त्रियाँ भी नहीं बचीं। कई स्थानों पर तो भले-घर की स्त्रियों से जबर्दस्ती नालियाँ साफ करायी गयीं।

बम्बई की 'सिविल-लिबर्टिज यूनियन' ने इ अत्याचारों की जाँच करने के लिये एक कमीटि नियुक्त की थी। कमीटी की रिपोर्ट में कहा गय है—'हमें ऐसे अनेक मिसाल मिले हैं, जहाँ अनुचि रूप से गोलियाँ चलाई गईं; भीड़ ही नहीं बलि ऐसे लोगों पर भी गोलियाँ चलाई गईं, जो भीड़ एकदम नहीं थे। बम्बई के एक बड़े अस्पताल औ मेडिकल कॉलेज के प्रधान तथा प्रसिद्ध डॉक्टर जी राज मेहता ने अखबारों में छपाया था कि कि प्रकार एक मासूमम बच्चे को गोलियों से भून दि गया। बच्चा भीड़ में नहीं था; उसका कसूर सि यही था कि वह 'गाँधी महाराज की जय' बोल र था।.........लोग घसीट-घसीट कर अपने कमरों बाहर निकाले गये—ऐसे लोग जो अपने घरों एकदम ही बाहर नहीं निकले थे—और उन प लाठियाँ बरसाई गईं, अनेक प्रकार के अत्याच

Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGahgotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

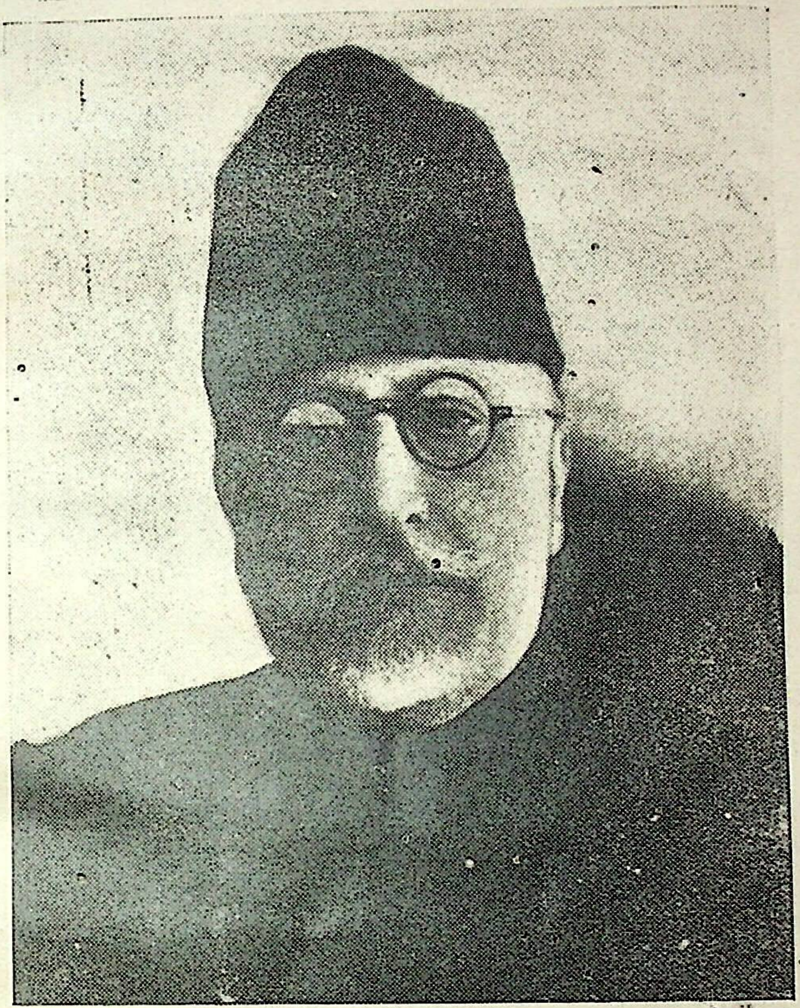

अबुलकलाम् आज़ाद

"क़ाश कि हम अपने गुस्से को जाहिर कर पाते ? इन बैठकों में फँसे रहने के बजाय,
इन रिवाज़ों में बँधे रहने के बज़ाय, अगर अब तक ग़दर
की आवाज उठा देते !......"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

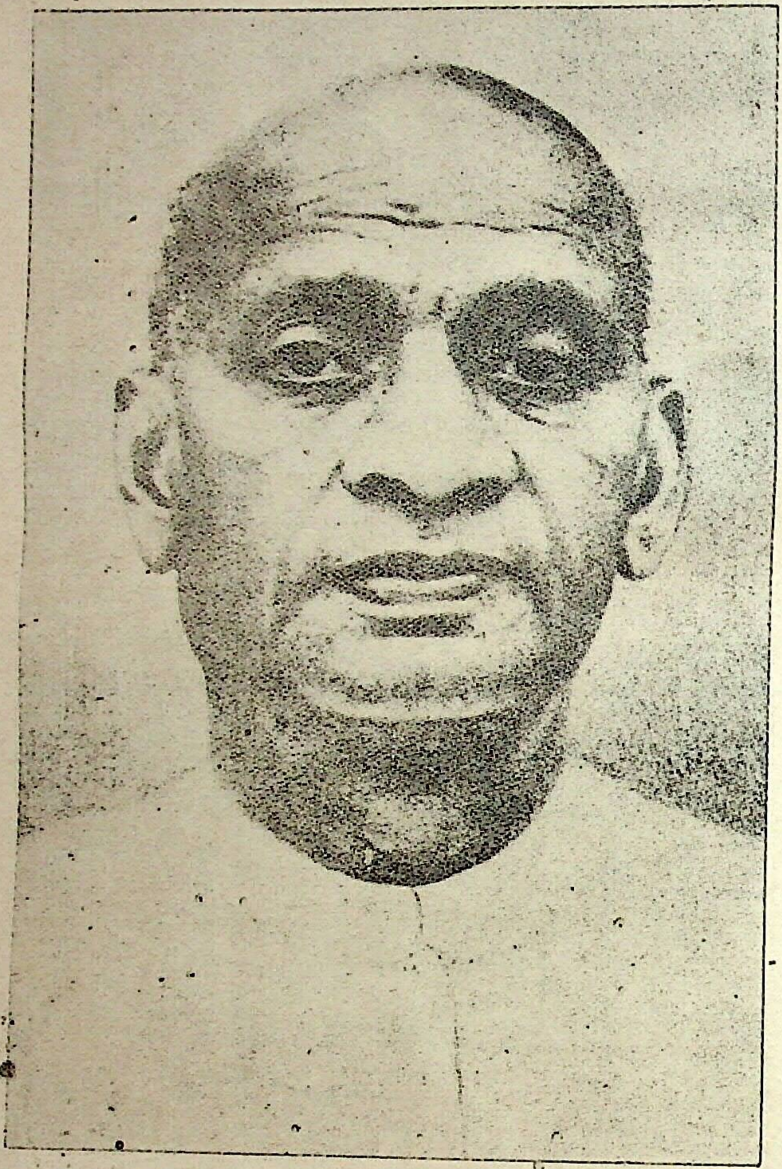

सरदार वल्लभ भाई पटेल

"एक ग़दर सन् सत्तावन में हुआ था ; दूसरा सन् '४२ में ! जनता आज़ाद होने के लिए मतवाली है, और तीसरा ग़दर बहुत जल्दी होनेवाला है !!"

... Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

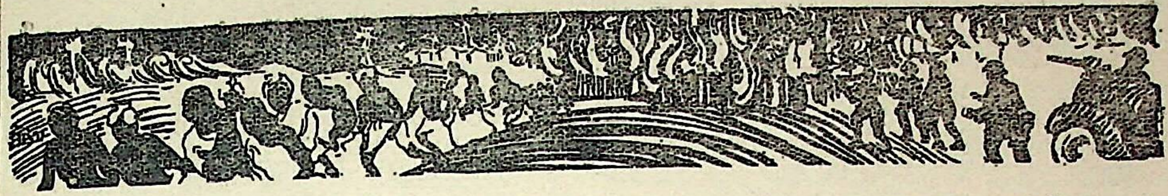

किये गये।·····कैरा जिले में कुछ विद्यार्थी सत्याग्रह का उपदेश देकर एक गाँव से वापिस लौट रहे थे। नजदीक के स्टेशन पर पहुँच कर जिस ट्रेन पर वे सवार होना चाहते थे, उसी ट्रेन से इन विद्यार्थियों का पीछा करनेवाला पुलिस-दल उतरा और विद्यार्थियों की ओर बढ़ा। विद्यार्थियों के नेता ने पुलिस पार्टी के अफसर से कहा कि वे सत्याग्रही हैं और यदि पुलिस उन्हें गिरफ्तार करना चाहे तो वे उसके लिये तैयार हैं; गिरफ्तारी का वे किसी भी रूप में विरोध न करेंगे। शान्तिपूर्वक गिरफ्तार हो जाने की इच्छा प्रकट कर देने पर भी, पुलिस ने इन विद्यार्थियों पर गोली चला दी। तीन विद्यार्थी उसी समय मर गये और अनेक घायल हुए। इतना ही नहीं गोली चलने के बाद पुलिस ने घायलों को किसी प्रकार की मदद नहीं मिलने दी। घायलों को प्यास लगी। गाँव के लोगों ने उन्हें पानी देना चाहा; लेकिन, पुलिस ने उन्हें रोक दिया। रेलवे-स्टॉफ को भी दया आई; किन्तु वे भी प्यासे घायलों को पानी नहीं दे सके।

बम्बई के धुलिया जिले में नन्दरबर नामक एक छोटा-सा शहर है। ९ अगस्त को जब विद्यार्थियों ने यह सुना कि देश के गण्यमान्य नेता बम्बई में गिरफ्तार कर लिये गये हैं, तो उन्होंने एक छोटा-सा जुलूस निकाला। जुलूस में ५ वर्ष से लेकर १५ वर्ष तक के छोटे-छोटे बच्चे थे; साथ में कुछ बच्चियाँ भी थीं! जुलूस जिस समय बाजार से गुजर रहा था, पुलिस सब-इंसपेक्टर को एक ढेले या ऐसी ही किसी दूसरी चीज से चोट लगी। कहते हैं, पुलिस सब-इंसपेक्टर की किसी आदमी से दुश्मनी थी और यह काम उसी का था। लेकिन, सब-इंसपेक्टर ने उन मासूम बच्चों पर गोली चलाने की आज्ञा दे दी। बच्चे भागने लगे। एक चौदह वर्ष का बच्चा उस जगह जाकर खड़ा होगया, जहाँ काँग्रेस का झण्डा फहरा रहा था। पुलिस ने उसको गिरफ्तार करने के बजाय उस पर गोली चलाई। गोली पैर में लगी; लेकिन, पुलिस तब तक गोली चलाती रही जब तक कि उसके प्राण नहीं निकल गये।

गोली चलने के साथ ही जुलूस भंग हो गया था—बच्चे अपनी रक्षा के लिये इधर-उधर भागने लगे थे; लेकिन, उन भागते हुए मासूमों पर पीछे से गोली चलाई गई। इस हत्याकाण्ड में पाँच बच्चे शहीद हुए और बारह घायल; जिसमें एक आठ वर्ष की छोटी बच्ची भी थी।

इस तरह बंबई प्रदेश के अनेक स्थानों में पुलिस ने जुल्म किये। पूना में तो बेकसूर स्त्रियों को गोली से भूना गया—गली में नहीं—जुलूस या झुन्ड में नहीं—बल्कि उनके घरों में घुस कर। इन अत्याचारों की पूरी रिपोर्ट अभी तक उपलब्ध नहीं; जिस समय वह प्रकाश में आवेगी तो उसके सामने नादिरशाह और तैमूर की जुल्म-कहानी भी फीकी पड़ जायगी।

आग फैलती ही गयी

बम्बई में प्रज्वलित होनेवाली क्रान्ति की यह ज्वाला सारे भारत में फैल गयी। दूसरे-दूसरे प्रान्तों के काँग्रेसी-कार्यकर्त्ता चुपके से बम्बई से चल पड़े और जहाँ-जहाँ वे गये, बम्बई में हुई घटना और क्रान्ति की चिनगारियों को फैलाते गये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खून से गुलामी का पाप धोया गय

बन्दूकों की नोक छाती से सटा कर गोली चलाई गई।

इस राजनीतिक तूफानी लहर से गुजरात अछूता नहीं बच सका।

लाठियों और गोलियों की बौछार

जैसा कि सारे भारत में हुआ, गुजरात में भी सरकार ने छोटे बड़े सभी काँग्रेस कार्य-कर्त्ताओं को गिरफ्तार कर अपना हमला शुरू किया। इन गिरफ्तारियों के साथ ही सभी प्रकार की सभाओं और जलूसों पर रोक लगा दी गई। गुजरात के छोटे बड़े सभी शहरों में इन आज्ञाओं को तोड़ना, उसके बदले सरकार की ओर से लाठियों और गोलियों की बौछार नित्य प्रति की घटनाएँ हो गईं। खेड़ा और सूरत जिले के तथा अहमदाबाद शहर के पुलिस अफसर अपनी शरारतों के लिए प्रसिद्ध हो गये।

किन्तु जिन लोगों ने विध्वंस कार्यों में भाग लेना आरंभ किया सरकार उनका बाल भी बाँका नहीं कर सकी।

गावों की जनता को डराने के लिए, जिससे इस प्रकार के कार्यों में सहायता न पहुँचावे, अधि से अधिक सामूहिक जुर्माने किये गये। सरकार यह भय था कि सम्भव है कि जनता इन सामूहि जुर्माने का विरोध ही नहीं, लगान बन्दी भी आरं न कर दे; इसलिए, जनता को आतंकित करने के लि केवल सामूहिक जुर्माने ही नहीं लगान तक संगी की नोक के बल पर वसूल किये गये। एक दि भोर में सशस्त्र पुलिस ने एक गाँव को घेर लि और किसी को न तो गाँव से बाहर जाने दिया औ न किसी को गाँव के भीतर आने दिया। इसके बा सशस्त्र पुलिस के दल ने घर-घर घूम कर लगा वसूल किया। यह सब इसलिए किया जा था कि सरकार को भय था कि कहीं राष्ट्री कावाबाज सैनिक पूरी मालगुजारी की आमदनी ल न लें। अब हमें यह देखना है कि जनता ने इ फौजी और आर्डिनेन्सी राज्य को, जिसे दूसरे शब्द में अराजकता कहा जा सकता है, उसके का कारनामों के लिए कैसे जवाब दिया।

Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

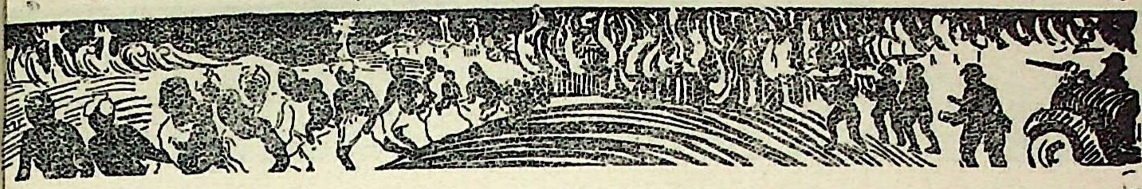

आम हड़ताल और कामबन्दी

गुजरात का आन्दोलन आम हड़ताल और कामबन्दी के साथ आरम्भ हुआ जो कुछ जगहों पर तीन दिन और कुछ जगहों पर तीन महीने तक जारी रहा। नदियाद में एक मास तक और अहमदाबाद में साढ़े तीन महीने तक आम हड़ताल और कामबन्दी रही। अहमदाबाद की हड़ताल अपने ढंग की निराली थी और इस स्वातंत्र्य संग्राम में उसका महत्त्वपूर्ण स्थान है। पूरे साढ़े तीन महीने तक सभी बाजार, कारखाने और मिलें बन्द रहीं तथा हड़ताल तोड़ने की सरकारी और सरकार के एजेन्टों की कोई भी कोशिश कारगर न हो सकी। इस हड़ताल का सम्पूर्ण श्रेय मजदूरों को प्राप्त है, जिन्होंने इतने दिनों तक की अपनी मजदूरी खो दी और इसे सफल बनाने के लिये अनेकानेक कष्ट सहन किये। यदि कुछ स्वार्थी मिल-एजेन्टों ने हड़ताल खत्म करने की कोशिश न की होती तो वह दो महीने तक और जारी रहती।

आम हड़ताल के दिनों में जनता ने अभूतपूर्व अनुशासन का परिचय दिया। लोगों ने कांग्रेस कार्य-कर्त्ताओं की आज्ञा का अक्षरशः पालन किया। उसका परिचय तो उस दिन मिला जब सवारी बन्दी दिवस मनाया गया। उस दिन कांग्रेस के सवारी नियंत्रकों के अतिरिक्त कोई भी नागरिक सड़कों पर दिखाई नहीं देता था।

छात्र सब से आगे

राष्ट्रीय संग्राम में छात्रों का कर्त्तव्यपालन अभूतपूर्व था। उन्होंने इस आन्दोलन में इतने शौर्य और साहस का परिचय दिया, जिसका परिचय और कभी नहीं मिला था। आम हड़ताल के बाद का महत्वपूर्ण कार्य स्कूलों और कालेजों का बहिष्कार था। यह बहिष्कार कई महीनों तक जारी रहा। अहमदाबाद, बड़ौदा और सूरत में स्कूल-कालेजों का बहिष्कार ६ महीने तक जारी रहा। स्कूल-कालेजों का बहिष्कार करने वाले छात्र अपने घर बेकार नहीं बैठे रहे। सभाओं और जुलूसों की मनाही की फासिस्ट, अत्याचार पूर्ण और अन्याय पूर्ण आज्ञाओं का उल्लंघन कर वे इस संग्राम में अपने कर्त्तव्य का पालन करते थे।

यह गुजरात के सभी जिलों तथा नगरों में हुआ करता था। छात्र लोग अपना कर्त्तव्यपालन इस खूबी से करते थे कि सरकारी हुकूमत लादने की पूरी कोशिशें बेकार और बेवकूफी से भरी हुई

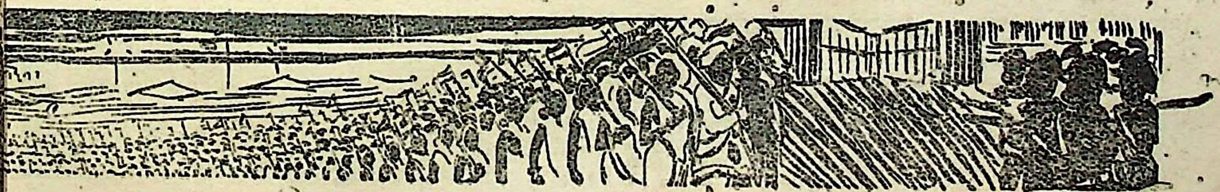

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मालूम होती थीं। कई छात्र देश की स्वतंत्रता की बलिवेदी पर शहीद हो गये।

श्रीविनोद किनारीवाला राष्ट्रीय झण्डे के सम्मान की रक्षा करते हुए पुलिस की गोलियों के शिकार हो गये। श्री रसिक जानी, श्री पुष्पवदन, श्री गोवर्धन शाह और श्री हिम्मतलाल केडिया विदेशी सरकार के अत्याचारों का सामना करते हुए राष्ट्रीय स्वतंत्रता की ज्योति अमर बनाये रखने के लिए शहीद हो गये। इनके अतिरिक्त अगणित बालक और बालिकाएं हैं, जिन्होंने इतनी ही वीरता के साथ अपने देश के सम्मान की रक्षा के लिए इस संग्राम में महत्वपूर्ण भाग लिया।

दो महत्वपूर्ण घटनाएँ

यहाँ भड़ौच जिले के एक गाँव और खेड़ा जिले के आडास गाँव की दो घटनाओं का वर्णन कर देना आवश्यक है, जिसमें विदेशी सरकार ने जी भर कर अमानुषिक अत्याचार किये और छात्रों ने शांति, साहस और निर्भयतापूर्वक इन अत्याचारों का सामना किया। वे दोनों घटनाएँ महत्त्वपूर्ण हैं।

लगभग १०० छात्रों का एक दल बड़ौदा से बम्बई जानेवाली रेल पर सवार हुआ। उनका काम प्रचार करना था। उनका इरादा था कि रेल के जितने डिब्बों पर सम्भव हो सके, उतने डिब्बों पर नारे लिखे हुए पोस्टर चिपकाये जायँ या नारे खरिया से लिखे जायँ। उन्हें पर्चे और गिरफ्तारी के पूर्व का महात्माजी का अन्तिम सन्देश जनता में बाँटना था। उन्हें यह कार्य पूरा करने और तार आदि में बाधा न पहुँचाने का आदेश दिया गया था। उन्होंने इन आदेशों का कठोरतापूर्वक पालन किया। किन्तु, उन्हें भड़ौच स्टेशन पर उतार दिया गया। उन लोगों को ट्रेन से उतारने के लिए १०० पुलिस कान्स्टेबलों का दल तैयार था। उन्हें वहीं २४ घण्टे तक रोक रखा गया और बादमें उसी स्थान को लौट जाने को कहा गया, जहाँ से वे आये थे। यह भी तब हुआ जब उन लोगों ने यह आश्वासन दिया कि जो काम हम करना चाहते हैं, उसके अतिरिक्त और कुछ नहीं करेंगे। यह १५ अगस्त की घटना है।

आडास की घटना—१८ अगस्त

भड़ौच की घटना के दो दिन बाद ३४ छात्रों का एक दल बड़ौदा से उसी कार्य को करने के लिए आनन्द की ओर रवाना हुआ और वह अपना काम पूरा कर बड़ौदा के लिए शाम की गाड़ी पकड़ने के लिए आडास स्टेशन की ओर तेजी के साथ जा रहा था। जिस समय यह दल शीघ्र स्टेशन पहुँचने के लिए एक संकरी गली से गुजर रहा था, उसकी खोज

Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

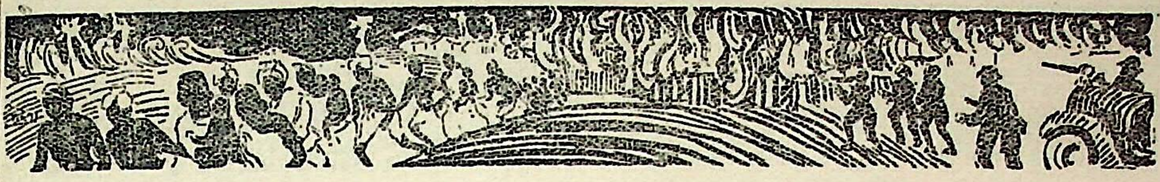

करने के लिए निकले हुए राइफलों से लैस ६ कान्स्टेबलों ने उसे रोक लिया और बैठ जाने को कहा। उन लोगों ने पुलिस की आज्ञा मान ली और बैठ गये। उन लोगों का ख्याल था कि पुलिसवाले या तो उन्हें लाठियों से मारेंगे, या गिरफ्तार कर लेंगे। इसके बाद पुलिसवालों ने बन्दूकों की नोक उनकी छाती से सटा कर गोली चलायी। दो या तीन छात्रों के सीने में गोलियाँ घुस गयीं। ५ छात्र तो वहीं शहीद हो गये और १२ बुरी तरह घायल हुए। घायलों में से भी एक बाद में अस्पताल में मर गया। इतना ही नहीं कि पुलिसवालों ने इन पाँच आदमियों को मार डाला, बल्कि उन लोगों ने घायलों को पानी तक पिलाने से इनकार कर दिया। यह है ब्रिटिश सरकार के कर्मचारियों की मानवता! घायल इसी प्रकार ७ बजे शाम से आधी रात तक पड़े रहे, जब तक कि फौजदार नहीं आगया। उसने मृतकों की लाश जनता को सौंप दी और घायलों को आडास स्टेशन पहुँचाया।

म्युनिसिपैल्टियाँ और जिला बोर्ड

म्युनिसिपैल्टियाँ और जिला बोर्ड भी संग्राम में अपने कर्त्तव्य का पालन करने में पीछे नहीं रहे। इन संस्थाओं ने काँग्रेस के अगस्त प्रस्ताव का समर्थन करते हुए प्रस्ताव पास किए। अहमदाबाद और सूरत की म्युनिसिपैल्टियाँ तथा कई जिला और स्कूल बोर्ड आज तक इसी अपराध में मुअत्तल हैं।

इसके अतिरिक्त अहमदाबाद के कई म्युनिसिपल अफसर बाहर निकल आये और काम करने से इनकार कर दिया। इनमें से कई इसी कारण से नौकरी से अलग कर दिये गये। दूसरे कई म्युनिसिपल कर्मचारियों ने, विशेषकर अध्यापकों ने, नौकरी से इस्तीफा दे दिया।

विध्वंसकार्य

यातायात के साधनों को गुजरात में उतनी हानि नहीं पहुँचाई गई, जितनी संयुक्तप्रान्त में। किन्तु जितना किया गया वह सब अच्छी तरह आयोजित रूप से और सफलता पूर्वक किया गया। सूरत और बड़ौदा के बीच कई मील तक तार काट डाले गये और काठियावाड़ में कुल तीन जगह रेलगाड़ियाँ गिरा दी गईं। इन जगहों में से एक तो कालोल आर० एम० रेलवे पर पालधर के पास, दूसरी टी० वी० लाइन पर टिम्बारवा के पास और तीसरे बी० बी० ऐण्ड सी० आई० रेलवे पर आम लसाड के पास गिराई गई। दो बार, एक बार १९ मई १९४४ को और दूसरी बार ९ मई १९४५ को, रेलगाड़ियाँ रोक कर डाक के डिब्बे लूट लिए गए और डाक जला दी गई।

खेड़ा जिले में ३० से अधिक डाक के हरकारों को लूट लिया गया और डाक जला दी गई। एक

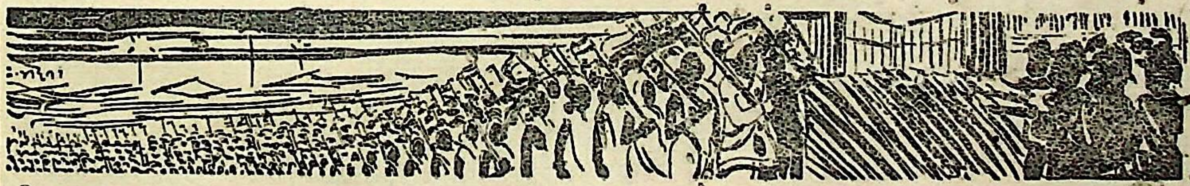

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बार तो खेड़ा और अहमदाबाद के बीच डाक ले जानेवाली गाड़ी लूट ली गई और जला दी गई। इन कार्यों का उद्देश्य डाक-विभाग को हानि पहुँचाना था।

नदियाद में इनकम टैक्स का दफ्तर, अहमदाबाद में डास्कोई के मामलतदार का दफ्तर, और भड़ौच जिले के वागड़ा तालुक के सरमान गाँव का सरकारी गल्ले का स्टोर फूँक डाला गया। गुजरात के प्रायः सभी जिलों में विशेष कर सूरत जिले के जलालाबाद तालुक में बहुत सी चावड़ियाँ जला दी गईं। इन जगहों पर शराब की बिक्री हुआ करती थी।

ताकत की आजमाइश

प्रतिबन्धों के विरुद्ध जुलूस निकालनेवाली जनता और पुलिस के बीच जलालपुर तालुक के सववाड़ कराडी गाँव में मुठभेड़ हो गई। पुलिस ने अनावश्यक रूप से जनता को उत्तेजित किया। इस मुठभेड़ में पुलिस ने ८ या ९ ग्रामीणों को मार डाला। इसके बदले में ग्रामीणों ने पुलिस दल को अपने काबू में कर उसकी ४ राइफलें छीन लीं। यह अगस्त १९४२ के दूसरे या तीसरे हफ्ते की घटना है।

पुलिस थानों पर हमला

इस प्रकार के हमलों में सब से गम्भीर हमले १९ सितम्बर १९४२ को जम्बूसार तालुक के वेड़च थाने पर, दिसम्बर १९४२ में भड़ौच जिले के वागड़ा तालुक के सारमान थाने पर और मई १९४३ में पंचमहाल के अम्बाली थाने पर हुए थे। इन सभी हमलों में, थानों में जितनी बन्दूकें और राइफलें थीं सब लूट ली गईं। यह स्मरण रखने की बात है कि इन सब हमलों में किसी की भी व्यक्तिगत सम्पत्ति पर हाथ तक नहीं लगाया गया। कहा जाता है कि इन हमलों के फलस्वरूप भड़ौच जिले के सभी थाने कई महीने तक के लिए हटा लिए गए थे।

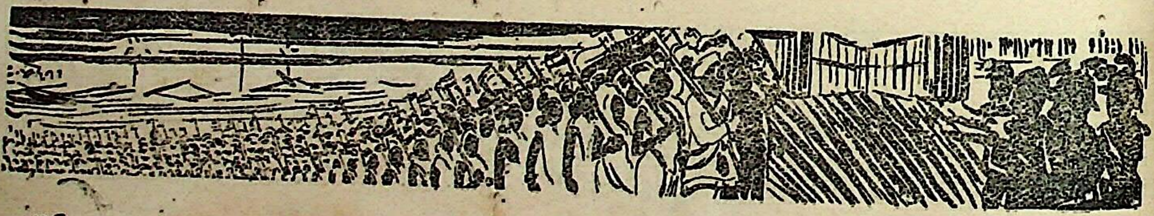

... Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर्नाटक में शासन-कार्य असम्भव कर दिया गया

लोगों को नंगा कर चूतड़ पर बेंत लगाया गया !

"इसी क्षण से तुम अपने को स्वतंत्र समझो और उसी के अनुसार कार्य करना आरम्भ कर दो", यह था ८ अगस्त १९४२ की निर्णयकारी संध्या को दिया गया महात्मा गांधी का सन्देश। कर्नाटक ने इस आज्ञा का पालन किया, नेताओं और कार्यकर्त्ताओं ने प्रत्येक सरकारी आज्ञा का उल्लंघन किया और सरकार के कार्य-संचालन में प्रत्येक सम्भव उपायों से बाधा पहुँचाई।

१८५७ के बाद जनता के असन्तोष ने इतना प्रबल और व्यापक स्वरूप और कभी नहीं ग्रहण किया था। उन दिनों दिन-रात पुलिस और फौज गाँव गाँव में घूम-कर विध्वंसकारियों का पता लगाया करती थी। कभी कभी तो ऐसा होता था कि तड़के पुलिस और फौज सारे गाँव को घेर लेती थी, प्रत्येक घर के दरवाजे पर पुलिस वालों का पहरा बैठ जाता था, सारे गाँव की तलाशी ली जाती थी, पर उनका दुर्भाग्य होता था कि उन्हें निराश ही लौटना पड़ता था। उन्हें कोई भी फरार या विध्वंसकारी नहीं मिलता था। फरारों की गिरफ्तारी के लिए ५००० रुपयों तक के इनाम की घोषणा होने पर भी देश भक्त फरारों का पता बताने के लिए कोई तैयार नहीं होता था। जब कि सभी "कानूनी" उपाय समाप्त हो गए, तब फरारों के नजदीकी रिश्तेदारों और घरवालों की बारी आयी। गाँव के गाँव गिरफ्तार किए गए और उन्हें खूब सताया गया। इन परिस्थितियों में अधिकांश फरारों ने अपने घरवालों और रिश्तेदारों को अपमान और अत्याचार से बचाने के लिए आत्म समर्पण कर दिया। १९४३ के अन्त तक करीब ४००० कर्नाटकी आमवसी, हिण्डालगी, पखड़ा, विसपुर और दूसरे जेलों में ब्रिटिश सरकार की मेहमानदारी करने लग गए थे।

प्रदर्शन

दूसरी जगहों की तरह कर्नाटक में भी बहुत बड़ी संख्या में सभाएँ हुईं और जुलूस निकले। कुछ प्रदर्शनों पर सरकार की ओर से बल प्रयोग हुआ और कुछ तितर-बितर कर दिये गये। हुबली में पुलिस की गोलियाँ खाकर एक लड़का मर गया और बेलहों गाँव में पुलिस की गोलियों से सात आदमी घायल हुए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहीं कहीं प्रदर्शनकारियों का रुख आक्रमणात्मक हो जाता था और डाकखाने और दूसरी कुछ सरकारी इमारतें जला दी गईं। इस प्रकार का कार्य करने वाले प्रदर्शनकारी मारे गये। सौण्डहट्टी में एक बहुत बड़ी भीड़ ने सब जेल को घेर लिया और एक कैदी को छुड़ा लिया। कई छात्रों को भी प्रदर्शनों में भाग लेने के अभियोग में सजाएँ दी गईं।

विध्वंस कार्य

१५ सितम्बर को जब यह खबर मिली कि हुबली के आस पास ४ रेलवे स्टेशन जला डाले गये या क्षति ग्रस्त किये गये तो बड़ा तहलका मच गया। इसी प्रकार की हानि दूसरी सरकारी सम्पत्ति को पहुँचाई गई। डाक बंगले बहुत बड़ी संख्या में जलाए गए। १५ रेल स्टेशन जला डाले गए, हथियारों से लैस लोगों के हथियार छीन लिए गए, चावड़ियाँ पटवारियों के दफ्तर, पटेलों के दफ्तर जला डाले गए। कहीं कहीं सरकार द्वारा एकत्र अन्न छीन लिया गया और सरकारी मालगुजारी लूट ली गई। यह सब बेलगाँव, धारवाड़, बीजापुर, और कनारा जिलों के गावों में हुआ। इन सब घटनाओं के पीछे समूचे प्रांत का घोर असन्तोष था।

चारों ओर अव्यवस्था के होते हुए भी जो कुछ हुआ, वह व्यवस्थित रूप से हुआ। एक ही दिन आपको कई डाक बंगले जलते हुए नजर आते। दूसरे दिन आप देखते कि दो-दो सौ मील तक तार औ टेलिफोन के तार काटे जा रहे हैं। तीसरे दि ५००० मील तक के गाँवों में किसानों का संगठि दल दिखाई पड़ता और ऐसा मालूम होता कि स शक्तिमान सरकार अपने पास सब कुछ होते हुए भ कुछ नहीं कर पा रही है।

अत्याचार की पराकाष्ठा

६ महीने तक पाँच हजार पुलिस और तीन स अफसरों की सहायता से आन्दोलन के उत्तरदायियों से अनेक गिरफ्तार कर जेलखानों में मेहमानदारी कर के लिए भेज दिये गए। इस प्रकार कुछ समय लिए "विध्वंसकारियों" का खतरा सरकार के लि दूर होगया। इन बन्दियों पर आन्दोलनकारि का पता लगाने के लिए जो अत्याचार औ अमानुषिक व्यवहार किया गया, उसकी बड़ी ब कहानियाँ हैं। पूरा विवरण तो विस्तृत जाँच के बा मालूम होगा। पुलिसवाले रात में गश्त पर जाया कर थे, गाँववालों को जगाया करते थे और यदि उनमें कोई भागने का प्रयत्न करता था तो उसे पकड़ क खूब पीटा जाता था। जाँच के समय गिरफ्तार लो को नंगाकर चूतड़ पर तब तक बेंत लगाए जाते जब तक वे पूर्ण विवरण न बता दें या जब त वे बेहोश न होजाँय।

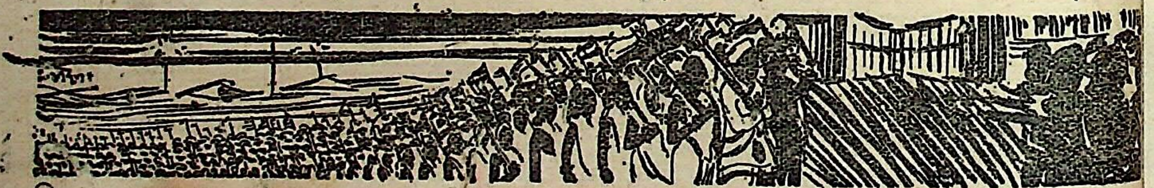

Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० राजेन्द्र प्रसाद

आप पटने में ही गिरफ्तार कर लिए गये ।

"कभी तो वह भी दिन होगा, जब अपना राज देखेंगे ।
जब अपनी ही जमीं होगी औ अपना आसमाँ होगा ॥"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीमती सरोजिनी नायडू

महात्मा गाँधी के साथ आप भी गिरफ्तार की गईं थीं।

"वतन हमेशा शाद काम और आज़ाद रहे।
हमारा क्या है, अगर हम रहे या न रहे॥"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मिदनापुर में क्या हुआ ?

लूट, हत्या और व्यभिचार की रोमांचक कहानी

परिचय

मिदनापुर जिले में तामलुक सब-डिवीजन है। इस सब-डिवीजन में छः थाने हैं—सुताहाट, नंदीग्राम महिषादल, तामलुक, आयना तथा पंसकुरा। संपूर्ण सब-डिवीजन में केवल तामलुक में ही म्युनिसिपैलिटी है। यहाँ की आबादी बारह हजार है। सब-डिवीजन में ७६ यूनियन हैं, जिनमें १३४६ बस्तियाँ हैं। कुल आबादी ७५३१५२ और परिवारों की संख्या १४३२०० है।

आंदोलन के पूर्व की स्थिति

संपूर्ण सब-डिवीजन विस्फोट का एक महान् अड्डा बन गया था। 'भारत छोड़ो' के प्रस्ताव तथा नेताओं की गिरफ्तारी ने इसमें आग डाल दी। अधिकारियों की दमन-नीति के कारण यह पहले से ही कार्य-क्षेत्र तैयार हो गया था। जनसाधारण के विरोध के बावजूद भी यहाँ अन्यायपूर्वक सेस-लगान बढ़ा दिया गया था। लोगों की संपत्ति को उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाता था। वस्तुओं की कीमत बेतरह बढ़ी जा रही थी। अनुचित दबाव डालकर 'वार बौंड' बेंचा जा रहा था। धनी-गरीब, शिक्षक-वकील, दुकानदार-मलाह सबके लिए यह बौंड खरीदना अनिवार्य कर दिया गया तथा उनसे 'वार फंड' का चंदा भी वसूला गया। इस सब-डिवीजन में आवागमन के मामूली साधन भी नहीं रहने दिये गये, जैसे—नाव, साइकिल, बस वगैरह सब-के-सब हटा दिये गये। फलस्वरूप अवश्यंभावी अकाल की छाया पहले से ही दिखाई पड़ने लगी। इन सारी बातों से ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध वातावरण तैयार हो गया और लोग दिनोंदिन विदेशी हुकूमत को दूर करने और अपने देश को स्वतंत्र करने के लिए दृढ़तर होते गए।

अनेक सभाएँ हुईं। युद्ध-परिस्थिति, बंबई के प्रस्ताव तथा अहिंसात्मक विद्रोह के विषय पर बहसें होती थीं। इन सभाओं तथा जुलूसों में ५ से १० हजार तक लोग एकत्र होते थे। हिंदू तथा मुसलमान दोनों इसमें सम्मिलित होते थे तथा लॉ कोर्ट, सरकारी ऑफिस और थानाओं के सामने बड़े झुंड में प्रदर्शन करते थे। उन स्थानों पर बड़ी-बड़ी सभाएँ भी हुईं जिनमें ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध युद्ध की घोषणा हुई और प्रत्येक थाना स्वतंत्र घोषित किया गया। इन सभाओं तथा जुलूसों का नेतृत्व कांग्रेस के स्वयंसेवक करते थे। ये सारे काम शांतिपूर्वक चल रहे थे। महिषादल थाने में राष्ट्रीय स्वयंसेवकों के एक दल ने थाने के सामने ही सभा करके स्वतंत्र होने की घोषणा की। तामुलुक के एस० डी० ओ० श्री शेख, आई० सी० एस० कुछ कांस्टेबलों के साथ वहाँ उपस्थित थे। उन्होंने चार वक्ताओं की गिरफ्तारी का हुक्म दिया, किन्तु उपस्थित भीड़ ने उन्हें गिरफ्तार होने देना अस्वीकार कर दिया। इस पर श्री शेख ने लाटी-चार्ज का हुक्म दिया। किन्तु, कांस्टेबल अपने स्थान से नहीं टले। श्री शेख हक्काबक्का होकर कांस्टेबलों के साथ लौट गये। २९ अगस्त के पहले सभा में पुलिस के हस्तक्षेप की यह पहली घटना थी। ऐसी सैकड़ों सभाएँ हुईं होंगी; किन्तु दो-चार को छोड़कर सरकार ने किसी में भी किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं किया।

अगस्त का विद्रोह

संपूर्ण सब-डिवीजन में कई बार हड़तालें मनाई गईं; विशेषकर महात्माजी तथा अन्य नेताओं और स्थानीय नेताओं के गिरफ्तारी के मौके पर। दानीपुर में गोली चलने तथा २९

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

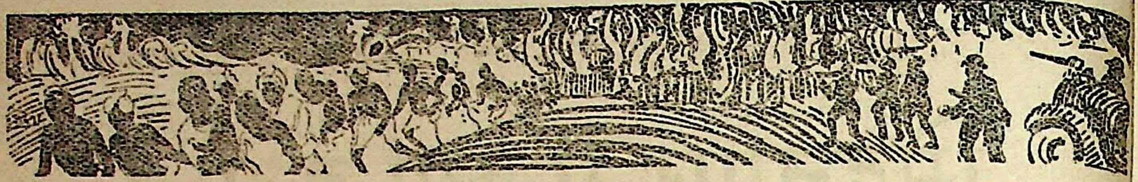

अगस्त के दिन स्वतंत्रता की घोषणा होने और राष्ट्रीय सप्ताह मनाने पर अन्य स्थानों पर जो गोलीकांड हुए, उनके लिए भी हड़तालें मनाई गईं। राष्ट्रीय झंडोत्तोलन-उत्सव भी बड़े ही समारोहपूर्वक मनाए जाते थे।

सब-डिवीजन भर के विद्यार्थी हड़ताल करने लगे और सुसंगठित सभाएँ और जुलूस निकालने लगे। इस विषय में तामलुक हेमिल्टन हाई स्कूल के विद्यार्थियों ने नेतृत्व ग्रहण किया। अनेक स्कूल अनिश्चित काल के लिए बंद कर दिये गये। सब-डिवीजन के ५०० विद्यार्थियों तथा शिक्षकों ने विद्रोह में भाग लिया। अनेक स्कूल-भवनों में बहुत काल तक सैनिकों का अड्डा बना रहा।

सेंसर की बुराइयों तथा सरकारी पोस्टल व्यवहार बंद होने की संभावना पहले से ही की जा रही थी; इसलिए पत्र-व्यवहार का प्रबंध पहले से ही कर रखा गया था और सब-डिवीजन की प्रत्येक शाखा कांग्रेस कमिटी से यहाँ तक कि प्रांतीय सभा से भी संबंध स्थापित कर लिया गया था। इस सब-डिवीजन में लेथो मेशीन से 'विप्लवी' नामक एक नियमित समाचारपत्र निकलने लगा। सुताहाट, महिषादल तथा नंदीग्राम से भी सामयिक बुलेटिन प्रकाशित होते थे।

युद्ध के आरंभ होने से बहुत पहले ही अनेक शिविर स्थापित हो चुके थे। युद्धारंभ से शिविर और स्वयंसेवकों की संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती गई। सरकारी फौजों ने इन शिविरों को नष्ट कर दिया, उनमें आग लगा दी और उनके निकट जिन लोगों के मकान थे उनको बहुत तंग किया। राष्ट्रीय स्वयंसेवकों की हिम्मत जरा भी नहीं घटी—उन्होंने नये शिविर उन्हीं बस्तियों में या आस-पास की बस्तियों में बना लिए। कई शिविर अनेक बार जला डाले गए और स्वयंसेवकों ने बार-बार उन्हें तैयार भी कर लिया। जब यहाँ तूफान आया था, गृहहीन लोगों ने पहले इन्हीं शिविरों को तैयार करने की व्यवस्था की। जब इस सब-डिवीजन में निषेधाज्ञाएँ जारी हुईं तो केवल तामलुक शहर के कर्फ्यू आर्डर को छोड़कर लोगों ने सबका उल्लंघन किया।

इसके पश्चात् जनसाधारण से सरकार का एकदम बायकाट करने को कहा गया। फलस्वरूप लॉ कोर्ट तो प्रायः खाली ही रहता था। रजिस्ट्री ऑफिस का भी बहिष्कार किया गया।

विशेषकर मिदनापुर डिस्ट्रिक बोर्ड सरकार का कोपभाजन बना, कारण यह था कि कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने उसका बहुत उपयोग किया। १९३० में भद्र-अवज्ञा-आंदोलन के आरंभ होने पर सरकार ने इसे अपने हाथों में कर लिया था। प्रायः १९४० तक इस पर सरकारी तथा अन्य लोगों का, जो किसी को प्रतिनिधित्व नहीं करते थे, अधिकार रहा। १९४० में पुनः यह कांग्रेस कार्यकर्ताओं के हाथ में चला आया। ८ नवंबर को सरकार ने लोकल बोर्ड को भी अपने हाथों में कर लिया। बहुत से यूनियन बोर्ड भी कांग्रेस के अधीन थे। जब राष्ट्रीय युद्ध आरंभ हुआ, सदस्यों ने यूनियन-कर वसूलना छोड़ दिया और केंद्रीय अफसरों से अपना संबंध-विच्छेद कर लिया। चौकीदार तथा दफादारों की पोशाक एकत्र करके जला दी गई। कांग्रेस-कार्य में सहयोग नहीं देनेवाले यूनियन बोर्ड पर कांग्रेस-जनों ने अधिकार जमा लिया और उसके सारे कागजात नष्ट कर दिये गये। कांग्रेस-कार्य में सहयोग देने के कारण तीन यूनियन बोर्डों पर सरकार ने अपना अधिकार कर लिया। कांग्रेस की ओर से लोगों से किसी प्रकार का टैक्स और लगान देना बंद कर देने को कहा गया।

जनसाधारण में असंतोष बढ़ रहा था और वे सरकारी पदों को अपने हाथों में करना चाहते थे। २९ सितंबर की सभा में यह विचार तय हुआ कि थाने, इजलास और दूसरे सरकारी केंद्रों पर एक ही साथ आक्रमण किया जाए। निश्चित

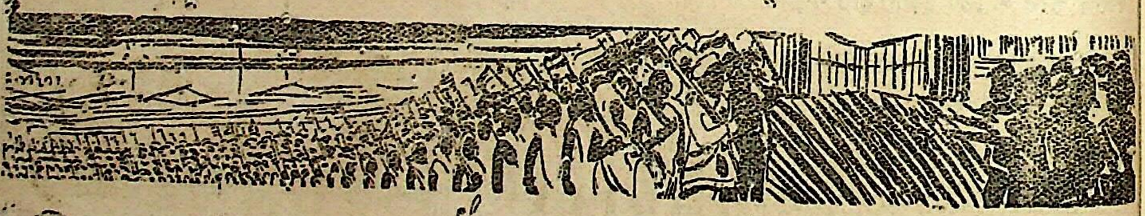

Shivala Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

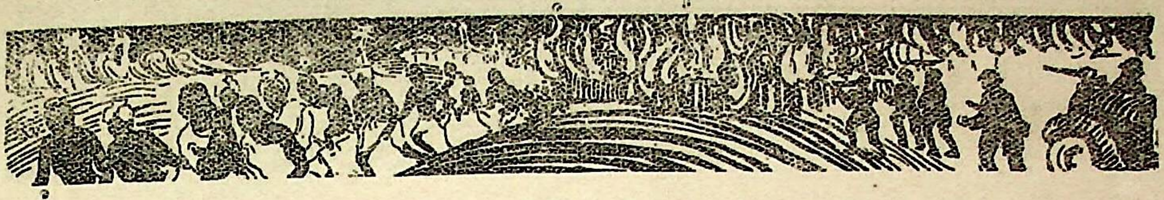

दिन से पाँच दिन पूर्व ही इस विषय का पूरा विवरण कार्यकर्त्ताओं को दे दिया गया। इस कार्य में प्रायः एक लाख हिंदू-मुस्लिम सम्मिलित हुए। किसी विशेष कारण से पंसकुरा तथा मायना थाने पर आक्रमण नहीं किया गया।

२८ तारीख की रात में तामलुक तथा पंसकुरा की मुख्य-मुख्य सड़कों को अवरुद्ध करने के लिए बड़े-बड़े पेड़ काटकर गिरा दिये गये। कुराहाटी से बालूघाट जानेवाली सड़क की भी यही हालत हुई। ३० छोटे-छोटे पुल तोड़ डाले गये और अनेक स्थानों पर सड़कें काट डाली गयीं। ५७ मील तक तार तथा टेलीफोन का लगाव भी तोड़ डाला गया और १९४ खंभे उखाड़ डाले गये। कोशी तथा हुगली नदियों पर की नावें तोड़ कर नदी में डुबा दी गयीं। उसी रात इन वातों की खबर सरकार को भी लग गयी। सरकारी कर्मचारियों ने किर्च के बल पर लोगों से इन चीजों का सुधार करवाना आरंभ कर दिया। २९ तारीख को दो बजे दिन तक तामलुक से पंसकुरा जानेवाली सड़क करीब-करीब साफ कर ली गयी और मोटर जाने लायक बन गयी। दूसरी सड़कों की मरम्मत में १०-१२ दिन लगे। नाव द्वारा आवागमन ठीक करने में भी १५ दिन से कम समय नहीं लगा होगा। तामलुक सब-डिवीजन के तीन थाने पर एक ही दिन आक्रमण हुआ। नंदीग्राम थाने पर कल होकर चढ़ाई हुई। जितने भी वीर इन आक्रमणों में काम आए सबकी छाती पर ही गोलियाँ लगी थीं या सामने के दिल भाग में। आक्रमण के मुख्य लक्ष्य थे सरकारी केंद्र तथा थाने। एक सप्ताह के भीतर निम्नलिखित स्थान जला दिए गये तथा नष्ट कर दिये गये—एक थाना, दो पुलिस नाका, दो सब-रजिष्ट्री ऑफिस, तेरह पोस्ट ऑफिस, नौ यूनियन बोर्ड ऑफिस, दस पंचायत ऑफिस, बारह शराब की दूकानें, चार डाक बंगला तथा महिषादल राज्य के तेरह आफिस। ३५० चौकीदारों की पोशाक जला डाली गयी। तेरह सरकारी अफसरों को गिरफ्तार किया गया, उनमें पुलिस अफसर भी थे। अपने सरकारी पदों से इस्तीफा देने की प्रतिज्ञा करने पर इन्हें छोड़ दिया गया और उनके घर पहुँचने का किराया दे दिया गया। उनमें से किसी के साथ दुर्व्यवहार नहीं किया गया। छः राइफलें तथा कुछ तलवारें विद्रोहियों के हाथ लगीं। आक्रमण का पूरा विवरण नीचे दिया जाता है।

तामलुक की घटनाएँ

पूर्वनिश्चित प्रोग्राम के अनुसार पाँच विभिन्न जुलूस शहर में तीन बजे दिन में एकत्र हुए। प्रत्येक जुलूस में हिन्दु-मुस्लिम दोनों थे और स्त्रियाँ भी बड़ी संख्या में रहती थीं। संपूर्ण शहर में काली तथा गोरी फौजें भर गई थीं। शहर को आनेवाली सारी सड़कों पर लाठीबंद सिपाही उनकी रक्षा के लिए रखे गये थे। उनके पास राइफलें भी थीं। जुलूसवाले बराबर शांतिपूर्ण तथा अहिंसात्मक बने रहे।

पश्चिम की ओर से प्रायः आठ हजार विद्रोहियों का एक बड़ा जुलूस थाने के निकट पहुँचा कि श्री मनींद्रनाथ बनर्जी ने सिपाहियों को लाठी-चार्ज करने का आदेश दिया। लाठी-चार्ज हुआ, किंतु इससे जुलूसवाले थोड़ा भी विचलित नहीं हुए बल्कि और आगे बढ़े। पुलिस ऑफिसर ने गोली चलाने का हुक्म दिया। तुरत ही अंधाधुंध गोली चलना आरंभ हो गया। पाँच विद्रोहियों को गोलियाँ लगीं। भीड़ गोलियों की वर्षा से तितर-बितर हो गयी। घायलों की संख्या का ठीक-ठीक पता नहीं लग सका। कुछ विद्रोहियों पर गोली-कांड का कुछ भी असर नहीं हुआ—वे थाने पर पहुँचे। राइफल लिए हुए सिपाही भी थाने पर पहुँचे और वहीं से गोली चलाना आरंभ कर दिया। एक वीर विद्रोही को गोली लगी और वह वहीं ढेर हो गया। शेष लोग सीधे हटे। घायलों की सेवा-सुश्रूषा उनके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सहकर्मी-जन करने लगे और अनेक को रामकृष्ण-सेवा-आश्रम में ले गये। कई घायलों को सिपाहियों ने जबर्दस्ती छीन लिया जैसे श्रीयुत रामचन्द्र बेरा को। उनका पैर पकड़कर वे उनको घसीटकर सड़क की दूसरी ओर ले गये। उनके घावों से खून बेतरह निकल रहा था। उनको थाने के अहाते के सामने छोड़ दिया गया। इनको जब होश आया, वे गोली लगे हुए ही थाने की ओर घसीटते चले और बोले—हाँ, मैं यहाँ हूँ—थाने पर अधिकार कर लिया।' इन शब्दों के साथ उनका दम टूट गया।

उत्तर की ओर से दूसरा जुलूस आया, जिसका नेतृत्व ७३ वर्षीया श्रीमती मतंगिनी हाजरा कर रही थीं। इस भीड़ ने अनिलकुमार भट्टाचार्जी के अधीन काम करनेवाले सिपाहियों का सामना किया। सिपाहियों ने इस भीड़ पर आक्रमण किया और लोगों को बानपुकुर की ओर, जो घेरा-सा रास्ता था, चला जाना पड़ा। लक्ष्मीनारायण नामक एक लड़का सिपाहियों की भीड़ में घुस पड़ा और एक बंदूक छीन ली। सिपाहियों ने उसे निर्दयतापूर्वक पीटा। इस पर श्रीमती हाजरा के नेतृत्व में विद्रोहीगण पुनः सिपाहियों की ओर बढ़े। सिपाहियों ने गोली बरसाना शुरू किया। श्रीमती मतंगिनी राष्ट्रीय झंडे को मजबूती से पकड़े आगे बढ़ीं। एक सिपाही ने उनके हाथों पर जोर से डंडा मारा। उनके हाथ नीचे गिर गये, किंतु झंडा नीचे नहीं गिरा क्योंकि वह अब भी उनके हाथ में जकड़ा हुआ था। इतना होने पर भी मतंगिनी निर्भीकतापूर्वक आगे बढ़ती गईं। इसका उत्तर उनको एक गोली से मिला जो उनके सिर में लगी और वह गिर पड़ीं। यद्यपि वह गिर पड़ीं, तथापि उनके खून से अभिमंत्रित झंडा अभी भी उनके शरीर पर फहरा रहा था। एक सरकारी सिपाही आया और झंडे को, ठोकर देकर गिरा दिया। उनके पीछे कई मृत व्यक्तियों के शरीर पड़े थे। वे थे लक्ष्मीनारायण (तेरह वर्ष का युवक) नगेन्द्रनाथ सामंत तथा जीवनचंद्र बेरा। अनेक व्यक्ति घायल थे। कुछ घायल व्यक्तियों को इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया। यहाँ भी सिपाहियों ने घायलों की सेवा करने में हस्तक्षेप किया। एक स्त्री एक घायल विद्रोही की सेवा कर रही थी, उसने पानी माँगा। उस स्त्री ने नजदीक के तालाब में साड़ी भिंगो ली और उसको पिलाने के लिए पानी लाई। एक सिपाही ने उस स्त्री को ओर बंदूक का इशारा करते हुए कहा—'पानी पिलाना बंद करो'। उस स्त्री ने जवाब दिया—मुझे मार डालो, मैं तुम्हारी धमकी से डर नहीं सकती।' सिपाही को उस पर गोली चलाने की हिम्मत नहीं हुई।

दक्षिण की ओर से एक दूसरा झुंड आया। ज्यों ही भीड़ संकराराह पुल पर पहुँची थी कि सिपाहियों ने गोली चलाना शुरू कर दिया। फलस्वरूप निरंजन जाना (१७ वर्ष) की जान गयी तथा पूर्णचंद्र एक २२ वर्षीय युवक घायल हुआ जो दो दिनों के बाद मर गया। बहुत से विद्रोही घायल हुए। स्वयंसेविकाओं ने उन्हें जल पिलाया। कुछ सिपाहियों ने इन स्वयंसेविकाओं को खदेड़ा भी। ये वीर स्वयंसेविकाएँ तरकारी बनाने की हँसिया के साथ लौटीं और कहने लगीं अगर तुम हमें इन घायलों की सेवा नहीं करने दोगे तो हम लोग इन्हीं से तुम्हें कतर देंगी।' इस पर सिपाहियों ने उन्हें अपने काम में हस्तक्षेप नहीं किया। कुछ घायल व्यक्ति अस्पताल ले जाए गये और कुछ घर।

दक्षिण-पश्चिम की ओर से प्रायः तीन हजार व्यक्तियों का एक झुंड आया। श्री अपूर्व घोष इस समय सैनिकों का नेतृत्व कर रहे थे। उन्होंने भीड़ को संबोधित करते हुए कहा—'जो गोली खाकर मरना चाहते हैं, आगे आवें।' विद्रोहीदल, जिनमें एक स्त्री भी थी और जो जुलूस का नेतृत्व कर रही

Rajghat Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

थी, निर्भीकतापूर्वक आगे आए। ये लोग चालाकी से गिरफ्तार कर लिये गये और शेष व्यक्तियों पर लाठी-चार्ज किया गया। गिरफ्तार किये गये विद्रोहियों को बड़ी मार लगी। उसके बाद उन्हें छोड़ दिया गया। केवल सात व्यक्तियों को, जिनमें वह स्त्री भी थी, नहीं छोड़े गये। उन लोगों को पीछे दो वर्ष की कड़ी कैद की सजा मिली।

पश्चिम की ओर से एक दूसरा जुलूस पहुँचा। इसमें प्रायः एक हजार आदमी रहे होंगे। इन पर गहरा लाठी-चार्ज हुआ जिससे भीड़ तितर-बितर हो गयी।

इस प्रकार प्रायः बीस हजार व्यक्तियों ने, जो शांतिपूर्ण और अहिंसात्मक तरीके से युद्ध कर रहे थे, सरकारी सिपाहियों का सामना किया। यद्यपि गोलियों की लगातार वर्षा में बहुत लोग हट गए तथापि करीब दस हजार लोग रात में देर तक शांतिपूर्वक इस ताक में बैठे रहे कि आक्रमण करने का उपयुक्त मौका मिले। किंतु सरकारी सिपाही लगातार शहर में घुसते गए, इसलिए लोगों को अंत में हट जाना पड़ा। मृत व्यक्तियों के संबंधी सरकारी अफसरों के पास मृतक शरीर माँगने गए किंतु उनके साथ बड़ा बुरा व्यवहार किया गया। गोली चलने के दिन तथा उसके पश्चात् कई दिनों तक, शहर में ही नहीं, संपूर्ण सब-डिवीजन में हड़ताल रही। कहीं भी सिपाहियों को दूध, तरकारी, मछली आदि नहीं मिली। फौज के सिपाही चारों ओर मोटर से जाकर किसी का बकरा, किसी की मुर्गी और किसी की तरकारी छीन लाये।

महिषादल

२९ अगस्त के दिन भिन्न-भिन्न स्थानों के लोग एकत्र हुए। उनकी संख्या प्रायः पाँच हजार की रही होगी। यह भीड़ पूर्व की ओर से आई और थाने की ओर अग्रसर हुई। थाने के कमांडिंग ऑफिसर ने जी० साहब को, जो एक स्थानीय जमींदार के अंगरक्षक हैं, संकेत किया। जी० साहब ने एकाएक गोली चलाना शुरू कर दिया। इससे दो व्यक्ति मारे गये और १८ घायल हुए। भीड़ थोड़ी दूर पीछे हट गयी।

सुंदरा कांग्रेस ऑफिस से 'विद्युत् वाहिनी' नामक दूसरा दल थाने की ओर चला। पश्चिम से आता हुआ एक दूसरा जुलूस भी इसमें सम्मिलित हो गया। दोनों जुलूसों के लोग मिलकर प्रायः पचीस हजार हो गए। वे सब एक साथ थाने की ओर अग्रसर हुए। मशहूर जी० साहब, हथियारबंद सिपाही तथा अन्य पुलिस-अफसरों ने अंधाधुंध गोली चलाना शुरू कर दिया। भीड़ थोड़ी पीछे हट गई और पुनः आगे बढ़ी। फिर गोली-वर्षा हुई। थाने पर चार बार लगातार आक्रमण हुए। दारोगा के डेरे में आग फूँक दी गई। गोली-कांड में दो व्यक्तियों की मृत्यु हुई और अनेक घायल हुए।

महिलाओं की वीरता

हिजली नहर के पूर्व की ओर ही उपर्युक्त घटना हुई थी क्योंकि थाना उसी ओर पड़ता है। नहर के पश्चिम में मछली-हाट की प्रायः १५० गज पर एक मृत व्यक्ति पाया गया। इससे थोड़ी दूर दक्खिन जाकर प्रायः १८ आदमी मरे पाये गये। चारों ओर के लोगों पर गोली चलायी गयी थी, इसी कारण सब तरफ लोग थोड़ा-बहुत मारे गए। अनेक व्यक्ति घायल भी हुए। जी० साहब ने जब देखा कि गोली घट रही है तो वे दौड़कर एक जमींदार के यहाँ से कारतूस भी ले आए।

महिलाओं ने अपूर्व वीरता दिखलाई। गोलियों की वर्षा हो रही थी और वे घायलों को उठाकर ले जाती थीं। वे खाटों पर 'क्रॉस' का चिन्ह लगाये हुई थीं और उन्हीं पर घायल व्यक्तियों को उठाकर कांग्रेस आफिस को ले जाती थीं। किंतु

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सरकारी फौजों ने इन खाटों को उठाकर चलनेवाली महिलाओं के ऊपर भी गोलियाँ चलायीं। कई स्वयसेविकाएँ भी घायल हुईं। ४३ घायल व्यक्तियों को गहरी चोट लगी थी। श्री सुभाषचन्द्र सामंत तथा श्री खुदीराम बेरा घायल अवस्था में पकड़ लिए गये। खुदीराम पीछे चलकर वीरगति को प्राप्त हुए; किन्तु सुभाषचंद्र पर अन्य पचास व्यक्तियों के साथ मुकदमा चलाया गया। बहुत दिनों की हैरानी-परेशानी के बाद सेशन जज ने आखिर उन्हें छोड़ दिया।

सुताहाट की विजय

पूर्वनिश्चित कार्यक्रम के अनुसार प्रायः २९ अगस्त को प्रायः ४० हज़ार व्यक्तियों ने सुताहाट थाने पर पूर्व और पश्चिम से एक ही बार चढ़ाई कर दी। जुलूस के सिरे पर 'विद्युत-वाहिनी-दल' के सदस्य तथा 'भगिनी-सेवा-शिविर' की सदस्याएँ थीं। थाने के कमांडर अफसर ने भीड़ को हट जाने का आदेश दिया। किंतु लोगों ने उसे गिरफ्तार कर लिया। कुछ लोग थानेघर में घुस गए और पुलिस गोली चलाना चाहा ही रही थी कि उनके हथियार छीन लिये और उनको गिरफ्तार भी कर लिया। छः बंदूकें, कारतूस तथा दो तलवारें हाथ लगीं। थाने के पक्के घर में आग लगा दी गई और उसमें की सारी चीजें आग में झोंक दी गईं। इस समय दो हवाई जहाज थोड़ी ही ऊँचाई पर उड़ रहे थे। उन्होंने एक बम भी फेंका; किंतु सौभाग्यवश वह एक तालाब में गिर गया और किसीको कुछ नुकसान नहीं पहुँचा। इस बम-कांड के संबंध में पुलिस ने भी सेशन जज के सामने बतलाया कि हवाई जहाज से तेल आग जैसी कोई वस्तु गिराई गयी थी।

विजयी विद्रोही तब थाने के दूसरे हिस्सों में फैल गए और खासमहाल दफ्तर, रजिस्ट्री आफिस तथा यूनियन बोर्ड आफिसों को जला दिया।

सब सरकारी अफसरों के साथ, जो गिरफ्तार किए गए थे, उत्तम व्यवहार किया गया। उन्हें अपने घर पहुँचने तक का किराया मिला और वे छोड़ दिये गये।

नंदीग्राम

३० अगस्त को प्रायः दस हजार विद्रोहियों ने नंदीग्राम थाने पर आक्रमण किया। हथियारबंद सैनिकों ने उनपर गोली चलाई। चार व्यक्ति तो वहीं मारे गये तथा एक की मृत्यु पीछे चलकर तामलुक अस्पताल में हुई। १६ व्यक्ति घायल हुए। विद्रोही लोग इस पर पीछे हट गए। उन लोगों ने अफीम और पटुए की दूकान में आग लगा दी तथा डेट सेटूलमेंट ऑफिस (Debt Settlement Office) को बरबाद कर दिया। महिषादल राज के रियाला स्थित कचहरी घर तथा वहाँ के पोस्ट ऑफिस भी जला दिये गए।

सरकारी नृशंसता

काले और गोरे कई सौ सिपाही बाहर से बुला लिए गए और अनेक फौजी छावनियाँ स्थापित की गईं। इन चौकियों से फौज बाहर छापा मारने निकला करती थी। वे बस्तियों पर आक्रमण करने लगीं, लोगों का घर जलाने लगीं तथा औरत, मर्द, बच्चों पर नाना प्रकार के जुल्म ढ़ाने लगीं। इनके अत्याचार के सामने नाजियों की नृशंसता भी पीछे पड़ जाती है। इतना होने पर भी फौजों की ये टोलियाँ लोगों से इतनी आतंकित रहती थीं कि वे सदा झुंड में आतीं और उत्पात मचाकर रात होने के पहले ही भाग जातीं।

कांग्रेस कार्यकर्त्ता शांति और अमन-चैन लाने का प्रयत्न कर रहे थे और बस्तियों में राष्ट्रीय सरकार की स्थापना करना चाहते थे। इसी बीच इस ज़िले में भयंकर तूफान आया जिससे उन लोगों के काम में बड़ी बाधा पड़ी।

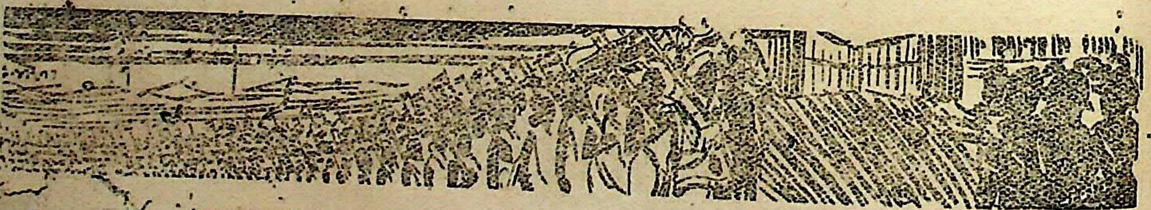

Raj... Shivala Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'४२ के १६ अक्तूबर को भयंकर तूफान आया जिससे संपूर्ण सब-डिवीजन को अत्यंत गहरी क्षति उठानी पड़ी। प्रायः १०००० आदमियों तथा ७५ प्रतिशत मवेशियों की जानें गई थीं। तामलुक के एस० डी० ओ० के मुताबिक ३८३७ व्यक्ति मारे गए, १०७२ जख्मी हुए, ६८१९३ मवेशी नष्ट हुए, ११०३४६ घर बरबाद हुए और ७६९५८ मकान क्षति-ग्रस्त हुए। दो स्टीमर तथा कई नावें भँवर में पड़ गईं। प्रायः सारी सड़कें नष्ट हो गईं—कई ऐसी नष्ट हो गईं कि वे मरम्मत नहीं की जा सकतीं। नदी को बांध ११० मील तक टूट गई; २१५११४९ एकड़ जमीन की ५० प्रतिशत फसल नष्ट हो गई।

सरकारी दुख

तामलुक के एस० डी० ओ० के पास तूफान की पूर्व-सूचना तार द्वारा कलकत्ते से तीन बार मिली। किंतु उसने इस सूचना को बाहर भेजने तथा जनसाधारण को इससे आगाह हो जाने के लिए कुछ भी नहीं किया। यहाँ तक कि जिस रात तूफान आया, लोगों ने उससे मिलकर कर्फ्यू ऑर्डर हटा लेने की प्रार्थना की, उसने एक न सुनी। लहर आने के समय नाव को स्वतंत्रतापूर्वक खेने की भी उसने इजाजत नहीं दी, इसलिए लोग पेड़ पर या घर की छत पर चढ़ गए। इतना ही नहीं कि सरकार की ओर से यहाँ कोई मदद नहीं की गई, बल्कि किसी गैर-सरकारी सहायता कार्य भी एक महीने तक नहीं होने दिया गया। इस बीच सैकड़ों दिहाती उचित सहायता के अभाव में काल-कवलित हो गए। मारवाड़ी-रिलीफ-सोसाइटी के एक कार्यकर्ता यहाँ पहुँचे तो उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और सहायता के लिए लाया गया चावल वहाँ के अफसर अपने काम में लाये। डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट ने रिपोर्ट दी कि मिदनापुर जिले के राजनीतिक द्रोहियों ने बहुत से उत्पात के काम किए हैं; इसलिए उन्हें इस संकट को भुगतने देना चाहिए। श्रीयुत श्यामाप्रसाद मुकर्जी का इस संबंध में इस प्रकार का कथन है—'डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट ने पीड़ितों के सहायतार्थ कुछ नहीं किया, क्योंकि उसकी समझ में विद्रोहियों को अपनी करनी का प्राकृतिक दंड मिल रहा था और एक उत्तर-दायी अफसर का ऐसे अवसर पर जो कर्त्तव्य है, उससे वह सर्वथा पृथक् रहा। उसकी मनोवृत्ति की झलक हमलोगों को उस समय मिली जब उसने विद्रोहियों के उत्पात की रिपोर्ट भेजी थी जिसमें उसने लिखा था कि इन विद्रोहियों की सहायता से सरकार को पृथक् ही नहीं रहना चाहिए, बल्कि किसी भी गैरसरकारी दल को इनकी सहायता के लिए यहाँ आने की भी इजाजत नहीं मिलनी चाहिए।'

—(देखिए, १८ फरवरी, '४३ के दिन का डॉक्टर एस० पी० मुखर्जी का बंगाल व्यवस्थापिका सभा का भाषण)

समाचारपत्रों पर किसी प्रकार का मिदनापुर-संबंधी समाचार प्रकाशित करने की रुकावट हो गयी। १७ दिन पश्चात् एक अति संक्षिप्त विवरण, जो इस महान् संकट का एक आभास-मात्र था, निकला। बंगाल सरकार के मंत्री के रूप में डॉक्टर श्यामाप्रसाद जाँच के लिए आए। इनके स्वागत-कार्य में भाग लेनेवालों को विशेष कांस्टेबल बनने को बाध्य होना पड़ा और उन्हें नियमत रूप से थाने में हाजिरी देनी पड़ी। इस तूफान के बाद भी लोगों के घर लूटना और जलाना जारी रहा। डॉक्टर श्यामाप्रसाद ने स्वयं जले घरों को देखा जब वह जाँच के लिए आए थे।

कांग्रेस का सहायता-कार्य

तूफान आने पर उन लोगों ने अपने विद्रोही कामों छोड़ दिया और सहायता-कार्य में संलग्न हो गए—जैसे मृतक शरीरों को दफनाना, घायलों को प्राथमिक सहायता प्रदान

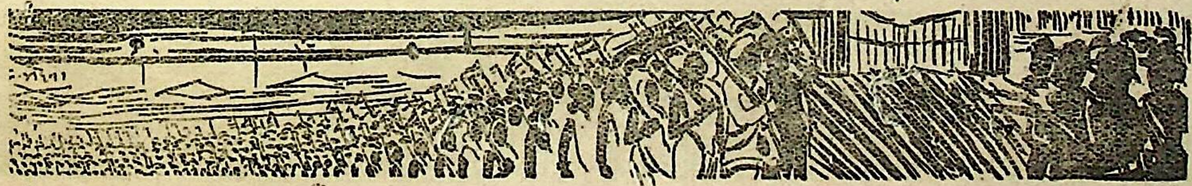

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करना, सड़कों तथा तालाबों को साफ करना तथा भोजन और दवा का प्रबंध करना। मवेशियों के मृत शरीर नदी में डाल दिए गए और कुछ गाड़ दिए गए। लोगों को उबाला हुआ जल पीने को कहा गया। ६० मील तक बांध ठीक कर दिया गया। धनी परिवारों के यहाँ बचे हुए धान को मांगकर गरीबों में बाँट दिया गया। बाहर से भी कर्ज के रूप में चावल और धान लाकर बाँटा गया।

कांग्रेसजनों ने सरकारी अत्याचारों के विरुद्ध साहसिक प्रतिरोध के लिए 'ताम्रलिप्त जातीय सरकार' नामक एक सुसंगठित शासन स्थापित किया। यह निश्चित हुआ कि पीछे चलकर जब 'महान् भारत संघ' की स्थापना होगी तो यह शासन उसमें सम्मिलित कर लिया जाएगा।

परिस्थिति की अननुकूलता के कारण निर्वाचनपद्धति को कार्यान्वित करना उन दिनों मुश्किल था, इसलिए कांग्रेस कमिटी ने सर्वाधिनायक चुन लिया। कांग्रेस कमिटी द्वारा निश्चित परिधि के अंदर सर्वाधिनायक अपने कार्यों के लिए स्वतंत्र थे। कांग्रेस कमिटी उनको जेनरल बातें बतला देती थी और वह उनके अनुकूल कार्य करते थे। सर्वाधिकारी को यह अधिकार था कि वह सब-डिवीजन की कांग्रेस कमिटी की सम्मति लेकर भिन्न-भिन्न विभागों के लिए मंत्रियों को नियुक्त करें। वह स्वयं युद्ध मंत्री थे। दूसरे विभाग थे—कानून और शांति, स्वास्थ्य, शिक्षा, शासन न्याय, कृषि तथा प्रोपेगंडा और प्रत्येक विभाग एक-एक मंत्री के अधीन में था।

'ताम्रलिप्त जातीय सरकार' की स्थापना १७ दिसम्बर, '४२ को हुई और २६ जनवरी, '४३ को यह सुताहाट, नंदीग्राम, महिषादल और तामलुक में उसकी शाखाएँ खुलीं।

विद्युत् वाहिनी

'विद्युत्-वाहिनी' का निर्माण सर्वप्रथम महिषादल में हुआ। पीछे तामलुक तथा नंदी ग्राम में भी संगठित की गई। प्रत्येक विद्युत्-वाहिनी में एक जेनरल कमांडिंग ऑफिसर तथा एक कमानडेंट रहते थे। यह निम्नलिखित भागों में विभक्त थी—(१) युद्ध शाखा (२) समाचार शाखा (३) सहायता विभाग।

पूर्ण शिक्षित डॉक्टर, कंपाउंडर, सवारी ढोनेवाले जत्था तथा सेवा-सुश्रूषा करनेवाले सहयता विभाग में थे। सरकार की ओर से प्रकाशित पुस्तिका Some facts about the Disturbance in India—'42-43" में इसके संबंध में निम्नलिखित बातें कही गई हैं—

'बंगाल सूबे के मिदनापुर जिले में विद्रोहियों के कार्य-कलाप से प्रकट होता था कि उनके कार्य पूर्व-निश्चित योजना के अनुसार चल रहे थे। उनके पीछे गंभीर चिन्तन तथा दीर्घदृष्टि नजर आती थी। चेतावनी भेजने के उनके तरीके सर्वथा मौलिक थे। किसी बात को फैलाने तथा किसी गुप्त योजना को कार्यान्वित करने के उनके ढंग स्पष्टतः पूर्व-निश्चित संकेतों के अनुसार थे।

जातीय सरकार 'विद्युत्-वाहिनी' को राष्ट्रीय सेना समझती थी। उसकी निम्नलिखित शाखाएँ पीछे खुलीं—(१) गुरिल्ला विभाग (२) सिस्टरों की सेना तथा (३) शांति और कानून विभाग। इस अंतिम विभाग ने मशहूर डाकुओं तथा चोरों को गिरफ्तार किया, जो उत्पात मचाने के लिए स्वतंत्र छोड़ दिये गये थे। इन डकैतों और चोरों के मामले जातीय सरकार के समक्ष उपस्थित किए गए और कानून के अनुसार उनको दंड मिला।

सब-डिवीजन के प्रसिद्ध नेता श्रीसतीशचंद्र सामंत ताम्रलिप्त जातीय सरकार के प्रथम सर्वाधिनायक थे। इनके नेतृत्व में जतीय सभा काफी लोकप्रिय हो गई। दूसरे अन्य सर्वाधिनायक थे—श्री अजेयकुमार मुखर्जी, श्रीसतीसचंद्र साहू, श्री वरदाकांत कुइटी।

Raj... Shivala Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

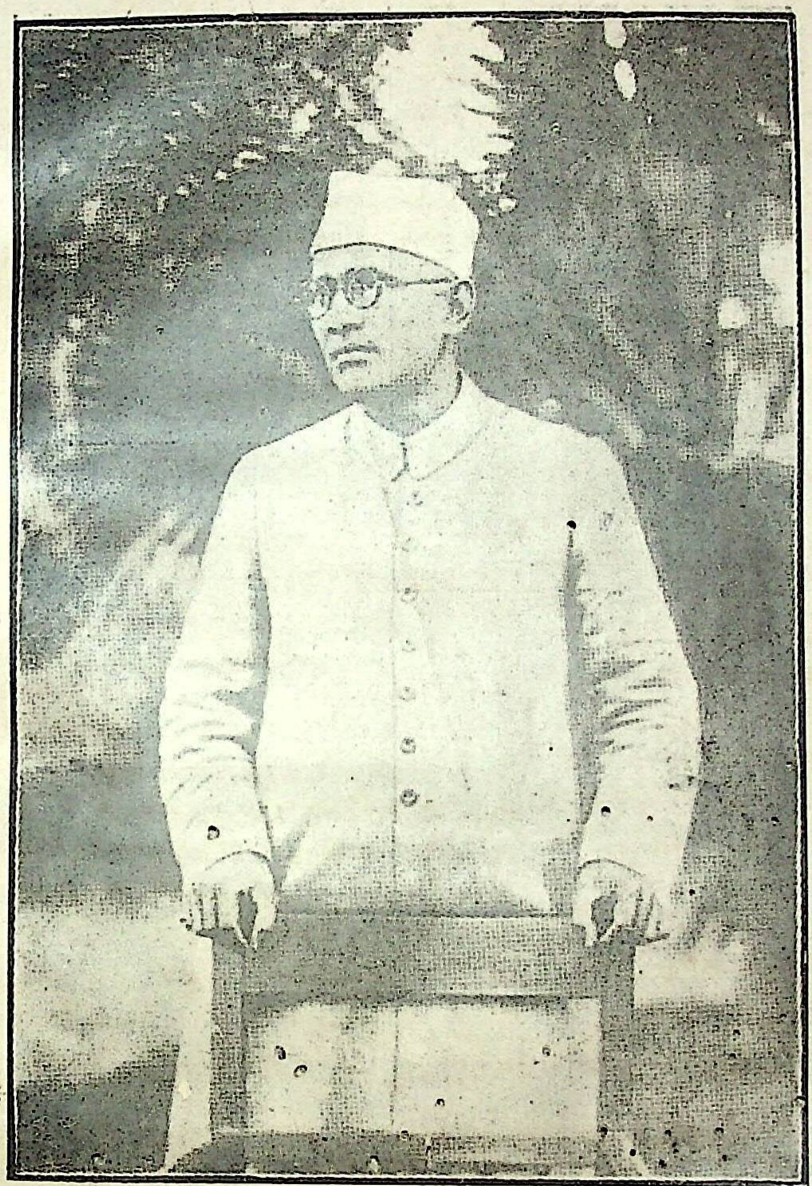

माननीय डा० सैयद महमूद, शिक्षा-मन्त्री, बिहार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अगस्त-क्रांति
के दो सेना

श्री अच्युत पटवर्धन

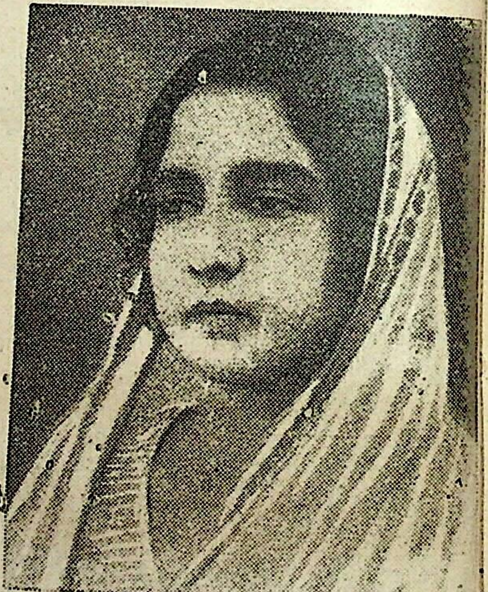

श्रीमती अरुणा आसफअली

... Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जातीय सभा भंग

२३ जुलाई तथा ६ अगस्त, '४४ के दिन महात्माजी ने जो वक्तव्य प्रकाशित कराया उससे सब-डिवीजन भर के कार्यकर्त्ताओं को एक नया प्रकाश मिला। चौथे अधिनायक श्री वरदाकांत कुइटी ने ८ अगस्त, '४४ को जातीय सभा को भंग करने का आदेश दिया। दूसरे ही दिन वह गिरफ्तार हो गए। तत्कालीन कांग्रेस कमिटी के प्रधान मंत्री श्री सुशीलकुमार धार ने १ सितंबर से जातीय सभा के कार्यक्रम को समाप्त कर देने का आदेश निकाला। 'विद्युत्-वाहिनी' भंग कर दी गई। २९ सितंबर, '४४ के अंदर ही १५० कार्यकर्त्ताओं ने महात्माजी के आदेशानुसार आत्मसमर्पण कर दिया।

सरकारी अत्याचारों का विवरण

पुलिस ने केवल महिषादल में ६ स्थानों में ९ बार गोलियाँ चलाईं, तामलुक में ४ स्थानों पर ४ बार तथा सुताहाट में दो स्थानों पर दो बार। उन स्थानों में क्रमशः १६, १२, १४ और २ व्यक्ति मरे; ५२, १५, २४, और ६ घायल हुए। घायलों की ठीक संख्या का पता लगाना असंभव था। मृतकों में एक ७३ वर्षीया वृद्धा थी और ६ लड़के थे जिनकी अवस्था १२ से १६ वर्ष के अंदर रही होगी। लाठी-चार्ज कितनी बार हुए, कोई ठिकाना नहीं। किन्तु, सिर्फ लाठी-चार्ज से ही कहीं भी भीड़ तितर-बितर नहीं हो सकी और न लोगों का उत्साह ही खतम हुआ। लाठी-चार्ज अथवा गोली से कहीं भी जो कोई घायल हुआ और पुलिस ने उसे पकड़ लिया तो उसे किसी प्रकार कि सहायता नहीं मिली। उचित देखभाल के अभाव में कई घायल व्यक्ति पुलिस अस्पताल में मर गए।

स्त्रियों पर अत्याचार

७४ स्त्रियों पर बलात्कार किया गया। उनमें कितनी ही गर्भवती थीं तथा एक की उसी समय मृत्यु हो गयी।

बलात्कार करने के अनगिनत प्रयत्न किये गए। कई स्थानों पर तो स्त्रियों ने भाग कर अपनी जान बचाई। अधिकांश स्थानों पर स्त्रियाँ झुंड में रहती थीं और सम्मिलित उद्योग से अपने को बचा लेती थीं। कई स्त्रियाँ अपनी रक्षा के लिए अपने साथ कटारी रखती थीं। कटारी को देखती ही कई स्थानों पर ये पशु भाग खड़े होते थे।

९ जनवरी, १९४३ को ६०० सिपाहियों ने महिषादल थाने की तीन बस्तियां, मसेरिया, दिलीमसुरिया और चाँदीपुर, को घेर लिया। उन्होंने घरों पर आक्रमण किया। लूटी हुई चीजों से संतुष्ट नहीं होने पर उन्होंने एक ही दिन में ४२ स्त्रियों पर बलात्कार किया। श्री बी० आर० सेन, आई० सी० एस० इस कांड की जाँच को आए थे, किन्तु इसका कुछ परिणाम नहीं निकला। कुछ भुक्तभोगियों के बयान नीचे दिए गए हैं।

स्त्रियों के साथ थोड़ी-बहुत छेड़खानी के तो अनेक उदाहरण हैं। गहना छीनना, कान की बाली नोचकर कान को जख्मी कर देना, बूढ़ी तथा जवान लड़कियों को चाबुक से मारना आदि इस प्रकार की अनगिनत बातें मिलती हैं।

३० अक्टूबर '४२ के दिन पुलिसों ने सुताहाट थाने के प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता श्री जनार्दन हजारा के घर में आग लगा दी। लोगों ने उनके घर में बँधे पशुओं को बाहर निकालना चाहा, किंतु पुलिसों ने उन्हें ऐसा नहीं करने दिया। फलस्वरूप ५ गाएँ, ५ बकरे, १ बिल्ली, १ मुर्गा जल गए।

पुरुषों पर अत्याचार

पुरुषों पर नाना प्रकार के अत्याचार किये गये। सैकड़ों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिहातियों को बहुत-बहुत दूर ले जाकर बिना भोजन-पानी के छोड़ दिया जाता था। जाड़े की सर्द रातों में उनके कपड़े निकालकर देह पर सर्द पानी डाला जाता था—अनेक को निर्दयतापूर्वक पीटा गया। कई तो ऐसे पीटे गए कि वे मूर्च्छित होकर गिर जाते थे। सुताहाट की रामनगर बस्ती के रहनेवाले श्रीमन्मथ लस्कर को इतना पीटा गया कि उनके पेशाब की राह से खून निकल आया।

एक यूरोपियन पुलिस आफिसर ने अत्याचार का एक नया तरीका निकाला। पीटते-पीटते जब आदमी गिर गया तो उसके पाखाने के रास्ते में लकड़ी डालकर उसे इधर-उधर घुमाया गया। ऐसे भुक्तभोगी व्यक्तियों का बयान भी नीचे दिया जायगा। २७ मार्च, ४४ को सुताहाट थाने के हटीबेरिया के रहनेवाले श्री चुन्नीलाल बेरा को पीट-पीटकर गिरा दिया गया और उसके बाद उनकी उपस्थेंद्रिय पर सोडा और चूना डाल दिया गया। बेचारा इस अत्याचार को सहन नहीं कर सका और बौंड पर हस्ताक्षर करके छुटकारा पा गया।

इस सब-डिवीजन में प्रायः दो हजार व्यक्ति गिरफ्तार किए गए। बहुत से व्यक्ति हाजत में लंबी अवधि तक रहने के बाद रिहा हुए। अनेक को एक वर्ष से अधिक इसी हालत में रहना पड़ा। तामलुक लोकल बोर्ड के चेयरमैन सुताहाट यूनियन बोर्ड नं० ४ के सभापति, सुताहाट कांग्रेस कमिटी के मंत्री तथा जिला कांग्रेस कमिटी के सभापति बिना सजा सुनाए ही जेल में वर्षों सड़ते रहे। कई व्यक्तियों को नोटिस दी गई कि वे कभी एक बार कभी अनेक बार प्रति सप्ताह थाने में हाजिरी दें। कई ने इस नोटिस को नहीं माना और वे गिरफ्तार भी हुए।

सब-डिवीजन में १२४ घर जलाए गये जिससे १३९००० रुपये का नुकसान हुआ। राष्ट्रीय-सेना-शिविर, खादी-केंद्र, स्कूल के मकान भी जलाए गये। कहीं-कहीं मिट्टी तेल तथा पेट्रोल डालकर आग लगाई जाती थी। ४९ मकानों की छतें तोड़ दी गईं, जिससे ४०७५ रुपये का नुकसान हुआ। १०४४ मकान लुटे गए और नुकसान २१२७९५ रुपये का हुआ। सरकारी फौज घर में जाँच करने घुसती थी और सोने-चाँदी के गहने, कीमती बिछावन, बरतन, सूटकेश इत्यादि लूट लेती थी। २३ मकानों पर उन्होंने जबर्दस्ती कब्जा कर रखा था, इनमें हाईस्कूल, बिड़ला स्कूल तथा ट्रेनिंग स्कूल भी शामिल हैं।

सब-डिवीजन से १९००००० रुपये सामूहिक कर के रूप में वसूला गया। सुताहाट थाने के ११ यूनियनों से ५०००० रुपये, नंदीग्राम थाने से ५०००० रुपये १५,८,१४ यूनियनों को छोड़कर महिषादल से ५०००० रुपये (१,२,३, नं० यूनियनों को छोड़कर) तामलुक थाने से २५००० रुपये (१,२,३,४,११ तथा १२ यूनियनों को छोड़कर) तथा पंसकुरा थाने से १५००० रुपये।

५७३० मकानों की तलाशी ली गई। इस कार्य में १५ से ८० हथियारबंद सिपाही रहते थे। बहुत-सी चीजें जो वे ले जाते थे, सूची में लिखते नहीं थे। घर के मालिक को वारंट भी नहीं दिखाया जाता था। सब-डिवीजन भर में प्रायः दस लाख रुपये की क्षति पहुँची। बस, नावें, साइकिल आदि मकानों की नीलामी, घर को जलाना तथा लूटना आदि भी उपर्युक्त संभाव्य कीमत में शामिल हैं। कई व्यक्ति तो राह के भिखारी बन गए।

विशेषकर हिंदू ही इस अत्याचार के शिकार बने। अनेक स्थानों पर उनकी धार्मिक पुस्तकें, देवी-देवताओं की मूर्तियाँ तोड़-फोड़ डाली गईं तथा पैरों तले रौंदी गईं।

Rai... Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गैर-कानूनी घोषित संस्थाएँ

(१) तामलुक सब-डिवीजन कांग्रेस कमिटी
(२) तामलुक थाना कांग्रेस कमिटी
(३) वासुदेवपुर कांग्रेस आफिस
(४) फ्रेंड्स क्लब
(५) विद्युत् वाहिनी
(६) सुताहाट कांग्रेस वलंटियर्स कोर
(७) महिषादल कांग्रेस वलंटियर्स कोर
(८) खोदावारी थाना कांग्रेस शिविर
(९) तरपेखिया बाजार कांग्रेस शिविर
(१०) खेकुटिया बाजार कांग्रेस शिविर
(११) चाँदीपुर कांग्रेस कैंप
(१२) केशापथ कांग्रेस आफिस
(१३) कोलाघाट कांग्रेस आफिस
(१४) मोयाना थाना कांग्रेस कमिटी
(१५) सिरामपुर वालंटियर कोर
(१६) गरम दल
(१७) ताम्रलिप्त जातीय सरकार

५ नवंबर '४२ के दिन सरकार ने मिदनापुर जिला कांग्रेस कमिटी तथा उसकी शाखा-कमीटियों को गैर-कानूनी घोषित किया।

२९ सितंबर '४२ को विद्रोही आक्रमण के बाद सब-डिवीजन भर की बंदूकें छीन ली गईं और केवल राजभक्तों को ही बंदूकें लौटाई गईं।

कुछ स्त्रियों के बयान

१. मैं, सिंधुबाला श्री अमरचंद्र पैती की पत्नी हूँ। मेरा मकान महिषादल थाने में चाँदीपुर बस्ती में है। उम्र मेरी १९ वर्ष की है। ९ जनवरी, '४३ को प्रायः साढ़े नौ बजे दिन में एक पुलिस अफसर मेरे घर पर आया, उसके साथ हथियार-बंद सिपाहियों का एक जत्था था। उन्होंने मेरे पति को पकड़ लिया और उन्हें दूर ले गए और मेरे साथ जबर्दस्ती बलात्कार किया। मैं बेहोश हो गई। मेरे साथ यह दूसरी बार बलात्कार किया गया है।

(इस स्त्री के साथ २७-१०-'४२ को भी बलात्कार किया गया था। इस बार के बलात्कार से उसको भयंकर स्त्रीरोग हो गया और वह मर गई।)

२. मैं, महिषादल थाने की चाँदीपुर बस्ती में रहनेवाले श्री हरिपद पंडित की पत्नी, खुदीबाला पंडित हूं। मैं तीन बच्चों की माँ हूँ। ९ नवंबर, '४३ को प्रायः ९ बजे दिन में एक पुलिस अफसर मेरे घर में सिपाहियों के झुंड के साथ घुसा। अफसर के संकेत पर दो सैनिकों ने एक कपड़े से कसकर मेरा मुँह बाँध दिया और मुझे डराया कि अगर मैं हल्ला करूँगी तो वे मुझे गोली मार देंगे। दोनों सैनिकों ने एक-एक कर मेरे साथ बलात्कार किया। मैं बेहोश हो गई। होश में आने पर मैंने देखा मेरे पति खून से लथपथ थे। (यह स्त्री उस समय गर्भवती थी।)

३. मैं, मन्मथनाथ दास, जो महिषादल थाने के चाँदीपुर नामक गाँव के रहनेवाले हैं, की पत्नी हूँ। मेरा नाम सुवासिनी दास है। मेरे कोई संतान नहीं है। मेरी उम्र बीस साल की है। ९ जनवरी, '४२ को एक पुलिस अफसर मेरे घर पर सैनिकों के एक दल के साथ पहुँचा। उन सबों ने मेरे पति को पकड़कर दूर कर दिया। नलिनी राहा (पुलिस अफसर) के इशारे पर दो सैनिकों ने मेरे मुँह पर कपड़ा बाँध दिया और चेतावनी दी कि अगर मैं चिल्लायी तो वे गोली मार देंगे। उन्होंने मेरे साथ जबर्दस्ती बलात्कार किया। मैं बेहोश हो गई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

४. मेरा नाम बसंतबाला है। मैं महिषादल थाने के दिली-मसुरिया-नामक बस्ती में रहनेवाले श्री गिरीशचंद्र मपास की पत्नी हूँ। मेरी अवस्था पचीस साल की है। ९ जनवरी,' ४३ को महिषादल का बड़ा दारोगा सैनिकों के एक झुंड के साथ मेरे यहाँ पहुँचा। वह मेरे पति को पकड़कर अलग ले गया। उन सबों ने मुझे पकड़ लिया; एक कपड़े से मेरा मुँह बाँध दिया और मुझ पर बलात्कार किया। मैं जब होश में आई तो मारे शर्म के फिर बेहोश हो गई।

इसी प्रकार के अनेक उदाहरण हैं।

कुछ पुरुषों के बयान

१. मैं बलुआघाट बाजार में सत्याग्रह करने गया। पुलिस मुझे गिरफ्तार कर सुताहाट थाने पर ले गई। शाम होने के बाद सिपाहियों ने मुझे जमीन पर गिरा दिया और मुझे एकदम नंगा कर दिया। उन्होंने मेरे पेशाब की इंद्रिय पर सोडा और लाइम मिलाकर छींट दिया। मैं इसे सहन नहीं कर सका और एक बाँड पर दस्तखत करके रिहाई पा ली।

—(हस्ताक्षर) छविलाल बेरा मु० हटीबेरिया
यूनियन नं० ११, सुताहाट थाना, १ अप्रैल,' ४४

२. १३-४-'४४ को मैं यूनियन नं० ४ की रामतरखा नामक बस्ती में सत्याग्रह करने गया। प्रायः सात बजे दिन में पुलिस अफसर ने मुझे गिरफ्तार किया और मुझे एक झोपड़ी के अंदर ले गया। वहाँ उन्होंने मुझे अनेक प्रकार की यंत्रणाएँ दीं। मुझे एकदम नंगा कर दिया गया और बेरहमी से पीटा गया। उसके बाद मुझे दोनों पैरों को अलग-अलग करके खड़ा किया गया और मेरे पाखाने के रास्ते में अंगुली डालकर वे इधर-उधर घुमाने लगे। मुझे बेहद पीड़ा हुई। वे इस प्रकार प्रायः १०-१५ मिनटों तक करते रहे।

—(हस्ताक्षर) खुदिराम कुतिया
५० बिरिंची बसन, महिषादल थाना,
१८ मई, '४४

कुछ स्वयं बोलते चित्र

गोलियों के शिकार :—

दानीपुर (महिषादल थाना)

(तीन मृत ४-६-'४२ के दिन)

१—शशिभूषण मना	१८ वर्ष	वार अमृतबेरिया
२—सुरेंद्रनाथ कार	२८ वर्ष	"
३—वीरेंद्रनाथ दिगर	३२ वर्ष	तिक्तमपुर

ईश्वरपुर (नंदीग्राम थाना)

(दो मृत, तीन घायल २७-६-'४२)

४—नरेंद्रनाथ मंडल	३२ वर्ष	गौरचक
५—बानू राना	५४ "	बासूनारा
६—मुदानाथ शामू	३५ "	"
७—गोविंदचंद्र दास	४० "	कुलुप

Raj... Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बृंदावनपुर (नंदीग्राम थाना

(दो मृत, तीन घायल)

८—गौरहारी कमिला १६ वर्ष बजावरिया
९—गुनाधर साहू ३५ „ धन्यासरी

महिषादल थाना

(१३ मरे ४३ घायल ता० २९-९-'४२)

१०—भोलानाथ मैती ३६ वर्ष बक्सीचक
११—श्री हरिचरण दास ३२ „ „
१२—आशुतोष कुतिया १८ „ माधवपुर
१३—सुधीरचंद्र हाजरा २७ „ कारक
१४—प्रसन्नकुमार भूनिया ४४ „ राजरामपुर
१५—पंचानन दास ३९ „ हरिखाली
१६—द्वारकानाथ साहू ५७ „ ताजपुर
१७—गुणाधर हंडेल ४० „ खडका
१८—सुरेंद्रनाथ मैती २७ „ नई गोपालपुर
१९—सुधींद्रनाथ मैती १६ „ सुंदरा
२०—जोगेंद्रनाथ दास ३५ „ सुंदरा
२१—राखालचंद्र सामंत २८ „ छगरा
२२—खुदीराम बेरा ३० „ चिंरहीमारी

तामलुक नगर—संकरारा पुल

(१० मृत, २२ घायल ता० २९-९-'४२)

२३—उपेंद्रनाथ जान २८ वर्ष कखांची
२४—पूर्णचंद्र मैती २४ „ धरोआई
२५—रामेश्वर बेरा ४५ „ कियाखाली
२६—विष्णुपद चक्रवर्ती २५ „ निकासी
२७—श्रीमती मतंगिनी हाजरा ७३ „ अलिनान
२८—नगेंद्रनाथ सामंत ३३ „ „
२९—लक्ष्मीनारायण दास १२ „ माथुरी
३०—जीवनकृष्ण बेरा १८ „ „
३१—पूरीमाधव प्रामाणिक १३ „ दरिबेरा
३२—भूषणचंद्र जान ३० „ बहादुरपुर

नंदीग्राम थाना

(५ मरे, १६ घायल ३०-९-'४२)

३३—बिहारीलाल कर्ण २२ वर्ष आम्रताल
३४—शेख अलाउद्दीन ४० „ मुहम्मदपुर
३५—पुलिनविहारी प्रधान २५ „ साउधखोली
३६—बिहारीलाल हाजरा २४ „ हरिपुर
३७—परेशचंद्र गिरि ३० „ बहादुरपुर

बासुदेवपुर (सुताहाट थाना)

(१ मरे और ६ घायल १-१०-'४२)

३८—व्रजगोपाल दास १७ वर्ष पाना

पूर्वलक्षम (तामलुक थाना)

(२ मरे और २ घायल ६-१०-'४२)

३९—विपिनविहारी मंडल ३२ वर्ष किस्मत-पुतपुतिया
४०—चंदमोहन दिंदा १९ „ किस्मत-पुतपुतिया

गोलपुकुर नंदीग्राम थाना

(१ मरे, ३ घायल ८-१०-'४२)

४१—मुचीराम दास ४० वर्ष बिरोलिया

श्रीकृष्णापुर में

(१ घायल ता०—१९—२—'४३)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

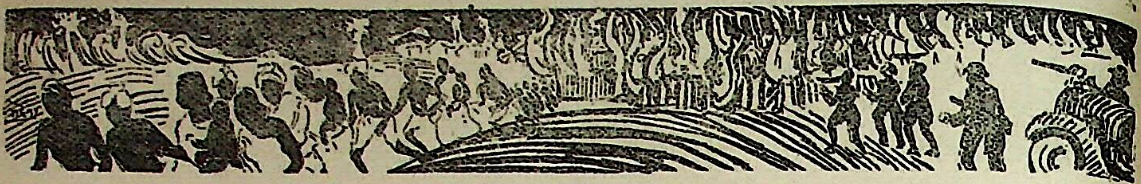

स्त्रियों के नाम, जिनके साथ बलात्कार किया गया

नाम उम्र वासस्थान तिथि गुंडों की संख्या

(सुताहाट थाना)

१—कमलावाला दोलाई १६ दिउलपोत ६-१-'४३-२

२—६ (जिनके नाम व्यक्त नहीं किए जा सकते)

(तामलुक थाना)

७ ट्रेन में (जनानी डब्बे में) १८ मेछदा स्टेशन ६-१०-'४२-१

८— " " ३० " " १

९— " " ३६ बरगछिया ९-१०-४२ १

(नंदीग्राम थाना)

१०—श्यामाचंद दास की पत्नी २५ पुरुषोत्तमपुर १-१०-'४२ २

११—विनोदिनी दास २८ दिही कासिमपुर ११-१०-'४२

१२—मनींद्रजान की पत्नी २२ भगबंखासी "

१३—एक स्त्री २९ रानीचक १३-१२-'४२

१४—सैलवाला दासी २० काँद परसा १६-१-'४३

१५-१८ (नाम नहीं बतलाया जा सकता)

(महिषादल थाना)

१९—चारुवाला कर्ण ५० लक्षम २६-१०-'४२ १

२०—कमला भौमिक २२ चाँदपुर २७-१०-'४२ १

२१—चारुवाला हाजरा २५ चाँदपुर ५७-१०-'४२ १

२२—कुसुमकुमारी हाजरा " " १

२३—सिंधुवाला मैती २१ " " २

(एक बार पुनः बलात्कार और उससे मृत्यु)

२४—एक स्त्री २० चूनाखासी १-१-'४३ १

२५—एक विधवा २५ तेयिलबेरा ३-१-'४३ १

२६—गुणाधर माझी की पत्नी पूरब श्रीरामपुर २१-४-'४३ १

२७—काननवाला मैती मसुरिया ९-१-'४३ १

२८—किशोरीवाला कुइल १९ " " २

२९—हिरनबाला कुइल १७ " " ३

३०—देवानी बेरा २४ " " २

३१—चारुवाला दास १४ " " २

३२—अंबिकावाला मैती १६ " " १

३३—राजवाला बेरा १५ " " १

३४—कुसुमकुमारी बेरा ३२ " " १

३५—भागीवाला देई १९ " " २ (विधवा)

३६—तुकुबाला बेरा १६ " " ३

३७—रासमणि पाल १५ " " १

३८—किरणवाला कुइल २६ " " १

३९—सैलवाला २२ " " १

४०—चिकनवाला मंडल १६ " " २

४१—किरणबाला गयान १९ " " २

४२—स्नेहलता डिंडा १६ " " १

४३—पंतिवाला धार २९ " " १

४४—रायमणि परिया ३० " " १

४५—किरणवाला सीथ ३२ " " २

४६—सुशीलाबाला पाल २२ " " २

४७—द्रौपदी माँजी २४ " " १

४८—नीरदबाला देई ३५ " " २ (विधवा)

४९—शैलवाला मैती २२ " " ३

५०—प्रमदावाला भौमिक २५ चाँदपुर " ३

५१—चारुवाला हाजरा २४ " " २

५२—सवापति भौमिक २४ " " ३

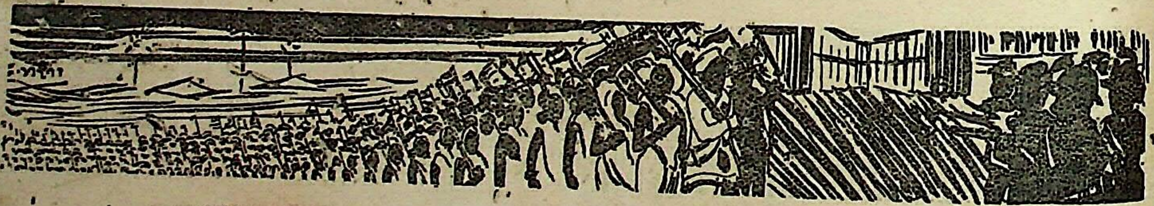

Rai ... Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

५३—प्रभावती भौमिक	२१	„	„	२
५४—करुणावाला भौमिक	२१	„	„	१
५५—प्रमिलावाला भौमिक	२०	„	„	२
५६—राजबाला भौमिक	२५	„	„	२
५७—स्नेहलता मुखर्जी	२५	„	„	२ (विधवा)
५८—सुभाषिणी दास	२०	„	„	„
५९—क्षुदिबाला पंडित	२४	„	„	„ (गर्भिणी)
६०—जशोमती मैती	२८	„	„	२
६१—सत्यबाला सामंत	४१	दिही मसुरिया	„	२
६२—विमला सामंत	२४	„	„	२
६३—इगदा बद	२८	„	„	२
६४—गुणोबाला बद	३१	„	„	२
६५—कमलाबाला मैती	१७	„	„	२
६६—रायकिशोरी बर	२२	„	„	२
६७—नीरोदबाला पाल	२२	„	„	१
६८—पुंतीबाला बर	२७	„	„	२
६९—गंगाबाला देई	१६	„	„	२
७०—अहिला बाला	१६	„	„	
७१—वसंतबाला		„	„	
७२—सिंधुबाला मैती	१९	चाँदीपुर	„	१

एक बार पूर्व भी इसके साथ बलात्कार हुआ ।
(यह स्त्रीरोग से चल बसी ।)

७३—सत्यबाला देई	१८	५-२-'४४	२

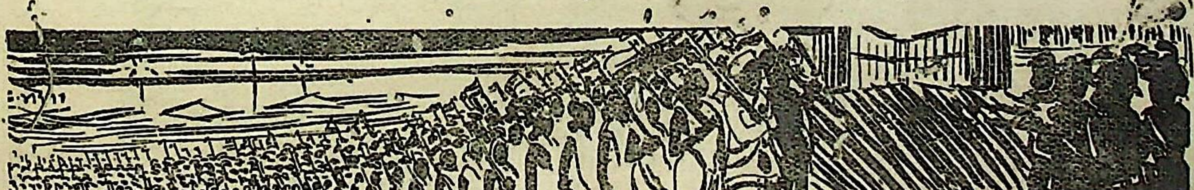

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

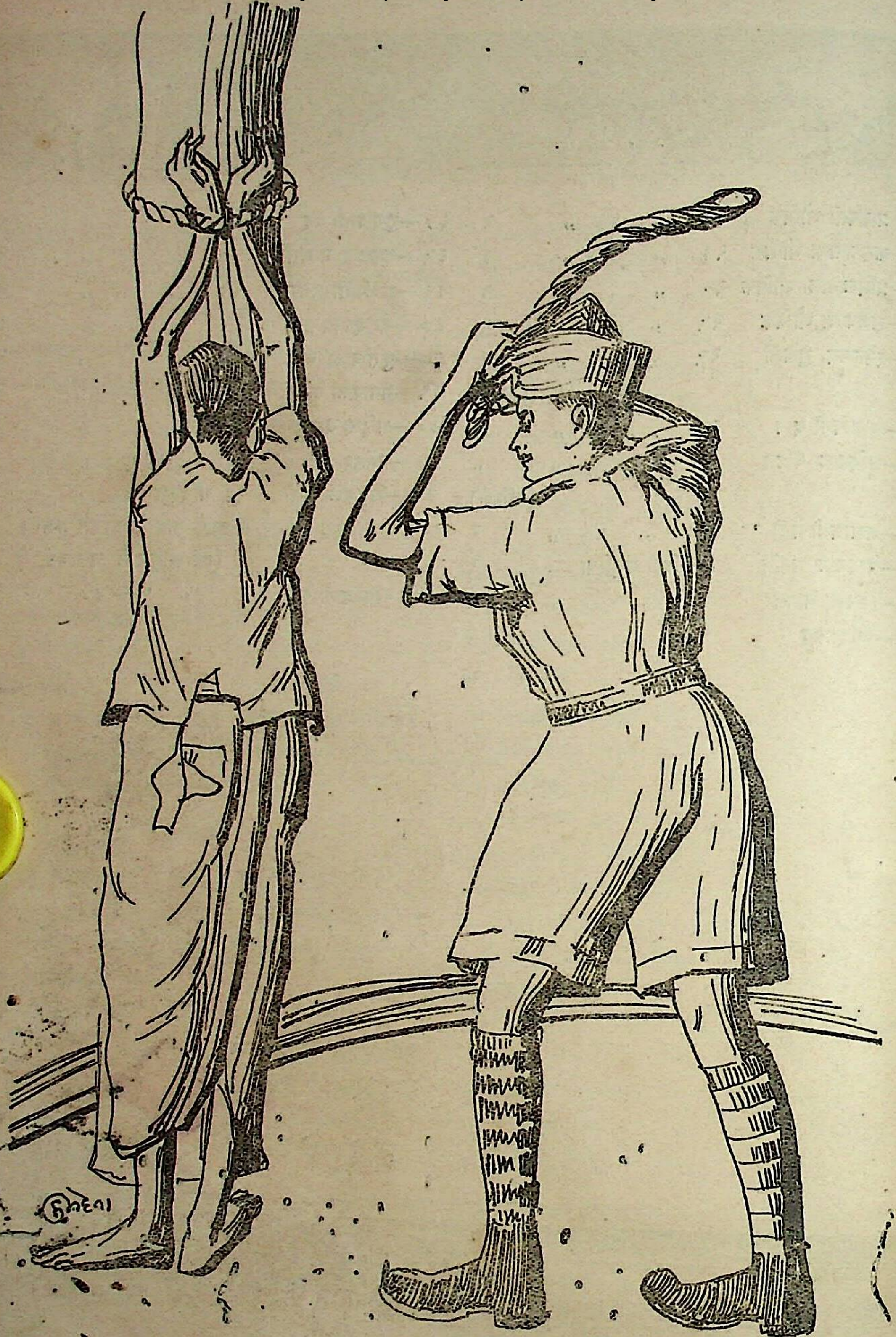

......मुक्के तथा कोड़े से पीटने, तरह-तरह से चोट पहुँचाने आदि की तो धूम मची थी। लोगों को अंधाधुंध गालियाँ दी जाती थीं, निर्दयतापूर्वक उन्हें पीटा जाता था। जब कोई पुलिस की मोटर या पुलिस दल सामने दिखलाई पड़ता, तो लोग डर के मारे [illegible] ......।

Collection. Equipment Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

माननीय जगलाल चौधरी

बिहार में अगस्त-क्रान्ति की ज्वाला सुलगानेवाले

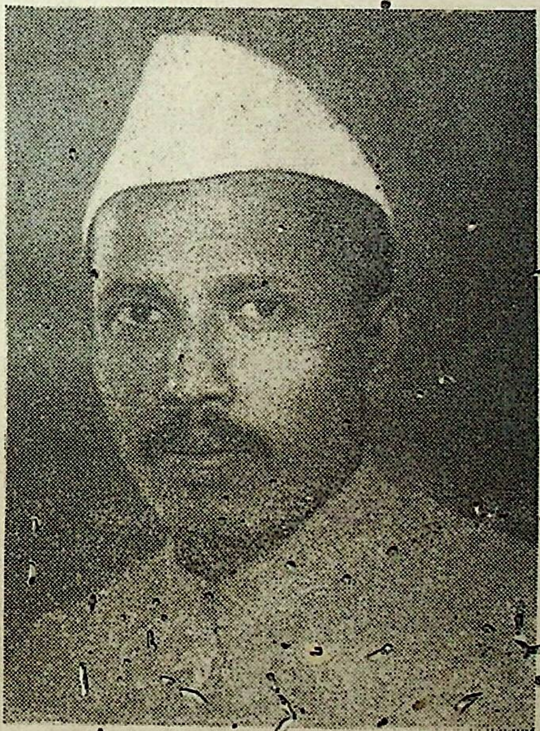

श्री जगतनारायण लाल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

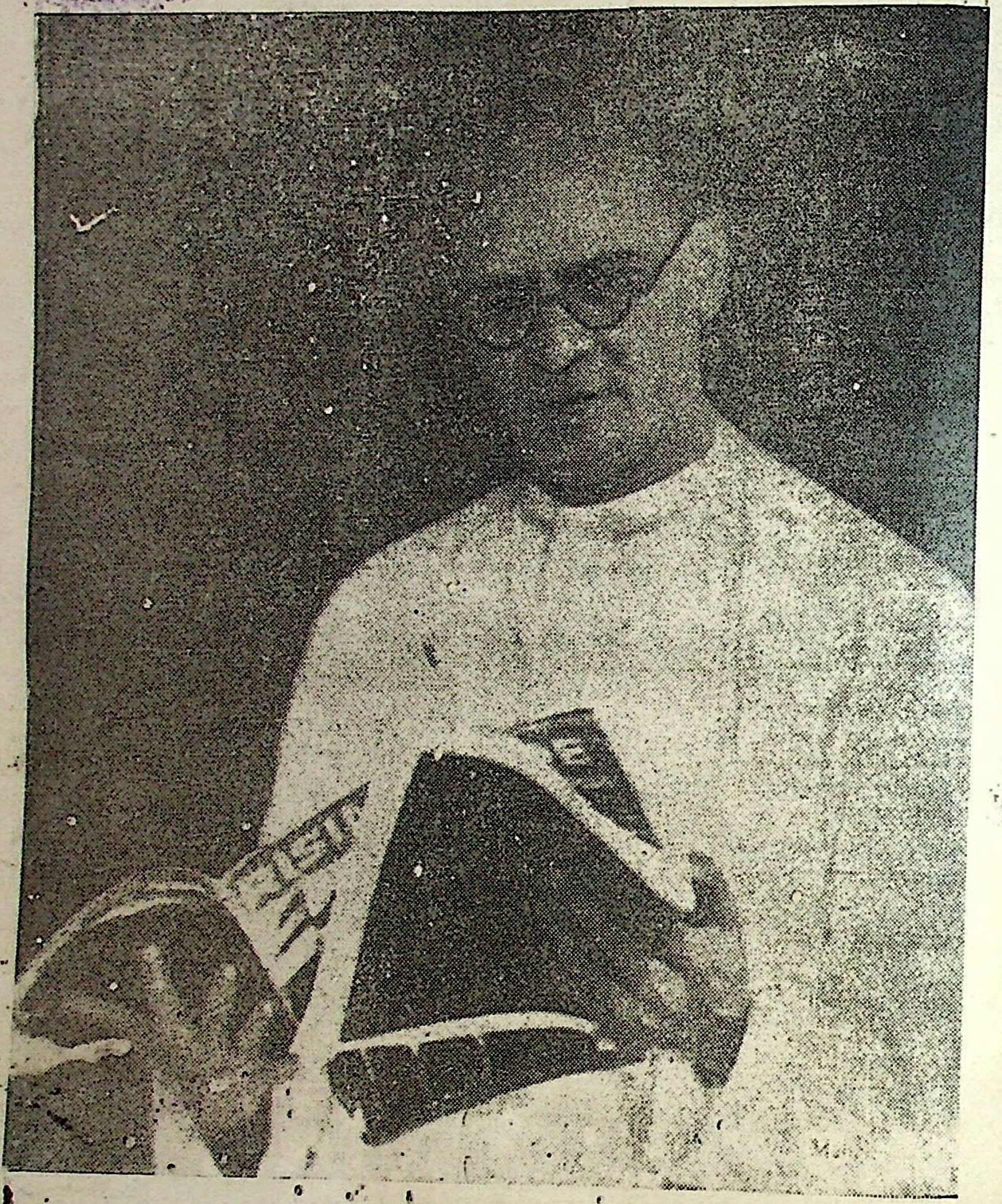

अमर शहीद श्री महादेव देसाई

आगा खाँ महल में बन्दी की हालत में ही आप शहीद हुए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कौंटाई (बंगाल) में

अगस्त-आन्दोलन की आग

१६ दिन के बच्चे की माँ के साथ बलात्कार !

प्रतिष्ठित पुरुषों से जमीन पर नाक रगड़वाई गई !!

आन्दोलन का श्रीगणेश

अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी के बंबईवाले चिरस्मरणीय अधिवेशन के पहले ही ६ अगस्त, १९४२को कौंटाई में 'कौंटाई सब-डिवीजन' कांग्रेस कमिटी की बैठक हुई थी और ७ अगस्त को कांग्रेस कार्यकर्त्ता मुफस्सिल थानों में घूम-घूमकर कांग्रेस-कार्य-समिति के प्रस्तावों के अंदर व्यक्त किए गये विचारों का प्रचार करने लगे।

आंकड़े : जो खुद बोलते हैं

१.	गोलियों से मृत्यु	...	३९
२.	गोलियों से घायल	...	१७५
३.	औरतों के साथ बलात्कार या बलात्कार करने की चेष्टा		२२८
४.	घर जलाए गए	...	९६५
५.	जलाए गए घरों की अनुमानतः क्षति	...	५४१४३४ रु०
६.	कैद किए गए	...	१२६८१
७.	सजा दी गई	...	६७२
८.	घर लूटे गए	...	२०५९
९.	लूट से क्षति	...	३५५२४६ रु०
१०.	लाठियों के शिकार	...	६६८५
११.	सामूहिक जुर्माने लगाए गए	...	३०००० रु०
१२.	स्पेशल कांस्टेबल (नियुक्त किए गए)	...	४३८
१३.	हिंदू महिलाएँ, जिन्हें मुसलमान गुण्डों के हवाले कर दिया गया		१०

महात्मा गांधी तथा देश के अन्य नेताओं की गिरफ्तारी का समाचार मुफस्सिल में कार्यकर्त्ताओं को ज्योंही मालूम हुआ कि प्रतिवाद स्वरूप १४ अगस्त को पतासपुर भगवानपुर तथा खेजुरी थानों में आम-हड़ताल मनाई गई।

कौंटाइ प्रभातकुमार कालिज; स्थानीय हाई इंगलिश स्कूलों, जिसमें लड़कियों का हाई स्कूल भी शामिल था, के छात्रों ने भी हड़ताल कर दी और समूचे कौंटाइ शहर में जुलूस के साथ प्रदर्शन किये। आगा खाँ-महल में नजरबंदी की हालत में श्री महादेव देसाई की असामयिक मृत्यु हो जाने के कारण १६ अगस्त को शोक-सभा की गई।

२० अगस्त को कौंटाई शहर में नेताओं की गिरफ्तारी के प्रतिवाद स्वरूप पूर्ण रूप से हड़ताल मनाई गई। २१ अगस्त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की सुबह श्रीनिकुँजविहारी मैती, एम० एल० ए० (कौंटाई सब-डिवीजनल कांग्रेस कमिटी के सभापति) श्री रासविहारी पाल (मंत्री) तथा श्री ईश्वरचन्द्र माल क़ैद कर लिए गये तथा सुरक्षा बँदी बनाए गये।

गिरफ्तारी

साथ ही श्री विपिनविहारी अधिकारी (वकील), श्री सुधीरचंद्र दास तथा श्री सुबोध गोपाल गुछैत (विद्यार्थी-वर्ग के नेता) आदि प्रमुख कांग्रेस-कार्यकर्त्ता भी गिरफ्तार कर लिए गए, जिन्हें बाद में सजा दी गई।

२३ अगस्त को सफलतापूर्वक दूसरी हड़ताल स्थानीय नेताओं की गिरफ्तारी के प्रतिवाद स्वरूप मनाई गई और उसी दिन सुबह में श्री प्रवीरकुमार जाना तथा श्री बनविहारी पाल नामक छात्रों को गिरफ्तार कर सजा दी गई। २७ अगस्त को पदमा पकुरिया में पब्लिक मीटिंग हुई और श्री ज्ञानेंद्रनाथ मैती, कौंटाई नेशनल स्कूल के शिक्षक तथा श्री अमिय कुमार मैती को गिरफ्तार कर सालों की कड़ी क़ैद की सजा दी गई। २८ अगस्त को सबडिवीजनल कांग्रेस कमिटी के आफिस पर आक्रमण किया गया और कागजात छीन लिए गए तथा स्वयंसेवकों को गिरफ्तार किया गया। उन स्वयंसेवकों को कौंटाई थाने पर लाकर डराया-धमकाया गया; फिर पीछे चलकर छोड़ दिया गया।

सभाएँ तथा जुलूस

जनता में उत्साह तथा स्वतंत्रता की भावना जाग्रत करने और प्रोग्राम बनाने के उद्देश्य से सब-डिवीजन की सभी बस्तियों में सैकड़ों सभाएँ की गईं तथा जुलूस निकाले गए।

लगभग ८ हज़ार व्यक्तियों ने आजादी की लड़ाई के लिए स्वयंसेवकों में अपने नाम दर्ज करवाए और बहुत-से संग्राम-शिविर थानों को संगठित करने के लिए खोले गए। कम-से-कम एक शिविर में ८२ व्यक्ति थे। संगठन इतना विस्तृत और दृढ़ था कि सब-डिवीजन के सभी ग्रामों में आंदोलन की आग फैल गई और सभी उत्साहित होकर इसमें भाग लेने लगे।

बहुत-सी सभाओं में पुलिस जाने की हिम्मत भी नहीं करती थी। जिस सभा में जाती भी थी, उसमें किसी भी वक्ता को गिरफ्तार करने का उसे साहस नहीं होता था। फलतः सब-डिवीजन के सभी प्राइमरी तथा मिडल स्कूल बंद थे। सभी हाई स्कूल तथा कौंटाई प्रभातकुमार कॉलिज वीरान मालूम होते थे। स्कूल कॉलिज के बहुत-से विद्यार्थियों ने सोत्साह आंदोलन में भाग लिया।

श्री वीरेन्द्रनाथ माल; हालुदबेरी हाई स्कूल के ग्रेजुएट शिक्षक, श्री कृष्णकुमार चक्रवर्त्ती काव्यतीर्थ (जिनकी मृत्यु भगवानपुर गोलीकांड में हुई), भीनेश्वरी मिडल स्कूल के हेड-पंडित तथा अन्य बहुत-से शिक्षकों ने अपने पदों से इस्तीफा देकर आंदोलन में प्रमुख भाग लिया।

१० हज़ार व्यक्तियों का जुलूस

१४ सितंबर को मुफस्सिल के सभी इलाकों से १० हज़ार लोगों के २७ जुलूसों ने प्रायः तीन बजे आठ प्रमुख सड़कों पर नारे लगाते कौंटाई शहर में प्रवेश किया। संपूर्ण सब-डिवीजन के जन-जीवन में इससे उत्साह की उत्तुंग तरंगें हिलोरें लेने लगीं। सरकारी अफ़सर भयभीत होगये और भीतर से ही आफिसों को बचाने के लिए उन्हें बंद कर दिया। पुलिस ने भी प्रदर्शनकारियों के साथ किसी तरह की रोकटोक नहीं की।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

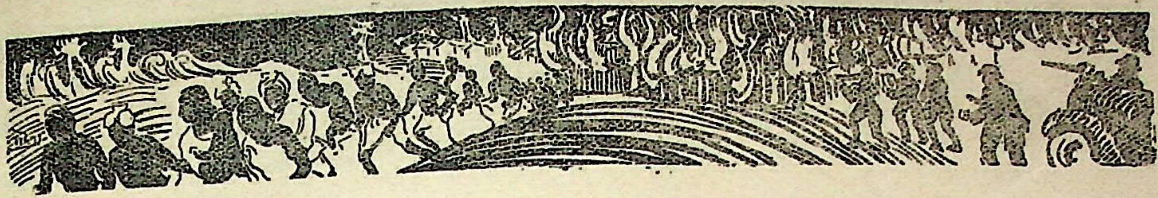

पिकेटिंग तथा हड़ताल

कोंटाई प्रभात कुमार कॉलिज तथा कुछ हाई स्कूलों में पिकेटिंग तथा हड़ताल जारी रहीं। पुलिस ने हाई स्कूलों के गेट पर पिकेटिंग करते हुए प्रायः ४० व्यक्तियों को गिरफ्तार किया। एगरा में पिकेटिंग खत्म होने पर वहाँ के दूकानदारों को पुलिस ने जोरों की चोट पहुँचाई। इस प्रकार सभी स्कूल तथा कॉलिज बंद होगए।

वार-फंड में आर्थिक सहायता पहुँचाने के लिए एस० डी० ओ० ने ६ सितंबर को एक नाच का आयोजन किया। स्वयंसेवकों ने समूचे शहर में पैरेड करते हुए जनता से अपील की कि वह इस नाच का बायकाट करे। प्रदर्शनकारियों को गिरफ्तार किया गया, जिनमें से तीन तो सजायाफ्ता हुए; लेकिन बाकी छोड़ दिए गए। नृत्यस्थल के गेट पर पिकेटिंग करनेवाले स्वयंसेवकों पर गहरी मार पड़ी और उन्हें कैद कर लिया गया। गिरफ्तार किए गए व्यक्तियों में से ४ को तो सजा दी गई; पर बाकी को दस मील दूर-स्थित भायतगढ़ ले जाकर भूखों रखकर छोड़ दिया गया।

अफसरों का बॉयकॉट

सरकारी आफिसों, खासकर लॉ-कोर्ट्स, का बायकाट संयोजित करने के लिए शहर के दैनिक तथा सप्ताह में दो दिन लगनेवाले हाट-बाजारों को और डिस्ट्रिक्ट बोर्ड की सड़कों पर लगनेवाली हाटों को बंद करवाने के लिए कोशिशें की जाने लगीं। तरकारी, चावल, मछली, दूध आदि बेचनेवालों से शहर में नहीं आने के लिए प्रार्थना की गई। यह बायकाट २० अगस्तवाली हड़ताल के दिन से ही शुरू किया गया। यह बायकाट इतना सफल हुआ कि कोई भी बाहर से बेचनेवाला शहर में नहीं आने लगा। शहर की सभी दूकानें बंद थीं। सिर्फ स्थायी दूकानदार ही अपनी दूकानें खोले हुए थे; उन्होंने भी उस अवधि तक कलकत्ते या बाहर से चीजें मँगवाने से इनकार कर दिया। फलतः समूचा शहर प्रायः तीन सप्ताह तक रेगिस्तान के समान मालूम पड़ने लगा। सरकारी अधिकारियों ने भारत-रक्षा-कानून के अंतर्गत आस-पास के धनी-मानी लोगों के यहाँ से बलपूर्वक खाद्यपदार्थ छीनना शुरू किया। लोग आस-पास के प्राप्य स्थानों से खाद्यसामग्री प्राप्त करने लगे। स्थानीय क्रिमिनल कोर्ट के मुख्तारों ने भविष्य में नए मुकदमें की पैरवी नहीं करने का निश्चय किया।

चौकीदारों का इस्तीफा देना

सितंबर के दूसरे सप्ताह में गावों तथा थानों का संबंध-विच्छेद करने के विचार से चौकीदारों तथा दफादारों को इस्तीफा देने के लिए कोशिशें जारी हुईं। फलतः बहुत-से चौकीदारों तथा दफादारों ने तो राजी खुशी से इस्तीफा दे दिया; कुछ को इस्तीफा देने को मजबूर किया गया और बाकी थाने में हाजिरी नहीं देने लगे।

महिषागोट-गोलीकांड

२० सितंबर को पिछबनी में ११ स्वयंसेवकों को पुलिस ने गिरफ्तार किया। बस क्या था, एक बहुत बड़े झुंड ने पुलिस को घेर लिया और गिरफ्तार किए गए लोगों को छोड़ देने को बाध्य किया। झुंड के भय से पुलिस को उन स्वयंसेवकों को छोड़ देना पड़ा।

इसके बाद स्थानीय संग्राम-शिविर पर पुलिस के आक्रमण करने की आशंका मालूम होने पर कोंटाई शहर से [illegible] मील दूर कोंटाई रामनगर डि० बो० की सड़क को सरिसबेरिया (महिषागोट) नामक स्थान पर काट डाला गया।

२२ सितंबर को आर्मड कांस्टेबल के साथ एस० डी० ओ० तथा एस० डी० पी० ओ० ने आसपास की बस्तियों के बहुत-से घरों को घेर लिया और लोगों को जबर्दस्ती सड़क

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jaldapi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भरने को मजबूर किया। पुलिस की नृशंसता से बचने के लिए कुछ महिलाओं ने अपने-अपने दरवाजे बंद कर लिए। उनके यहाँ रक्षा के लिए कोई पुरुष उस समय मौजूद नहीं था, तथापि पुलिस दरवाजों को तोड़कर उनके घरों में घुस गई।

सड़क की मरम्मत के लिए जबर्दस्ती काम में लगाए गए अपने-अपने ग्रामीणों को छुटकारा दिलाने के लिए लोग दल-के-दल आए। डि० बो० के ओभरसीयर ने जब उन्हें मजदूरी देने का वादा किया तथा काम से छुट्टी दी, तब कहीं जाकर लोगों की भीड़ टली। इस बीच जोरों की वर्षा हुई और लोगों को लगभग एक फर्लांग तक दौड़कर महिषागोट के तालाब के किनारे लगे हुए वृक्षों की छाया में शरण लेनी पड़ी।

इसी बीच सबडिवीजन के प्रधान ऑफिस से नई फोर्स आई। पहले से भी पुलिस थी ही। दोनों के मिल जाने पर एस० डी० ओ० ने अपने साथ आर्म्ड पुलिस लेकर लोगों की तरफ बढ़कर कुछ लोगों से बातें करनी चाही। ज्योंही कुछ लोग एस० डी० ओ० की ओर आगे बढ़े कि लाठी-चार्ज शुरू हुआ। इस पर लोग पीछे मुड़े। पुलिस ने रोड़े बरसाना शुरू किया। तब लोगों के क्रोध की सीमा न रही और उन्होंने भी रोड़े बरसाकर पुलिस को मुँहतोड़ जबाब दिया।

[illegible] पुलिस ने ३५ राउंड गोलियाँ चलाईं। इस लाठी-चार्ज तथा गोली-कांड के चलते प्रायः २४ व्यक्ति घायल हुए। घायल हुए लोगों में से कुछ ने पानी माँगा। एक लड़का पानी लाने जारहा था। पुलिस ने उस:र संगोन से प्रहार किया।

पुलिस ने घायलों में से तीन को पैर पकड़कर घसीटते हुए घटनास्थल (तालाब) से कटी हुई सड़क तक लाकर लॉरी पर चढ़ा लिया और उन्हें कोंटाई शहर में लाने लगी। रास्ते में ही दो की मृत्यु हो गयी और तीसरे का देहांत अस्पताल में हुआ।

कोंटाई शहर से तीन प्राइवेट डाक्टर घायलों की प्राथमिक सहायता के लिए दौड़े आए। सुबह में कुछ बेतरह घायल हुए व्यक्तियों को अस्पताल में भर्ती कर लिया गया और बाकी का प्राइवेट रूप से इलाज होने लगा। अस्पताल में भर्ती किए गए घायलों में से एक की मृत्यु दूसरे दिन सुबह में ही हो गई। इस गोलीकांड में सब मिलाकर छः व्यक्तियों की मृत्यु हुई।

स्वयंसेवक-शिविर पर धावा

२० सितम्बर की सुबह में एस० डी० ओ० तथा एस० डी० पी० ओ० के नेतृत्व में आर्मड पुलिस ने गोपीनाथपुर (पी० एस० भगवानपुर) के स्वयंसेवक कैंप पर धावा किया। स्वयंसेवकों को पीटा गया और उनमें से ४० को कैदकर थाने पर लाने की कोशिश की गई। रास्ते में धनरल्ला नामक स्थान पर दस हजार लोगों की भीड़ ने स्वयंसेवकों को रिहा करने के लिए पुलिस को घेर लिया। पुलिस ने जोरों से लाठी-चार्ज किया। फिर भी लोगों की भीड़ नहीं हटी। अंत में हारकर पुलिस को उन स्वयंसेवकों में से ११ को छोड़कर बाकी को छोड़ देना पड़ा। वे ११ स्वयंसेवक थाने लाए गए।

फिर भी एक हजार लोगों ने बाकी स्वयंसेवकों को भी रिहा करने के खयाल से थाने तक पुलिस का पीछा किया। एस० डी० ओ० ने थाने पर वादा किया कि वे स्वयंसेवक भी भीड़ के हट जाने पर छोड़ दिए जायँगे। स्थानीय कांग्रेस कमिटी के मंत्री की प्रार्थना पर लोगों ने वह स्थान छोड़ दिया। पर एस० डी० ओ० ने अपना वचन पूरा नहीं किया। इस पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

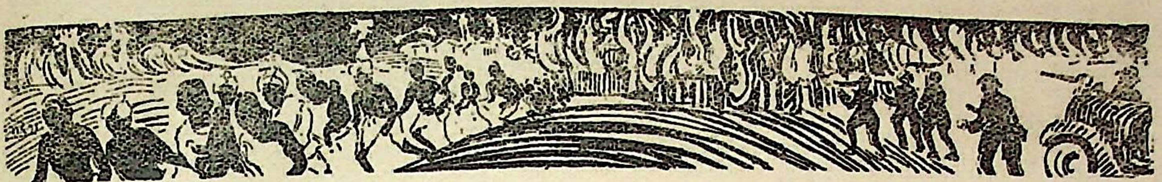

असंतुष्ट भीड़ ने एस० डी० ओ० की नावें तथा मोटर-बस नष्ट-भ्रष्ट कर दिए।

काँग्रेस भवन को जलाना

पुलिस ने कोंटाई सब-डिवीजनल काँग्रेस कमिटी के कार्यालय, कोंटाई नेशनल स्कूल, स्थानीय चर्खासंघ खादी भंडार की दुकान तथा शिल्पभंडार की तलाशी २० सितम्बर को ली। सभी वस्तुओं को बरबाद कर डाला गया, जिनमें चर्खासंघ के कपड़े भी थे। पुलिस कांग्रेस कार्यालय की चीजें तथा कागजात आदि उठा ले गई तथा स्वयंसेवकों को उसने कैद कर मकान में ताले जड़ दिए।

स्वयंसेवकों ने दरवाजे को तोड़कर आफिस में रहने की कोशिश की; पर पुलिस ने पुनः ताले लगा दिए। स्वयंसेवकों ने फिर ताले तोड़ दिए और आफिस ६ अक्तूबर तक खुला रहा, जब तक कि वह जलाया नहीं गया और उसके मालिक श्रीगोष्ठ-विहारी दे गिरफ्तार नहीं किए गये।

मकानों पर धावे

कोंटाई बाजार के खुल जाने पर २४ सितंबर की निस्तब्ध रात्रि में आमर्ड कास्टेबलों ने श्री सतीशचंद्र डींडा, श्री सुरेन्द्र नाथ जेना, श्री शचींद्रकुमार मैती (स्थानीय जमींदार) तथा श्री धरनिधर डींडा, एम० ए०, बी० एल० के मकानों को घेर लिया और उनके घरों में घुसकर दूध देनेवाली गाएँ छीन लीं। साथ ही पुलिस ने श्री अवंतीकुमार मैती, श्री अचिन्त्य नाथ ससमल, श्री मुंशी महिउद्दीन तथा अन्य के घरों में घुसकर भारत-रक्षा-कानून की ७५-ए वीं धारा के अनुसार खाद्यान्न लूट लिया।

कैंपों पर धावा

२७ सितंबर को ३५ हथियारबंद सिपाहियों ने स्वयं-सेवक-शिविर, चंदनपुर (पी० एस० कोंटाई) पर धावा किया और स्वयंसेवकों से जबर्दस्ती काम लिया तथा उन्हें ढेंने पकड़ कर पास के तालाब में फेंक दिया।

सिपाहियों के झुंड ने तब बेलवानी (पी० एस० रामनगर) की ओर बढ़कर संद पहाड़ी पर के स्वयंसेवक शिविर पर धावा किया। सोये हुए स्वयंसेवकों पर लाठियाँ चलाईं और शिविर को तमाम चीजों में आग लगा दी। सिपाही आगे बढ़कर एक गाँव में घुसना चाह रहे थे कि इसी बीच एक भीड़ ने उन्हें घेर लिया।

भीड़ को तितर-बितर करने के लिए पुलिस ने गोलियाँ चलाईं और फलस्वरूप ३ व्यक्तियों की मृत्यु घटनास्थल पर ही हो गई तथा १४ व्यक्ति घायल हुए। गाँव में घुसकर जब पुलिस लौट रही थी, तो उसे पुनः एक भीड़ ने घेर लिया। पुलिस ने फिर गोलियाँ चलाईं; फलतः दो व्यक्ति तो वहीं मारे गए और लगभग ६० व्यक्ति घायल हुए।

पहले मारे गए तीन व्यक्तियों तथा तीन घायलों को तो पुलिस अपने साथ ले गई; पर पीछे मारे गए दो व्यक्तियों को उसने छोड़ दिया। कुछ घायलों की मृत्यु अस्पताल में हुई। इस प्रकार इस गोलीकांड में देश के दस नौनिहालों ने अपने प्राण दिए।

ध्वंसात्मक कार्य

२९ सितंबर को जनता ने पटासपुर थाना आफिस पर धावा बोल दिया। जब वहाँ थाने की सारी चीजें जलाई जा रही थीं, थाने के इन-चार्ज आफिसर दुम दबाकर भाग गये। चार कांस्टेबलों को निःशस्त्र कर कैद कर लिया गया। पीछे जब थाने की सारी वस्तुएँ खाक में मिला दी गई तो उन्हें छोड़ दिया गया।

सभी रेकर्ड तथा सामान जब्त किए गए। मकान को

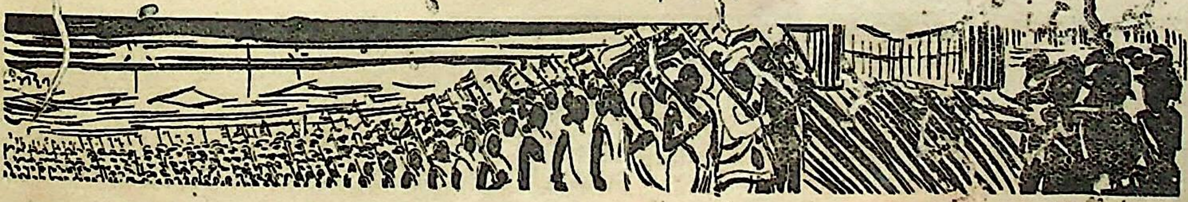

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जलनेवाली वस्तुएँ तो जला ही दी गयीं, नहीं जलनेवाली चीजों को बरबाद कर डाला गया। इस तरह थाने का मकान भी क्षत-विक्षत कर दिया गया। सात पोस्ट आफिसों के रेकर्ड, पोस्टकार्ड, स्टांप तथा लिफाफे आदि भी जला दिए गए। पतासपुर तथा मंगलमारो की आवकारी की दूकानों के अफीम के रेकर्ड तथा सामान जला दिए गए। अरगोल, अमगछिया, गोकुलपुर तथा गोपालपुर के (चार) डाक बँगले पूर्णरूप से नष्ट कर दिए गए। पतासपुर सब-रजिष्ट्री आफिस के सभी रेकर्ड तथा दस्तावेजें जला दी गईं; एक डेट् सेट्लमेंट बोर्ड, छः यूनियन बोर्डों तथा आठ पंचायती यूनियनं के सभी रेकर्ड भी स्वाहा कर डाले गए।

सभी दफादारों तथा चौकीदारों के यूनिफार्म जला डाले गए। एगरा, बजकुल तथा ललाट जंक रोड के ५० पक्के पुल नष्ट कर दिए गये। सड़क को भी ३० जगह काट डाला गया। एक खासमहाल तहसीलदार के रेकर्ड तथा कागजात जलाए गए।

एक पोस्टल ओभरसीयर को भी कैद किया गया; पर एक दिन के बाद ही उसे मुक्त कर दिया गया।

कागज़ात फूँके गए

२८ सितंबर को खेजुरी थाने पर आक्रमण हुआ। थाना-अफसर तथा तीन कांस्टेब्लों के हथियार छीन लिए गए और उन्हें गिरफ्तार किया गया। थाने के सब कागज़ात तथा दूसरे सामान जला दिए गए। इसके बाद लोगों ने खेजुरी के रजिष्ट्री आफिस की दस्तावेज तथा अन्य कागजात, हेनरिया खास-महाल के सब कागज, सिक्के तथा प्रॉमेसरी नोट और डेट्-सेट्लमेंट-बोर्ड के सारे के सारे कागजों में आग लगा दी। तीन यूनियन बोर्डों तथा पाँच पंचायती यूनियनों की भी यही दुर्दशा हुई।

खासमहाल के छोटे मैनेजर को गिरफ्तार किया गया; लेकिन, तीन दिनों के बाद वे छोड़ दिए गए। इन तीन दिनों में उनके साथ पूर्ण भद्रता का व्यवहार किया गया। छोड़े जाने पर उन्हें राहखर्च और साथ ही कपड़े भी दिए गए।

जूट-ऑफिस के कागजात जला दिए गए। खासमहाल के आठ तहसीलदारों के चेक तथा रेकर्ड भी उनसे लेलिए गए और उनमें आग लगा दीगई। रसूलपुर कमर्दा तथा बीरबंदर के डाक-बंगले प्रायः नष्ट कर दिए गए।

हेनरिया, हलुदबारी, कालागछिया, अजाया, जनका तथा खेजुरी के पोस्ट-आफिसों के कागज, कार्ड, लिफाफे तथा टिकट आग की भेंट चढ़े और थाने के अंदर के तार के सारे खंभे उखाड़ दिए गए। टोल ऑफिस और उससे संबद्ध कालीनगर के सारे क्वार्टर नष्ट-भ्रष्ट कर दिए गए। कालीनगर स्थित सब-ओवरसियर का ऑफिस भी जला दिया गया। स्कूल सब-इंसपेक्टर का ऑफिस तथा स्वास्थ्य-विभाग के अफसर का ऑफिस बरबाद कर दिया गया—उनके कागज भी जला दिए गए।

लतात तथा जनका के बीचवाली सड़क के तीन पुल उड़ा दिए गए और सड़क बीसों स्थानों पर काट डाली गई। कालीनगर से ठाकुर-नगर के बीच की सड़क की भी यही दुर्दशा हुई। दो आवकारी की दूकानों की अफीम तथा दूसरी चीजों में आग लगा दीगई। पालबनिया का पुल जला दिया गया और चाँदबनिया का पुल नष्ट कर दिया गया। इरंची और तल्ला की नावें तोड़ दीगईं और चिरगुनदरिया की नावें कांग्रेस ने अपने कब्जे में करली।

तीन नावें नष्ट कर दी गईं। दो नावों पर, जो श्री सत्येन्द्र नारायण मजुमदार की थीं, ५००० रुपए का ८०० यूनिट मिट्टी तेल रहा होगा और तीसरी नाव श्री खगेन्द्रनाथ ससमेल की थी; जिस पर दाल, चीनी, घी, आटा मैदा, मसाला, दूध और चाय

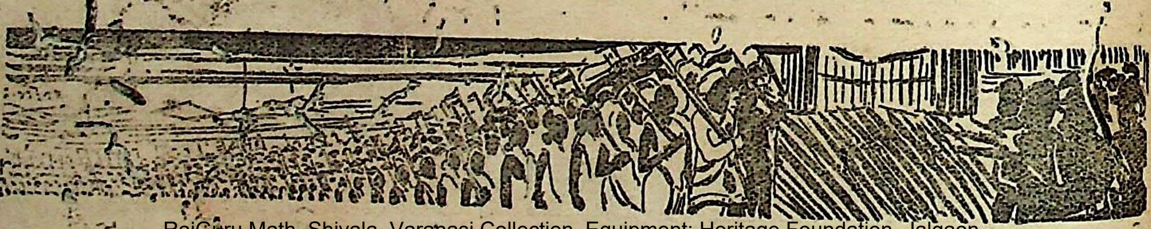

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वगैरह थी, जिनकी कीमत प्रायः ९००० रुपया रही होगी। ये सब चीजें सरकार के अफसरों, पुलिस तथा फौजों के लिए थीं। इनमें आग लगा दीगई।

सर्किल-अफ़सर गिरफ्तार किया गया

इन सारी कार्रवाइयों के बाद खेजुरी के सर्किल-अफसर तथा ११ हथियारबन्द सिपाही खेजुरी भेजे गए; किन्तु, जब वे रास्ते पर की रसूलपुर नदी पार कर रहे थे, उसी समय कांग्रेस-कर्मियों ने उन्हें घेर लिया और निःशस्त्र कर दिया। उन्हें १० दिनों तक नजरबन्द रखा गया और उसके बाद सुन्दर-वन लेजाकर उन्हें छोड़ दिया गया। उनके साथ दया का वर्त्ताव किया गया और छोड़ते वक्त उन्हें राहखर्च भी देदिया गया। जो १० बन्दूकें छीन लीगई थीं, वे सरकार को लौटा दीगईं।

भगवानपुर गोलीकाण्ड

२९ सितंबर को प्रायः २९ हजार व्यक्ति भगवानपुर थाने पर आक्रमण करने को इकट्ठे हुए। थाने को चारों ओर काँटेदार तार लगे हुए थे। एक ही ओर तीन फीट चौड़ा फाटक था। ज्योंही जुलूस थाने के फाटक पर पहुँचा, कंटाई खासमहल के मैनेजर तथा भगवानपुर थाने के दूसरे दारोगा ने लोगों पर गोली दागना शुरू कर दिया। फल-स्वरूप १३ व्यक्ति वहीं मारे गये और ९० घायल हुए। श्रीविभूत बाबू गोली लगने के ३० घण्टे बाद तक जिंदे रहे। उनको थाने की हाजत में बिना भोजन, पानी तथा चिकित्सा के रखा गया। कृष्णकुमार चक्रवर्त्ती एक घायल व्यक्ति के लिए तालाब से पानी लाने गए थे; उनको वहीं गोली मार दी गई। वह तालाब ही में गिर पड़े। उनकी लाश कल होकर पानी में तैरती पाई गई। परेशचंद्र बोर-बन्दर अस्पताल में मरे और धीरेंद्रनाथ दलपति थाना हाजत में १५ अक्टोबर को। इस तरह थाने में कुल १६ व्यक्तियों की जान गई।

१ अक्टोबर को टोटानाला, भीमेश्वरी, कजलागढ़, मुगदेरिया और लरेबरिया के पोस्ट-आफिस, एक तार-आफिस, कजलागढ़ की सब-रजिष्ट्री आफिस, जूट आफिस, 'दिहात पुनर्निर्माण' आफिस, माटोल उत्तर-बाजार और बाँसी के डाक बंगले में आग लगा दी गई। सफाई विभाग के आफिसों के सारे कागजात जला दिये गये। तार के खंभे उखाड़ दिए गए तथा चौकीदारों और दफादारों की पोशाकें फूँक दी गईं। ८ नावें डुबो दी गईं; एक पुल तोड़ दिया गया और डिस्ट्रिक्ट बोर्ड की सड़क दो स्थानों पर काट डाली गई।

एगरा

२९ सितंबर को कंटाई और बेलदा के बीचवाली सड़क, बरनालगेरिया के निकट, काट डाली गई। कुछ बड़े-बड़े पेड़ काट कर सड़क पर गिरा दिए गए, जिससे आवागमन अवरुद्ध होजाय। प्रायः दो मील तक तार काट डाले गए। जिला मैजिस्ट्रेट, सब-डिविजनल पुलिस अफसर तथा पुलिस का एक दल उस हलके में पहुँचा और ताजपुर नामक एक बस्ती में घुसा।

पुलिस ने श्री कृष्ण मैती (७० वर्ष), श्री नवकृष्ण मैती ([illegible]५ वर्ष), श्री वसंतकुमार मैती (९० वर्ष), उनके परिवार के दो अन्य लड़कों और साथ ही आसपास के भद्र लोगों से जबर्दस्ती कुली का काम लिया। रसूलपुर और बरनालगेरिया के लोगों को भी यही काम करने को बाध्य किया गया। बादलपुर के 'डेट सेटूलमेंट बोर्ड, के चेयरमैन श्री केनराम अधिकारी और भवानीचक बाजार के कुछ दूकान[illegible] बड़ी बेरहमी से पीटा गया, सड़क पर खींच कर ले जाया गया और उनसे जबर्दस्ती गढ़े भरवाये गये। १३ व्यक्ति, जिनमें श्री कृष्ण मैती, बसंतकुमार मैती और दूसरे व्यक्ति थे, गिरफ्तार करके बहुत दिनों तक कंटाई सब-डिवीजनल जेल में रखे गए।

[stamp] पुस्तकालय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीकृष्ण मैती का पक्का मकान पेट्रोल डालकर जला दिया गया।

कागजात जलाए गए

बासुदेवपुर, बालीघाट, पंचरोल, चौरेपलिया और बैटा-बाजार, पाँचों पोस्ट आफिसों, के सभी कागजात और रेकर्ड जला दिए गए। बासुदेवपुर और चौरेपलिया डेट-सेटूलमेंट-बोर्ड के कागजातों की भी यही दशा हुई। बासुदेवपुर, ताजपुर, बथुआरी, चौरेपलिया, पानीपारुल, मरथान और बरीदा—इन सातों यूनियन बोर्डों और इरांदा और दुबदा के पंचायती-बोर्डों के भी सारे कागजात और ६३ चौकीदारों और ६ दफादारों की पोशाकें भी अग्निदेव की भेंट चढ़ गईं। खासमहाल के एक तहसीलदार के रेकर्ड भी फूँक दिए गए। पंचरोल, पानीपारुल और बेहटा की अफीम की दूकानें बर्बाद कर दी गईं।

कंटाई

२७ से २९ अगस्त तक कंटाई-बेलड़ा, कंटाई-कालीनगर, और कंटाई रसूलपुर सड़क अनेक स्थानों पर काट डाली गई। कंटाई-रसूलपुर सड़क पर एक काठ का पुल भी बर्बाद कर दिया गया। सतभीले, भायतगढ़, कालीनगर, सुसुनिया, कलुआ, रसूलपुर, पेटोआ आदि स्थानों में यातायात की सभी नावें नष्ट कर दी गईं। फलतः थाना, सबडिवीजन और जिले के दूसरे स्थानों से आवागमन का कार्य स्थगित हो गया।

भायतगढ़ गोलीकाण्ड

३० सितंबर को तीसरे पहर दिन में डिस्ट्रिक्ट-मैजिस्ट्रेट ... डी० ओ० हथियारबंद सिपाहियों के साथ पहुँचे और विद्यार्थियों तथा राह चलनेवालों से जबर्दस्ती एक मोटर-गाड़ी में ईंटे भरवाईं और फिर सड़क भरवाने के लिए मसबिदा की ओर चले। रास्ते में जो कोई भी मिला उसे जबर्दस्ती मोटर में बैठा लिया। सड़क की मरम्मत करते-करते अंधेरा हो गया। इसलिए, पुलिस ने मरसिदा यू० पी० स्कूल के नए बने मकान में आग लगा दी, जिससे प्रकाश में काम होसके। पुलिस जब वहाँ से हट गई तो लोगों ने फिर उस स्थान से ईंटों को हटा दिया। दूसरे दिन १ अक्टोबर को सिपाहियों के एक दल ने मरसिदा में घुस कर प्रायः २५ घरों में आग लगा दी। ब्रजमोहन नामक एक बूढ़े को बुरी तरह पीटा गया। कटी हुई सड़क को भर दिया गया और फिर पुलिस का दल भायतगढ़ की ओर बढ़ा। रास्ते में नचिंदा बाजार में अनेक दूकानदारों की चीजें नष्ट-भ्रष्ट कर दीगईं। भायतगढ़ में लोगों की भीड़ पर गोली चलाई गई। दो व्यक्ति मरे। एक तो तुरत मर गया। दूसरे की यदि हिफाजत होती तो बच जाता; लेकिन, एक सिपाही ने उसकी गर्दन पर कस कर ठोकर मारी और बेचारा तुरत शांत होगया। लौटते समय पुलिस ने रास्ते में १५ व्यक्तियों को गिरफ्तार किया।

दमन-चक्र

जिला के अधिकारियों ने संपूर्ण सबडिवीजन में दमन का ऐसा चक्र चलाया, जो अभूतपूर्व था। संपूर्ण सब-डिवीजन के लोग बिलकुल सैनिक-शासन के अंदर साँस ले रहे थे। कंटाई-बेलड़ा सड़क, जो कंटाई से बाहर जानेवाली एक ही डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड की सड़क है, २८ सितंबर, सन् ४२ से ही सैनिक नियंत्रण में आगई। रात-दिन उस पर फौजी मोटर-गाड़ियाँ गश्त लगाया करती थीं।

सबडिवीजनल मैजिस्ट्रेट ने नोटिश प्रकाशित करवा दी कि जो व्यक्ति सड़क को हानि पहुँचावेगा, तार काटेगा अथवा सतमील घाट की नाव को डुबाने का प्रयत्न करेगा, उसे उसी समय गोली मार दी जायगी। किंतु, इस नोटिश को अनसुनी कर के लोगोंने नावें भी डुबोईं और सड़क तथा तार भी काटे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अगस्त आन्दोलन के सिलसिले में सरकार के मेहमान

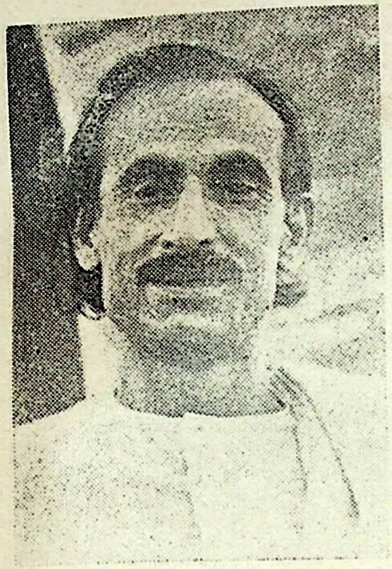

आचार्य कृपलानी

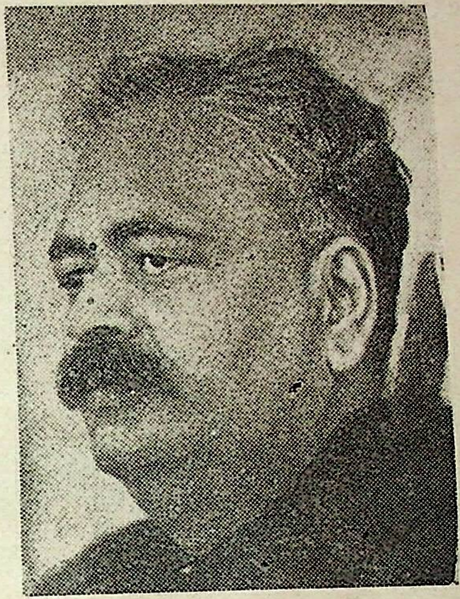

माननीय गोविन्द बल्लभ पन्त

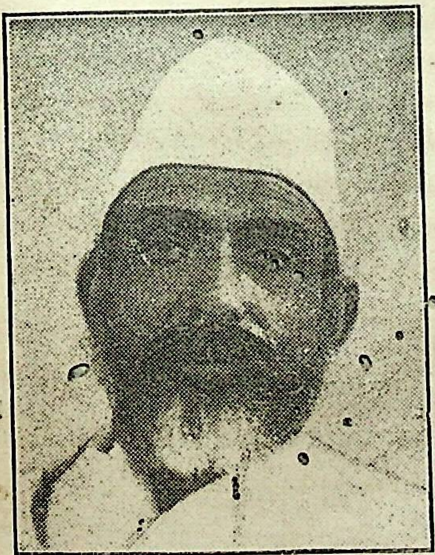

माननीय पुरुषोत्तम दास टण्डन

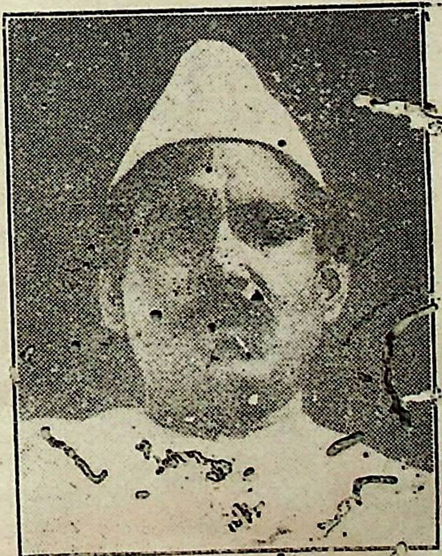

माननीय संपूर्णानन्द

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पं० जवाहरलाल नेहरू

"सन् १९४२ में पुलिस और फौज की तरफ से जो कुछ हुआ, उसे हम न भूलेंगे। जिन लोगों ने अमानुषिक अत्याचार किए हैं, उसकी उन्हें सज़ा दी जायगी।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

कर्फ्यू-ऑर्डर

११ दिसंबर को सबडिवीजनल ऑफिसर ने भारत-रक्षा-कानून की ५६ वीं धारा के अनुसार नोटिस निकाल कर लोगों को चेतावनी दे दी कि सिवाय सरकारी अफसरों, डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड के कर्मचारियों घाट के इजारादारों तथा एम० बी० डॉक्टरों को छोड़ कर कोई भी व्यक्ति ८ बजे रात से ४ बजे सुबह तक घर से बाहर नहीं निकल सकता है। एक स्थान पर चार आदमियों के एकत्र होने, लाठी अथवा लोहे के सामान लेकर चलने और धार्मिक-कृत्यों के अवसर को छोड़ कर शंख बजाने पर भी प्रतिबंध लगा दिया गया।

बस-सर्विस अवरूद्ध

डिस्ट्रिक्ट-मैजिस्ट्रेट ने कंटाई बस-सिंडिकेट और कालीनगर तथा रामनगर बस एसोशियेसन की सारी बसों पर अधिकार जमा लिया। फलस्वरूप ३० सितंबर से सारे सबडिवीजन की बस-सर्विस खतम हो गई।

समाचारों पर रोक

संपूर्ण सबडिवीजन क पोस्ट-आफिसों में सैंसर का काम इस तत्परता से चलता था कि सबडिवोजन में आनेवाले तथा वहाँ से बाहर जानेवाले पत्र बिना सैंसर किए हुए नहीं आ-जा सकते थे।

सैनिकों की नियुक्ति

१ अक्टोबर से संपूर्ण सबडिवीजन में कैंपों में प्रायः पाँच सौ फौजी सिपाही रखे गए। कंटाई, जनपत, पिछावानी, रसूलपुर, रामनगर, दीघा बोघा, भगवानपुर थाना, एगरा थाना, मंगलामोरा, प्रतापदीघी सभी जगह ये फौजी कैंप थे। रसूलपुर नदी में एक नाव और लंच पर भी उनकी एक टुकड़ी रहती थी। ये फौजी नंग-धड़ंग स्नान करते और स्त्रियों की ओर गंदा संकेत किया करते थे।

प्रत्येक दिन हवाई-जहाज उन क्षेत्रों का गश्त लगाया करते थे। २ अक्टोबर को कंटाई शहर से प्रायः तीन मील की दूरी पर फूलेश्वर के निकट एक बस्ती में एक जहाज गिर पड़ा। उसका चालक अमेरिकन था। उसकी जान बचाली गई।

गोलीकाण्ड

२ अक्टोबर को पतासपुर थाना के मकान के ध्वस्त होने के बाद एस० डी० ओ०, एस० पी०, सरकल-औफिसर तथा फौज का एक झुण्ड थाना की हालत देखने चला। रास्ते में उसको खार में प्रायः ८०००, आदमियों के दल का सामना करना पड़ा। पुलिस ने भीड़ तितर-बितर करने के खयाल से गोलियाँ छोड़ीं—एक की मृत्यु हुई और एक घायल हुआ।

८ अक्टोबर को एस० डी० ओ० के नेतृत्व में पुलिस तथा फौज के सिपाही पतासपुर थाना के तेपरा नामक गाँव में पहुँचे। तेपरपारा बाँध पर कुछ लोग खड़े थे। सिपाहियों ने उन पर गोलियाँ चलाईं। फलस्वरूप गंगाधर नामक एक स्वयंसेवक मारा गया और ९ व्यक्ति घायल हुए।

१३ अक्तूबर को कुछ पुलिस तथा कुछ फौज के सिपाही एगरा थाना के अलिनगिरी नामक बस्ती में लोगों का घर जलाने के खयाल से घुसे। उन्होंने कुछ आदमियों को प्रायः एक चौथाई मील की दूरी पर तालाब के किनारे खड़ा देखा। सिपाहियों ने उन पर गोलियाँ चलाईं—तीन व्यक्ति तुरत ही मर गये।

फौज तथा पुलिस के सिपाही बलिया-गोविंदपुर भी गए और लोगों को डराने के लिए गोलियां छोड़ने लगे। हरिकृष्ण बेरा नामक एक व्यक्ति डर से एक टीले के पीछे छिपा हुआ था। गोली चलाकर वह मार डाला गया। दो व्यक्ति और भी घायल हुए।

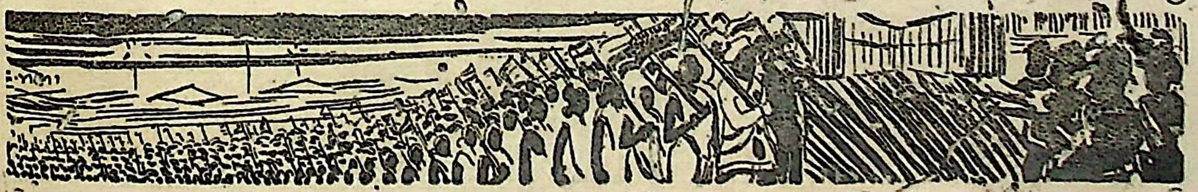

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महिषागोट तथा वेलबानी गोलीकांड के दो मृत व्यक्तियों की लाशें शव-परीक्षा के बाद भी चार दिनों तक उनके संबंधियों को नहीं मिलीं। चौथे दिन कुछ स्थानीय भद्रलोगों को आधीरात में उन लाशों को श्मशान घाट ले जाने को बाध्य किया गया।

घर जलाए गए

लोगों को आतंकित करने के खयाल से जिलाधिकारियों ने केवल कांग्रेस-जनों के ही नहीं बल्कि अन्य निर्दोष व्यक्तियों के भी घर-बार दिन दहाड़े सिविल-अफसरों की आँखों के सामने ही जलाने शुरू किये। उनके कार्य ऐसे लोमहर्षक थे कि कोई अनुमान भी नहीं कर सकता कि सभ्यता का दम भरनेवाली ब्रिटिश-सरकार ऐसा भी जघन्य काम करा सकती है। प्रत्येक कैंप के सिपाही तीन-चार भागों में विभक्त रहते थे। प्रत्येक में कुछ पुलिस अफसर भी रहते थे। वे भिन्न-भिन्न दिशाओं में जाते—बस्तियों में घुसते—घरों में आग लगाते तथा सारे सामान पर अधिकार कर लेते और बगल के घर पर तब तक ठहरते जब तक कि आग लगा घर जल कर एकदम खाक नहीं हो जाता। जलते हुए घरों के ऊपर हवाई-जहाज गश्त लगाया करते कि जिससे लोग आतंकित होकर आग बुझाने की हिम्मत नहीं कर सकें। उद्धव[illegible]र नामक बस्ती में आग लगाते समय पुलिस ने गोलियाँ चलाईं, जिससे गुणाधर नामक एक व्यक्ति घायल हुआ। एगरा थाने के [illegible]पुर गाँव के श्रीकृष्ण मैती के घर में पेट्रोल डालकर आग लगाई गई—प्रायः २० हजार की संपत्ति नष्ट हुई। अनेक बस्तियों में संपन्न व्यक्तियों के घर में सैकड़ों मन धान में आग लगा दी गई। १[illegible] अक्टोबर को बरघनपारा नामक बस्ती के श्री कंगालचंद्र गिरि के घर में आग लगाई गई और तीन सौ मन धान जला दिया गया।

जब पुलिस का दल किसी बस्ती में एक ओर अग्रस[र] होता था तब उस ओर के सब औरत-मर्द अपना-अपना घ[र] छोड़ कर धान के खेतों में चले जाते थे; और तबतक व[हीं] रहते थे, जब तक कि पुलिस का दल बस्ती छोड़ कर न[हीं] चला जाता था। अगर पुलिस का दल कभी सुबह ही बस्ती में घुस पड़ता तो उस दिन लोगों का खाना-पीना भी हरा[म] होजाता था। लोग भात के बर्त्तन तथा केले के पत्ते घर छोड़[ते] वख्त साथ ले लेते थे और धान के खेतों अथवा तालाब के किनारे ही भोजन करते थे। रास्ते में जो कोई मिलता उ[से] पुलिस बड़ी बेरहमी से पीटती थी और डरा-धमका कर उनसे स्वयंसेवकों तथा शिविरों का पता पूछती थी। पुलिस उ[न] स्थानों की भी बड़ी सरगर्मी से खोज करती थी, जहाँ लोगों ने अपने गहने, नकद रुपए तथा अन्य कीमती चीजों को छि[पा] रखा था। समूचे सब-डिवीजन में प्रायः ७६६ मकान जला[ए] गए, जिससे प्रायः ५४१४०० रुपए की हानि हुई।

लूट-पाट और आग लगाना

तलाशी लेते और आग लगाते समय पुलिस ने नक[द] रुपए, गहने तथा दूसरी कीमती चीजें जिम्मेदार अफसरों की उपस्थिति में लूटीं।

दाउदपुर के श्री हरनारायण मैती और श्री संतोषचंद्र राय के यहाँ से ५०० रुपए नकद लूट लिए गए। बासुदेवपुर नामक बस्ती में श्री भातुचरण बारिक के मकान का दरवाजा एक यूरोपियन सिपाही तोड़ रहा था कि अपनी ही बंदूक छू[ट] पड़ने से गोली लग कर वह वहीं मर गया। खेजुरी थाने के जनका बस्ती में श्री दिगंबर दास के यहाँ से जमीन के नीचे गड़ा हुआ ४०००) रुपया नकद लूट लिया गया। इसके अलावा दूसरे लोगों की चल-संपत्ति, जिसकी कीमत प्रायः १६०००) रही होगी, बरबाद की और लूटी गई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

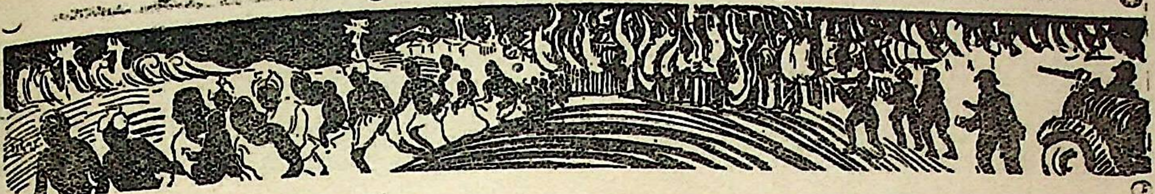

८ अक्टोबर की सुबह में स्पेशल मैजिस्ट्रेट के नेतृत्व में ३० यूरोपियन सैनिकों ने अजाया के श्री भूपेंद्रनाथ बेरा (एडवोकेट कलकत्ता हाईकोर्ट) के मकान पर धावा बोल दिया और लगभग ५०० रु० के सामान को बर्बाद कर दिया। सोने के कुछ गहने और कुछ नकद रुपये वे ले भागे। उनके भाई श्री नरेंद्रनाथ बेरा को सैनिक जबर्दस्ती पकड़ कर ले गए और अजाया के मिडल इंग्लिश स्कूल तथा प्राइमरी कन्या-पाठशाला में आग लगाने को उन्हें मजबूर किया।

उसी दिन कोंटाई थाने के कनैडिधी नामक गाँव के श्री प्रदत्तकुमार शी और श्री राधारंजन दास के घरों में पुलिस द्वारा आग लगाई गई। आग लगाने के पहले ही उनके घर लूट लिए गए और सोने के गहने, कपड़े तथा पाँच गाँठ सूत आदि लॉरी पर लाद कर कोंटाई थाने में पहुँचा दिए गए। पुलिस के इसी दल ने डंडा-पुरुलिया नामक गाँव के कालीनगर बाजार के सभी घरों में आग लगा दी। श्री राधारंजन दास का प्रायः १००० मन धान जलाकर फूँक दिया गया।

लौटते समय एक अफसर ने डॉ० दास के औषधालय से नशीली दवा पीकर उन्मत्त होकर श्रीमृत्युंजय भूनिया को निर्दयतापूर्वक पीटा और बूट की ठोकर मार कर धान के खेत में फेंक दिया। फलस्वरूप ३ दिनों तक उनकी हालत बड़ी चिंताजनक रहीं; किंतु, सौभाग्यवश, बहुत दिनों की सुश्रुषा के बाद उनकी जान बच गयी।

एगरा थाने में ताजपुर गाँव के श्री कृष्ण मैती तथा उनके परिवार के अन्य लोगों के मकान एक बड़े सरकारी अफसर की आँखों के सामने ही लूट लिए गए। बलिघाई निवासी श्री पद्मलोचन गिरी का घर लूट लिया गया। इसके बाद उसमें आग लगाकर ५ हजार रुपए की संपत्ति नष्ट कर दी गई। २५० रुपये नकद, लगभग १५ तोले सोने के गहने तथा अन्य बहुमूल्य वस्तुएँ तो छीन ली गईं और ५०० मन धान में आग फूँक दी गई और उनकी दूकान लूट ली गई।

औरतें घसीटी गईं

कोंटाई थाने के आदम्बर गाँव में मधुसूदन जेना के परिवार की एक औरत को लूटपाट के सिलसिले में घसीटा गया। उसके गहने बलपूर्वक छीन लिए गए और उसे एक तालाब में फेंक दिया गया।

भगवानपुर थानांतर्गत कुसलबर गाँव के श्री राधागोविंद मैती का घर लूटा गया और लगभग १० तोला सोना तथा ३०० रुपयों की अन्य वस्तुएँ पुलिस उठाकर लेगई। लूट में भाग लेने के लिए कुछ मुसलमानों को भी फुसलाया गया।

बर्तन नामक बस्ती के श्री वरेंद्रनाथ दास के घर को लूटते समय उनके चचेरे भाई श्रीभीमेश्वरनाथ को बंदूक से धमकाकर १००) रुपए छीन लिए गये। किशोरपुर के जमीदार श्री मंत-कुमार पेश की बंदूक जब्त करते वक्त उनसे बलात् १५०) रु० ले लिये गये। किशोरपुर से थाना लौटते समय रास्ते में पुलिस एक गरीब मल्लाह, रामनाथ बेरा, के घर में घुसकर उसका लकड़ी का बक्सा उठाकर लेगई, जिसमें बेचारे के चिरसंचित ३७) रुपए थे।

इसके अलावा समूचे थाने में ५० से लेकर १५० तक पुलिस तथा फौज के आदमी तैनात किए गए थे, जो घर-घर से चावल, दाल, तरकारी, मुर्गे बत्तक, बकरे आदि बलपूर्वक छीन लेते थे और भगवानपुर थाने के आसपास की दूकानों को लूटा करते थे।

खेजुरी थाने के आफिस तथा दूसरे सरकारी मकान जला दिए जाने के बाद वहाँ जो स्पेशल-अफसर नियुक्त किये गए थे, उन्होंने सिलीबरी के श्री रामहरि मण्डल के घर में घुसकर बहुत-से अनुचित कार्य किए और मण्डल जी से १०,००० रु० के चेक, पासबुक आदि छीन कर ले गए।

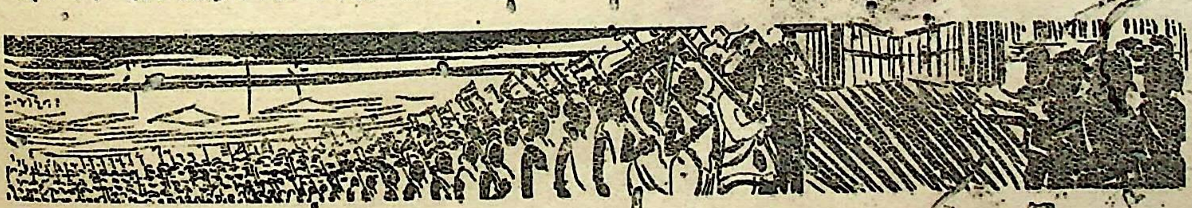

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विभाजन और शासन

स्थानीय सरकारी अधिकारियों ने पुलिस को लूटपाट करने, आंदोलनकारियों को पहचानने, आग लगाने आदि कामों में मदद पहुँचाने के लिए बदमाशों को प्रोत्साहित किया। यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि सरकार की ओर से पुलिस की सहायता करने के लिए मुसलमानों को भी घूस देकर, फुसलाकर तैनात किया गया, था। मुसलमानों को इस बात का भी विश्वास दिलाया गया था कि सरकार उन्हें मदद करने के लिए सब तरह से तैयार है और उन पर दमन की कार्यवाही नहीं की जायगी। उन्हें हुक्म दिया गया था कि वे अपने घरों पर मुसलमानी झण्डे लगावें ताकि वे दमन-चक्र से बचे रहें।

खेजुरी और पतासपुर थाने के मुसलमानों ने अपने पड़ोसी हिन्दुओं के घरों को लूटने में पुलिस की दिल खोल कर सहायता की। यह निश्चयपूर्वक जाना जा चुका है कि स्थानीय अफसरों ने ही उन्हें प्रोत्साहित किया था।

कोंटाई थाने के मरिसदा, नचींद्र, भैटगढ़ तथा कनैडिघी गाँवों पर १० हजार, भगवानपुर थाने के गोपीनाथपुर, भीमेश्वरी, भगवानपुर, केकड़ा तथा माधवपुर गाँव पर ५ हजार रुपए के सामूहिक जुर्माना लगाए गए। मुसलमानों और सरकारी कर्मचारियों को इस जुर्माने से बरी कर दि[illegible] गया था। किंतु, ये जुर्माने तूफान, बाढ़ और अकाल के कारण वसूले नहीं जा सके।

लज्जाजनक कार्य

जनता के अन्दर क्रांति की जो आग सुलग रही थीं, उसके मस्तिष्क में जो विद्रोह की भावनाएँ चक्कर काट रही थीं, उन सभी को दबाने के लिए, जनता को हतोत्साह करने के लिए हमेशा सरकारी कर्मचारियों की कोशिशें जारी रहीं। वे जनता से घृणा करते रहे, उसे सब तरह से नीचा दिखाते रहे। आंदोलन के वक्त और उसके बाद भी जनता को नाना प्रकार से अपमानित किया गया। इस तरह के सैंकड़ों उदाहरण मौजूद है, जिनमें से एक का जिक्र नीचे किया जा रहा है:—

खेजुरी थाने में ध्वंसात्मक कार्य समाप्त हो जाने के बाद स्पेशल अफसर ने उस इलाके के लब्ध प्रतिष्ठ व्यक्तियों को खुद आकर चौकीदारी टैक्स दे जाने को कहलाया। उन लोगों के थाने में आजाने पर उन्हें चारों ओर से सशस्त्र सैनिकों से घिरवा लिया गया और उन्हें जमीन पर नाक रगड़ते हुए ४ गज की दूरी तक चलने का आदेश दिया गया।

मुक्के तथा कोड़े से पीटने, तरह-तरह से चोट पहुँचाने आदि की तो धूम मची थी। लोगों को अंधाधुंध गालियाँ दी जाती थीं। निर्दयतापूर्वक उन्हें पीटा जाता था। जब कोई पुलिस की मोटर या पुलिस-दल सामने दिखलाई पड़ता, तो लोग डर के मारे छिप जाते थे; राहगीरों का राह चलना भी खतरे से खाली नहीं था।

स्त्रियों के साथ बलात्कार

बहुधा संपूर्ण गाँव नहीं, तो गाँव के खास-खास घर पुलिस या सैनिकों द्वारा घेर लिये जाते थे। परिवार के पुरुष सदस्यों को तो गिरफ्तार किया जाता था; पर स्त्रियों के साथ बलात्कार करने का बोलनेवाला था। स्त्रियों के साथ बलात्कार करने के २८० उदाहरण अभी तक मिल सके हैं। इस घृणित कार्य का विस्तृत वर्णन रोमांचकारी और भयावह है। कहीं-कहीं तो एक स्त्री के साथ तीन-तीन या इससे भी अधिक सैनिकों ने बलात्कार किया। इस जघन्यता की पराकाष्ठा यहाँ तक हो गई थी कि १९ दिन के बच्चे की माँ के साथ भी

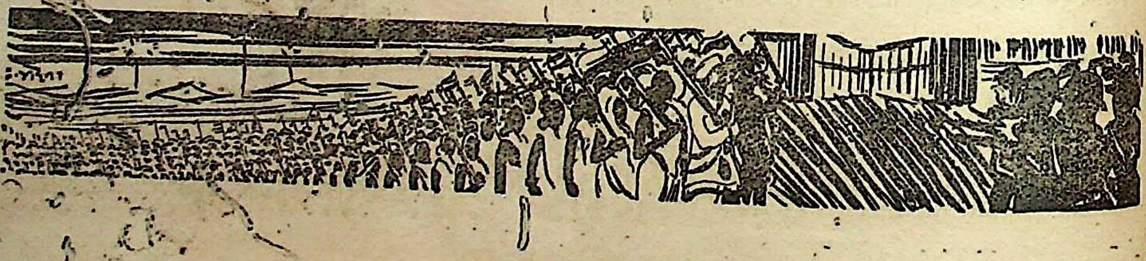

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

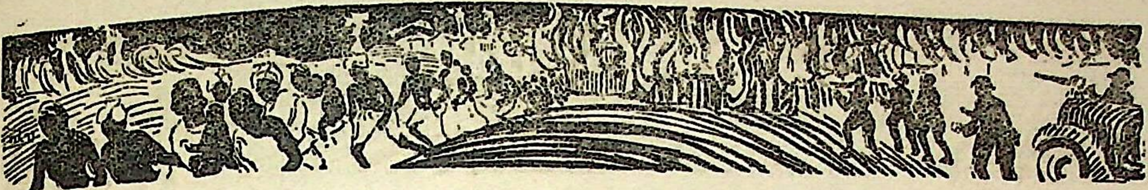

बलात्कार करने से बाज नहीं आया गया। स्त्रियों को तरह-तरह से बेइज्जत किया गया। इन इंद्रिय-लोलुप पुलिस-शिकारियों ने स्त्रियों के जरा-सी भी आनाकारी करने पर उन्हें संगीनों तथा बूटों से ठोकरें पहुँचाईं। इन्हीं परिस्थितियों में पीठ में छुरा घुसेड़ देने का भी एक उदाहरण मिला है।

गिरफ्तारी और नजरबन्दी

आन्दोलन के सिलसिले में १२६०० व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया। इस संख्या में वे लोग भी शामिल हैं, जिन्हें गैर कानूनी तरीके से गिरफ्तार किया गया और मार-पीट कर पीछे छोड़ दिया गया। गिरफ्तारी के समय किसी भी तरह की न तो जाँच-पड़ताल की गई और न कुछ सुना ही गया। रोगियों और मरणासन्न व्यक्तियों को भी कैद कर लिया गया। कविराज रघुनाथ मैती को भी, जो सन् १९३४ से ही लकवा से पीड़ित थे, गिरफ्तार किया गया और ३० सितंबर को उन्हें जेल की हाजत में ले जाया गया। जेल की हाजत में उन्हें मूर्छा आने लगी और तब कहीं जाकर वे कोंटाई चैरिटेबल डिसपेंसरी में दाखिल किए गए। रात में धावा बोलते हुए पुलिस ने बहुत-से व्यक्तियों को गिरफ्तार किया; पर जाड़े के उस ठण्डे मौसम में भी गिरफ्तार किए गए व्यक्तियों को अपने शरीर पर के कपड़े के अलावे कोई दूसरा कपड़ा, जिससे वे अपने को ठण्ढक से बचा सकते, नहीं लेने दिया गया। बहुतों को थाने की हाजत में भूखों रखकर पीटा गया, तरह-तरह से पीड़ा पहुँचाई गई और अंत में उन्हें छोड़ दिया गया।

कुछ प्रभावशाली कार्यकर्ता गिरफ्तार किए गए और उनमें से १८ को दो से तीन वर्षों तक नजरबंद रखा गया। कुछ गिरफ्तार किए गए लोगों पर तरह-तरह के अभियोग लगा कर मुकदमे चलाए गए और उन्हें तृतीय श्रेणी में कैद की सज़ा दी गई। उन में से बहुतों को 'अंडर-ट्रायल' की हालत में दो वर्षों से ज्यादा की अवधि तक भी जेल की हाजत में रखा गया था।

उनमें से बहुत पीछे चल कर छोड़ दिए गए; क्योंकि उनके खिलाफ कोई भी अभियोग नहीं था। अंडर-ट्रायल की हालत में उन व्यक्तियों का जीवन वेदनापूर्ण कटा और ऐसा प्रतीत होता है कि जन-साधारण को आतंकित करने के विचार से ही ऐसा किया गया। बहुतों की मृत्यु जेल-हाजत में ही हो गई, जिनमें ९ व्यक्ति सिर्फ पतासपुर के थे। उनकी हाजत की जिन्दगी का वर्णन बड़ा ही दर्दनाक है।

सबजेल और थाना-हाजत

कोंटाई सबडिवीजन में एक सबजेल कोंटाई में है। इसमें सिर्फ ३९ कैदियों को ही रखने की जगह है। किंतु प्रायः २५० व्यक्तियों को, जिनमें सजायाफ्ता तथा अंडर ट्रायल के लोग भी थे, इसी छोटे से जेल में बंद कर रक्खा गया। भगवानपुर-गोलीकांड के तीन घायल व्यक्तियों को भगवानपुर थाने की हाजत में रक्खा गया था। दो दिनों तक न तो उन्हें अन्न-जल ही दिया गया और न डाक्टरी इलाज ही कराया गया। फलतः श्री विभूतिभूषण दास ने सरकारी कर्मचारियों के इस उत्तरदायित्वहीन काले कारनामे के चलते ३० सितंबर की रात में अपने प्राण दे दिए। डाक्टरी इलाज के अभाव में १६ अक्तूबर को श्री धीरेंद्रनाथ दलपत ने भी अपनी आँखें सदा के लिए मूँद लीं।

ऐसी भी रिपोर्ट प्राप्त हुई है कि श्री दलपत ज[illegible] अच्छे हो चले थे, तो एक कांस्टेबुल ने बंदूक से उन्हें गहरी चोट पहुँचाई। फौजी सिपाहियों ने ९ अक्तूबर को उरबाबल के तीन व्यक्तियों को गिरफ्तार किया और वे बहुत दिनों तक थाने की हाजत में रक्खे गए।

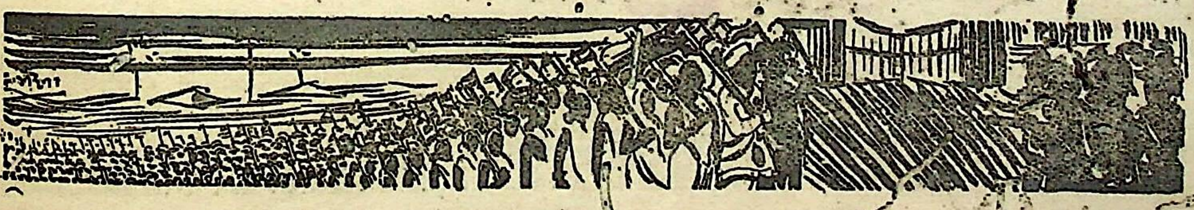

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राष्ट्रीय सरकार

ध्वंसात्मक कार्यों के विकराल रूप धारण करने के बाद शासन-सूत्र का भार जनता के कंधे पर आगया । संग्राम-शिविरों के योग्य व्यक्ति बहुत दिनों तक आंदोलन चलाते रहे, पर पीछे चलकर जब सरकारी संस्थाएँ आंशिक या पूर्ण रूप से नष्ट कर दी गईं; तो बहुत से स्थानों पर विभिन्न नामों से राष्ट्रीय सरकार की स्थापना की गई । पतासपुर और खेजुरी थाने में सरकारी अधिकारियों का कोई भी पता नहीं था । वहाँ तो राष्ट्रीय सरकारें उत्तम रीति से काम कर रही थीं । रामनगर और भगवानपुर थाने में भी राष्ट्रीय सरकार की स्थापना हुई थी ।

आम तौर से हरएक राष्ट्रीय सरकार में एक सभापति या डिक्टेटर होता था । सभापति की सहायता के लिए कौंसिल या कैबिनेट थी, जिसमें कई मंत्री होते थे, यथा—गृह-मंत्री, रक्षा-मंत्री, शिक्षा-मंत्री, न्याय-मंत्री, कर-मंत्री आदि ।

उनके अधीन का क्षेत्र (थाना) कई भागों में बँटा हुआ था । पंचायत बोर्ड के हाथ में शासनकार्य्य दिया गया था । बोर्ड के सदस्य जनता द्वारा चुने गए थे और अपने सर्किल का काम सँभालते थे ।

स्वयंसेवकों की सेना (राष्ट्रीयसेना) भी राजकाज चलाती, शांति-स्थापना में सहायता पहुँचाने आदि कामों के लिए बनाई गई थी । राष्ट्रीय सरकार के काम में बाधा डालने वाले या शत्रु को सरकार (अंगरेजी सरकार) की सहायता करनेवाले को सजाएँ दी जाती थीं और जब वे गिरफ्तार किए जाते, तो उन्हें जेलों में रखा जाता था ।

राष्ट्रीय सरकार के खर्च के लिए टैक्स भी लगाया गया था । जो जुर्माने वसूल हुए, वे पीड़ित व्यक्तियों की सहायता में खर्च किए गए ।

राष्ट्रीय सरकारों की स्थापना इसी उद्देश्य से की गई थी कि देश-व्यापी स्वातंत्र्य संग्राम का जयघोष करके ज्योंही 'महान् भारतीय प्रजातंत्र' (Great Indian Republic) की स्थापना हो जायगी, त्योंही ये सरकारें उसका अंग बना ली जाएँगी ।

सरकार अपनी धाक पहले जैसी बनाने का प्रयत्न करने लगी और इस उद्देश्य से वह प्रत्येक संभव तरीके से लोगों का दमन करने लगी । घरों का जलाया जाना और स्त्रियों के साथ बलात्कार तो उन दिनों की आम घटना थीं । निहत्थी जनता कराह उठी । अक्टूबर ४२ में जो तूफान आया इससे उनके दुःख लाख गुना बढ़ गए । इन कारणों से वह दमन का मुकाबला बहुत दिनों तक नहीं कर सकी । थोड़ी-थोड़ी दूरी पर फौज की टुकड़ियाँ बैठा दी गईं और बहुत काल तक मार्शल-ला का शासन रहा । धीरे-धीरे जनता की शक्ति इन शक्तियों के आगे फीकी पड़ गई ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बेलूरघाट (बंगाल) में

पुलिस के अत्याचार !

सत्तर वर्ष के बूढ़े ने अपनी छाती खोल कर गोली के सामने कर दी !

जिला दिनाजपुर (बंगाल) का बेलूरघाट भी क्रान्ति की ज्वाला से न बचा। कांग्रेस के नेताओं की गिरफ्तारी की सूचना मिलते ही चारों ओर आग भड़क उठी। इस आन्दोलन का नेतृत्व किया श्रीयुत सरोजरंजन चटर्जी ने। आन्दोलन का श्रीगणेश करने के लिये १४ सितंबर १९४२ का दिन निश्चित किया गया।

१३ सितंबर की रात को ही गाँव के कांग्रेसी नेताओं की अध्यक्षता में ग्रामीणों का सैकड़ों दल सब-डिवीजन की ओर चल पड़ा। कुछ सत्याग्रही तो तीस-तीस मील दूर चल कर आए थे। यह विशाल जनसमूह डेंगीर घाट पर अत्रेयी नदी के पश्चिमी किनारे इकट्ठा हुआ। बेलूरघाट शहर से यह स्थान तीन मील दूर है। बेलूरघाट के कांग्रेसी-कार्यकर्त्ताओं के साथ श्री सरोजरंजन चटर्जी ने घाट पर ही इस विशाल जन-समूह का स्वागत किया। करीब ५ हजार लोगों की भीड़ रही होगी।

१४ सितंबर को अहले सुबह ही इस समूह ने नदी पार किया। नदी के पूर्वी किनारे पर कांग्रेस का झण्डा फहराया गया और लोगों ने उसका अभिवादन किया। श्री सरोजरंजन चटर्जी के भाषण के बाद जनता जुलूस बनाकर 'बंदेमातरम' और 'करो या मरो' का नारा लगाती हुई शहर की ओर बढ़ी। रास्ते में गाँव के दूसरे लोग भी शामिल हो गये। आठ बजे सुबह यह जुलूस शहर में दाखिल हुआ। इस बीच हड़ताल मनाने के लिए छपे हुए पर्चे काफी तादाद में बाँटे जा चुके थे। अन्त में जुलूस खजाने (ट्रेजरी) के पास पहुँचा। श्री सरोजरंजन चटर्जी ने वहाँ एक छोटा-सा भाषण दिया और खजाने के पहरेदारों तथा अफसरों से प्रार्थना की कि वे अपनी नौकरी छोड़ कर जनता के साथ शामिल होजाँय। इसके बाद सब-ट्रेजरी ऑफिस, पोस्ट ऑफिस, सिविल कोर्ट, कोऑपरेटिव बैंक, बी० ए० रेलवे की आउट एजेंसी, जूट इंसपेक्टर की ऑफिस, गाँजे शराब की दूकानों और यूनियन बोर्ड ऑफिस आदि पर धावा हुआ।

करीब साढ़े ग्यारह बजे सारा जुलूस शहर से वापिस हो गया। किसी भी प्रकार की व्यक्तिगत हिंसा नहीं हुई। सिविल कोर्ट की लोहे की तिजोरी तोड़ने और एग्रिकल्चरल-डिमोंस्ट्रेटर ऑफिस के गोदाम को तोड़ कर अनाज लूटने में सत्याग्रहियों का कतई हाथ नहीं था। कुछ हुल्लड़बाजों ने ही यह सारी कार्रवाई की थी।

जुलूसवालों ने डंगीरघाट पर फिर नदी को पार किया। सरकारी धान के गोदाम पर उनलोगों ने कब्जा कर लिया और शाम-शाम तक सारा धान लोगों में बाँट दिया। डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट हथियारबंद पुलिस के साथ वहाँ पहुँचे। लेकिन वे चुपचाप वापिस लौट गए।

यह खबर पाकर कि तपन थाना लूटा जायगा, १५ सितंबर की सुबह ही डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट सशस्त्र सैनिकों के साथ वहाँ आ धमके। इसी बीच करीब ३०० राजवंशी, संथाल और मुसलमानों का एक दल तेली घाट की ओर बढ़ा कि जिसमें धान ज़िले के बाहर नहीं भेजा जा सके। डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट तुरत ही घटना-स्थल पर पहुँचे और भीड़ पर गोली चलाने का हुक्म दिया। वहाँ घेर घुमाते करते करीब आ. दर्जन लोगों को गिरफ्तार किया गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राष्ट्रीय सरकार

ध्वंसात्मक कार्यों के विकराल रूप धारण करने के बाद शासन-सूत्र का भार जनता के कंधे पर आगया। संग्राम-शिविरों के योग्य व्यक्ति बहुत दिनों तक आंदोलन चलाते रहे, पर पीछे चलकर जब सरकारी संस्थाएँ आंशिक या पूर्ण रूप से नष्ट कर दी गईं; तो बहुत से स्थानों पर विभिन्न नामों से राष्ट्रीय सरकार की स्थापना की गई। पतासपुर और खेजुरी थाने में सरकारी अधिकारियों का कोई भी पता नहीं था। वहाँ तो राष्ट्रीय सरकारें उत्तम रीति से काम कर रही थीं। रामनगर और भगवानपुर थाने में भी राष्ट्रीय सरकार की स्थापना हुई थी।

आम तौर से हरएक राष्ट्रीय सरकार में एक सभापति या डिक्टेटर होता था। सभापति की सहायता के लिए कौंसिल या कैबिनेट थी, जिसमें कई मंत्री होते थे, यथा—गृह-मंत्री, रक्षा-मंत्री, शिक्षा-मंत्री, न्याय-मंत्री, कर-मंत्री आदि।

उनके अधीन का क्षेत्र (थाना) कई भागों में बँटा हुआ था। पंचायत बोर्ड के हाथ में शासनकार्य्य दिया गया था। बोर्ड के सदस्य जनता द्वारा चुने गए थे और अपने सर्किल का काम सँभालते थे।

स्वयंसेवकों की सेना (राष्ट्रीयसेना) भी राजकाज चलाने, शांति-स्थापना में सहायता पहुँचाने आदि कामों के लिए बनाई गई थी। राष्ट्रीय सरकार के काम में बाधा डालने वाले तथा शत्रु की सरकार (अंगरेजी सरकार) की सहायता करनेवाले को सजाएँ दी जाती थीं और जब वे गिरफ्तार किए जाते, तो उन्हें जेलों में रखा जाता था।

राष्ट्रीय सरकार के खर्चे के लिए टैक्स भी लगाया गया था। जो जुर्माने वसूल हुए, वे पीड़ित व्यक्तियों की सहायता में खर्च किए गए।

राष्ट्रीय सरकारों की स्थापना इसी उद्देश्य से की गई थी कि देश-व्यापी स्वातंत्र्य संग्राम का जयघोष करके ज्योंही 'महान् भारतीय प्रजातंत्र' (Great Indian Republic) की स्थापना हो जायगी, त्योंही ये सरकारें उसका अंग बना ली जाएँगी।

सरकार अपनी धाक पहले जैसी बनाने का प्रयत्न करने लगी और इस उद्देश्य से वह प्रत्येक संभव तरीके से लोगों का दमन करने लगी। घरों का जलाया जाना और स्त्रियों के साथ बलात्कार तो उन दिनों की आम घटना थीं। निहत्थी जनता कराह उठी। अक्टूबर ४२ में जो तूफान आया इससे उनके दुःख लाख गुना बढ़ गए। इन कारणों से वह दमन का मुकाबला बहुत दिनों तक नहीं कर सकी। थोड़ी-थोड़ी दूरी पर फौज की टुकड़ियाँ बैठा दी गई और बहुत काल तक मार्शल-ला का शासन रहा। धीरे-धीरे जनता की शक्ति इन शक्तियों के आगे फीकी पड़ गई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बेलूरघाट (बंगाल) में

पुलिस के अत्याचार !

सत्तर वर्ष के बूढ़े ने अपनी छाती खोल कर गोली के सामने कर दी !

जिला दिनाजपुर (बंगाल) का बेलूरघाट भी क्रान्ति की ज्वाला से न बचा। कांग्रेस के नेताओं की गिरफ्तारी की सूचना मिलते ही चारों ओर आग भड़क उठी। इस आन्दोलन का नेतृत्व किया श्रीयुत सरोजरंजन चटर्जी ने। आन्दोलन का श्रीगणेश करने के लिये १४ सितंबर १९४२ का दिन निश्चित किया गया।

१३ सितंबर की रात को ही गाँव के कांग्रेसी नेताओं की अध्यक्षता में ग्रामीणों का सैकड़ों दल सब-डिवीजन की ओर चल पड़ा। कुछ सत्याग्रही तो तीस-तीस मील दूर चल कर आए थे। यह विशाल जनसमूह डंगीर घाट पर अत्रेयी नदी के पश्चिमी किनारे इकट्ठा हुआ। बेलूरघाट शहर से यह स्थान तीन मील दूर है। बेलूरघाट के कांग्रेसी-कार्यकर्त्ताओं के साथ श्री सरोजरंजन चटर्जी ने घाट पर ही इस विशाल जन-समूह का स्वागत किया। करीब ५ हजार लोगों की भीड़ रही होगी।

१४ सितंबर को अहले सुबह ही इस समूह ने नदी पार किया। नदी के पूर्वी किनारे पर कांग्रेस का झण्डा फहराया गया और लोगों ने उसका अभिवादन किया। श्री सरोजरंजन चटर्जी के भाषण के बाद जनता जुलूस बनाकर 'वंदेमातरम' और 'करो या मरो' का नारा लगाती हुई शहर की ओर बढ़ी। रास्ते में गाँव के दूसरे लोग भी शामिल हो गये। आठ बजे सुबह यह जुलूस शहर में दाखिल हुआ। इस बीच हड़ताल मनाने के लिए छपे हुए पर्चे काफी तादाद में बाँटे जा चुके थे। अन्त में जुलूस खजाने (ट्रेजरी) के पास पहुँचा। श्री सरोजरंजन चटर्जी ने वहाँ एक छोटा-सा भाषण दिया और खजाने के पहरेदारों तथा अफसरों से प्रार्थना की कि वे अपनी नौकरी छोड़ कर जनता के साथ शामिल होजाँय। इसके बाद सब-ट्रेजरी ऑफिस, पोस्ट ऑफिस, सिविल कोर्ट, कोऑपरेटिव बैंक, बी० ए० रेलवे की आउट एजेंसी, जूट इंसपेक्टर की ऑफिस, गाँजे शराब की दूकानों और यूनियन बोर्ड ऑफिस आदि पर धावा हुआ।

करीब साढ़े ग्यारह बजे सारा जुलूस शहर से वापिस हो गया। किसी भी प्रकार की व्यक्तिगत हिंसा नहीं हुई। सिविल कोर्ट की लोहे की तिजोरी तोड़ने और एग्रिकल्चरल-डिमॉंस्ट्रेटर ऑफिस के गोदाम को तोड़ कर अनाज लूटने में सत्याग्रहियों का कतई हाथ नहीं था। कुछ हुल्लड़बाजों ने ही यह सारी कार्रवाई की थी।

जुलूसवालों ने डंगीरघाट पर फिर नदी को पार किया। सरकारी धान के गोदाम पर उनलोगों ने कब्जा कर लिया और शाम-शाम तक सारा धान लोगों में बाँट दिया। डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट हथियारबंद पुलिस के साथ वहाँ पहुँचे। लेकिन वे चुपचाप वापिस लौट गए।

यह खबर पाकर कि तपन थाना लूटा जायगा, १५ सितंबर की सुबह ही डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट सशस्त्र सैनिकों के साथ वहाँ आ धमके। इसी बीच करीब ३०० राजवंशी, संथाल और मुसलमानों का एक दल तेली घाट की ओर बढ़ा कि जिसमें धान ज़िले के बाहर नहीं भेजा जा सके। डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट तुरत ही घटना-स्थल पर पहुँचे और भीड़ पर गोली चलाने का हुक्म दिया। वहाँ पर घूमते फिरते करीब आध दर्जन लोगों को गिरफ्तार किया गया।

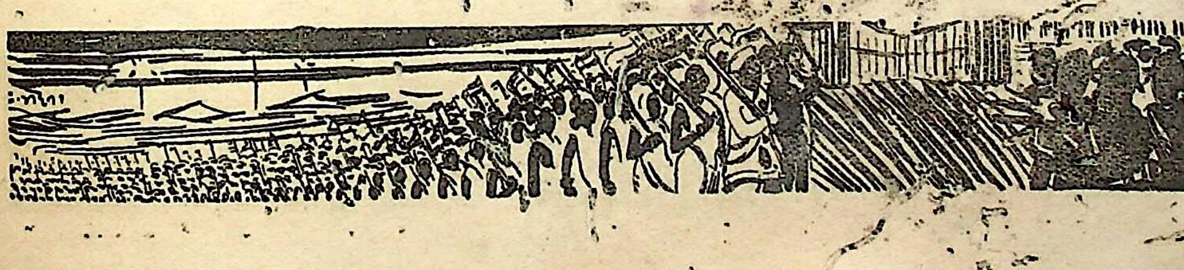

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

२२ सितंबर को आधी रात के समय पुलिस के एक दल ने श्री फूलचंद मंडल, बेलूर-घाट की घटना में जिन्होंने भाग लिया था (ऐसा कहा जाता है), के घर पर धावा किया। पुलिस-दल ने उस कमरे के किवाड़ तोड़ डाले, जिसमें मंडल जी अपनी पत्नी और बच्चों के साथ सोए थे; उन्हें बेइज्जत, किया और घर की चीजों को लूटने लगे। खबर मिलते ही तुरत गाँववालों का एक दल मंडल जी के घर के निकट इकट्ठा हो गया। पुलिस ने गोली चलाई; लेकिन वे तुरत ही बेबस कर दिए गए। उसमें से छ या ७ पकड़े गए, जिन्हें रस्सों से बाँध दिया गया। दूसरे दिन सुबह अपने छुटकारे के लिए उन्होंने बड़ी आरजू-मिन्नतें कीं। मंडलजी ने गाँव के लोगों की एक सभा बुलाई और फैसले के लिए सारी बातें उनके सामने रख दीं। सभा में यह तय पाया गया कि उन्हें इसी शर्त पर रिहा किया जा सकता है कि वे कांग्रेस के प्रतिज्ञा-पत्र पर दस्तखत कर दें और इस बात का विश्वास दिलावें कि सरकारी नौकरी वे छोड़ देंगे। पुलिसवालों ने ये बातें कबूल कर लीं। उन्हें छोड़ दिया गया और उनके खाने-पीने का इंतजाम भी कर दिया गया।

२४ सितंबर को एक पुलिस के इंसपेक्टर और एक सब-इंस्पेक्टर, हथियारबंद पुलिस के दल के साथ मोराडांगा की ओर चले। पुलिस के एक दूसरे दल को वहाँ की जनता ने गिरफ्तार कर लिया था। रास्ते में परलिया नामक स्थान पर उन्होंने दो राजवंशी ग्रामीणों को गिरफ्तार कर लिया। उन्हें छुड़ाने के लिए तुरत ही गाँववालों का एक दल वहाँ इकट्ठा होगया। पुलिस ने गोली चलाई। इस पर और भी ज्यादा लोग वहाँ आ जुटे। संथालों ने तीर-धनुष से पुलिस वालों पर हमला किया। इस पर दोनों राजवंशियों को छोड़ पुलिस भीड़ पर गोली चलाती वहाँ से निकल भागी। कहते हैं, ५६ बॉल-कार्टिज और १० बकशौट का वहाँ पुलिस ने व्यवहार किया था। तीन आदमी, जिनमें एक सत्तर वर्ष का बूढ़ा भी था, घटना-स्थल पर ही मारे गए और दूसरे बहुत-से लोग घायल हुए।

सभी जगह सत्याग्रहियों ने अनुशासन से काम लिया और वे अन्त तक अहिंसात्मक ही रहे। परीलाहार में जब पुलिस ने गोली चलाई तो वहाँ के कांग्रेसी-लीडर गोली का सामना करने के लिए जमीन पर शान्तिपूर्वक बैठ गए। मैलाकुरी के ७० वर्षीय वृद्ध अधर मंडल का नाम भारतीय-स्वतंत्रता-संग्राम के इतिहास में सोने के अक्षरों में अंकित रहेगा। सबसे पहले इसी बूढ़े ने अपनी छाती पर गोली का वार हँसते-हँसते सहा।

१४ सितंबर को दोपहर में ही, (दुर्घटना के बाद) डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट, डी० एस० पी०, हथियारबंद पुलिस और गुरखा फौज बेलूर-घाट पहुँच गई थी। आधी रात के बाद से गिरफ्तारियाँ शुरू हुईं और सब मिला कर शहर के ३० आदमी, जिनमें ३ मुसलमान भी थे, गिरफ्तार किए गए।

१७ सितंबर को सुबह मिलिटरी पुलिस की सहायता से अनेक घरों की तलाशियाँ हुईं फर्निचर, बर्त्तन, लोहे की तिजोरियाँ आदि तोड़-फोड़ दी गईं और रसोईघर तथा खाने-पीने के सामानों पर तबतक पहरा रखा गया जब तक कि डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट वहाँ नहीं पहुँचे।

सशस्त्र फौज और ईस्टर्न फ्रांटियर राइफल के अफसरों को बुला लिया गया। डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट, एस० पी० आई० बी० और दूसरे अफसरों ने अपना कैंप बेलूरघाट शहर से १४ मील दूर शहर में डाल दिया और इसके बाद गाँवों में दमन का चक्र चलने लगा। मोराडांगा नामक गाँव खासकर इस दमनचक्र का शिकार हुआ, जहाँ ४२ घर जलाकर फूँक दिए गए। गाँव के सभी औरत-मर्द अत्याचार से बचने के लिए जंगलों में जा छिपे।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

माननीय श्रीकृष्ण सिंह, प्रधान मन्त्री, विहार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

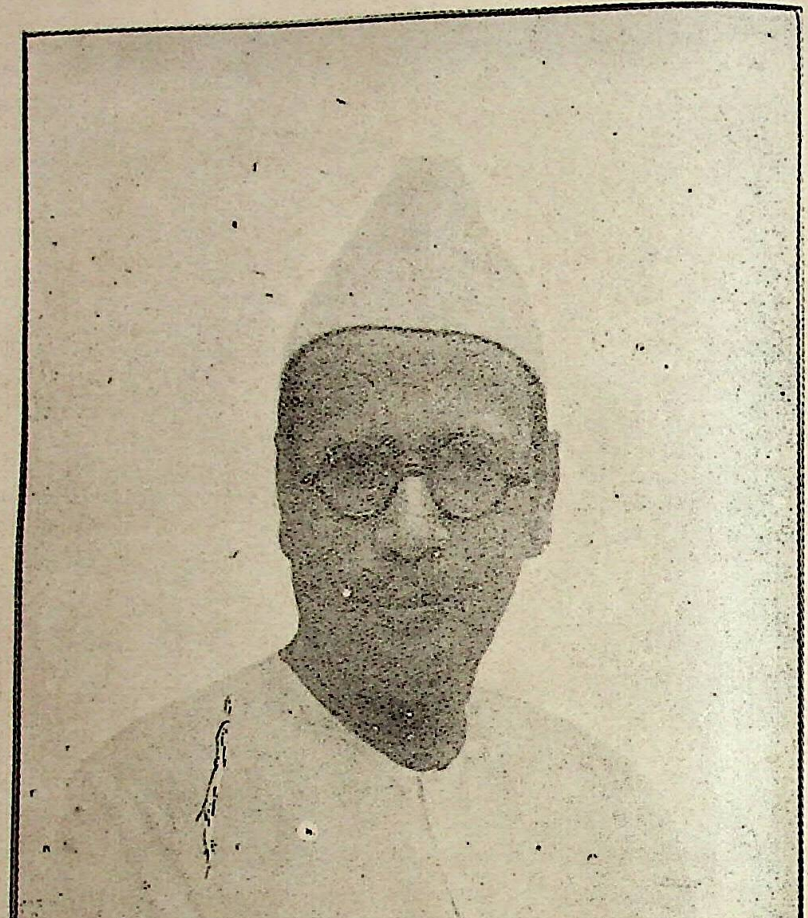

माननीय अनुग्रह नारायण सिंह, अर्थ-मन्त्री, बिहार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आसाम में अगस्त-क्रांति की लहर

जङ्गली सूअर की भाँति मनुष्य को किचैं भोंक कर मारा गया !

दो दिन के मासूम बच्चे की हत्या !!

सामूहिक आन्दोलन

सिपाही विद्रोह में ब्रिटिश हुकूमत को जड़ से उखाड़ कर फेंक देने की चेष्टा में सहयोग देनेवाले और अन्त में उस अपराध (?) के लिए हँसते-हँसते फाँसी की रस्सी को स्वयं अपने गले में डाल लेने वाले 'मनीराम दीवान' का आसाम भी सन् १६४२ की क्रान्ति में चुपचाप न बैठा रहा।

बम्बई में नेताओं की गिरफ्तारी के करीब-करीब साथ ही आसाम के नेता, प्रेसिडेण्ट मौलाना तयबुल्लाह, मि० एफ० ए० अहमद, श्रीयुत बी० आर० मेधी, श्रीयुत डी० शर्मा आदि, ६ अगस्त को गिरफ्तार कर लिए गए। श्रीयुत बारदोलाई और श्रीयुत एन० शर्मा ने, जो अखिल भारतीय काँग्रेस कमीटी की बैठक में शामिल होने बम्बई गए हुए थे, ज्योंही ढुबरी में आसाम की जमीन पर पैर रक्खा कि वे भी कैद करलिए गए। और इसके बाद तो लीडरों और काँग्रेस से संबंध रखनेवाले खास-खास लोगों को बहुत बड़े पैमाने पर हिरासत में ले लिया गया।

समानान्तर सरकार

इन गिरफ्तारियों की खबर आसाम के गाँवों में बिजली की तरह फैल गई और नागरिकों की भाँति ग्रामीणों ने भी, बहुत उत्साह और विश्वास के साथ आजादी पाने के लिए, बहुत बड़े पैमाने पर अपना संगठन किया। यह बात सच है कि जब शहरवाले, ग्रामीणों को अधिकारियों के विरुद्ध संगठित करने के लिए, देहातों में पहुँचे तो उन्हें यह देखकर चकित रह जाना पड़ा कि गाँव के लोग तो पहले से ही कमर कसे तैयार बैठे हैं और सिर्फ हुक्म का इन्तजार कर रहे हैं।

थाना या पुलिस स्टेशनों और भारत में ब्रिटिश हुकूमत की प्रतीक अन्य ऐसी जगहों पर ही आन्दोलनकारियों का पहले ध्यान गया। जनता की

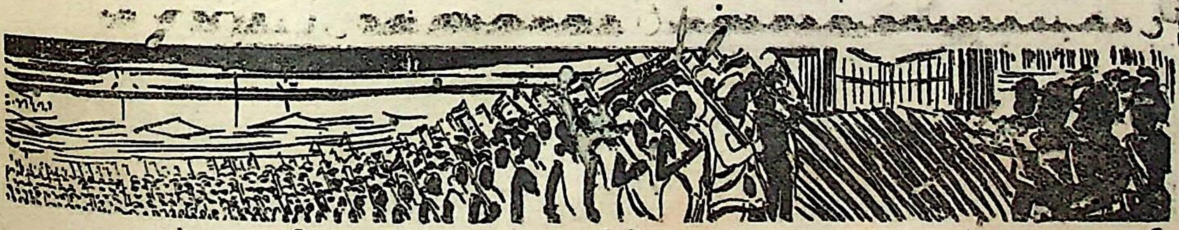

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'समानान्तर सरकार'(Parellel Government) की स्थापना के विचार ने आग में घी का काम किया। थानों पर किए गए आक्रमण प्राय: अहिंसात्मक और शान्तिपूर्ण रहे, यद्यपि कानून और अमन के तथा-कथित ठेकेदारों ने इसका जवाब किर्चों और गोलियों से दिया, जिसके फलस्वरूप कितनी अमूल्य जानें नष्ट हुई ।

एकदम निहत्थी और शान्तिपूर्ण जनता द्वारा दरांग जिले के ढेकियाजुली, बेहाली, गोहपुर के थानों पर किये गये आक्रमण इतिहास में अमर रहेंगे। प्राय: होता ऐसा था कि मर्द, औरत, लड़के और लड़कियाँ कई-कई मीलों से जुलूस बनाकर आते, उनके हाथों में राष्ट्रीय झण्डा रहता और नारे लगाते हुए वे घुसने की चेष्टा करते थानों में।

पुलिस राज

आसाम की पुलिस को खुलकर खेलने का मौका दिया गया। इस बीच उन्होंने एक पुलिस-राज-सा कायम कर लिया और निरीह जनता पर तरह-तरह के अमानुषिक जुल्म ढाये। लियोपोल्ड अमेरी ने उनकी पीठ जो ठोकी तो 'बागियों' का विनाश करने के लिए उनके हृदय में और भी अधिक उत्साह भर गया। सभी काँग्रेसी एम० एल० ए० जेलों में ठूँस दिये गये थे। अत: सर मुहम्मद सादुल्ला की अध्यक्षता में मुस्लिम लीग पार्टी को आसानी से अधिकार प्राप्त करने का अच्छा मौका मिल गया। २५ अगस्त सन् १९४२ को वे सचमुच अधिकारारूढ़ हो गये और उन्होंने ऐसे-ऐसे कर्म किये जो भारतीय-इतिहास में अमर रहेंगे! एक मिनिस्टर महोदय ने मि० अमेरी के शब्दों को दुहराया और आन्दोलन को दबाने में दिखाई गई पुलिस की राजभक्ति की उन्होंने भूरि-भूरि प्रशंसा की। पुलिस को इससे नया उत्साह मिला और फलस्वरूप उसने और भी तीव्रता से दमन-चक्र चलाया।

कनकलता और तुलेश्वरी जैसी नौजवान लड़कियों की हत्या के अतिरिक्त २४ फरवरी सन् १९४३ ई० को जोरहाट जेल में, जहाँ राजबंदी अपने-अपने पिंजरों में बन्द थे, लाठी चार्ज किया गया; जिसके फलस्वरूप १८० जेल-बन्दी बुरी तरह से घायल हुए। मनुष्य की बर्बरता का यह एक ज्वलन्त उदाहरण है।

निहत्थी जनता पर पुलिस और मिलिटरी का आक्रमण, क्रूर सामूहिक जुर्माने और उन्हें वसूलने के लिए अख्तियार किये गये अमानुषिक ढंग तथा नौकरशाही द्वारा फैलाये गये आतंक ने आग की लपटों को और भी प्रज्वलित कर दिया। इसका स्वाभाविक नतीजा यह हुआ कि जनता के दिमाग में यह बैठ-सा गया कि भारत को गुलाम बनाये रखने का अँग्रेजों को कोई नैतिक-अधिकार नहीं है। प्राय: सम्पूर्ण आसाम ब्रिटिश-हुकूमत से ऊब-सा उठा था। इसका पता इस बात से साफ-साफ लग जाता है कि सभी प्रदर्शन, हड़ताल, सभाएँ आदि हमेशा पूर्णतया सफल रहीं और उनमें सभी वर्ग की जनता ने स्वेच्छा से सहयोग दिया। जुलूस, हड़ताल और प्रदर्शनों का क्षेत्र बहुत विस्तृत रहा और उनमें नागरिकों के साथ-साथ ग्रामीणों ने भी कंधे से कंधा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

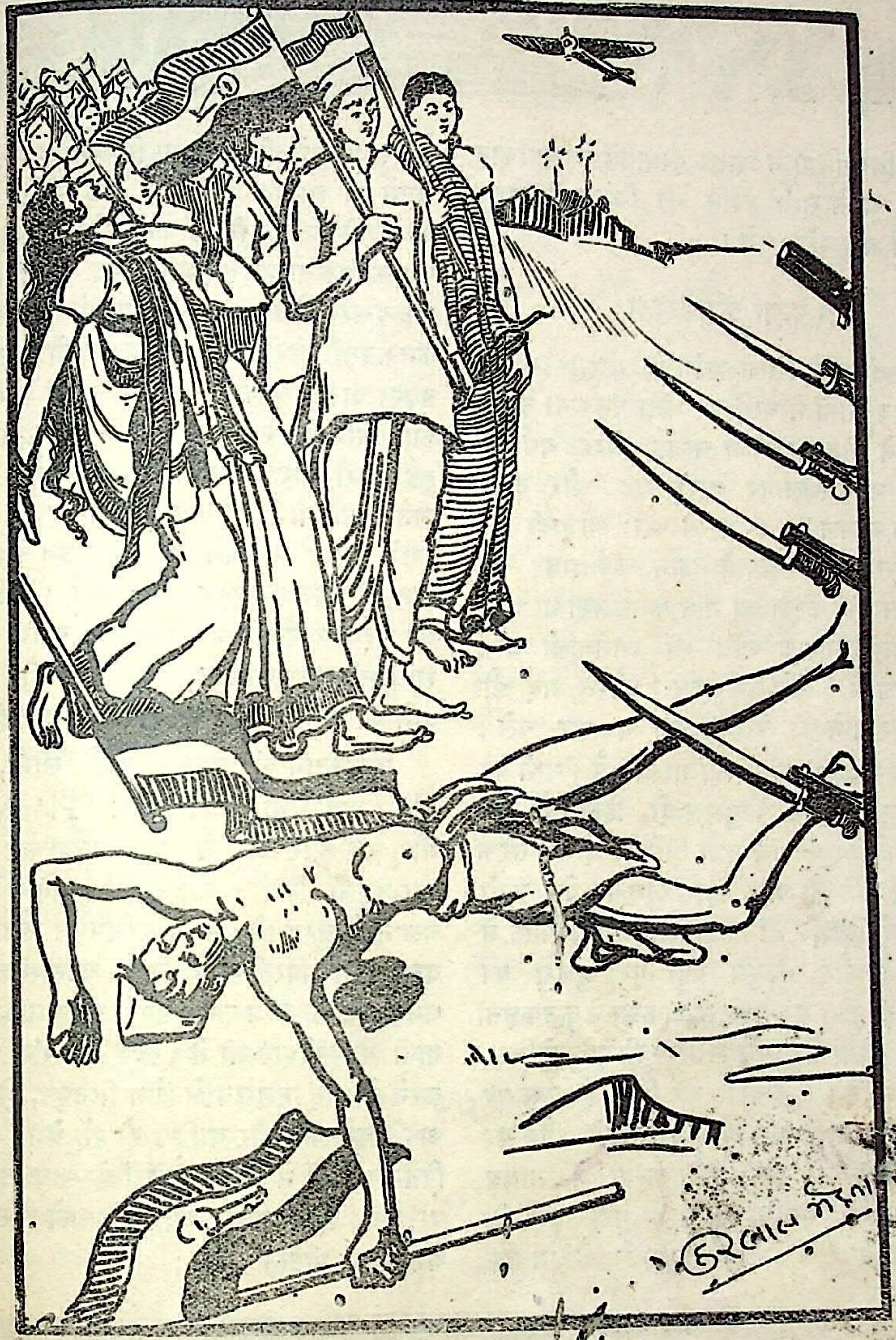

"...............थाने के सामनेवाले मैदान तक जुलूस पहुँचनेवाला ही था कि बन्दूक के धाँय-धाँय छूटने की आवाज़ हुई और एक गोली क[illegible]ता की छाती को छेदती हुई पार होगई।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भिड़ाया। विद्यार्थियों ने शिक्षा-संस्थाओं का बायकाट किया और अपने साथ क्रांति की चिनगारी लेकर सुदूर गाँवों तक पहुँच गये।

वीरकन्या कनकलता

२० सितंबर को जिला दरांग के गोहपुर नामक स्थान में जब लोगों ने थाने पर झंडा फहराना चाहा, तो पुलिस ने भीड़ पर गोली चलाई। तेरह वर्ष की एक लड़की घटनास्थल पर मारी गई और दूसरे अनेक लोग घायल हुए। भारत की आजादी की लड़ाई में हँसते-हँसते अपनी जान न्योछावर कर देनेवाली इस वीर कन्या का नाम कनकलता था और वह बरंगावारी नामक गाँव की रहनेवाली थी। दिन १२ बजे से ३ बजे तक हजारों औरत, मर्द और बच्चे गोहपुर थाने की ओर जुलूस बनाकर चले। थाने के आगे एक बहुत बड़ा तालाब है। थाने की इमारत में घुसने के पहले जुलूस दो हिस्सों में बँट गया और तालाब के बाँयें तथा दाहिने, दोनों तरफ से एक साथ थाने की ओर बढ़ा। जुलूस के आगे बहुत-सी लड़कियाँ थीं। सबसे अगली पंक्ति में कनकलता थी और सचमुच वही पूरे जुलूस का नेतृत्व कर रही थी। एक पुलिस अफ़सर ने कनकलता को थाने की सीमा में घुसने से मना किया; लेकिन, उसने हुक्म मानने से इनकार कर दिया। अफसर अपनी जिद पर अड़ा रहा और उसने उसे मौत का प्राप्त कर... इसपर उस वीर कन्या ने जावब दिया: "मैं अपना कर्त्तव्य अवश्य पूरा करूँगी, आप अपना करें।" थाने के सामनेवाले मैदान तक जुलूस पहुँचने ही वाला था कि बन्दूक के धाँय-धाँय छूटने की आवाज हुई और एक गोली कनकलता की छाती को छेदती हुई पार हो गयी। खून से लथ-पथ कनकलता को लड़खड़ा कर नीचे गिरते देख एक दूसरा नौजवान, मकुंद काओती, आगे बढ़ा। कनकलता के हाथों से झण्डा लेकर उसने आगे बढ़ना चाहा; लेकिन, पलक मारते ही दूसरी गोली आई और उस मासूम की छाती को छलनी करती हुई दूसरी ओर निकल गई। गाँव में अभी भी अनेक आदमी हैं, जिनके चेहरे, बाँह या शरीर के दूसरे अंगों पर बने अनेक निशान उस गौरवपूर्ण दिन की आज भी याद दिला देते हैं। एक ओर जब यह दर्दनाक नरमेध हो रहा था, दूसरी ओर का स्वयंसेवक दल आगे बढ़ता ही गया और अन्त में थाने की इमारत पर उसने झण्डा फहरा ही दिया।

हिन्दुस्तान की अत्यन्त पूर्वी सीमा, आसाम, 'युद्ध क्षेत्र' था, जहाँ गोरे (Planters) भी मौजूद थे और जिन्होंने इस अत्याचार में पूरा-पूरा हिस्सा लिया। गोहपुर में पुलिस के गोली चलाने के तुरत ही बाद ये यूरोपियन प्लैंटर्स अपनी बन्दूक और पिस्तौलों के साथ घटनास्थल पर आ धमके। उनके साथ लाठी-डण्डों से सुसज्जित उनके बागों के पहरेदार भी थे। खून की गंगा में स्नान करने के बाद जुलूसवाले लोग छिटपुट, होकर अपने-अपने घरों की ओर वापिस हो रहे थे; इन यूरोपियन प्लैंटरों ने अपने नौकरों के साथ इन निहत्थों पर हाथ छोड़ दिया और जिसको-तिसको बड़ी बेरहमी से पीटा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ढेकियाजुली

तेजपुर से १६ मील पश्चिम की ओर एक जगह है, ढेकियाजुली। इस स्थान में अधिकतर देशी लोग और चाय के खेतों में कभी काम करनेवाले मजदूर बसे हुए हैं। इस स्थान में पुलिसकी गोलियों ने वह दर्दनाक दृश्य उपस्थित कर दिया था, जिसका स्मरण कर ही रोमांच हो आता है। २० सितंबर १६४२ को दस हजार से भी ज्यादा लोगों की भीड़ पुलिस थाने की ओर बढ़ी, उसकी इमारत पर राष्ट्रीय झण्डा फहराने के लिये। पुलिस ने अंधाधुंध गोलियाँ चलाईं। फलस्वरूप २० से भी अधिक आदमी मौत के घाट उतरे, इनमें एक तेरह वर्ष की बालिका भी थी, जिसका नाम तुलेश्वरी था। गोलियों की वर्षा के बीच हथेली पर जान लेकर एक स्वयंसेवक थाने की इमारत पर चढ़ ही गया और शान से राष्ट्रीय झण्डा वहाँ फहरा दिया। लेकिन, दूसरे ही क्षण पुलिस की गोली उसके सीने में आकर लगी और वह वीर वहीं लड़खड़ा कर सदा के लिये सो गया।

इन अत्याचारों में सिर्फ मिलिटरी से ही सहायता नहीं ली गई; वरन् बाहर से आए सैकड़ों भाड़े के टट्टू मुस्लिम-गुण्डों को भी इस काम के लिये नियुक्त किया गया। इन राक्षसों ने जनता पर अनेक अमानुषिक अत्याचार किए। लाठियों से सुसज्जित होकर ये गुण्डे थाने की इमारत के पीछे छिपे हुए थे। गोली चलने के बाद वे तुरत ही घटनास्थल पर पहुँचे और निःशस्त्र जनता को बड़ी बेरहमी से पीटने लगे। फौजियों के साथ इन राक्षसों ने मजदूरों की स्त्रियों को बड़ी दूर-दूर तक खदेड़ कर पीटा।

थाने के इस गोलीकाण्ड के बाद ही हफ्ते के आखीर का बाजार लगा। इस बीच शहर से और भी फौज आगई थी। बाजार में खरीद-फरोख्त करने-वाली भीड़ को काँग्रेस की भीड़ समझ कर उन्होंने अंधाधुंध गोलियाँ चलाईं। पुरुषों को बेरहमी से पीटा और स्त्रियों को बेइज्जत किया गया। इस हत्याकाण्ड में पुलिस की गोलियों से १६ आदमी मरे और सैकड़ों घायल हुए। मरनेवालों में तीन स्त्रियाँ थीं, जिनमें एक गर्भवती थी।

२१ सितंबर को जब इस हत्याकाण्ड की खबर तेजपुर पहुँची तो वहाँ के नागरिकों ने एक सभा का आयोजन किया, ढेकियाजुली और गोहपुर में पुलिस द्वारा की गई ज्यादतियों के खिलाफ निन्दा का प्रस्ताव पास करने के लिये फौजियों ने शहर के सभी नाकों को घेर रक्खा था, फिर भी हजारों आदमी टाउन-मैदान में आ इकट्ठे हुए। भीड़ पर पुलिस ने धावा बोल दिया; लाठी, बन्दूक और किरच, सभी से काम लिया गया। फलस्वरूप सैकड़ों लोग घायल और खून से लथपथ हो गए।

कामरूप

पटाचरकुची थाने के अन्तर्गत जोला एक छोटा-सा गाँव है। २५ सितंबर को लोग एक सभा में इकट्ठे हुए। एक पुलिस अफसर भी वहाँ मौजूद था। उसने लोगों को वहाँ से हट जाने को [illegible] पूर्वक डरा-धमका कर उसने लोगों को [illegible]। [illegible] तितर-बितर कर भी दिया। लौटते समय थाने के रास्ते में

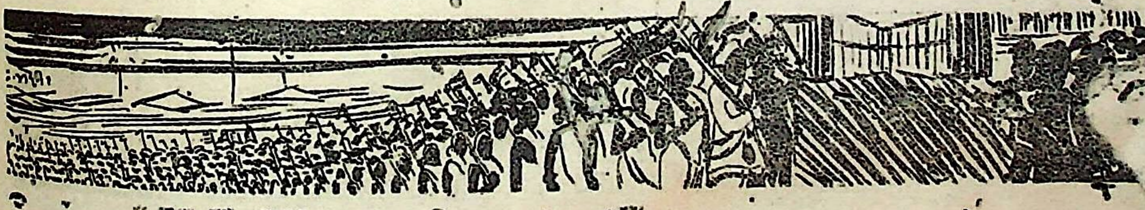

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भिड़ाया। विद्यार्थियों ने शिक्षा-संस्थाओं का बायकाट किया और अपने साथ क्रांति की चिनगारी लेकर सुदूर गाँवों तक पहुँच गये।

वीरकन्या कनकलता

२० सितंबर को जिला दरांग के गोहपुर नामक स्थान में जब लोगों ने थाने पर झंडा फहराना चाहा, तो पुलिस ने भीड़ पर गोली चलाई। तेरह वर्ष की एक लड़की घटनास्थल पर मारी गई और दूसरे अनेक लोग घायल हुए। भारत की आजादी की लड़ाई में हँसते-हँसते अपनी जान न्योछावर कर देनेवाली इस वीर कन्या का नाम कनकलता था और वह बरंगावारी नामक गाँव की रहनेवाली थी। दिन १२ बजे से ३ बजे तक हजारों औरत, मर्द और बच्चे गोहपुर थाने की ओर जुलूस बनाकर चले। थाने के आगे एक बहुत बड़ा तालाब है। थाने की इमारत में घुसने के पहले जुलूस दो हिस्सों में बँट गया और तालाब के बाँयें तथा दाहिने, दोनों तरफ से एक साथ थाने की ओर बढ़ा। जुलूस के आगे बहुत-सी लड़कियाँ थीं। सबसे अगली पंक्ति में कनकलता थी और सचमुच वही पूरे जुलूस का नेतृत्व कर रही थी। एक पुलिस अफ़सर ने कनकलता को थाने की सीमा में घुसने से मना किया; लेकिन, उसने हुक्म मानने से इनकार कर दिया। अफसर अपनी जिद पर अड़ा रहा और उसने उसे मौत का प्राप्त कर... इसपर उस वीर कन्या ने जावब ... "मैं अपना कर्त्तव्य अवश्य पूरा करूँगी, आप अपना करें।" थाने के सामनेवाले मैदान तक जुलूस पहुँचने ही वाला था कि बन्दूक के धाँय-धाँय छूटने की आवाज हुई और एक गोली कनकलता की छाती को छेदती हुई पार हो गयी। खून से लथ-पथ कनकलता को लड़खड़ा कर नीचे गिरते देख एक दूसरा नौजवान, मकुंद काओती, आगे बढ़ा। कनकलता के हाथों से झण्डा लेकर उसने आगे बढ़ना चाहा; लेकिन, पलक मारते ही दूसरी गोली आई और उस मासूम की छाती को छलनी करती हुई दूसरी ओर निकल गई। गाँव में अभी भी अनेक आदमी हैं, जिनके चेहरे, बाँह या शरीर के दूसरे अंगों पर बने अनेक निशान उस गौरवपूर्ण दिन की आज भी याद दिला देते हैं। एक ओर जब यह दर्दनाक नरमेध हो रहा था, दूसरी ओर का स्वयंसेवक दल आगे बढ़ता ही गया और अन्त में थाने की इमारत पर उसने झण्डा फहरा ही दिया।

हिन्दुस्तान की अत्यन्त पूर्वी सीमा, आसाम, 'युद्ध क्षेत्र' था, जहाँ गोरे (Planters) भी मौजूद थे और जिन्होंने इस अत्याचार में पूरा-पूरा हिस्सा लिया। गोहपुर में पुलिस के गोली चलाने के तुरत ही बाद ये यूरोपियन प्लैंटर्स अपनी बन्दूक और पिस्तौलों के साथ घटनास्थल पर आ धमके। उनके साथ लाठी-डण्डों से सुसज्जित उनके बागों के पहरेदार भी थे। खून की गंगा में स्नान करने के बाद जुलूसवाले लोग छिटपुट, होकर अपने-अपने घरों की ओर वापिस हो रहे थे; इन यूरोपियन प्लैंटरों ने अपने नौकरों के साथ इन निहत्थों पर हाथ छोड़ दिया और जिसको-तिसको बड़ी बेरहमी से पीटा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ढेकियाजुली

तेजपुर से १६ मील पश्चिम की ओर एक जगह है, ढेकियाजुली। इस स्थान में अधिकतर देशी लोग और चाय के खेतों में कभी काम करनेवाले मजदूर बसे हुए हैं। इस स्थान में पुलिसकी गोलियों ने वह दर्दनाक दृश्य उपस्थित कर दिया था, जिसका स्मरण कर ही रोमांच हो आता है। २० सितंबर १९४२ को दस हजार से भी ज्यादा लोगों की भीड़ पुलिस थाने की ओर बढ़ी, उसकी इमारत पर राष्ट्रीय झण्डा फहराने के लिये। पुलिस ने अंधाधुंध गोलियाँ चलाई। फलस्वरूप २० से भी अधिक आदमी मौत के घाट उतरे, इनमें एक तेरह वर्ष की बालिका भी थी, जिसका नाम तुलेश्वरी था। गोलियों की वर्षा के बीच हथेली पर जान लेकर एक स्वयंसेवक थाने की इमारत पर चढ़ ही गया और शान से राष्ट्रीय झण्डा वहाँ फहरा दिया। लेकिन, दूसरे ही क्षण पुलिस की गोली उसके सीने में आकर लगी और वह वीर वहीं लड़खड़ा कर सदा के लिये सो गया।

इन अत्याचारों में सिर्फ मिलिटरी से ही सहायता नहीं ली गई; वरन् बाहर से आए सैकड़ों भाड़े के टट्टू मुस्लिम-गुण्डों को भी इस काम के लिये नियुक्त किया गया। इन राक्षसों ने जनता पर अनेक अमानुषिक अत्याचार किए। लाठियों से सुसज्जित होकर ये गुण्डे थाने की इमारत के पीछे छिपे हुए थे। गोली चलने के बाद वे तुरत ही घटनास्थल पर पहुँचे और निःशस्त्र जनता को बड़ी बेरहमी से पीटने लगे। फौजियों के साथ इन राक्षसों ने मजदूरों की स्त्रियों को बड़ी दूर-दूर तक खदेड़ कर पीटा।

थाने के इस गोलीकाण्ड के बाद ही हफ्ते के आखीर का बाजार लगा। इस बीच शहर से और भी फौज आगई थी। बाजार में खरीद-फरोख्त करनेवाली भीड़ को काँग्रेस की भीड़ समझ कर उन्होंने अंधाधुंध गोलियाँ चलाईं। पुरुषों को बेरहमी से पीटा और स्त्रियों को बेइज्जत किया गया। इस हत्याकाण्ड में पुलिस की गोलियों से १६ आदमी मरे और सैकड़ों घायल हुए। मरनेवालों में तीन स्त्रियाँ थीं, जिनमें एक गर्भवती थी।

२१ सितंबर को जब इस हत्याकाण्ड की खबर तेजपुर पहुँची तो वहाँ के नागरिकों ने एक सभा का आयोजन किया, ढेकियाजुली और गोहपुर में पुलिस द्वारा की गई ज्यादतियों के खिलाफ निन्दा का प्रस्ताव पास करने के लिये फौजियों ने शहर के सभी नाकों को घेर रक्खा था, फिर भी हजारों आदमी टाउन-मैदान में आ इकट्ठे हुए। भीड़ पर पुलिस ने धावा बोल दिया; लाठी, बन्दूक और किरच, सभी से काम लिया गया। फलस्वरूप सैकड़ों लोग घायल और खून से लथपथ हो गए।

कामरूप

पटाचरकुची थाने के अन्तर्गत जोला एक छोटा-सा गाँव है। २५ सितंबर को लोग एक सभा में इकट्ठे हुए। एक पुलिस अफसर भी वहाँ मौजूद था। उसने लोगों को वहाँ से हट जाने को [illegible] पूर्वक डरा-धमका कर उसने लोगों को [illegible] तितर-बितर कर भी दिया। लौटते समय थाने के रास्ते में

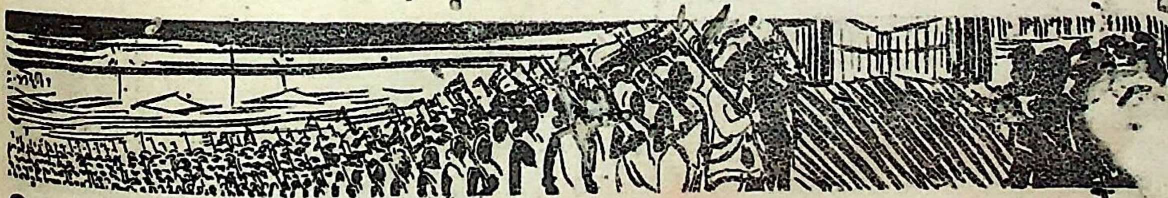

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक अफसर को कुछ आदमी मिले, जो मिटींग से वापिस हुए थे। अपनी हेकड़ी दिखाने के लिए उस अफसर ने उन्हें देखते ही हुक्म दिया 'भागो यहाँ से'। वहाँ कोई मिटींग तो थी ही नहीं; इसलिए, उनलोगों ने उसका हुक्म मानने से इनकार कर दिया। वह अफसर आग बबूला हो उठा और तुरत ही उसने गोली दागनी शुरू कर दी। दो मरे; मदनचन्द्र वर्मन, बजाली हाई इंग्लिश स्कूल के छठे क्लास का एक विद्यार्थी और सदरी गाँव का रावतराम। आगे बढ़ने पर रास्ते में उस अफसर को फिर कुछ आदमी मिले। वहाँ भी उसने गोली चलाई और कुछ मनुष्यों को घायल किया। नौगाँव, दरांग और कामरूप में भी खून की नदी बही। मासूम बच्चों और निर्दोष जनता के खून से निरंकुश अधिकारियों ने फाग खेला—नौकरशाही की दृष्टि में जिन बेचारों का सिर्फ यही कसूर था कि वे अपनी गुलाम मातृभूमि को स्वतंत्र करना चाहते थे।

सोरभग की दुर्घटना

मित्रों के हवाई-अड्डों पर भी हमले किए गए। २६ अगस्त १६४२ को कामरूप जिले के सोरभग हवाई-अड्डे में हुई दुर्घटना इसी का एक उदाहरण है। लुक-छिप कर या गुप्त रुप से ये हमले नहीं किए गए, वरन् गाँव के लोगों ने जो कुछ किया [illegible] दिन [illegible] और सबके सामने। सोरभग का हव[illegible] [illegible]ा उस समय तैयार हो रहा था। मिलिटरी ठकेदारों के इकट्ठे किए गए सभी सामान जला दिए गए। तीन एम० ई० एस० गाड़ियों की भी यही दुर्दशा हुई। इंस्पेक्सन बंगले और कुछ कार्टरों में भी आग लगा दी गई।

यह आग बड़ी भयानक थी। इतने जोरों की कि वहाँ से १६ मील दूर बरपेटा में रहनेवाले एस० डी० ओ० को अपने बंगले से उसका पता लग गया। अपनी गाड़ी में बैठ कर वह फेरी-घाट की ओर दौड़ा। घाट पर पहुँचने पर उसने देखा कि वहाँ न तो कोई नाव ही है और न उसे खेनेवाला कोई मल्लाह ही। घटनास्थल पर पहुँचने के दूसरे सभी मार्ग या तो बन्द कर दिए गये थे या उन्हें बर्बाद कर दिया गया था कि जिससे बाहर से विशेष पुलिस या फौजी सहायता न आ सके। इस दुर्घटना के फलस्वरूप करीब दो लाख रुपयों का नुकसान हुआ।

कामरूप जिले के पाठशाला नामक स्थान में जनता ने थाने पर कब्जा कर लिया और सारे दिन उस पर नियंत्रण रखा।

नौगाँव

बगावत का प्रधान केन्द्र था नौगाँव। नौगाँव की जनता ने बड़ी कुशलतापूर्वक अपना संगठन किया, यहाँ तक कि सुदूर के गाँवों में भी क्रान्ति की लहर फैल गयी थी। इस जिले में पुलिस ने घोर अमानुषिक अत्याचार किए। और जनता का दमन करने के लिए उसे फौज की भी सहायता लेनी पड़ी। आत्मरक्षा अथवा कार्य करने के लिए यहाँ के लोगों ने, प्रधान द्वारा तुरही बजाकर लोगों को इकट्ठा करने का, प्राचीन तरीका अख्तियार कर रखा था। गावों और रेल के रास्ते पर पहरा देने के लिए फौज नियुक्त की गई, जो जरा-सा सन्देह होने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पर ही, गोली चलाकर लोगों को मौत के घाट उतार देती थी। ऐसे अनेक उदाहरण मिले हैं, जब कि रेलवे-लाइन अथवा पुल के पास से गुजरनेवाले निर्दोष राही भी रोके जाकर गोली से उड़ा दिए गए हैं।

२० अगस्त सन् १९४२ को फौज के एक दल ने, जो बेबेजिया पुल के पास छिपा हुआ था, शाम के समय पुल के पास आनेवाले दो जवान ग्रामीणों को गोली मार दी। दूसरे दिन मिलिटरी-पुलिस के एक दल ने गौहाटी से छः मील दूर रोहापुल के पास एक दूसरे नौजवान को गोली से भून दिया। बेबेजिया गाँव में आधी रात के समय असहाय स्त्री, पुरुष और बच्चों पर घोर अत्याचार किए गए। दूसरे दिन दोपहर की कड़कती धूप में गाँव के ४०० औरत, मर्द और बच्चों को सशस्त्र पुलिस की निगरानी में गाँव से नौ मील दूर नौगाँव पुलिस थाने में जबर्दस्ती लेजाया गया। इस तरह जबर्दस्ती पकड़ कर लेजाई गई औरतों में एक औरत ऐसी भी थी जिसकी गोद में एक नवजात शिशु था—जिसे पैदा हुए तीन दिन भी नहीं हुए थे। वह मासूम नन्हा बच्चा रास्ते में ही मर गया और इस दुर्घटना के बाद उस सद्यः प्रसूता स्त्री का स्वास्थ्य एकदम खराब होगया।

तिलक डेका

पुलिस और फौज द्वारा रात के समय बेबेजिया तथा आसपास के गाँवों के लोगों पर किए जानेवाले ये अत्याचार कई हफ्तों तक चलते रहे। नौगाँव जिले के बरापुजिया गाँव का रहनेवाला, शान्ति-सेना का नायक, तिलक डेका उस रात पहरा देते समय अन्याय पूर्वक गोली से उड़ा दिया गया। गाँववालों ने अपनी रक्षा के लिए शान्ति-सेना बना रक्खी थी। गाँव के कुछ लोग बारी-बारी से गाँव के प्रत्येक नाकों पर पहरा देते थे। इन लोगों का काम रहता था गाँव की हिफाजत करना और किसी खतरे का सन्देह होते ही तुरही बजा कर गाँववालों को सावधान कर देना। तो उस रात मिलिटरी को देखते ही तिलक डेका ने तुरही बजाई। वह फिर तुरही बजाना ही चाहता था कि एक अफसर ने उसकी छाती पर रिवाल्वर लगा दी और चारों ओर से घेर लेनेवाले फौजी पहरदारों ने उसे धमकी दी कि यदि वह फिर तुरही बजावेगा तो उसे मौत के घाट उतार दिया जायगा। सामने मौत खड़ी थी; लेकिन, उसके गाँववालों ने भी तो विश्वास कर उसे कितनी बड़ी जिम्मेदारी सौंपी थी! अन्त में मौत की तनिक भी परवाह न करते हुए तिलक डेका ने अपने कर्त्तव्य को पूरा करने की ठानी। उसने तुरही बजाई और दूसरे ही क्षण एक हाथ की दूरी से एक गोली सनसनाती हुई आई और उसकी खोपड़ी को चूर-चूर करती हुई दूसरी ओर निकल गई।

तुरही की आवाज और फिर रिवाल्वर चलने के शब्द ने गाँववालों को सावधान कर दिया। स्त्री, पुरुष और बच्चों की एक बहुत बड़ी संख्या ने तुरन्त ही फौजियों को घेर लिया। गोली खाने ... गिरफ्तार होने के लिए सबसे आगे औरतें ही बढ़ीं। कानून के ठेकेदारों ने फिर गोलियाँ चलाईं और पाँच या

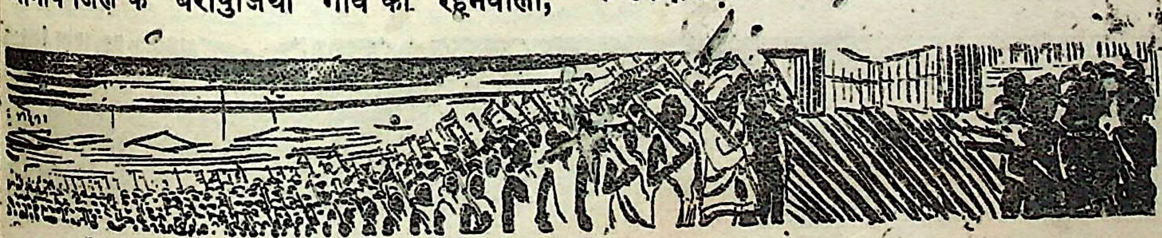

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

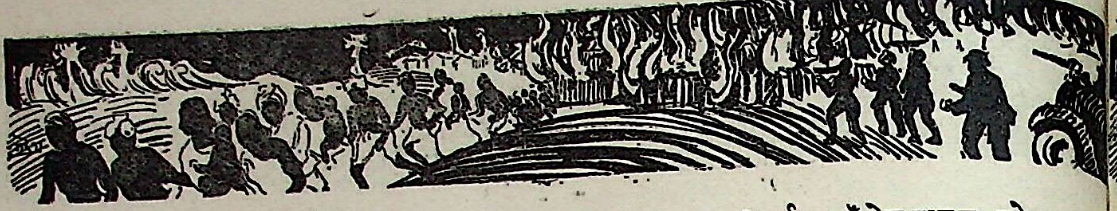

छः आदमियों को और घायल किया। पिस्तौलों और किर्चों की तनिक भी परवाह न करते हुए गाँववालों ने तिलक डेका के शरीर को वहाँ से हटा ही तो लिया—कि जिससे उसकी सम्मान एवं अन्त्येष्टि-क्रिया की जा सके। दूसरे दिन सुबह गाँव के करीब तीन सौ लोगों को गिरफ्तार किया गया; उन्हें ठोकरें लगाई गईं, पीटा गया और बेइज्जत किया गया।

फौज ने शान्ति-सेना के एक कैंप पर धावा किया। बहुत बड़ी संख्या में लोग गिरफ्तार किए गए। मकान में आग लगा दी गई और उन्हें निर्दयता पूर्वक पीटा गया।

रोहा स्कूल

रोहा हाई स्कूल की घटना भी अपना एक विशेष महत्त्व रखती है। चार या पाँच वर्षों से स्कूल की इमारत पर राष्ट्रीय तिरंगा झण्डा फहरा रहा था। स्कूल खाली था क्योंकि लड़के नहीं आए थे। सिर्फ शिक्षक वहाँ अकेले थे। उस ओर से जाता हुआ एक यूरोपियन अफसर तुरत ही स्कूल के हाते में घुसा और झण्डा नीचे ले आने के लिए उसने शिक्षकों को हुक्म दिया। शिक्षकों के इनकार करने पर वह गोरा उन पर टूट पड़ा और बड़ी निर्दयतापूर्वक उन्हें पीटा।

बरहमपुर

१६ स[illegible]बर को नौगाँव शहर से ५ मील दूर लखीराम हजारिका; दो भाई, धानूराम सूत और बालूराम सूत और भोगेश्वरी फूकोनेनी को एक भीड़ में गोली मार दी गई। काँग्रेस-हाउस, जो उस सम[illegible] पुलिस के अधिकार में था, के सामने लोग [illegible] दावत में इकट्ठे हुए थे। स्त्री, पुरुष बच्चे, स[illegible] उम्र के लोग थे। कुछ राष्ट्रीय गाना गा रहे [illegible] कुछ के हाथ में तिरंगा झण्डा था और कुछ दा[illegible] की तैयारी में जुटे हुए थे। इसी बीच मिलिटरी [illegible] पुलिस का एक बहुत बड़ा दल वहाँ आ धमका। फौजियों ने कुछ लड़कियों के हाथ से जबर्द[illegible] तिरंगा झण्डा छीन लिया।

गोली खाकर शहीद होनेवाले एक वीर की स्त्री [illegible] कहा—"मुझे गौरव है कि मेरा पति देश की आजा[illegible] की लड़ाई में मारा गया।"

ऊपरी आसाम

आन्दोलन तीव्र होने के पहले ही ऊपरी आसा[illegible] के सभी नेता पकड़ कर जेलों में ठूँस दिए गए थे। जोरहाट और शिवसागर सब-डिविजनों में को[illegible] की इमारतों और सरकारी आफिसों के सामने बहु[illegible] बड़े प्रदर्शन हुए। सरकारी अफिसों के सामने पि[illegible] टिंग और प्रदर्शन करने में विद्यार्थियों ने बहुत ब[illegible] हिस्सा लिया। उस समय वहाँ का डिस्ट्रिक्ट कलेक्[illegible] हिन्दुस्तानी था और उसका स्वभाव भी कुछ न[illegible] था। अत: बहुत-सी दुर्घटनाएँ होते-होते बच गईं।

इन जिलों में आन्दोलन ने पहले दो रूप पकड़े। रचनात्मक कार्यों की ओर लोगों का ध्यान गया। गाँवों में पंचायतें कायम की गईं।

प्रतिनिधित्व के आधार पर सभी लोगों ने इनमें सहयोग दिया। चरीगाँव, हटीगढ़, टेओक आदि

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्थानों में स्वाधीन-राष्ट्र कायम किए गए। इनका निर्माण पूर्णतया सभ्य सरकारों की तरह किया गया था। इसके अतिरिक्त असहयोग और रुकावटों की ओर लोग झुके। फौज तथा मिलिटरी-ठेकेदारों को गाँवों से मिलनेवाली चीजों पर रोक लगा दी गई। फलस्वरूप बकरे, मवेशी, मुर्गे और धान आदि का गाँवों से बाहर जाना बन्द होगया। इस असहयोग के कारण जनता और पुलिस की भिडंत अवश्यंभावी थी। किर्च और लाठी-चार्ज तथा गिरफ्तारियाँ तो रोज की एक साधारण-सी बात हो गई। इसके फलस्वरूप जोरहाट के करीब ५० कार्यकर्त्ताओं को उनके शरीरों पर स्थायी चोट पहुँची। इसी बीच हिन्दुस्तानी डिस्ट्रिक्ट कलेक्टर की बदली हो गई और उसकी जगह जिले का शासन एक यूरोपियन के हाथों सौंप दिया गया।

जोरहाट सबडिवीजन में टेओक कॉंग्रेस का सबसे सुदृढ़ गढ़ है। असहयोग के कार्यक्रम ने यहाँ खूब जोर पकड़ा। थाने के निकटस्थित कॉंग्रेस-ऑफिस में जब ३००० ग्रामीण जनता इकट्ठी हुई, तो पुलिस और मिलिटरी ने उस भीड़ पर हमला किया और लाठी तथा किर्चों से स्त्री, पुरुष ही नहीं बल्कि बच्चों तक को बुरी तरह से घायल कर डाला। स्त्रियों के हाथों से उन्होंने राष्ट्रीय झण्डे छीन लेना चाहा। चमकती हुई किर्चों तथा लाठी की कुछ भी परवाह न करती हुई वे वीर-महिलाएँ अपने स्थानों पर अटल रहीं। पुलिस और मिलिटरी के इस हमले में दो को सांघातिक चोटें लगीं और करीब २० स्त्री-पुरुष घायल हुए।

शहर में आने के सभी रास्ते बन्द कर दिए गए थे। फिर भी २० सितंबर को लगभग १५००० स्त्री-पुरुषों का एक विशाल समूह शहर में इकट्ठा हो गया। नारे लगाते हुए सड़कों पर इस जुलूस ने प्रदर्शन किया। पोलिटेकनिकल स्कूल और जयसागर के पास मिलिटरी और पुलिस ने भीड़ पर किर्चों से हमला किया। २० आदमी बुरी तरह से घायल हुए।

सरकार के इन अत्याचारों का फल यह हुआ कि आन्दोलन अब लुक-छिप कर चलाया जाने लगा। सितंबर १९४२ और फरवरी १९४३ के बीच आन्दोलनकारियों ने बहुत-सा साहित्य प्रकाशित किया। इस साहित्य में आन्दोलन को चालू रखने के लिए अनेक प्रकार के सुझाव दिए गए थे। कुछ खास हिदायतें थीं—(१) सरकारी खबर आने-जाने के साधनों का विध्वंस, (२) रेलवे को उखाड़ना (३) इमारतों, पुलिस आफिसों आदि को तोड़ना-फोड़ना और (४) समानान्तर सरकार की स्थापना। आन्दोलन के शुरुआत में ही विद्यार्थियों ने उसमें हिस्सा लेना शुरू कर दिया था और बाद में तो इसकी बागडोर ही उनके हाथों आगयी थी। आन्दोलन की उपर्युक्त कार्य-प्रणाली उन्होंने स्थिर की थी और वे ही उसका संचालन कर रहे थे।

विद्यार्थियों ने सिर्फ क्लासों का ही बायकाट नहीं किया, वरन् नौजवानों के साथ वे 'मृत्यु-दल' (Death Brigade) में संघटित हो गए थे। [illegible] बंगलों, पोस्ट-आफिसों, एस० डी० सी०, पी० डब्ल्यू० डी० आफिसों, मिलिटरी छावनियों, हवाई-अड्डों आदि

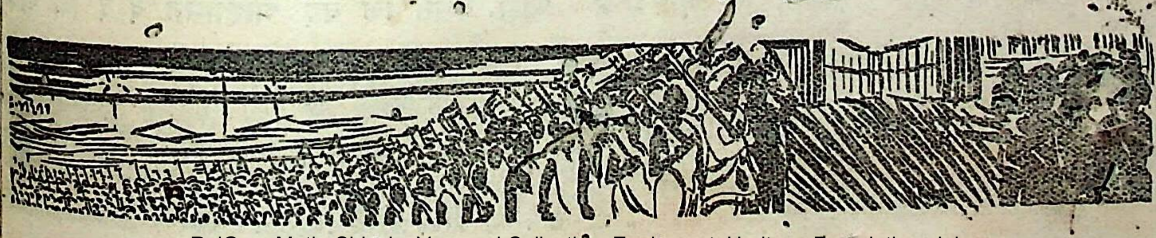

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

को जलाना-फूँकना तो आन्दोलनकारियों के लिए नित्य-प्रति का एक साधारण कार्यक्रम हो गया था। पुलिस की रिपोर्ट के अनुसार आसाम में छः बार तो काफी जान की हानि हुई। २६ नवंबर को गौहाटी रेलवे-स्टेशन से १४ मील दूर एक फौजी गाड़ी भी गिराई गई। सारूपथार में फौजी सामान ले जानेवाली मालगाड़ी को आन्दोलनकारियों ने उलट दिया। इसके अतिरिक्त देशी बम भी बनाए गए, जो कॉलेज के कमरों, टेलिग्राफ-आफिसों और रेलवे के प्लाटफर्मों पर फूटते थे। आन्दोलन का यह कार्यक्रम तब तक चलता रहा, जब तक कि महात्मा गाँधी और वाइसराय का पत्र-व्यवहार प्रकाशित नहीं हो गया। आसाम में आन्दोलन ज्वालामुखी के समान भभक रहा था। करीब ४ महीनों तक तो सरकार का नागरिक-शासन पंगु बना दिया गया था।

कौशल-कुँवर के उल्लेख बिना आसाम के आन्दोलन की यह कथा अधूरी ही रह जायगी। आसाम के अहोम (एक जाति) वहाँ की काँग्रेस के एक दृढ़ स्तंभ है। इन अहोमों ने ब्रिटिश-राज्य की स्थापना के पहले छः सौ वर्षों तक आसाम पर राज्य किया था। कोशल-कुँवर इसी वीर-जाति का था। काँग्रेस के सिद्धान्तों का वह पूर्ण अनुयायी रहा और जनता में उन्हीं का प्रचार किया करता था। मुखबिरों ने सारूपथार ट्रेन-दुर्घटना में उसे भी फँसा या। सरकार की नजरों पर तो चढ़ा हुआ था ही, उसे फाँसी की सजा हुई।

एक प्रत्यक्षदर्शी ने लिखा है—"लड़कपन में मैं इतिहास में पढ़ा करता था कि देश-प्रेम के लिए लोग हँसते-हँसते फाँसी पर चढ़ गए। मुझे यह बात कुछ बनाई हुई-सी मालूम पड़ती थी लेकिन, जब फाँसी की कोठरी में, १४ जून १९४३ को फाँसी होने के एक दिन पहले, मैंने कोशल कुँवर को देखा तो मेरा मस्तक श्रद्धा से उसके चरणों में झुक गया। प्रसन्न मुख, होठों पर नाचती मुस्कान और आँखों में एक दिव्य ज्योति। इतिहास मेरी आँखों के सामने सजीव हो उठा। उसके अन्तिम शब्द अब भी रह-रह कर मेरे कानों में गूँज उठते हैं:—

'जिसने जन्म लिया है, वह एक दिन अवश्य मरेगा ही। मुझे खुशी है कि इतने लोगों में ईश्वर ने मुझे ही चुना। ईश्वर मुझे प्यार करता है।'

स्वतंत्रता की बलिवेदी पर न्योछावर होने के लिए उसने हँसते-हँसते फाँसी का फन्दा अपने गले में डाल लिया। फन्दा खींचा गया। मुँह से अस्फुट स्वर निकला—"पार करो दीनानाथ संसार सागर" और वह महान आत्मा गुलामी के बंधन से मुक्त होगई।"

मीरी जाति के कमला मीरी का नाम भी भारतीय-स्वतंत्रता-संग्राम के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अङ्कित रहेगा। भारत की आजादी और अपने सिद्धान्त के निमित्त उसने अपने प्राण तिल तिल कर घुला दिए। हँसते-हँसते मौत का आलिंगन कर लिया; लेकिन, मुँह से 'उफ' तक न निकाली।

कमला मीरी गोलाघाट डिस्ट्रिक्ट काँग्रेस कमीटी का एक मेंबर था और उसीके दफ्तर मे वह गिरफ्तार किया गया। मैजिस्ट्रेट ने उसे छोड़ देना चाहा, दशर्ते कि वह आश्वासन दे दे कि अब

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कॉंग्रेस के काम में सहयोग नहीं देगा। लेकिन कमला मीरी ने इस अपमान-पूर्ण समझौते को अस्वीकार कर दिया। फलस्वरूप सितंबर१६४२ में उसे आठ महीने कड़ी कैद की सजा मिली। जोरहाट जेल में वह बीमार पड़ा। बीमारी बढ़ती ही गई। रोज-रोज उसका जीवन-दीप मन्द पड़ता जारहा था। उसे इस बात का पता था। अधिकारी उसे छोड़ देना चाहते थे, सिर्फ यह आश्वासन दे देने पर कि पैरोल पर छूटी अवधि में वह आन्दोलन में भाग नहीं लेगा। लेकिन, भारत के वीर-पुत्र को यह बात अपमानपूर्ण प्रतीत हुई। उसने साफ इनकार कर दिया। कायरों की भाँति छूटने की अपेक्षा उसने वीरतापूर्वक मौत का सामना करना अधिक श्रेयस्कर समझा। मृत्यु के एक या दो दिन पहले, जब जेलर ने फिर आश्वासन की बात चलाई तो, उसने कड़क कर जबाब दिया :—

"मैं यह यंत्रणा अपने किसी स्वार्थ के लिए नहीं बल्कि तुम्हारे और अपने—सब के लिए—सह रहा हूँ। फिर तुम मुझे आश्वासन देने के लिए क्यों जोर दे रहे हो ?"

इस तरह कमला मीरी घुल-घुल कर मर गया। लेकिन, अंगरेजों और देश के विभीषणों के माथे वह ऐसा कलंक का टीका लगा गया है, जो कभी न छूट सकेगा।

सामूहिक जुर्माने

जनता पर बड़ी निर्दयतापूर्वक जुर्माने लगाये गये। सरकार द्वारा लगाये गए सामूहिक जुर्मानें की तालिका इस प्रकार है :—

जिला	जुर्माना
सिलहट	२,०००
लखीमपुर	१०,०००
शिवसागर	१,४३,२००
नौगाँव	८७,५००
दराँग	८२,२००
कामरूप	७०,५८७
ग्वालपाड़ा	१५,०००

लेकिन, सरकार ने ये आँकड़े बहुत कम करके दिखाए हैं। इनका जोड़ १ लाख २५ हजार रुपये और अधिक होना चाहिए। सरकारी खजाने को भरने के लिये ये जुर्माने बड़ी क्रूरता-पूर्वक वसूले गए। यह टैक्स वसूलने के लिए सैनिक गाँव-गाँव भेजे गए। मिलिटरी-पुलिस जबर्दस्ती गरीब ग्रामीणों के घर में घुस गई, औरतों को बेइज्जत किया और कुछ नहीं मिलने पर उनके बर्तन तक नोच-खसोट कर ले आई।

श्रीयुत आर० के० चौधरी ने प्रान्तीय असेम्बली में इस अत्याचार का एक नमूना पेश किया था और जिसे प्रीमियर ने भी सच करार दिया था।

श्रीयुत चौधरी के शब्दों में :—

"यह दुर्घटना कोकीरी नामक गाँव की है। इस गाँव के निधन राजवंशी से सामूहिक जुर्माने के आठ रुपये वसूलने के लिए एक कांस्टेबुल को नियुक्त किया गया। निधन के पास नकद रुपये नहीं थे। इस पर कांस्टेबल ने उसके हल की जोड़ी बैल को खोल लिया। बैलों को लेकर जब वह चलने लगा तो निधन ने बड़ी अरज-मिन्नत की; क्योंकि उसके

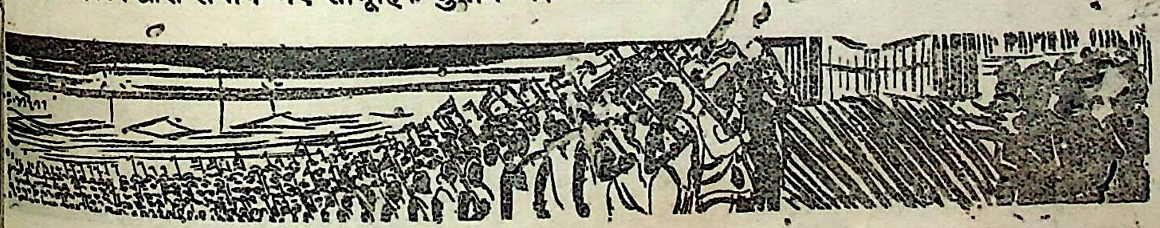

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पास बस वही दो बैल थे। कांस्टेबल उसे गाली देने लगा ; बदले में निधन ने भी खरी-खोटी सुनाई। तब कांस्टेबुल ने उसे लाठी से पीटा। यह कहना सरासर गलत है कि निधन ने उसपर भाला चलाया। कांस्टेबल के शरीर पर उसके आघात के कोई चिह्न नहीं पाये गए थे। यह घटना दिन की है।

"रात में करीब ११ बजे एस० डी० ओ० दुधनाई से लौटा। उसे इस बात की खबर मिली। दो लौरी सशस्त्र पुलिस और दो यूरोपियन अफसरों के साथ वह घटनास्थल पर पहुँचा। निधन अपने घर में था। दरवाजे बन्द थे और अन्दर रोशनी हो रही थी। उसे बाहर निकलने को कहा गया ; लेकिन उसने बाहर आने से इनकार किया। इस पर उसका घेर लिया गया और एस० डी० ओ० ने गोली च का हुक्म दिया। एक यूरोपियन अफसर ने गो चलाई। छः बार गोलियाँ छोड़ी गयीं। कुछ गु अन्दर जाकर निधन के ठेहुने के पास लगी। गिर गया और खून की धार फूट पड़ी। एक गु दीवारों को छेदती हुई दूसरी ओर पहुँची और व खड़े एक सिपाही को जा लगी। वह सिपाही फौ मर गया। इस पर मकान का दरवाजा तोड़ क सैनिक अन्दर घुस गए और वहाँ उन्होंने निधन क किर्चें भोंक-भोंक कर मार डाला—ठीक उसी तर जैसे कि जंगली सूअर को शिकार में मारा जाता है

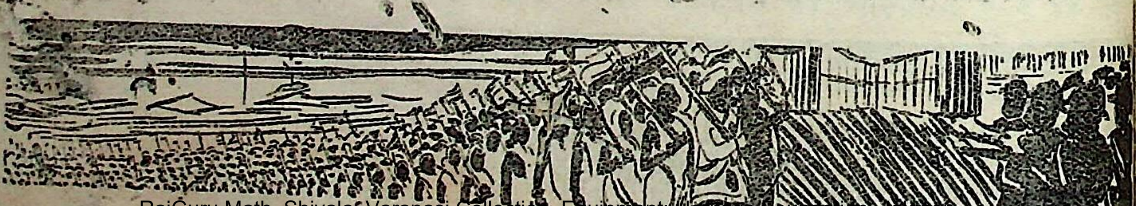

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection, Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्त्रियों और पुरुषों को पेड़ में उल्टा लटकाकर पीटा गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उड़ीसा में

स्त्रियों और पुरुषों को नग्न किया गया

लोगों को पेड़ से उलटे लटका कर पीटा गया

बालासोर का बलिदान

अगस्त आन्दोलन के सिलसिले में उड़ीसा में बालासोर जिला सबसे आगे रहा। ६ अगस्त १६४२ के बाद बालासोर जिले में पुलिस द्वारा गोलीकाण्ड में ४२ व्यक्ति मरे और २७० से अधिक घायल हुए। उक्त समय से ३०० से अधिक व्यक्ति गिरफ्तार किये गये। सामूहिक जुर्माना भी लगाया गया। यहाँ तक कि पतियों तथा पुत्रों की रिहाई के लिये महिलाओं को उनके गहने तक दे देने के लिये पुलिस ने वाध्य किया। अनेक स्थानों पर कोड़े और बेंतों की मार तथा अन्य यंत्रणा की रीतियों का अवलंबन किया गया। इस प्रकार की यंत्रणाएँ अपराधी के बेहोश हो जाने तक दी जाती थीं। पुलिस द्वारा साम्प्रादायिक फूट डालने की कोशिश की गयी, पर उसे सफलता नहीं मिली।

नृशंसतापूर्ण गोलीकाण्ड

उत्कल काँग्रेस कमीटी की रिपोर्ट में गोलीकाण्ड का विवरण देते हुए कहा गया है कि इराय गाँव में गोली चलाना इतना अनुचित और अविवेकपूर्ण था कि अन्त में सरकार को लाचार होकर एक जाँच कमिटी नियुक्त करनी पड़ी। लेकिन, इस कमीटी की रिपोर्ट दबा दी गयी।

बात यह हुई कि इराय के जमींदार को अनाज के खलिहान लूटे जाने का डर हुआ तो उसने पुलिस की सहायता माँगी। डिप्टी सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस वहाँ सशस्त्र पुलिस दल के साथ आये और उन्होंने नेताओं को गिरफ्तार किया। कुछ लोगों ने चौकीदारों के हाथ से पुलिस अफसरों के वे विस्तर ले लिये, जिन्हें जमीन्दार के घर पहुँचाया जा रहा था। बस इसी पर फौरन गोली चलाने का हुक्म दिया गया। लोगों से तितर-बितर हो जाने तक के लिये नहीं कहा गया। फलतः २८ व्यक्ति वहीं मर गये तथा २०० व्यक्ति बुरी तरह घायल हुए। इस संबंध में १२५ व्यक्ति गिरफ्तार भी किये गये। दामनगर में भी एक सभा में पुलिस ने गोली चलाई, जिससे ८ व्यक्ति घटनास्थल पर ही मर गये। कल्ली महालिक नामक एक व्यक्ति के सीने में तीन गोलियाँ लगीं। उस वीर ने मरते समय कहा—

"बन्धुओ! चिन्ता न करो, मैं शीघ्र ही स्वतंत्र भारत में जन्म लूँगा।"

इस गोलीकाण्ड में ४० व्यक्ति घायल हुए तथा ४० हिरासत में लिये गये।

अफसर धोती पहनकर भागा

काँग्रेस की रिपोर्ट में एक मजेदार घटना का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

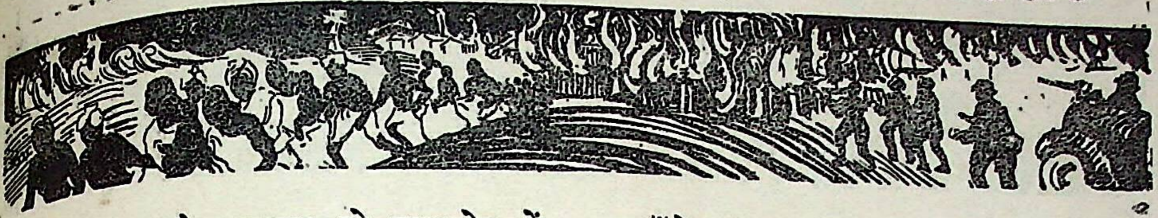

उल्लेख किया गया है। सरकार को बालासोर में जापानी सेनाओं के उतरने का भय लगा हुआ था। वहाँ के पुलिस सुपरिंटेन्डेन्ट महोदय अँग्रेज थे। वे जानते थे कि समुद्रीतट होने से जापानी किसी समय भी मौका पाकर वहाँ आक्रमण कर सकते हैं। इसी मौके पर एक बारात निकली, जिसमें पटाखे छोड़े गए। पुलिस सुपरिण्टेन्डेन्ट ने समझा कि बम छोड़े जा रहे हैं। अतः वे अपनी जाति छिपाने के लिए एक धोती पहन कर भाग खड़े हुए।

इस डर से कि जनता कहीं उन्हें मार न डाले, पोस्ट-ऑफिसर और पुलिस ऑफिसर एक स्टीम-लाँच पर बैठ कर वैतरणी नदी के दूसरी ओर भाग गए। कुछ काँग्रेस-जनों के आश्वासन देने पर वे वापिस आए। दूसरे दिन लोगों को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि नेताओं की गिरफ्तारी के विरोध में गाँव में होने वाली सभा में वे ही उस प्रस्ताव का समर्थन कर रहे हैं, जिसमें नेताओं की गिरफ्तारी पर रोष प्रकट किया जा रहा था।

कोरापुर में दमन

अगस्त आन्दोलन की लहर से कोरापुर भी अछूता न बचा। वहाँ आन्दोलन के सिलसिले में जनता पर घोर अमानुषिक अत्याचार ढाए गए।

बहुत-से काँग्रेसी-लोगों के खेत, ढोर तथा उनकी अन्य सम्पत्ति छीन ली गई। अनेक काँग्रेस-जनों को नंगा किया गया तथा उनके कपड़ों में आग लगा दी गई। स्त्रियों पर भी इसी प्रकार का अत्याचार किया गया।

काँग्रेस की बहुत-सी सम्पत्ति जप्त कर ली गई, जिसमें एक मोटर तथा २००० रुपये नकद भी थे।

लगभग ३००० व्यक्तियों का एक समूह लक्ष्मण नायक के नेतृत्व में मैथिली गाँव गया, जहाँ पर साप्ताहिक बाजार लगता है। यह गाँव थाने से आध मील की दूरी पर है। यहाँ एक सार्वजनिक सभा हुई, जिसमें लक्ष्मण नायक ने जनता को वर्त्तमान सरकार से सहयोग न करने तथा जनता का राज्य स्थापित करने का उपदेश दिया। पुलिस ने घोषणा की कि राजद्रोहात्मक भाषण देने के लिये लक्ष्मण नायक गिरफ्तार कर लिया गया है। जनता अपने नेता के पीछे-पीछे थाने तक गई। थाने पर जनता से हट जाने के लिये कहा गया। इसके साथ ही अचानक जनता पर लाठियाँ तथा गोलियाँ चलाई गईं। ६ आदमी तत्काल मर गये और सैंकड़ों घायल हुए। लक्ष्मण नायक पर भाले तथा संगीनों से हमला किया गया। अन्य व्यक्तियों पर भी इसी प्रकार हमले किये गये। कहते हैं, लाठी-चार्ज में चार वर्ष का एक बालक भी मारा गया।

गाँव जला दिया गया

जयपुर स्टेट के अधिकारियों का एक दल भी वहाँ उपस्थित था और उसने पुलिस की सहायता की। जंगलों का एक पहरेदार, जो शराब के नशे में चूर था, धक्कम-धक्के में पड़कर थाने के नि[illegible]ट नहर में गिर गया। नहर पत्थर की बनी थी [illegible]ः गिरने से उसका सिर फट गया और वह वहीं मर गया। एक दूसरी [illegible]वाह है कि पुलिस ने जनता पर जो लाठी-चार्ज [illegible] [illegible]समें मृत्यु हो गयी। लगभग ८-

Collection: Equipment Heritage Foundation

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

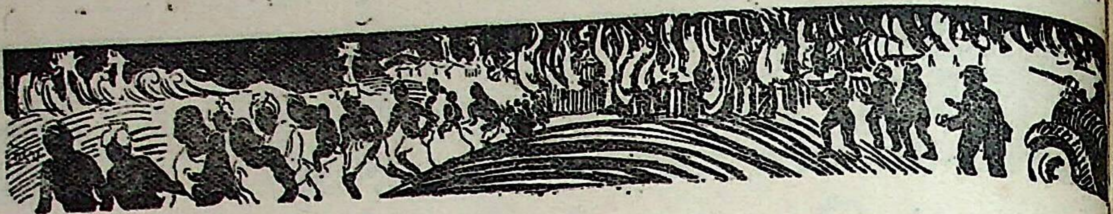

१० दिन बाद कलेक्टर तथा सुपरिन्टेन्डेन्ट-पुलिस गाँव में पहुँचे और सारा गाँव जलवा डाला।

सेसन में लक्ष्मण नायक और ५३ अन्य व्यक्तियों पर जंगल के पहरेदार की हत्या के अभियोग में मामला चलाया गया। लक्ष्मण नायक को फाँसी दे दी गयी तथा अन्य व्यक्तियों को आजन्म कारावास की सजा दी गई। १४ व्यक्ति रिहा कर दिये गये। बाद में हाइकोर्ट ने १० व्यक्तियों को छोड़ दिया। लक्ष्मण नायक को बरहामपुर सेन्ट्रल जेल में फाँसी दे दी गई।

'बेलसेन' कैम्प

उत्कल प्रान्तीय कॉंग्रेस कमीटी की रिपोर्ट में कोरापुर की जेल को उड़ीसा का बेलसेल कैम्प कहा गया है। रिपोर्ट में बताया गया है कि उपेक्षा तथा निर्दय व्यवहार के फलस्वरूप जेल में ५० राजनीतिक बंदियों की शोचनीय मृत्यु हुई। इसकी तुलना हमारे अभागे देश के जेलों के इतिहास में मिलना मुश्किल है।

कोरापुर जेल अधिक से अधिक २५० कैदियों के लिए बनी है, पर अगस्त आन्दोलन के समय वहाँ ७००-८०० कैदी ठूँस दिये गये थे।

३२४ बार लाठी चार्ज

आन्दोलन के समय १९७० व्यक्ति गिरफ्तार किये गये। ?१ व्यक्ति नजरबन्द किये गये तथा ५६० को सजाएँ दी गयीं। कुल ३६३ प्रदर्शन हुए। कोई हड़ताल नहीं हुई। ३२४ बार लाठी-चार्ज हुए। दो बार में ४१ राउन्ड गोलियाँ चलायी गयीं, जिसके फलस्वरूप २८ व्यक्ति मरे। ३ सरकारी इमारतों पर हमले किये गये।

आन्दोलन के समय तार काटे गए, सरकारी जंगलों के पेड़ काटे गए, रेलें उखाड़ी गई तथा रेल के गोदाम नष्ट किए गए, बाजारों पर लोगों को कर न देने के लिए उकसाया गया तथा स्कूलों, आबकारी की दुकानों और कचहरियों में धरना दिया गया। ११,२०० रुपया सामूहिक दण्ड लगाया, गया जिसमें ९७३ रुपया वसूल हुआ।

३ व्यक्ति पेड़ से उलटे लटका दिए गए तथा बेंत और लाठी से पीटे गए। स्त्रियों पर अनाचार के १२ मामले दर्ज हुए।

देशी-राज्यों में भी

उड़ीसा के राज्यों की जनता ने भी उड़ीसा प्रान्त की जनता के साथ कन्धे से कन्धा भिड़ाकर राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लिया और बहुत बड़ी कुर्बानियाँ कीं। इन कुर्बानियों को भविष्य का इतिहास स्मरण करेगा।

जनता के इस आन्दोलन को राजाओं ने अंग्रेजी सहायता के बल पर तुरन्त कुचल दिया। धनकानल, नीलगिरी और तालचर में गोलियाँ चलाई गईं। नीलगिरी और तालचर राज्यों में तो आकाश से मशीनगनों से जनता पर आक्रमण किया गया। हर जगह पर सैकड़ों व्यक्तियों को अदालती कार्यवाही के बिना जेलों में डाल दिया गया और खास मैजिस्ट्रेटों ने उनमें से अधिकांश लोगों को लम्बी सजाएँ दीं।

नीलगिरी राज्य में अधिक आदमी मारे गए

Rajguru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Sonepat

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

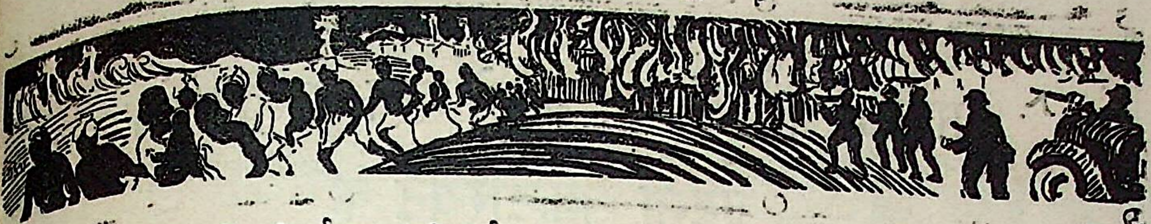

तथा घायल हुए। स्त्रियों की इज्जत लूटी गई। सम्पत्ति को लूटा तथा नष्ट किया गया। ७५ गाँवों के स्त्री, पुरुष और बच्चे इतने दुखी हो गए थे कि महीनों तक पास की मयूरभंज नामक रियासत में जाकर पड़े रहे। इन गाँवों पर ७५६०४) रुपये का सामूहिक जुर्माना किया गया था।

धनकानल में

धनकानल राज्य में दो व्यक्ति मारे गए। जख्मियों की तादाद कितनी थी, इसका निर्णय अभी तक नहीं हो सका है। लगभग ३२ आदमियों को २० से लेकर ४० वर्ष तक की सजायें दी गई। हजारों रुपयों की सम्पत्ति लूट कर नाश कर दी गई। जमीनें जब्त कर ली गई। इस प्रकार कष्ट सहनेवाले कई परिवार अत्यन्त असहाय बन गये और लोगों के दान पर अपने दिन बिताने लगे। ४३ गाँवों पर ५० हजार रुपया सामूहिक जुर्माना लगाया गया।

नयागढ़ में

नयागढ़ राज्य में भी ऐसा ही दमन-चक्र चलाया गया। एक आदमी को गोली से मार दिया गया। बहुत-से पीटे गए और जेल में डाल दिए गए। सम्पत्ति को लूटा और नष्ट किया गया। १८ गाँवों पर ८ हजार रुपये का सामूहिक जुर्माना लगाया गया। सम्पत्ति की लूट और जब्ती के कारण करीब एक सौ परिवार निराधार बन गए।

तालचर में

तालचर राज्य में तीन आदमी मारे गये। कॉलेज का एक विद्यार्थी अमानुषिक वर्त्ताव के कारण जेल में मर गया। जख्मियों की संख्या १०० से भी अधिक थी। बहुत-से घरों को लूट कर जला दिया गया और जमीनें जब्त कर ली गई। गाँवों में व्यक्तिगत और सामूहिक ६५ हजार रुपयों का जुर्माना किया गया। ४० आदमी सड़ने के लिए जेलों में ठूँस दिए गए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आजादी के पौधे को अपने खून से सींचनेवाले
पटना सेक्रेटेरियट के

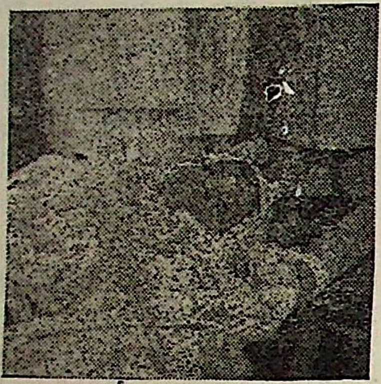

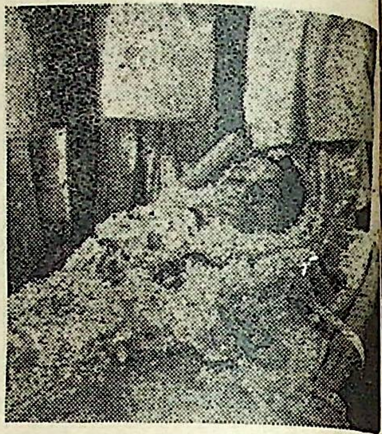

अमर

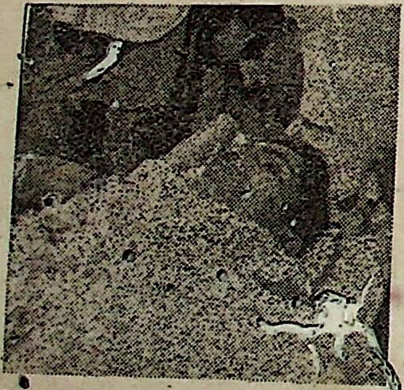

शहीद

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले।
वतन पर मरनेवालों का यही बाकी निशाँ होगा॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्राट् अशोक की राजधानी मासूम बच्चों के लहू से लाल !

नाजियों की बर्बरता भी मात—

मुँह में भंगी से पेशाब कराया गया।

आज़ादी के लिये किये जानेवाले प्रयत्नों में बिहार ने सदैव आगे रहने की चेष्टा की है और गत अगस्त आन्दोलन में उसने जो कुछ किया उसकी तुलना में अन्यत्र होनेवाले विद्रोह नगण्य से प्रतीत होते हैं।

प्रान्त के कोने-कोने में क्रान्ति की आग

प्रान्त का शायद ही कोई ऐसा जिला हो, जहाँ इस क्रान्ति की चिनगारी न पहुँच सकी हो। काँग्रेस नेताओं की गिरफ्तारी की खबर मिलते ही जनता क्षुब्ध हो उठी और हर जगह उसने अपना रोष उग्र रूप में प्रकट किया।

भारत सरकार के तत्कालीन होम मेम्बर सर रेजिनेल्ड मैक्सवेल ने सेंट्रल-असेंबली डिबेट के सिलसिले में कहा था—"ये उपद्रव बम्बई, मद्रास, मध्य-प्रदेश और बंगाल में एक साथ हुए; किन्तु सबसे अधिक जिन हिस्सों पर इसका प्रभाव पड़ा, वह था संयुक्त प्रान्त का पूर्वी भाग और इससे भी ज्यादा, बिहार !

"इन विध्वंसकारी कार्यों के विस्तार और संपूर्ण बिहार (सिर्फ उसके अत्यन्त दक्खिनी हिस्से को छोड़कर) तथा संयुक्त प्रान्त के पूर्वी हिस्सों में इसकी अत्यन्त तीव्रता का पता साधारणतया लोगों को नहीं मालूम है। इन क्षेत्रों में तुरत ही बड़े शहरों से यह आग सुदूर गाँवों में पहुँच गयी। हजारों उपद्रवी खबर आने-जाने के साधनों और दूसरी सरकारी सम्पत्तियों के विनाश में जुट पड़े।

"रक्षा करनेवाले सरकारी अधिकारियों और पुलिस के छोटे-छोटे दलों के साथ जिले के जिले कई दिनों तक प्रान्त से अलग हो गये थे। (वहाँ की कोई खबर बाहरी दुनिया को नहीं मिल सकी थी।)

"........इस क्षेत्र में रेलवे का बहुत-सा हिस्सा बेकार कर दिया गया था और यह कहना अत्युक्ति न होगा कि काफी समय तक बंगाल का उत्तरी हिन्दुस्तान से सम्बन्ध-विच्छेद-सा हो गया था।... करीब २५० रेलवे स्टेशन बर्बाद किये गये या उन्हें नुकसान पहुँचाया गया—इनमें १८० सिर्फ बिहार और संयुक्त प्रान्त के पूर्वी हिस्से में स्थित थे।

"........इसके बावजूद हिन्दुस्तान के प्रायः

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सभी बड़े शहरों से, टेलीफोन से या टेलीग्राफ से, उपद्रव के समय किसी न किसी तरह का सम्बन्ध जारी रक्खा गया—लेकिन पटना को छोड़कर।"

और सचमुच बिहार की राजधानी पटना कुछ दिनों तक दुनिया के दूसरे हिस्सों से अलग हो गया था ; क्योंकि जनता ने यातायात के सभी साधनों को ध्वस्त कर डाला था। रेल, तार, डाक प्राय: सब पर जनता का अधिकार था। बिहार के प्राय: सभी जिलों में सरकारी शासन पंगु बना दिया गया था। पुलिस चौकियों पर जनता ने कब्जा कर लिया था और सरकारी कचहरियों में भी काम बन्द हो गये थे। बड़े-बड़े सरकारी अफसर या तो बड़े-बड़े शहरों में भाग गये थे या जनता के सामने उन्होंने आत्म-समर्पण कर दिया था। जिन्होंने मुकाबला किया, उनमें कई मौत के घाट उतारे गये और इस तरह के काण्डों में लोगों को भी काफी संख्या में प्राणाहुति देनी पड़ी। उन्हें धन-सम्पत्ति का भी बेहद नुकसान उठाना पड़ा। पुलिस और सरकारी अफसर तथा उनकी कचहरियों पर हजारों की तादाद में जनता धावा बोल देती थी। लाठी और गोलियों की उसे परवाह नहीं थी।

अमानुषिक अत्याचार

लेकिन इसके साथ ही इस प्रान्त को दमनचक्र में भी वैसी ही बुरी तरह पिसना पड़ा। अकेला यही एक प्रान्त है, जहाँ निहत्थी किन्तु उत्तेजित जनता पर सरकार ने वायुयान से गोलियाँ बरसाई थीं।

बिहार प्रान्त में नौकरशाही ने जिस क्रूरता से मनुष्य के स्वतंत्र होने के जन्म-सिद्ध अधिकार की भावना को दबाना चाहा, वह संभवत: संसार के अन्य किन्हीं स्थानों में शायद ही किया गया हो।

बिहार के हरे-भरे सम्पन्न गाँवों को किस प्रकार श्मसान में परिवर्त्तित कर दिया गया, इसका रोमांचकारी वर्णन करते हुए माननीय श्रीनारायण महथा ने काउन्सिल ऑफ स्टेट की बैठक में कहा था—

"फौज और पुलिस को गाँवों में खुल कर खेलने के लिए छोड़ दिया गया, नेशनल वार फ्रंट के लीडर की हैसियत से अपने जिलेके गांवों में घूमते समय मुझे पुलिस और फौज के अत्याचारों, जनता की सम्पत्ति की लूट-खसोट, गांवों को जलाने, गिरफ्तारी का भय दिखाकर रुपए ऐंठने और कभी-कभी इसके लिए सचमुच घोर यंत्रणाएँ देने की अनेक रिपोर्टें मिलीं। बाजार की सभी भरी-पूरी लूटी हुई दुकानें और गाँव के गाँव जले—जनता द्वारा नहीं वरन् फौज और पुलिस द्वारा—मैंने खुद अपनी आँखों से देखे और मैं मंजूर करूंगा कि वे दृश्य मरते समय भी मेरी आँखों के सामने नाचते रहेंगे।"

"आगे माननीय महथा ने कहा—"जब मैं इस सभा में सम्मिलित होने के लिये आ रहा था, मेरी ट्रेन बमरौली में रुकी जहाँ हवाई अड्डे पर एक टॉमी एक कुत्ते का निशाना लगा रहा था। उसका निशाना खाली गया; क्योंकि कुत्ता जरा दूर पर था। मगर बिहार में उसके भाई-बिरादर अधिक भाग्यवान हैं ;क्योंकि उनके निशाने बहुत नजदीक मिलते हैं। आजकल बिहार में आदमी और गली के कुत्ते के बीच बहुत ज्यादा फर्क नहीं रह गया है।......"

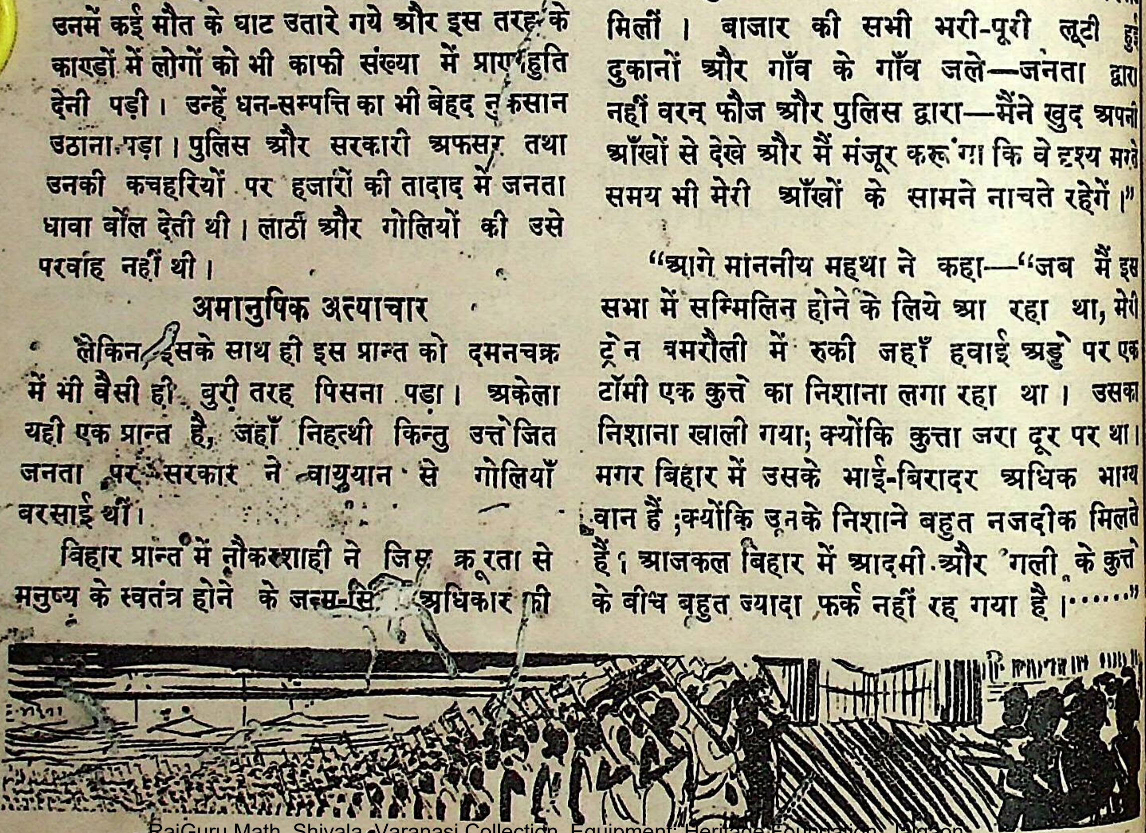

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लज्जाजनक कहानी

अगस्त आन्दोलन के सिलसिले में बिहार प्रान्त में नौकरशाही द्वारा किए गए अत्याचारों की रिपोर्ट प्रान्तीय काँग्रेस-कमीटी की ओर से तैयार कराई जारही है। जिन स्त्रियों के साथ पुलिस और सैनिकों ने बलात्कार के घृणित कार्य किए थे, उनके बयान लिए गए हैं। जब यह रिपोर्ट प्रकाशित होगी तो पढ़ कर आँखों में खून उतर आवेगा।

किस प्रकार लोगों के पेट में भाले की नोक घुसेड़ दी गई, जिसके परिणाम स्वरूप उनकी अँतड़ियाँ बाहर निकल आईं, फरारों का पता बताने तथा सरकारी पक्ष में शामिल करने के लिए, किस प्रकार घोर अमानुषिक अत्याचार किए गए, यह सब सुन कर रोमांच हो आवेगा। बिहार प्रान्त में ही गाँव के एक मेहतर द्वारा एक काँग्रेसी कार्यकर्त्ता के मुँह में जबर्दस्ती पेशाब कराया गया।

पुलिस के जघन्य-कार्य

पटना के सदाकत आश्रम के प्रो० बलदेवनारायण जी के पास उक्त मेहतर का दिया हुआ वक्तव्य तथा उसके अंगूठे का निशान मौजूद है, जिसमें उसने उन परिस्थितियों का स्पष्ट उल्लेख किया है, जिनमें उसे सरकारी अधिकारियों तथा पुलिस द्वारा काँग्रेस कार्यकर्त्ता के मुँह में पेशाब करने का जघन्य कार्य करने को मजबूर होना पड़ा। सरकारा अफसरों ने उसे पहले किस तरह फुसलाया, फिर दबाब डाला उसका उल्लेख भी उक्त वक्तव्य में किया गया है।

पटने में मासूम बच्चों की हत्या

सोमवार १० अगस्त को पटने का दृश्य अपूर्व था। सभी स्कूल और कॉलेज खाली। कुछ अध्यापक कूद-फाँद कर कालेज में गये; लेकिन मक्खी ही मारनी पड़ी उन्हें। छात्रों में उत्साह और जोश भरा था। हजारों का दल राष्ट्रीय झण्डा लेकर मस्ती में झूमता जब पटना की सड़कों पर मार्च करता था, तब मुर्दा-दिल में भी एकबार जोश की लहर उठे बिना नहीं रहती थी। लेकिन, काँग्रेस के अहिंसा के सिद्धान्त का पूर्ण पालन करते हुए उन्होंने शहर में हलचल मचा दी थी। सरकारी अधिकारियों ने अनेक बार लाठी-चला कर उन्हें तितर-बितर कर देना चाहा। लेकिन, पुलिस के सिपाहियों ने लाठी चार्ज करने से साफ इनकार कर दिया।

११ अगस्त को पटने में सवेरे से ही प्रभातफेरी हो रही थी। छात्रों के हृदय में नवीन भावनायें, नयी जागृति और नया उत्साह भरा हुआ था। स्कूलों तथा कालेजों में पिकेटिंग हुई। पिकेटिंग करनेवालों पर लाठियाँ बरसीं और अनेक छात्र गिरफ्तार भी किये गये। इसके बाद पाँच सौ मनुष्यों का समूह गोलघर की ओर चला। इनमें पटना कालेज, इंजीनियरिंग कालेज और लॉ कालेज के भी विद्यार्थी थे। उस दिन के नये नारे थे—

"बम्बई से आई आवाज,
इनकलाब जिन्दाबाद!
गाँधीजी की यही आवाज,
इनकलाब जिन्दाबाद!
जेल की कड़ियाँ करें पुकार,
इनकलाब जिन्दाबाद!"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

टोली आगे की ओर बढ़ने लगी। डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड आफिस के निकटवर्ती पुलिस-लाइन के समीप पटना के कलक्टर आर्चर तथा मौलवी वशीर पाँच घुड़सवारों और पचास लाठीवन्द सिपाहियों के साथ मौजूद थे। जलूस रोक दिया गया। जनता के आगे बढ़ने पर मौलवी वशीर ने लाठी-चार्ज करने का हुक्म दिया। लेकिन, मि० आर्चर के मना करने पर लाठी-चार्ज रोक दिया गया। भीड़ किसी तरह गोल-घर के पास गर्ल्स-हाई-स्कूल तक पहुँची। स्कूल का फाटक बन्द था और वहाँ पिकेटिंग हो रही थी। यहाँ जनता पर वेंत वरसाये गये, घोड़े भी दौड़ाये जाने लगे। छात्रों ने नेपाली-पुलिस से 'सुगौली की सन्धि' याद करने का अनुरोध किया; जिसके फलस्वरूप उन्होंने हाथ खींच लिये। किन्तु, बलूची घुड़सवारों ने बहुत अत्याचार किया। अत्यन्त क्षुब्ध होकर भीड़ में से किसी ने उनपर एक ढेला चला दिया। ढेला एक घोड़े के पेट में जाकर लगा, खून बहने लगा। दूसरा ढेला बलूची सवार के गाल पर लगा, जिससे उसे चोट आयी। वह नीचे उतर पड़ा, उसकी पगड़ी जमीन पर गिर पड़ी। तब तक मौलवी वशीर यहाँ भी पहुँच चुके थे। बस क्या था। लाठी बरसाने की आज्ञा हुई। भीड़ को तितर-बितर होना पड़ा। लोग बुरी तरह पीटे गये। गोलघर की दीवारों से सटे हुए प्रायः दो सौ देशभक्तों पर लाठी की बेतरह मार पड़ी। यह देखकर जनता की भावनाएँ संयत न रह सकीं। बिखरी हुई भीड़ एकत्र होकर अत्याचारियों पर ईंटें बरसाने लगी। इसी बीच कुछ लोगों ने इस हिंसात्मक प्रणाली को दूषित बताकर जनता को सेक्रेटेरियेट पर झण्डा गाड़ने की याद दिलाई। गोलघर से जनता हटने लगी। मोर्चा बदल गया।

मि० आर्चर गुरखा फौज की टुकड़ियों के साथ वहाँ पहले ही पहुँच चुके थे। जुलूस की प्रतीक्षा वे बहुत अधीरता से कर रहे थे। एक तरफ सशस्त्र पुलिस और फौज की टुकड़ियाँ राइफल और बन्दूकों के साथ निशाना लगाये खड़ी थी और दूसरी ओर आजादी का मतवाला उमड़ता जुलूस सेक्रेटेरियेट के गुम्बज को निहार रहा था। रह-रहकर 'भारत-छोड़ो' की गम्भीर ध्वनि गूंज रही थी। जुलूस गोलियों को चूमने और गुम्बज पर झंडा फहराने के लिये आगे बढ़ा। अब दोनों एक दूसरे के आमने-सामने थे। आर्चर बोल पड़ा—"तुम लोग क्या चाहते हो?"

"झंडा फहराना चाहते हैं।" एक छात्र ने आगे बढ़कर कहा।

"नहीं, तुम लोग लौट जाओ।" आर्चर ने कहा।

"हमलोग झंडा फहराकर लौटेंगे।" दूसरे छात्र ने जवाब दिया।

"कौन झंडा फहराना चाहता है? वह आगे चला आवे।" आर्चर ने कड़ककर कहा।

इतना सुनते ही ११ छात्र जुलूस की लाइन से आगे निकल आये।

आर्चर ने एक किशोर-वयस्क छात्र की ओर इशारा करते हुए कहा—"झंडा फहराने के पहले सीना खोल लो।" और तत्क्षण वह छात्र सीना खोलकर आर्चर के सम्मुख एक कदम और आगे बढ़ आया।

आर्चर ने गोली चलाने की आज्ञा दी और तुरत ही वे ग्यारह अप्रतिम वीर धराशायी हो गये। और इसके बाद तो गोलियों और छर्रों की बौछार-सी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होने लगी। लोग घायल हुए पर डटे रहे। इतने में गुम्बज पर एक दुबला-पतला-सा नौजवान छात्र 'बन्देमातरम' और 'भारत-छोड़ो' नारे का उद्घोष करता हुआ दीख पड़ा। विशाल जुलूस एकदम उमड़ पड़ा। आर्चर, पुलिस और गोरखों की टुकड़ियाँ अब तक हट चुकी थीं और छात्र-समुदाय अपने ११ शहीदों को जयध्वनि से सलामी दे रहा था। सेक्रेटेरियेट के गुम्बज पर तिरंगा झंडा लहरा कर उनकी कीर्ति का विस्तार कर रहा था।

घटनास्थल पर ही छः व्यक्तियों की मृत्यु हो गयी। इनमें से कोई भी ऐसा नहीं था, जिसकी पीठ पर गोली लगी हो। अस्पताल आकर तीन छात्रों की और मृत्यु हो गयी। इनमें एक छात्र की अवस्था १४ वर्ष थी। वह १४ वर्ष का बालक तो मिट गया; परन्तु ११ अगस्त की वह घटना अमर होगयी। जीवन और मृत्यु के बीच आपरेशन टेबुल पर पड़े "उस मासूम बच्चे की एकमात्र यह जानने की ईच्छा कि गोली उसे छाती में या पीठ पर—कहाँ लगी है ?" जब उसे यह बताया गया कि छाती के बीच में चोट है तो उसने हँसकर जवाब दिया—"लोग यह तो नहीं कहेंगे कि भागते में गोली लगी।" वह बालक तो मिट गया; परन्तु सदा के लिये एक सन्देश छोड़ गया।

घायलों के शरीर से जो गोलियाँ निकाली गयी थीं, वे दमदम-बुलेट थीं। अन्तर्राष्ट्रीय-विधान के अनुसार युद्धों में भी इन गोलियों का व्यवहार वर्जित है। सरकारी कर्मचारियों की अमानुषिकता और वर्बरता का यह पहला अध्याय था।

इस गोलीकाण्ड से शहर में हलचल मच गयी। जनता पटना अस्पताल की ओर दौड़ पड़ी। नौ बजे रात तक प्रायः पचास हजार आदमी वहाँ इकट्ठे हो गये। जनता की उत्तेजना सीमा पार कर रही थी। गोली चलवाने के बाद सरकारी अफसर अपने दरबों में घुस गये। यदि काँग्रेसवालों का इरादा हिंसात्मक होता तो उस दिन क्षण भर में पटना शहर, सरकारी खजाना, दफ्तर और माल लूटा जा सकता था। लेकिन, उस समय तक जो काँग्रेस-कार्यकर्त्ता बचे-खुचे रह गये थे, उन्होंने सारी शक्ति उत्तेजित जनता को शान्त करने में ही लगा दी।

एमरी द्वारा कार्यक्रम का प्रचार

१२ अगस्त को शहीदों को श्रद्धांजलि देने के लिये काँग्रेस मैदान में सभा थी। इस समय तक भारत-मंत्री एमरी का ब्राडकास्ट हो चुका था। अपने ब्राडकास्ट में उसने जनता को बतला दिया था कि तार काटना, रेल की पटरी उखाड़ना ही काँग्रेस का कार्यक्रम था। लोगों ने इसे सच माना और शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद इसी कार्यक्रम को अपना लिया।

शहीदों की चिताओं से उठी ज्वाला सारे बिहार में फैल गयी। पटना सिटी स्टेशन का गोदाम जल उठा, पटने भर के लेटर-बक्स लहक उठे, पोस्ट-आफिस लूट लिये गये और पटना जिले में ई० आई० आर० के पटना जंकशन और दानापुर के सिवा अनेक स्टेशन खाक में मिला दिये गये। बहुत-से इंजन तोड़ डाले गये, रेल की पटरियाँ तथा तार के खंभे एक दिन में ही नष्ट-भ्रष्ट कर दिये गये। फिर तो प्रान्त भर में यह दौर-दौरा शुरू हो गया।

वह [illegible] दृश्य था। जिसे देखिये वही

Rajghat Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुल्हाड़ा लिये खड़ा है। तार काटे जा रहे हैं। रास्ता रोकने के लिये सड़कों पर के पेड़ काट कर गिराये जा रहे हैं। लेकिन, इससे किसी को चोट न लगे। इसका भी पूरा ध्यान रक्खा जा रहा था। घटना के दोनों तरफ लोग रस्सा बाँधकर रास्ता घेरकर चिल्लाते रहते थे "भाईजी पेड़ कट रहा है, इधर से मत आइये।"

दो दिनों तक नगर में जनता का राज्य था। सरकारी अफसरों तथा पुलिस कर्मचारियों का कहीं पता नहीं था। तो भी नगर में कहीं बद-अमली नहीं हुई, चोरी या डाका नहीं पड़ा। जान माल की किसी प्रकार की हानि नहीं हुई।

शहर सैनिकों के हवाले

१४ अगस्त को १० हजार टॉमी एक साथ ही नगर में घुसाये गये। शहर में कर्फ्यू-आर्डर जारी हो गया। गोरे-सैनिक लॉरियों पर नगर में घूमने लगे और बिना किसी विचार या विवेक के लोगों को पीटने लगे। दूकानदार, स्कूलों के मास्टर, कालेज के प्रोफेसर, अस्पताल के डाक्टर कोई भी इनकी मार से नहीं बचे। जहाँ राष्ट्रीय-झण्डा फहरा रहा था, वहाँ तो इन्होंने नंगे होकर नाचा। घरों में घुसकर लोगों के सिर तोड़ दिये। गणमान्य व्यक्तियों को पकड़ कर नाली साफ कराई गई।

पटना शहर सैनिकों के हवाले कर दिया गया। सैनिकों ने नाकाबन्दी कर दी और बिना पास्पोर्ट के लोगों का चलना-फिरना रोक दिया गया। बिना पास दिखाये यदि कोई व्यक्ति नाकाबन्दी पार करने का यत्न करता था तो उसे गोली मार दी जाती थी। नगर में जगह-जगह पर टॉमी-गन लगा दिये गये थे। शहर में कर्फ्यू-आर्डर जारी था। बीमार के लिये दवा लाने के लिये भी रात को घर से निकलना दुश्वार था। गोली मार देना तो साधारण-सी बात थी। गंगा के किनारे रात को मछली मारते समय न जाने कितने मछुए गोली के शिकार बने।

दो दिन बाद गोरी पलटन के अन्य अनेक जत्थे शहर में आ धमके। तब इनकी टोलियाँ बनाकर प्रान्त के विभिन्न जिलों में भेजा जाने लगा। इन गोरे सैनिकों ने शहरों तथा गाँवों में जो अमानुषिक जुल्म किये हैं, उनका वृत्तान्त पढ़कर पशुता को भी घृणा हो सकती है, मानवता की तो बात ही न्यारी है।

पटना के अतिरिक्त बख्तियारपुर, बाढ़, विक्रम, हिलसा और फुलबारी में पुलिस ने गोली चलाई, जिसमें १७ आदमी मरे; इनमें अकेले हिलसा में मरनेवालों की संख्या १३ है। बख्तियारपुर में आन्दोलन तथा जुलूस का नेतृत्व करनेवाले श्री नाथू गोप को गोली से मार दिया गया। बाढ़ में जो संघर्ष हुआ उसके परिणामस्वरूप आठ आदमी घायल हुए तथा एक की मृत्यु हुई। हिलसा में घायल व्यक्तियों की संख्या तीस बताई जाती है। विक्रम में दो मरे और ४० घायल हुए। फतुहा में एक दुखद घटना हो गई और २ कनाडियन अफसर उत्तेजित जनता के हाथों मारे गये। पुलिस ने पटना तथा अन्य स्थानों में जिस अमानुषिक ढंग से हत्या की थी, उसे सुन-देखकर जनता का रोष सीमा से बाहर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

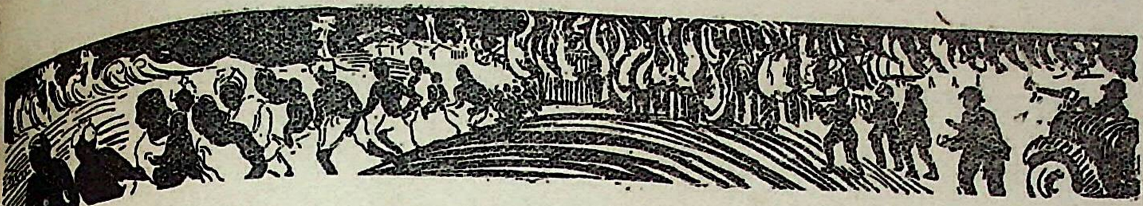

हो गया था। ये दो कनाडियन अफसर ट्रेन के डब्बे में छिपे बैठे थे। ट्रेन में आग लगा दी गई और अफसरों को मारकर उनकी लाश नदी में फेंक दी गयी।

नौबतपुर में पुलिस और जनता के बीच जो संघर्ष हुआ, उसके फलस्वरूप एक आदमी मारा गया। फुलवारी में पुलिस ने भागते हुए एक आदमी को अपनी गोली का निशाना बनाया। एक व्यक्ति का जबड़ा टूट गया। लाठी-चार्ज के कारण १५ आदमी घायल हुए।

विश्वस्त रूप से जो आँकड़े प्राप्त हुए हैं उसके अनुसार तीन लाख रुपया सामूहिक जुर्माना विपत्तिग्रस्त और दुखी जनता से जबर्दस्ती वसूला गया। विभिन्न स्थानों की जाँच और निरीक्षण के द्वारा मालूम हुआ है कि पुलिस की गोली से ३० व्यक्ति तत्काल मृत्यु के गाल में समा गये और १८१ बुरी तरह घायल हुए। पटने के विभिन्न स्थानों में ५२४ व्यक्ति नजरबन्द किये गये, १३३५ व्यक्तियों को कठिन कारावास भोगना पड़ा और कुल मिला कर १६,३७७ व्यक्ति गिरफ्तार किये गये।

अगस्त आन्दोलन और शाहाबाद का दमन !

१७ थानों में जनता का राज !

आन्दोलन का श्रीगणेश

१० अगस्त सन् १९४२ को सबेरे लोग आरा में एकत्र होने लगे। काँग्रेस-कार्यकर्त्ताओं ने छात्रों के सहयोग से शहर में विराट प्रदर्शन किया। संध्या समय रमना मैदान में सभा हुई। सभा प्रारंभ होने के पूर्व ही श्री बुद्धन राय वर्मा एम० एल० ए० कैद कर लिये गये। रमने में अपार जन समूह की सभा में श्री प्रद्युम्न मिश्र काँग्रेस की स्थिति और सरकार की ज्यादती पर प्रकाश डाल रहे थे कि इतने में पुलिस भीड़ को चीरती हुई उन्हें कैद करने के निमित्त आगे बढ़ी। पुलिस के इस अत्याचार को उपस्थित जनसमूह सहन नहीं कर सका। उसका धैर्य टूट गया, उसकी क्रोधाग्नि प्रज्वलित हो उठी। पुलिस दल भाग खड़ा हुआ। एस० डी० ओ० महोदय को हैट सम्हालने का भी होश न रहा। पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट आदि दूसरे अफसर भी सभा-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

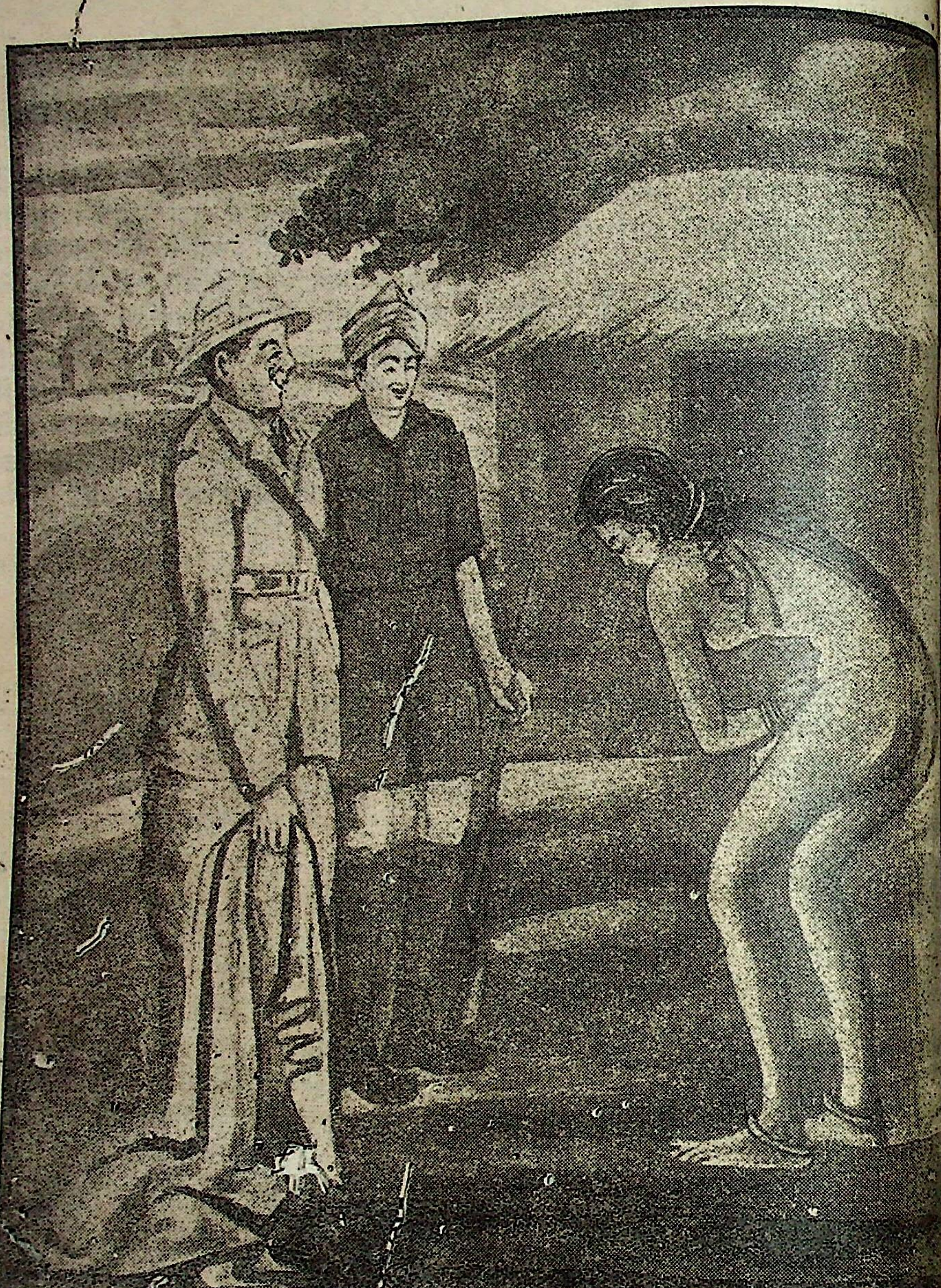

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

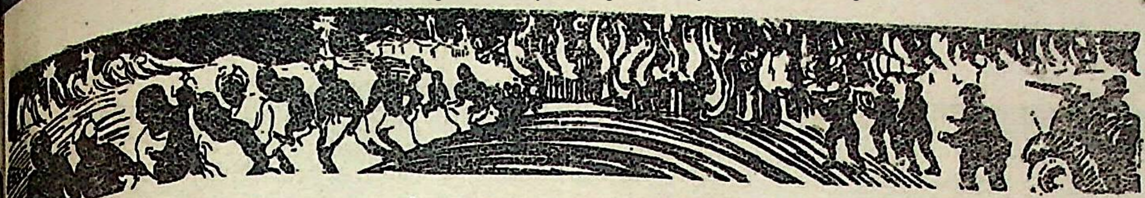

स्थलपर आये। सशस्त्र पुलिस बुलाइ गई। पुलिस ने भीड़ पर लाठी चलाना अस्वीकार कर दिया। सभा का कार्य चलता रहा। शहर से सरकारी रोब उठ गया। सभी सरकारी भवनों पर तिरंगे झंडे ही नजर आने लगे। शहर में यह स्थिति तब तक कायम रही जब तक गोरे सैनिकों ने आकर निरपराध लोगों को गोलियों का शिकार बनाने का कुकृत्य नहीं प्रारंभ किया; जिसके फलस्वरूप अहितुखा में ३, सतपहाड़ी पर १ और शहर के आस-पास के गाँवों, जैसे जमीरा में ३, कोईलवर में १, बिहिया में ४ और केटेयाँ में ३ व्यक्ति मारे गये और अनेक घायल हुए। साम्राज्यशाही सरकार की बर्बरता तो उस समय चरम सीमा पर पहुँच गयी जब सैनिकों ने मारते-मारते कवि कैलाशपति सिंह को अधमरा बना दिया और जेल के फाटक पर उन्हें लारी से पटक दिया, जिसके फलस्वरूप शीघ्र ही उनकी मृत्यु हो गयी।

देहातों में आन्दोलन का प्रचार

१८ अगस्त को ही रात की गाड़ी से श्री अनुग्रहनारायण सिंह बरेली से पटना आ रहे थे। आरा स्टेशन पर काँग्रेस कार्यकर्त्ताओं का एक दल उनसे मिला। दूसरे दिन एक जत्थे ने आन्दोलन कराने के निमित्त देहातों की ओर प्रस्थान किया। जिले के कोने-कोने का दौरा करता हुआ वह जत्था मरगोही पहुँचा। आन्दोलन की यह विशेषता थी कि, जहाँ-जहाँ भी जत्था गया, उसके पहुँचने के पूर्व ही वहाँ की जनता ने सरकारी अड्डों पर अपना प्रभुत्व कायम कर लिया था।

१७ थानों में जनता का राज

सरकारी अत्याचारों के कारण आन्दोलन जोर पकड़ता गया। फलस्वरूप जिलेके १७ थानों से पुलिस और थानेदार भाग गये। केवल शहर और पक्की सड़क के पास के ही थाने कायम रहे। आन्दोलन की एक विशेषता यह भी थी कि पुलिस के हट जानेके बाद कहीं भी चोरी डकैती नहीं हुई। पुनः थानों की स्थापना होनेके बाद ही इनका आरम्भ हुआ। एक के बाद एक थाने का टूटना देख असिस्टेण्ट पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट का दिल दहल उठा।

इस क्षेत्र में डुमराँव का नाम अमर रहेगा। १६ अगस्त को ६ बजे सायंकाल ५००० की जनता डुमराँव के थाने पर राष्ट्रीय झंडा फहराने पहुँची। कपिलमुनि नामक २१ वर्षीय युवक झंडा लिए था। वह आगे बढ़ा।' थानेदार ने गरजकर ललकारा "खबरदार, बदमाश आगे बढ़ा कि गोली मार दूँगा।" युवक ने चेतावनी की परवाह न की और राष्ट्रीय झंडा लेकर थानेदार के सम्मुख जा खड़ा हुआ। झंडा लगाने की बात कह भी न पाया था कि थानेदार के रिवाल्वर की गोली उसके सीने के पार हो गयी। वह धराशायी हो गया। थानेदार ने राष्ट्रीय झंडे को पैरों तले कुचल दिया। रामदास लुहार नामक एक दूसरा युवक इसे सहन न कर सका। वह झंडा उठाने लपका, पर तत्क्षण वह भी गोली का शिकार हुआ। अब एक साठ वर्षीय बूढ़े के खून में उबाल आया और वह आगे बढ़ा पर इसे थानेदार कब सहन करता। वह भी गोली खाकर गिर पड़ा। पर भीड़ वीरों से खाली न थी। गोपालराम नामक एक १६

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वर्षीय युवक भीड़ से निकल कर झंडे के पास पहुँच ही तो गया। पर गोली उसकी कमर में लगी और चार घण्टे बाद अस्पताल में अपने कर्तव्य पर मर मिटा।

दमन की पराकाष्ठा

घनडीहा, कसाय, जितौरा, संझौली आदि अनेक गांवों के लोगों को बुरी तरह पीटा गया। बलीगाँव और लासाड़ी के ग्रामीणों पर किये गये अत्याचार से तो शायद हिटलर भी लज्जित हो जाता। बलीगाँव में बीसों किसानों को मारते-मारते धरती पर सुला दिया गया। वहाँ के नौजवान छात्र श्री नन्दगोपालसिंह को इस तरह पीटा गया गया कि आज भी उनके बदन पर चोट के चिह्न विद्यमान हैं। लासाड़ी के किसानों पर गोलियों की वर्षा की गयी, जिससे १२ आदमी खेत रहे और अनेक घायल हुए। मृत व्यक्तियों में एक स्त्री भी थी।

नवाडेरा के निवासियों को तबाह और बर्बाद कर दिया गया। कोरान, सरैयां, आधर, धनसोई आदि में भी ऐसे ही वीभत्सकाण्ड हुए। कहा जाता है कि धनसोइ में स्त्रियों पर भी अत्याचार किया गया। हरपुर के लोगों को डराने के लिये मशीनगन लगायी गयी। सगरांव के कांग्रेस कार्यकर्त्ता जमीरखाँ को पकड़ने के लिए उनके भाई को कैद कर लिया गया था, जिनका काँग्रेस आन्दोलन में कोई हाथ नहीं था।

सहसराम के जुलूस पर भी गोलियाँ बरसायी गईं। वहाँ भी ४ व्यक्ति मरे और बीसियों घायल हुए। कोआथ के स्कूल का छात्रावास जलाया गया। योगिनी के काँग्रेस कार्यकर्ता श्री जयराम दुबे का घर जलाया गया। लोगों को मारा गया, जिससे एक की मृत्यु हो गई।

भभुआ, पुसौली तथा सकरी आदि में भी बहुतेरे व्यक्ति गोलियों के शिकार हुए। भरारी में गोली चली। रूपपुर के श्री बालेश्वर सिंह का घर बर्बाद कर दिया गया। काँग्रेस कार्यकर्त्ताओं को अत्यन्त कड़ी सजा दी गई। छोटे-छोटे अपराधों के लिए बीस-तीस बर्षों का कठोर कारावास दिया गया।

अफसरों की भीरुता

सहसराम और भभुआ के अफसर उन दिनों इतना भयभीत होगये थे कि दिन में काँग्रेस कार्यकर्त्ताओं को गिरफ्तार कर सकना उनके लिए नितान्त असम्भव कार्य हो गया था। आरा के जत्थे को अनेक प्रयत्न करने के पश्चात् भी भभुआ के एस० डी० ओ० नहीं गिरफ्तार कर सके। सहसराम के एस० डी० ओ० भी उस जत्थे को गिरफ्तार करने के लिए महीनों तैयारियाँ करते रहे। अन्त में जब उस जत्थे के अधिकांश व्यक्ति मलेरिया से बीमार पड़े थे, तब २८ अक्तूबर १९४२ की आधी रात को सब-डिवीजन भरके दारोगा और पुलिस को साथ ले मकान के पीछे के दरवाजे को तोड़कर चुपके से उन्होंने बन्दूक ताने प्रवेश कर ग्यारह कार्यकर्त्ताओं को गिरफ्तार किया। सरकारी अफसरों के ऐसे कायरतापूर्ण कार्यों के अनेक उदाहरण पड़े हैं।

Rajghat Math, Shivala, Varanasi Collection. Management: Heritage Foundation Jungpon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शाहाबाद में पुलिस की गोलियों का शिकार केवल पुरुषों को ही नहीं होना पड़ा, बल्कि स्त्रियाँ और बालक भी दमन-चक्र में पीसे गए। कोवनटा में एक बूढ़ी औरत को रास्ते में लूट लिया गया। सहसराम में मशीनगन से एक स्त्री की मृत्यु हुई तथा फकराबाद में एक बालक को पुलिस की गोली का शिकार होना पड़ा।

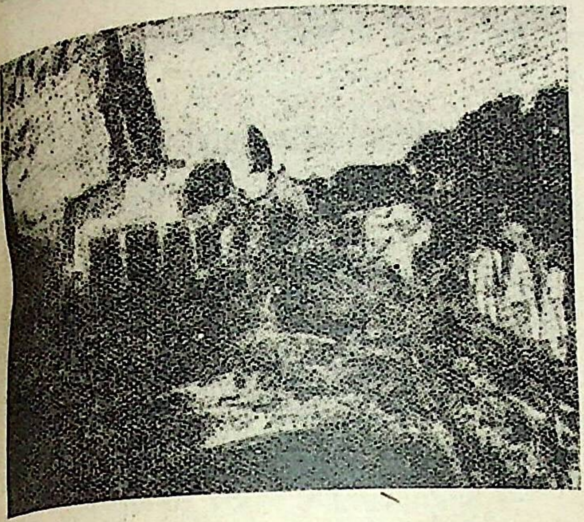

सैनिकों द्वारा जलाए गए एक मकान का अवशेष।

गंगा के तटवर्ती गाँवों को जहाज से आकर घेरा गया था। घरों को लूटा और बर्बाद किया गया। फिर भी जिले के उत्तरी और दक्षिणी भाग के लोगों ने बलिया और गाजीपुर के लोगों को शरण दी थी।

७५ आदमी शहीद हुए

कुल मिलाकर अगस्त आन्दोलन में शाहाबाद जिले में ७५ व्यक्तियों की मृत्यु हुई, हजारों व्यक्ति घायल हुए। लगभग दो हजार व्यक्ति गिरफ्तार हुए, पाँच आदमियों को फाँसी की सजा हुई, दर्जनों नौजवानों को बेंत की मार सहनी पड़ी। जिले से लगभग सत्तर हजार रुपये साधारण जुर्माने और सामूहिक जुर्माने के रूप में वसूल किये गये।

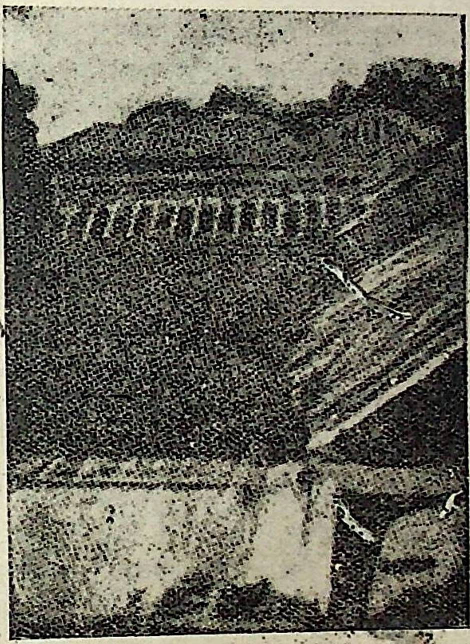

ये खण्डहर क्या बता रहे हैं?

Raj Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रान्त के कोने-कोने में क्रान्ति की लहर !!

मुंगेर में विमान से गोली बरसाई गई !

मुंगेर में आन्दोलन ने कितना भीषण रूप धारण कर लिया था, इसका अनुमान इसी से होसकता है कि वहाँ सरकार ने हवाई-जहाज से गोलियाँ बरसवाईं। फलस्वरूप ४६ आदमी मारे गए और ३५ आदमी बुरी तरह घायल हुए। साधारण रूप से घायल होनेवालों की संख्या तो असंख्य थी। इसके सिवा इस जिले में १६ जगहों पर गोलियाँ चलीं, जिनमें ४० आदमी मरे और प्राय: दूने घायल हुए। कोचाही के पुल पर एक राह-चलते व्यक्ति को गोली मार दी गई। इस जिले में ५४ आदमी नजरबन्द और ६२७ व्यक्ति गिरफ्तार किए गए; जिनमें ३८८ को सजा हुई। जिले पर १,६७,७०० रुपया सामूहिक जुर्माना लगाया गया।

बरियारपुर में समूह के एक-एक व्यक्ति को गोली का निशाना बनाया गया। ६० गैर-सैनिकों ने जनता को पीट-पीट कर घायल किया।

गया में

प्राप्त आँकड़ों के अनुसार आन्दोलन के सिलसिले में ४६ व्यक्ति नजरबन्द किए गए, ७८६ व्यक्तियों को विभिन्न मियादों की कड़ी सजाएँ दी गईं। इस जिले के भिन्न-भिन्न स्थानों में कुल मिला कर १०३५ व्यक्ति गिरफ्तार किए गए। पुलिस और जनता में जो मुठभेड़ हुई, उसमें तीन आदमी गोली से मारे गये। सरकारी दमन में ग्यारह आदमी हताहत हुए। जिले के विभिन्न स्थानों से ३ लाख ५३ हजार ३ सौ रुपया सामूहिक जुर्माने के रूप में जनता से जबर्दस्ती बसूला गया।

हजारीबाग में

हजारीबाग जिले में सरकार द्वारा किया गया दमन अपने ढंग का अकेला था। इस जिले के विभिन्न स्थानों में ३२८ व्यक्ति नजरबन्द किए गए। कुल मिला कर ७००१ व्यक्तियों को कारावास की सजा सुनाई गई। जिले में सब मिला कर १३३१०० व्यक्तियों की गिरफ्तारी हुई।

पुलिस और जनता की भिड़न्त के फलस्वरूप ८८ आदमी गोली के शिकार हुए और ६६६ घायल हुए। संघर्ष और पुलिस के दमन के कारण लगभग ४४५ व्यक्ति मृत्यु के गाल में समा गए। हजारीबाग जिले में जिन विभिन्न स्थानों में पुलिस ने गोली चलाई, उनमें डोमचांच तथा कोडरमा थाना विशेष उल्लेखनीय है। जिले से कुल मिलाकर १७,७२,०० रुपये सामूहिक जुर्माने के रूप में बसूले गए।

पलामू में

आन्दोलन के सिलसिले में सरकार द्वारा आठ व्यक्ति नजरबन्द किए गए। लगभग तीन सौ को विभिन्न मियादों की सजाएँ दी गईं और कुल मिला कर १२८६ व्यक्तियों को सख्त चोट पहुँची। इस जिले में सामूहिक-जुर्माने की जो रकम वसूल की गई वह ३४०० रुपये थी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

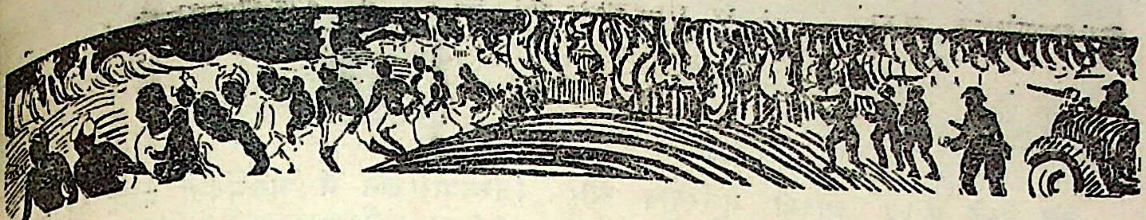

राँची में

यहाँ कुल मिला कर १२ व्यक्तियों को नजरबन्द किया गया, लगभग ६१६ व्यक्तियों को सजा हुई और ३६४ गिरफ्तार किए गए। जेल में बन्द लोगों पर लाठी-चार्ज हुआ और इस प्रकार कानून, शान्ति और राजनियम की नौकरशाही ने रक्षा की! इस जिले में कुल मिला कर ६ हजार रुपया सामूहिक जुर्माने के रूप में बसूला गया।

मानभूमि में

इस क्रान्ति की चिनगारी से मानभूमि भी अछूता न बचा। मानभूमि के वीरों ने पुलिस की गोलियाँ अपने वक्षस्थल पर सहन कीं, लाठी और संगीनों का डट कर मुकाबला किया। जरगाँव, मानबामार और कबरासगढ़ के गोलीकाण्ड विशेष उल्लेखनीय हैं। जरगाँव में सात, मानबामर में बीस और कबरागसढ़ में तीन व्यक्ति गोली के शिकार हुए। इस जिले में १६ से अधिक व्यक्ति घायल और दो व्यक्ति शहीद हुए। जिले से ३४६४० रुपया सामूहिक जुर्माना बसूल किया गया।

सिंहभूमि में

इस जिले में भी 'भारत-छोड़ो' वाला अगस्त-प्रस्ताव दुहराया गया। लगभग २५ व्यक्ति नजरबन्द किए गए और २७२ व्यक्तियों को कठिन कारावास का दण्ड दिया गया। कुल मिला कर १७५ व्यक्तियों की गिरफ्तारी हुई। जनता से २१६४ रुपया सामूहिक-जुर्माने के रूप में बसूला गया।

पूर्णिया में

इस जिले में भी आन्दोलन का रूप भीषण था। दर्जनों डाकखाने और रेलवे-स्टेशन लूटे तथा फूँके गये। कटिहार बनभटी, रसीगंज, रुपौली, धमदाहा, खजांची हाटो, कदुनी, देवीपुर और कन्हरिया में गोली चली। फलस्वरूप ४५ व्यक्ति मरे और ६० से अधिक घायल हुए।

१३ अगस्त को कटिहार थाने पर जनता ने धावा बोला। सदर एस० डी० ओ० के आदेश से पुलिस ने गोली चलाई। इस गोलीकाण्ड में एक तेरह वर्ष का बालक ध्रुव (शान्तिनिकेतन का छात्र) भी मारा गया। ध्रुव के दाहिने जाँघ में गोली लगी और वह जमीन पर गिर पड़ा। स्नेही पिता और ममता-मयी माँ तथा पूर्णिया अस्पताल के डाक्टर देखते ही रहे और बालक ध्रुव इस संसार से सदा के लिए चल बसा।

बालक ध्रुव के पिता का नाम डॉ० किशोरीलाल कुण्डू है। आप विद्यार्थी-जीवन से ही लोकसेवक हैं और पूर्णिया जिले के प्रमुख-राष्ट्रकर्मियों में गिने जाते हैं। ध्रुव की मृत्यु के पश्चात शव के साथ एक विराट् जुलूस निकला था। दाह-संस्कार करने के बाद डॉ० कुण्डु कटिहार लौट रहे थे कि रौतारा स्टेशन पर गाड़ी रोक दी गई और आप गिरफ्तार कर लिए गए। मृतक पुत्र के श्राद्ध करने का भी अवसर आप को नहीं दिया गया। कितना कारुणिक था उस समय का दृश्य जब पुत्र-शोक को हृदय में दबाए कुण्डु शान्त-भाव से जेल की ओर बढ़ रहे थे।

CC-0. Gurukul Kangri Vidyalaya, Varanasi Collection. Equipment Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस जिले में २५ आदमी नजरबन्द और १४७५ गिरफ्तार किए गये, इनमें लगभग ७०० को सजा हुई। सरकारी दमन के फलस्वरूप अनेक खादी-भण्डारों को लूटा गया, ७० गाँवों में लगभग ५०० परिवारों के घर जलाए गए। जिले पर १,२८,००० रुपया सामूहिक जर्माना हुआ।

भागलपुर का सियाराम दल

भागलपुर में आन्दोलन ने कितना भाषण रूप धारण कर लिया था, इसका पता इसी बात से चल सकता है कि वहाँ गोलियाँ खाकर २१८ आदमी मरे और २८० बुरी तरह घायल हुए थे। पीरपैंती में जो गोली चली, उसमें ३७ आदमी मरे और ३२ घायल हुए। सुलतानगंज में मृतकों की ६७ और घायलों की संख्या १५० तक पहुँच गई थी। जिले के प्रायः सभी थानों पर जनता ने अपना अधिकार जमाने की चेष्टा की थी।

जेल के कैदियों ने भी अपना विरोध प्रकट किया और बगावत का झण्डा उठाया। वहाँ भी गोलियों की वर्षा हुई और फलस्वरूप १२५ कैदी पिंजरों में भून दिए गए। एक अफसर भी मारा गया।

इस जिले में दमन के सिलसिले में बताया जाता है कि एक हजार घर फूँक दिए गए। फरारों का पता लगाने के लिए उनके परिवारवालों पर तरह-के अमानुषिक अत्याचार ढाये गए। भागलपुर की पुलिस ने १८ महीने के एक शिशु को गिरफ्तार कर लिया था; क्योंकि उसके पिता फरार थे। पुलिस ने इस बच्चे को ४ दिनों तक उसकी माँ से अलग रखा; लेकिन, जब जेल-अधिकारियों ने उसकी जिम्मेवारी लेने में असमर्थता प्रकट की तब उसे माँ के पास लौटाया गया।

आन्दोलन के सिलसिले में १०४ आदमी नजरबन्द और ४००० के लगभग गिरफ्तार किए गए, जिनमें लगभग १००० व्यक्तियों को सजाएँ हुईं। जिले पर २,१८,४८० रुपया सामूहिक जुर्माना लगाया गया। सरकारी दमन के फलस्वरूप जनता की सम्पत्ति को गहरी हानि उठानी पड़ी।

'सियाराम-दल' के उल्लेख बिना इस जिले के आन्दोलन का विवरण अधूरा ही रह जायगा। क्रान्तिकारियों के इस दल ने वहाँ की नौकरशाही को नाकों दम कर रखा था। बदनाम करने के लिए सरकार ने इस दल को साधारण डकैत का दल घोषित कर रखा था। साथ ही इस दल के अनेक कार्यकर्त्ताओं की गिरफ्तारी के लिए चार-चार पाँच-पाँच हजार रुपए इनाम भी घोषित कर रखे थे।

सरकार ने कुछ नामी-गरामी डकैतों को जेल से रिहा कर उन्हें यह आदेश दिया था कि बाहर जाकर वे खूब लूट-पाट मचाएँ ताकि इन सारी अवस्थाओं का दायित्व आन्दोलनकारियों पर डाल कर दुनिया में काँग्रेस को बदनाम किया जासके। लेकिन, 'सियाराम-दल' ने बुद्धि और बल दोनों का ही प्रयोग कर ऐसे डकैतों को काबू में किया और इस प्रकार इस इलाके की जनता सरकार प्रेरित गुन्डों से बचाई जा सकी।

सन् १९४३ ई० में बिहपुर को सरकार ने 'सियाराम-दल' का अड्डा घोषित किया। ३० मील लम्बे और १७ मील चौड़े इस थाने के क्षेत्र में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

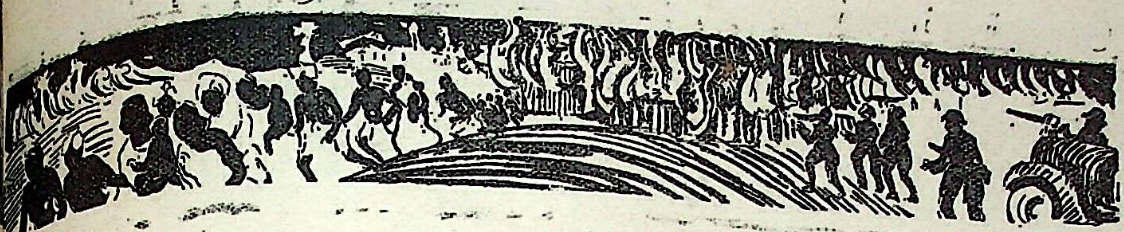

मिलिटरी के २३ अतिरिक्त बैरक कायम कर सरकार ने यहाँ की जाग्रत भावना को दबाने के लिए कुछ उठा नहीं रखा। जनता पर तरह-तरह के घोर अत्याचार किए गए, जिन्हें सुनकर ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं। ७० और ६० वर्ष के बूढ़े से लेकर डेढ़ वर्ष के दुध-मुँहे बच्चे तक गिरफ्तार कर हवालात में पहुँचाए गए। राह चलते मुसाफिरों पर मार पड़ी। फरारों के पड़ोसी और रिश्तेदार अकारण गिरफ्तार किए गए।

इस दल के पूरे के पूरे कार्य-क्रम से बहुत लोग सहमत नहीं; परन्तु, इसकी सेवा, देश-भक्ति तथा बहादुरी की प्रशंसा किए बिना नहीं रहा जा सकता।

सारन (छपरा) में क्रान्ति की आग

सारन जिले में पुलिस ने सिवान, महराजगंज सोनपुर, कड़राड़ा, अमनौर, नरेश्वर, छपरा, सिवारा और मैरवाँ में गोली चलाई; जिसके फलस्वरूप ५१७ आदमी मरे। घायलों की संख्या निश्चित रूप से बताना असंभव है। भूत-पूर्व मिनिस्टर जगलाल चौधरी के दो बरस के बालक की नृशंस-तापूर्ण हत्या पुलिस की अमानुषिकता का एक ज्वलंत उदाहरण है। सोनपुर स्टेशन पर श्री महेश्वर को गाँधीजी की जय बोलने के अपराध में मार-मार कर ढेर लगा दिया गया।

सिवान गोलीकाण्ड के सिलसिले में श्रीयुत फुलेनाप्रसाद वर्मा का नाम नहीं भूला जा सकता। एक ओर थी उस अटलव्रती की खुली हुई छाती, दूसरी ओर दानवी शक्तियों का जमघट। उधर से आवाज हुई धाँय और इधर गोली लगी...नम्बर एक फिर आवाज हुई धाँय......और गोली लगी नम्बर दो......इस प्रकार एक के बाद एक गोली चली और आठ उस शरीर को वेध गयीं। नवीं गोली से

अमर शहीद श्री फुलेनाप्रसाद वर्मा

सिर के टुकड़े-टुकड़े होगये, और निर्जीव शरीर धराशायी हो गया। बल्कि यों कहिये कि रण-प्राङ्गण में वह सिंह सदा के लिए सो गया। भारतीय सत्या-ग्रह के इतिहास में यद्यपि अनेक सिपाहियों ने वीर गति पायी है, पर सारन के फुलेना प्रसाद श्रीवास्तव के प्रयाण पर संसार के किसी भी अहिंसक योद्धा को ईर्ष्या हो सकती है।"

Raj Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस जिले में ५५ आदमी नजरबन्द और लगभग २००० गिरफ्तार किए गए, जिनमें ७१२ को सजा हुई। जिले पर १, २५,००० रुपया सामूहिक-जुर्माना लगाया गया। सरकारी अधिकारियों द्वारा जनता की सम्पत्ति को बेहद नुकसान पहुँचाया गया।

सिवान सब-डिवीजन में तेवाहा एक गाँव है। उस गाँव में एक मकान की कतिपय दीवालें खड़ी हैं। उनपर जले छप्परों और गोलियों के निशान है। सन् १९४३ ई० के पहले यह श्री शिवपूजन चौधरी का मकान था। गोरी पल्टन की वीरता का यह एक-मात्र चिह्न रह गया है। ये उन दिनों की स्मृतियाँ हैं, जब सारन के गाँवों में टैंकों का रेल-ठेल था और हर गाँव में गोलियों की वर्षा होरही थी। मकान तो मकान गया, परिवार भी नष्ट होगया और स्वयं शिवपूजन चौधरी को ४५ वर्षों का कारावास दण्ड मिला।

मुजफ्फरपुर में

मुजफ्फरपुर जिले में १२ स्थानों में पुलिस ने गोली चलाई। फलस्वरूप ५० आदमी मरे और और लगभग १०० घायल हुए। ६० आदमी नजरबन्द और करीब १०० गिरफ्तार हुए,जिसमें ३०० को सजा हुई। इस जिले में ३,६६,००० रुपया सामूहिक जुर्माना हुआ। जिले के प्रायः सभी खादी-भण्डारों को पुलिस ने नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। जिसके फलस्वरूप १२१२१।।)।। की हानि हुई। सरकारी अहलकारों द्वारा जो गाँव लूटे गए उनमें रतनपुर, भगवानपुर, बिठौली, सीतामढ़ी, सैदपुर, आथरी, छपरा, चरहा, मोतीहारी, पिपरा आ विशेष उल्लेखनीय हैं।

सीतामढ़ी में एक दुर्घटना होगई। उत्तेजि जनता ने एस० डी० ओ०, एक पुलिस इंस्पेक्ट और एक हेड कांस्टेब्ल की हत्या कर दी।

दरभंगा

अगस्त-आन्दोलन में यहाँ की जनता ने ब गौरवपूर्ण कार्य किया। कहते हैं इस जिले में गो चलाने पर भी जनता के उत्साह में किसी प्रक का शैथिल्य न आने पाया। गोली चलने के बा भी जनता जुलूस में भारी तादाद में सम्मिलि हुई। यहाँ एक विशेष बात यह हुई कि गोली औ लाठी खाकर भी जनता उत्तेजित न हुई। उस किसी पर हमला करने की कभी कोशिश नहीं की आन्दोलन बहुत अंश तक अंहिंसात्मक ही रहा इस पर भी एक दुर्घटना हो ही गई, जिसके फल स्वरूप एक पुलिस इंसपेक्टर की हत्या हुई। दर्जनों थाने, स्टेशन और डाकखाने जनता के क्रोध के शिकार हुए। दमनस्वरूप दरभहिंसराय, समस्तीपु सिंघिया, सिंहवाड़ा, तारापट्टी, जैननगर, भंभीरपु मधुबनी, लौकही, चिरौल, हमेड़ा, बहोड़ा में गोलि चलीं, जिससे ३८ आदमी मरे और लगभग १०० घायल हुए। इस जिले पर ४,८८,६०० रुपया साम हिक जुर्माना हुआ। जिले में १८ व्यक्ति नजरबन्द १२०० व्यक्ति गिरफ्तार हुए थे, जिनमें २०० व्यक्ति को सजा हुई। जिले में सरकारी दमन के फलस्वरू लाखों रुपयों की हानि हुई।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चम्पारन में

महात्मा गाँधी का प्रथम सत्याग्रह-स्थान चंपारन भी अगस्त-क्रान्ति में चुपचाप न बैठा रहा। काँग्रेस-नेताओं के गिरफ्तार हो जाने के बाद जनता ने अनेक थानों, डाकखानों एवं नहर-दफ्तर, इनकम-टैक्स-ऑफिस और खुफिया-पुलिस के दफ्तर पर धावा किया। इनमें से कुछ को लूटने फूँकने का भी प्रयत्न किया गया। पुलिस ने बेतिया, घोड़ासान, छौड़ादानो, फुवाँटा, पंच-पोखरिया और मेहस्त में गोली चलाई, जिसके फलस्वरूप २२ आदमी मरे और ५५ आदमी बुरी तरह घायल हुए। इनमें अकेले बेतिया में ११ मरे और ३० घायल हुए थे। कहा जाता है कि कि वहाँ के लगभग १०० गाँवों में पुलिस तथा सेना ने लूट-फूँक मचाई थी। जिले पर १,०३,३५० रुपया सामूहिक-जुर्माना किया गया। १७ आदमी नजरबन्द और २००८ आदमी गिरफ्तार किए गए, जिनमें ७०० को सजा दी गई।

चम्पारन जिले में जिन स्थानों पर गोलियाँ चलीं, उनमें उल्लेखनीय स्थान हैं—बेतिया, घोड़ासान, जहाँ ५ गोली के शिकार और २० घायल हुए। इसके अतिरिक्त फूँवारा तथा गोविन्दबाड़ी में भी पुलिस ने गोली चलाई। फलस्वरूप एक आदमी मरा तथा चार घायल हुए। पंच-पोखरिया और मेहस्ती में क्रमशः एक और दो व्यक्तियों की मृत्यु हुई।

इस जिले में आन्दोलन का नेतृत्व काँग्रेस-कार्यकर्त्ताओं के हाथ में रहा! इसलिए किसी भी सरकारी आदमी पर आक्रमण अथवा उन पर किसी प्रकार की आँच न आने दी गई।

———

CC-0. Jangamwadi Math, Varanasi Collection. Equipment Heritage Foundation

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

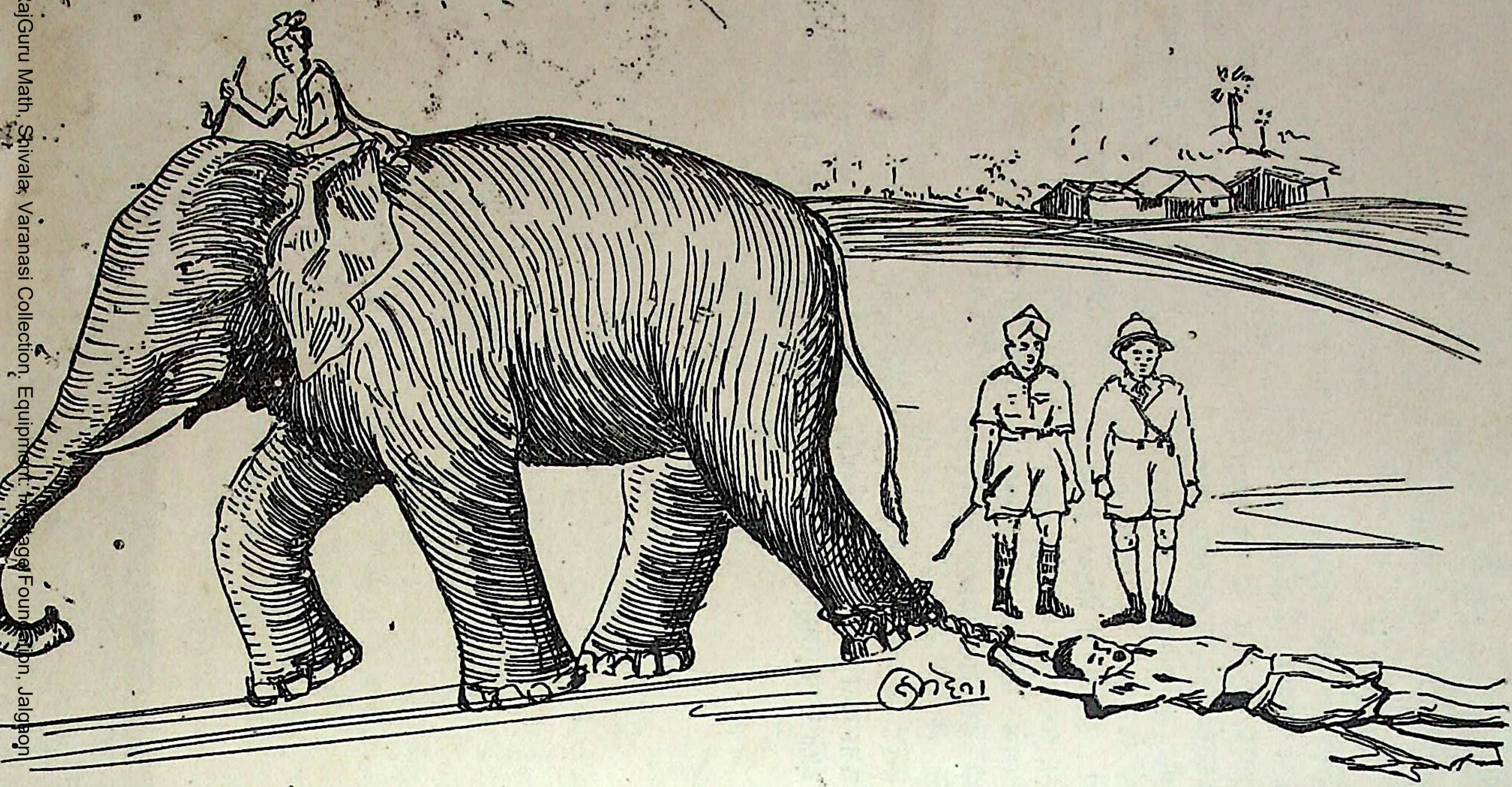

मनुष्य हाथी के पैरों में बाँधकर घसीटा गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्रिटिश-राज्य का तख्ता उलट दिया गया

बलिया की जनता ने अपनी सरकार बनाई थी

मनुष्य हाथी के पैरों में बाँध कर घसीटा गया!

सन् १९४२ का आन्दोलन संयुक्त-प्रान्त के पूर्वी भाग में, जिसके अन्तर्गत बलिया, गाजीपुर आजमगढ़ जौनपुर और बनारस के जिले हैं, बहुत प्रबल रहा। ये प्रदेश प्राचीन भोजपुर के अंग हैं, जहाँ के लोगों के रग-रग में वीरता कूट-कूट कर भरी है। डॉ० ग्रियर्सन के शब्दों में—'भारत में सभ्यता फैलाने का यश बंगालियों और भोजपुरियों को है। यह काम बंगालियों ने अपनी लेखनी से किया और भोजपुरियों ने अपने डण्डे के बल से।' और, सचमुच आजादी की गत लड़ाई में इस प्रदेश की जनता ने जिस अदम्य शौर्य एवं शक्ति का परिचय दिया वह भारतीय स्वतंत्रता के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा।

बलिया

सब से पहले हमारा ध्यान बलिया की ओर जाता है, जो न केवल इस प्रदेश में ही वरन् सारे भारतवर्ष में अग्रणी रहा। ९ अगस्त ४२ को काँग्रेस नेताओं की गिरफ्तारी के बाद बलिया की पुलिस ने जिला काँग्रेस कमेटी के दफ्तर पर धावा किया और उस पर अधिकार कर जिले के प्रमुख काँग्रेस कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार कर लिया। देश के साथ-साथ बलिया ने इसे एक चुनौती समझा। दूसरे दिन १० अगस्त को नगर में पूर्ण हड़ताल रही जो बलिया के इतिहास में अभूतपूर्व थी। जिला मजिस्ट्रेट और सुपरिण्टेण्डेंट पुलिस की कोशिशों के बावजूद भी हड़ताल टूट न सकी। लोग उस दिन कचहरी और दफ्तर भी नहीं गये। एक विराट् जुलूस निकला और सारे शहर में घूमकर चौक में आया और वहाँ एक विराट् सभा हुई।

विद्यार्थियों का जुलूस

दूसरे दिन ११ अगस्त को विद्यार्थियों का एक जुलूस निकला जो प्रातःकाल १० बजे के लगभग कचहरी की ओर बढ़ा। १०० सशस्त्र सिपाहियों के साथ सिटी मजिस्ट्रेट ने उन्हें रेलवे क्रासिंग के पास, जो कचहरी और शहर के बीच में है, रोकने की कोशिश की। जुलूस ने रुकने से इनकार किया। फलतः उन पर लाठियाँ बरसायी गयीं। बहुत विद्यार्थी घायल हुए और गिरफ्तार किये गये। पर जुलूस डटा रहा और आगे बढ़ता ही गया। उस दिन भी सभी दफ्तर और कचहरी बन्द रहीं। रात में ११ बजे पुलिस ने कुछ विद्यार्थियों के निवास स्थान

CC-0. ... Varanasi Collection. ...

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पर धावा किया और लगभग ४० विद्यार्थियों को गिरफ्तार कर लिया। इस खबर से शहर में सनसनी फैल गयी और १२ अगस्त को पूर्ण हड़ताल रही।

इस प्रकार ये तीन दिन हड़ताल और जुलूसों के थे। जनता नेतृत्वहीन थी। देश के सम्मुख कार्यक्रम क्या है, इसका लोगों को कुछ पता न था। क्या किया जाय, क्या न किया जाय लोग इसी पशोपश में पड़े थे। इतने में अखबारों में बम्बई में हुए उपद्रव का समाचार आया, और साथ ही तत्कालीन भारत सचिव श्री एमरी का साधारण सभा के सम्मुख दिया गया वक्तव्य आया, जिसमें उन्होंने काँग्रेस पर आरोप करते हुये उसका कार्यक्रम तार डाक, रेल का नष्ट करना आदि विध्वंसक कार्य बताया। जनता ने इसे काँग्रेस का वस्तुतः कार्यक्रम मान लिया और दूसरे दिन से जिले का एकदम नक्शा बदल गया। जनता ने विध्वंसात्मक कार्यक्रम अपनाया।

तार काटना और पटरी उखाड़ना

१२ अगस्त से सारे जिले में तार काटने, रेल की पटरी उखाड़ने, पुल तोड़ने और यातायात के साधन नष्ट करने का कार्य आरम्भ हो गया। लोगों ने जिले के स्टेशनों और डाकखानों को जला दिया। लोगों में उग्रतम विद्रोह की भावना भरी थी, पर उनका क्रोध सरकार के प्रति ही था; उसके कर्मचारियों के प्रति नहीं। साथ ही गाँधी जी की अहिंसा को भी वे लोग भूले न थे। अतएव जनता ने जहाँ सरकारी इमारतों और स्थानों को नष्ट किया वहीं उसने कर्मचारियों और उनकी सम्पत्ति को छुआ तक नहीं। जब कभी जनता ने स्टेशनों पर आक्रमण किया रेलवे की सम्पत्ति तो नष्ट कर डाली पर रुपये पैसे वहाँ के स्टेशन मास्टर के हवाले कर दिये। १४ की शाम होते होते सारे जिले में यातायात के साधन नष्ट हो गये और जिले का सम्बन्ध अन्य स्थानों से पूर्णतया विच्छिन्न हो गया।

अब जनता का ध्यान अधिकार प्राप्त करने की ओर गया। उसने जिला काँग्रेस कमेटी के भवन पर १५ अगस्त को पुनः अधिकार कर लिया और राष्ट्रीय झण्डा फहराया। वहीं कार्य का केन्द्र बना।

बाजार में गोली वर्षा

६ दिनों से बाजार नहीं लगा था। अतः जनता की अपनी सरकार ने १६ अगस्त को पहला कार्य यह किया कि उसने घोषणा की कि अगले रविवार को गुदड़ी बाजार लगेगा। फलतः दूसरे दिन दोपहर होते-होते बाजार खूब जोरों से लगा। गाँव के लोग अत्यधिक संख्या में आये हुए थे। यह ब्रिटिश साम्राज्य के खैरख्वाह नौकरों को सह्य न हो सका। तहसीलदार पुलिस की लारी में लाइन-इन्स्पेक्टर और सशस्त्र पुलिसके साथ आये और उस लारी से पुलिस ने एक कोने से दूसरे कोने तक गोलियाँ बरसायीं। असंख्य जनता गोलियों की शिकार बनी। ६ आदमी तत्काल मर गये; तथापि जनता शान्त थी। उत्तेजना के उसमें कोई लक्षण नहीं दीख रहे थे। फिर भी गोली क्यों चलायी गयी, यह आजतक लोगों की समझ में नहीं आया। कारण जो भी रहा हो इससे ब्रिटिश साम्राज्य की नींव जमने के बजाय उखड़ने लगी और अन्ततोगत्वा १६ अगस्त को तो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वह बिलकुल ही उखड़ गयी।

सहतवार थाने पर जनता का कब्जा

एक ओर तो शहर में गोली चल रही थी दूसरी ओर जनता ने १३ अगस्त को सहतवार के थाने पर शान्तिपूर्वक अधिकार कर लिया। उन्होंने हथियार ले लिये, सरकारी कागजों को नष्ट कर दिया और थाने को ध्वस्त कर दिया। थानेदार ने अपने सिपाहियों के साथ जनता के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। उसके बाद तो नरवर, सिकन्दरपुर, उभाव गढ़वर और हलधरपुर के थानों पर जनता का अधिकार हो गया। १८ अगस्त को जनता ने बाँसडीह के तहसील और थाने पर अधिकार कर लिया, सारे कागजात नष्ट कर दिये गये और नये अधिकारी नियुक्त किये गये। पुराने सरकारी नौकरों को तीन मास का वेतन देकर बर्खास्त कर दिया गया।

जहाँ इस प्रकार सरकारी कर्मचारियों ने आत्मसमर्पण कर दिया वहाँ कुछ लोग ऐसे भी थे जिन्होंने गोली और संगीन के सहारे ब्रिटिश सरकार के प्रति अपनी राजभक्ति कायम रखने की चेष्टा की।

१६ अगस्त को जनता ने रसड़ा के तहसील, खजाने और थाने पर धावा किया। अधिकारियों ने तत्काल आत्मसमर्पण कर दिया और भवनों पर राष्ट्रीय झण्डा फहराया गया। पर ज्योंही जनता सरकारी बीज गोदाम पर अधिकार करने के निमित्त एक सरकार-भक्त रईस के बाड़े में घुसी, नायब तहसीलदार के षडयन्त्र से उसका फाटक बन्द करा दिया गया और पुलिस ने उस बाड़े में बन्द जनता पर गोलियाँ चलायीं जो जालियानवाला बाग के दृश्य से कम न था। उसमें ३ आदमी मरे और सैकड़ों घायल हुए।

ब्रिटिश शासन का पतन

१८ अगस्त की आधी रात होते-होते ब्रिटिश शासन का पतन हो गया। जिलेके अधिकारी असहायावस्था में थे। एक ओर तो उनका प्रांतीय सरकार से सम्बन्ध विच्छेद हो गया था, दूसरी ओर उनके पास इतने शस्त्र न थे कि जनताका सामना कर सकते। फलतः १५ या १६ अगस्त को उन्होंने उनलोगों की एक सभा बुलायी जो सरकार के बड़े शुभचिन्तक समझे जाते थे, जिनपर सरकार को भरोसा था। उनसे अधिकारियों ने सहायता करने को कहा; पर उन्होंने अपनी असमथता प्रकट की और कहा कि जबतक काँग्रेस के नेता जेल में हैं कुछ भी करना सम्भव नहीं है। आन्दोलन के दमन का प्रत्येक प्रयत्न असफल रहेगा। फलतः १६ तारीख को एक प्रमुख राजभक्त जेल में गये और जिले के अधिकारियों की ओर से काँग्रेस नेताओं से बातचीत की और पूछा कि यदि वे छोड़ दिये जाँय तो शान्ति-स्थापन में सहायता करेंगे या नहीं। दूसरे दिन १७ अगस्त को स्वयं जिला मैजिस्ट्रेट श्री जे० निगम, पुलिस सुपरिंटेंडेण्ट, लाइन्स इन्स्पेक्टर, कोतवाल तथा अन्य अधिकारियों के साथ जेल में गये और प्रमुख काँग्रेस कार्यकर्त्ता श्री राधामोहन-सिंह एम० एल० ए० को बुलवाया और जिले की स्थिति समझाकर अपनी कठिनाइयाँ उनके सामने रखीं और सहायता की याचना की। किन्तु काँग्रेस की ओर से उस समय तक कोई सहायता देने में असमर्थता प्रकट की गयी जब तक कि काँग्रेसके सामने आत्मसमर्पण न कर दिया जाय और सारे अधिकार

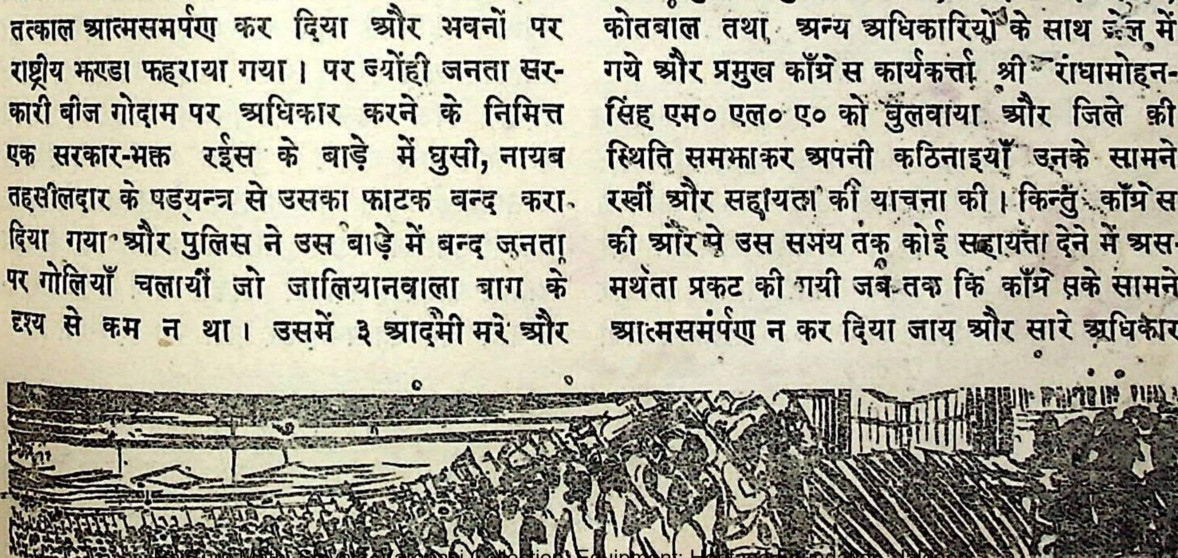

Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jagan

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उसे न दे दिये जाँय और प्रान्तीय सरकार से सम्बन्ध विच्छेद न कर लिया जाय। साथ ही यह भी कहा गया कि जनता द्वारा नियुक्त प्रबन्ध समिति के अधीन आपको रहना होगा। सिटी मैजिस्ट्रेट ने प्रस्ताव पर विचार करने का समय माँगा और लौट आये।

कांग्रेस-जनोंकी रिहाई

१६ अगस्त को जब सारे जिलों में शासन-अधिकार जनता के अधिकार में आ गया और सदर मुकाम पर खबर आयी कि जनता कलक्टर से, खजाने और जेल पर अधिकार करने तथा काँग्रेसजनों को रिहा कराने आ रही है तो जिला मैजिस्ट्रेट पुनः जेल गये और इस बार काँग्रेस नेताओं से कहा कि मैंने आपको जेल में बन्द किया था और अब मैं स्वेच्छासे आपको रिहा करता हूँ। आप जाकर शांति स्थापित कीजिये और स्थिति सम्हा लिये। काँग्रेस नेताओं ने प्रस्ताव पर विचार किया और निश्चय किया कि हम तभी बाहर जायेंगे जब सब काँग्रेसी रिहा कर दिये जाँय। फलतः १०० काँग्रेसजन अपने साथ शासन-अधिकार लेकर जेलसे बाहर आये।

जनताकी सरकारका संघटन

नव-निर्मित सरकार ने १६ अगस्त को घोषणा कर जनता को सुरक्षा का आश्वासन दिया और २० अगस्त को हनुमानगंज की कोठी में सभी मतों के लोगों—हिंदू, मुसलमान, गरीब-अमीर, राजभक्त और विद्रोही—की सभा हुई और जनता की नयी सरकार से शासन भार ग्रहण करने को कहा गया। नयी सरकार के प्रति राजभक्ति के प्रमाण स्वरूप शासन-प्रबन्ध के लिये हजारों रुपये तत्काल भेंट किये गये।

नई सरकार के अध्यक्ष श्री चित्तूपाण्डेय

फलतः श्री चित्तू पांडेय की प्रधानता में नई सरकार का काम आरम्भ हुआ और ब्रिटिश सरकारी कर्मचारी पकड़कर पुलिस लाइन में नजरबन्द कर दिये गये और नयी सरकार ने उनकी जानमाल की रक्षा का भार अपने ऊपर लिया।

इस प्रकार आन्दोलन आरम्भ होने से लेकर २२ अगस्त तक काँग्रेस के संघटन की यह विशेषता थी कि इन १२ दिनों में जिले में एक भी अपराध नहीं हुआ। ग्राम-पंचायतें अपने ढंग से व्यवस्था कर रही थीं और उनका कार्य इस बात का ज्वलन्त उदाहरण है कि अंग्रेजों के भारत से चले जाने पर जनता अपना शासन किस प्रकार कर सकती है।

नई सरकारका प्रभाव

नगर में लोगों ने बीज गोदाम, रेलवे और जहाज घाट का माल गोदाम लूट लिया था। नई सरकार ने अधिकार में आते ही इस मामले की जाँच की और जिस किसी ने लूट में भाग लिया था उसने बिना ज्यादती के स्वयं आकर अपना अपराध ही स्वीकार नहीं किया वरन् माल वापस लाकर दे दिया। रेवती-मंडल में एक विधवा के ३०००) रुपये के गहने चोरी गये थे। पुलिस चोरों की तलाश में असफल हो चुकी थी। अतः नई सरकार के समय उस विधवा ने मंडल काँग्रेस कमेटी के सम्मुख अपनी फरियाद पेश की। मंडल काँग्रेस के सभापति ने चोरों को पकड़कर माल बरामद किया।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

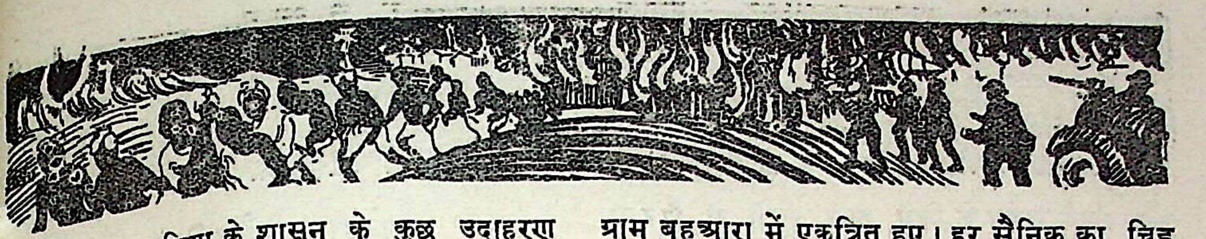

ये स्वतंत्र बलिया के शासन के कुछ उदाहरण हैं—जैसे कार्य भारत के ब्रिटिश शासन के १५० वर्षों में कभी नहीं हुए थे। लेकिन, यह शासन अधिक दिनों तक नहीं रह सका।

बैरिया थाने पर हमला

बम्बई में नेताओं की गिरफ्तारी के बाद ही बलिया के काँग्रेसी नेता पकड़े गये। ११ अगस्त को बैरिया मंडल के नेता सर्वश्री काली प्रसाद, रामदयाल सिंह तथा मदनराय भी गिरफ्तार हो गये। इस समय एमरी का बयान हाउस आफ कामन्स में हो चुका था कि नेताओं को इसलिये पकड़ा गया कि वे रेल उखाड़ना चाहते थे, थानों पर कब्जा करना चाहते थे इत्यादि। फलस्वरूप मंडल नेताओं की गिरफ्तारी के बाद रानीगंज बाजार में जो वृहद जुलूस निकला उसने खुलेआम नारा लगाया कि थाना, रेल, इत्यादि अपना है, उस पर कब्जा कर लो। काँग्रेस नेतृत्व की तरफ से किसी स्पष्ट आदेश के अभाव में एमरी के विष वमन और झूठ का असर साफ दिखाई पड़ा।

रानीगंज के जुलूस में बुलन्द किये जानेवाले नारे का प्रचार होने लगा। १२ को लालगंज बाजार और १३ को डोकटी बाजार में एलान हुआ कि १४ को बैरिया थाने पर कब्जा किया जायगा और सब बैरिया में एकत्रित हों।

"गोली बरसेगी—हम आगे बढ़ते जाएंगे"

१४ अगस्त को हर क्षेत्रनायक के नेतृत्व में दिन में १० बजे के लगभग ३०० सैनिक बजरंग आश्रम, ग्राम बहुआरा में एकत्रित हुए। हर सैनिक का चिह्न तिरंगा बिल्ला था। झंडाभिवादन के बाद प्रत्येक सैनिक ने झंडा छूकर शपथ खायी कि—"हम थाने पर बिना कब्जा किए पीछे कदम नहीं उठायेंगे। गोली बरसती रहे पर जब तक जान में जान है हम अहिंसात्मक रूप से आगे बढ़ते जाएंगे।" इसके बाद बहुआरा ग्राम के ठाकुर भूपनारायण सिंह को सैनिकों ने अपना कमान्डर चुना और जुलूस बनाकर नारे लगाते हुए बैरिया की ओर बढ़े। बैरिया के निकट एक खेत में सपथ फिर दोहराई गई और कमान्डर ने एलान किया कि जो डरता हो और लौटना चाहे तो लौट सकता है, पर कोई नहीं लौटा।

थानेदार ने अधीनता स्वीकार की

इसी समय भूदेव बाबा, जगदीश तिवारी तथा डॉ० अयोध्या सिंह नामक तीन मंडल काँग्रेस नेता आगये और उन्होंने थाने पर हमला बोलने के औचित्य अनौचित्य पर सैनिकों से जिरह शुरू कर दी। कुछ ही देर जिरह चली होगी कि बहुआरा ग्राम के सैनिक रामजनम पांडे ने अपना तिरंगा बिल्ला उतार कर अपने क्षेत्रनायक बलदेव सिंह को देते हुए कहा कि यह सब सलाह मशविरा आपलोग करिये मैं तो काँग्रेस का आदर्श न मानूँगा और अपनी शपथ पूरी करने के लिए थाने पर जाऊँगा। रामजनम के आगे बढ़ने के साथ ही पास में खड़ी लगभग ४००० की भीड़ के लगभग २००० आदमी उसके पीछे हो लिये। एक प्रतिनिधि-मंडल भीड़को बाहर छोड़ अन्दर थानेदार काजिमे हुसेन से मिलने गया। बिना विशेष बहस मुबाहिसे के उसने प्रतिनिधियों से कह दिया कि—"हम काँग्रेस की अधीनता स्वीकार करते हैं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और इसके सबूत के लिये आप खुशी से तिरंगा झंडा थाने पर फहरा दीजिये। हाँ, हमको अपने बाल बच्चों सहित यहाँ से जाने में तीन चार दिन लगेगा, उतनी मोहलत मुझे दीजिये। तीन चार दिन बाद थाने पर आप अधिकार कर लीजियेगा"

फलस्वरूप थाने पर तिरंगा झंडा फहराया गया और थानेदार को दो दिन की मोहलत दे दी गई। जनता की प्रसन्नता का वारापार न था। वहाँ से वह लगभग ३ मील की दूरी पर स्थित सुरेमनपुर स्टेशन पहुँची, उस पर कब्जा किया, रेल की पटरी उखाड़ी और स्टेशन के खजाने पर अधिकार किया। कमान्डर भूपनारायणसिंह ने इस समय यह राय दी कि यदि यह रुपया कोई भी अपने पास रक्खेगा तो जनता में गलतफहमी फैलेगी और इसलिए सबके सामने ही इसे कुएँ में फेंक दिया जाय। ऐसा ही किया गया।

स्टीमर पर कब्जा

ता० १४ अगस्त की रात को ग्राम बहुआरा के बजरंग आश्रम पर दूसरे दिन का प्रोग्राम निश्चित करने के लिए सब सैनिकों की मीटिंग हुई। निश्चय हुआ कि दूसरे दिन स्टीमर पर कब्जा किया जाय, यानी 'जहाज को गिरफ्तार किया जाय' जैसा ग्राम वालों ने कहा। पटना से बक्सर (मोगलसराय के निकट) के बीच गंगा में स्टीमर चलता है और उसका एक स्टेशन बहुआरा के पास ही है। उपर्युक्त निर्णयानुसार १५ की सुबह सैनिक खेतों में छिप गये और जब स्टीमर रुका और खूंटों में बाँध दिया गया उस समय अचानक खेतों से निकल कर सैनिकों ने उस पर कब्जा कर लिया और उसे तोड़ने फोड़ने लगे।

थानेदार की तैयारियाँ

१५ की रात्रि को सैनिक फिर बजरंग आश्रम पर मिले और १६ को डुमरॉव राज्य की छावनी पर कब्जा किया गया। इसी बीच में समाचार आया कि थानेदार ने थाने का झंडा उतार कर जला दिया है और पुलिस कांस्टेबल तथा बन्दूक और गोलियाँ भी उसने मँगवाली है तथा मुकाबले की पूरी तैयारी कर रहा है। सैनिक समझ गए कि अब की थाने पर जाने में गोलियाँ निश्चय बरसेंगी और फलस्वरूप उन्होंने, कमान्डर भूपनारायण के शब्दों में, 'गोरिल्ला तरीकों' से थाने पर कब्जा करने का इरादा किया। इस 'गोरिल्ला ढङ्ग' को जब स्पष्ट करने को कहा गया तो बताया गया कि एक खाट पर किसी आदमी को मुर्दा के रूप में लिटा दिया जाता और उसके साथ ५, ७ आदमी जाते जो यकायक थानेवालों पर आक्रमण कर देते। थाने पर अधिकार करने के इसी ढङ्ग को उचित मान कर सैनिकों ने निर्णय किया कि १७ अगस्त को सब दोआबा निवासी बैरिया में एकत्रित हों और वहाँ से आगे बढ़ कर दोआबा के अन्दर संपूर्ण रेलवे लाइन नष्ट कर दी जाय। सब जगह पत्र भेज दिया गया कि लोग बैरिया में १७ तारीख को एकत्रित हों।

घबड़ाये थानेदार की बातें

१४ तारीख को थाने पर तिरंगा झंडा फहराए जाने के समाचार ने सारे दोआबे को चकित कर दिया था। फलस्वरूप १७ तारीख को १२ बजे दिन तक लगभग २५००० किसान बैरिया में एकत्रित होगए। दोआबे की

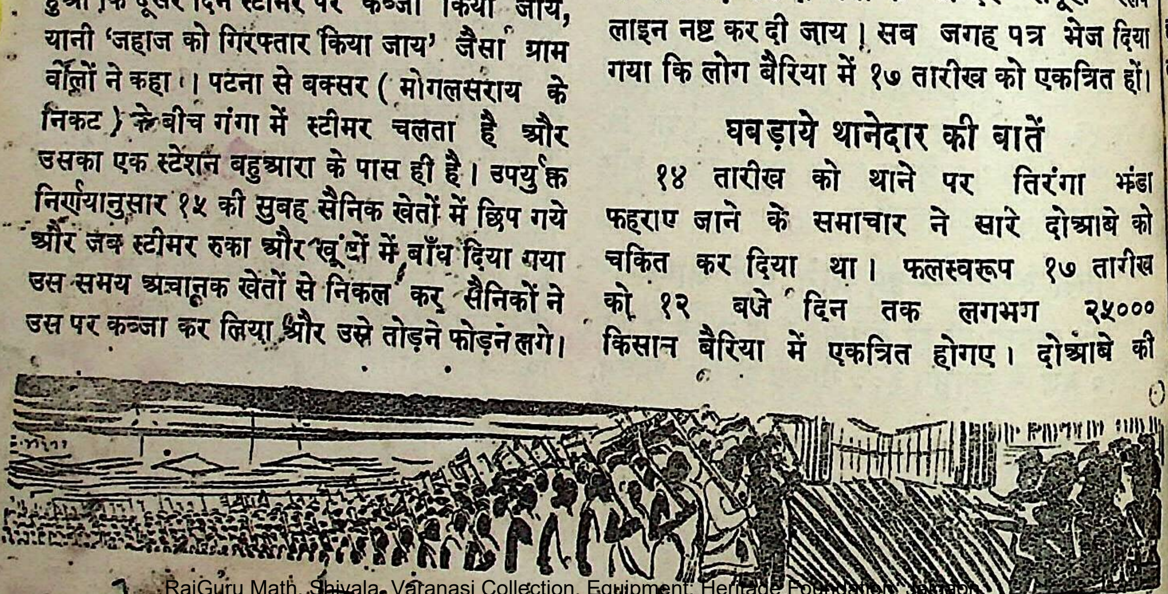

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लाइन उखाड़ने की बात किसी के मस्तिष्क में थी ही नहीं, सब का केवल एक नारा था—थाने चलो। विशाल जनसमूह थाने की ओर बढ़ा। भीड़ को बैरिया थाने के सामने की सड़क पर रोक कर कमान्डर भूपनारायण सिंह थाने के फाटक पर पहुँचे। दरवाजा बन्द था और थानेदार लगभग १४ पुलिसवालों के साथ थाने की छत पर खड़ा था। हर पुलिस के हाथ में बन्दूक थी। कमान्डर भूपनारायण को आगे आते देख उन्होंने अपनी बन्दूकें तान दीं; पर कमान्डर ने चिल्ला कर जवाब दिया—"हम तो मरने ही आए हैं, चलाओ गोली" थानेदार ने डाँट कर पुलिस को चुप किया और पूछा—"कहिए क्या चाहते हैं?"

कमान्डर—"आप हमारे भाई हैं, हम चाहते हैं कि थाना छोड़ कर आप हमारे साथ चलिए।"

थानेदार—"सारा दोआबा तो हमने आप लोगों के लिए छोड़ ही दिया है। हमने आप की अधीनता भी स्वीकार कर ली है। इतनी थाने की जगह आप हमारे लिए छोड़ दीजिए। अगर थाने पर कब्ज़ा ही दिखाना है तो आकर झंडा गाड़ दीजिए। हम तो यहाँ से चले ही जानेवाले हैं।"

कमान्डर—"तुमने तो पहले भी झंडा गड़वा दिया था पर हमारे जाने के बाद उसे जला दिया। तुमने कहा था कि हम चले जाएँगे पर आज तुम्हारी बातों पर कैसे विश्वास करें।"

थानेदार ने अपने बगल में पड़े झंडे को उठा कर हिलाते हुए कहा—"हमने झंडा जलाया नहीं। आप आकर झंडा फिर फहरा दीजिये।"

जब कमान्डर भूपनारायण ने थाने का दरवाजा खोलने को कहा तो थानेदार ने कहा कि ऐसा करने से भीड़ थाने के अन्दर दाखिल होजायगी, आप दीवाल फाँद कर चले आइए। भूपनारायण अन्दर गए तो देखा कि थाने के हाते के बीच में पहले से ही झंडा गाड़ने की जगह तैयार थी और गढ़ा खुदा हुआ था। उन्होंने झंडा फहराया और थाने के बाहर आए। सब देख कर कमान्डर का विश्वास दृढ़ हो गया था कि आज खून खराबी होगी और "गोरिल्ला ढंग" ही उनको जँच रहा था। बाहर निकल कर उन्होंने जनता से कहा कि थाने पर झंडा गड़ ही गया है, अब सब कोई रेल लाइन उखाड़ने के लिए चलें। पर जनता अड़ गई कि नहीं आज तो इन लोगों से हथियार रखवा ही लेना है।

गोलियों की वर्षा

इसके बाद दीवाल फाँद कर सैकेड़ों आदमी थाने के हाते में दाखिल हो गए और थानेदार से कहने लगे कि आप हमारे साथ आवें, हम रेल पटरी उखाड़ने जारहे हैं। थानेदार ने जवाब दिया—"हम को आप लोगों से डर नहीं है पर कुछ ऐसे लोग हैं जिन्हें हमने तंग किया है, दफा ११० वगैरह चलवाया है, वे हम को पाएँगे तो मार डालेंगे।" उसको हर तरीके से आश्वासन दिया गया पर वह न माना! किसी ने नीचे से छत पर एक गांधी टोपी फेंकी और थानेदार से उसे पहनने को कहा। उसने गाँधी टोपी भी पहन ली। किसी ने नीचे से एक झंडा ऊपर फेंक दिया और थानेदार ने स्वयं झंडे को चूमा और सब सिपाहियों से चुमवाया।

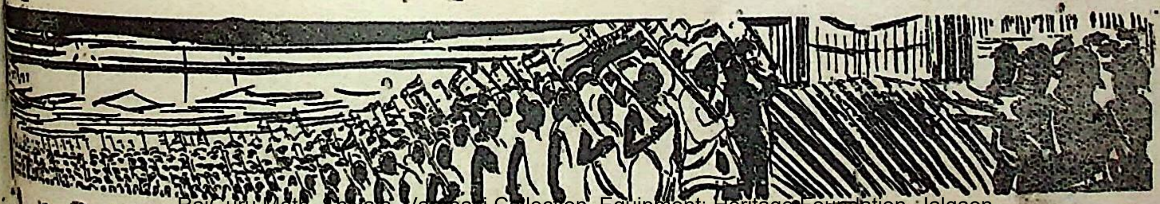

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोग समझने लगे कि थानेदार अब उतरेगा। उसने भी ऊपर से आवाज दी कि भीड़ को बैठाइये हम सब नीचे आरहे हैं और हथियार समर्पण कर देंगे। जनता को सन्देह था कि इसमें भी कोई चाल हो; पर सब तरफ से आवाज उठ रही थी कि सब लोग तब तक बैठे रहेंगे जब तक हथियार न मिल जाए, चाहे जै दिन लगे, चाहे गोली बरसे। इस प्रकार जब थाने के हाते की भीड़ बैठ रही थी उसी समय

चित्तू पाण्डे

यकायक एक पत्थर उठाकर थानेदार काजिम हुसेन ने कहा कि—"देखो, पत्थर चलने लगा न।" कदाचित यही पत्थर उठाना ही सिपाहियों के लिए निर्धारित इशारा था। कारण उसी के बाद ही पुलिसवालों ने बन्दूकें तान दीं और तड़ातड़ गोलियाँ बरसने लगीं। सात आठ आदमी थाने के हाते में गोली के शिकार हुए और तुरन्त शहीद हो गए। बाकी लोग थाने की दालानों में पहुँच गए और कुछ दीवार फाँद कर हाते के बाहर आ गए।

वीर बालक कौशल्या कुमार

इसी बीचमें कौशल्या कुमार नामके एक लड़केने देखा कि थानेपर फहराया हुआ झण्डा हटाया जा रहा है। तत्काल वह भीड़ चीरता हुआ गोलियों के बीचसे थानेपर पहुँचा और चटपट देखते देखते छत पर चढ़ गया और थानेदार के हाथ से झण्डा छीन लिया। पर तत्क्षण ही संगीन घुसेड़ दी गयी और उसे छतसे नीचे फेंक दिया गया। उस दिन जब पण्डित जवाहरलाल बैरिया गये थे तो उस वीर शहीद के खूनसे रंगा झण्डा उन्हें दिखाया गया और उन्होंने राष्ट्रीय झण्डे के मान-रक्षक उस वीर बालक को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की थी।

बैरिया थाने पर जनता का अधिकार हुआ

समय लगभग २ बजे दिन का था। तब से लेकर ७ बजे सायंकाल तक जनता बराबर थाने की तरफ बढ़ती, गोलियाँ तड़ातड़ चलतीं, लाशें गिरतीं और जनता पीछे हटने के बाद फिर आगे बढ़ती। इसी बीच में एक और उल्लेखनीय घटना हुई। किसी ने थानेदार के अस्तबल से उसका घोड़ा निकाला और उस पर चढ़ कर दोआबे भर में बैरिया हत्याकांड का हाल सुना आया। लगभग ६ बजे संध्या तक क्रोध से उबलते हुए फरसा, बल्लम, भाला इत्यादि से सुसज्जित किसानों का झुण्ड का झुण्ड बैरिया आ गया। जनता निश्चित रूप से हिंसावृत्ति धारण कर चुकी थी। पर इसी समय कमान्डर भूपनारायण के एक भाई सुदर्शनसिंह ने अपूर्व शौर्य एवं धैर्य का

Raj Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Internet Foundation, Jalandhar

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

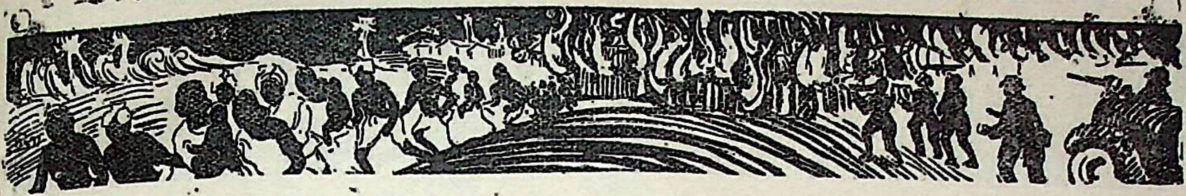

परिचय दिया। जिस समय गोली चलनी शुरू हुई उस समय सुदर्शन सिंह की जाँघ में गोली लगी और वह थाने के हाते में ही गिर गए। लगभग ६ बजे किसी प्रकार सुदर्शन सिंह को हाते के बाहर लाया गया। उन्होंने तुरन्त एकत्रित जनता को एक तरफ बुला कर उसे संबोधित करते हुए कहा—"भाइयो, हम लोगों का अहिंसा-व्रत अब तक कायम रहा और अब हमको उससे विचलित नहीं होना चाहिए। अन्दर पड़े-पड़े मैंने समझ लिया है कि थानेदार व पुलिसवालों की हिम्मत छूट गई है और वे निकल भागने की राह देख रहे हैं। हम मौका दें कि वे भाग जाएँ, थाने पर तो हमारा अधिकार होगा ही, हम विजयी होंगे ही" घायल सुदर्शन सिंह की बातों का असर हुआ।

रात १२ बजे मूसलधार वृष्टि हुई। बहुत भीषण थी वह। एकत्रित जनता आड़ में हो गई। इसी मौके का लाभ उठाकर कातिल थानेदार और उसके सिपाही निकल भागे। उनकी गोलियों ने २२ निर्दोष निहत्थे किसानों के प्राण लिए थे। कितने गोलियों से घायल हुए इसका आज तक पता नहीं लगा। पर थाने पर जनता का कब्जा हो गयी। दूसरे दिन प्रातःकाल थाने पर झंडा फहराया गया और झंडा-गायन हुआ। इसके बाद थाने की ईंट से ईंट बजा दी गई। यह बात प्रसिद्ध है कि जब मारिस हैलेट बैरिया पहुँचा तो उसने कहा—"ठीक ही है, हमको वास्तव में बलिया पुनः फतह करना पड़ा।"

हिटलरी अत्याचार

२२ और २३ की रात को नेदरशोल और मार्श स्मिथ के साथ ब्रिटिश-सेना ने बलिया में प्रवेश किया और उसके बाद लूट, फूँक, मार-पीट शुरू हुई। लोगों को सरे आम बेंत लगाये गये, किरचें भोंकी गईं। हाथी के पैरों में बाँध कर लोग घसीटे गये।

चार दिनों तक जब तक बलिया में स्वतंत्र-सरकार कायम रही, एक भी सरकारी अफसर को यह कहने का अवसर नहीं मिला कि जनता की सरकार ने या स्वयं जनता ने उनके प्रति किसी भी प्रकार का दुर्व्यवहार किया या उनकी सम्पत्ति को किसी भी प्रकार हानि पहुँचाई गई। उस समय की एक घटना विशेष उल्लेखनीय है। कहते हैं, उस समय जिले के खजाने में करीब डेढ़ लाख रुपया था; पर जनता या उसके प्रतिनिधियों ने उसमें हाथ तक नहीं लगाया। लेकिन, दूसरी ओर फौज के पहुँचते ही गाँव के गाँव लूटे जाने लगे, घरों के छप्पर उजाड़े जाने लगे और माँ-बहिनों की इज्जत लूटी जाने लगी।

जिले भर में कैसे-कैसे घोर अत्याचार किये गये, उसका वर्णन इस समय असंभव है। चारों ओर लूट-मार का आतंक छाया हुआ था और यह आतंक अभी कुछ दिनों पहले तक बना रहा।

बलिया जिले में गाँधी-टोपी पहनना भी अपराध था। जिले पर १२ लाख रुपया सामूहिक जुर्माना किया गया था; लेकिन, २६ लाख से भी अधिक वसूला गया। ४६ आदमी पुलिस और सेना की गोलियों के शिकार हुए, २०५ मकान जलाये गये और १०० मकान गिरा दिये गये, जिनसे लगभग ३८ लाख रुपये की हानि का अनुमान किया जाता है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्त्रियों के साथ व्यभिचार

कहा जाता है कि बलिया जिले के कई गाँवों में तो पुलिस और फौज ने यहाँ तक किया कि पति, बेटे और परिवार के अन्य सदस्यों को पकड़ लिया, उन्हें रस्सी से पेड़ में बाँध दिया और उनके सामने घर की बहू-बेटियों के साथ दुष्कर्म किया गया। इन सब घटनाओं को भला कोई कैसे सह सकता था। नतीजा यह हुआ कि जगह-जगह पुलिस और जनता में मुठभेड़ें हुई तथा सरकारी अमानुषिकता के जवाब में जनता की ओर से भी थोड़ी बहुत हिंसा हुई। आवेश के कारण थाने जला दिये गये, सरकारी दफ्तरों के कागज फूँक दिये गये, पुलिस और फौजवालों से बन्दूक छीन ली गई। इस झड़प में कहीं-कहीं प्रतिरोध करने वाले पुलिस अफसर मारे गये और घायल हुए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment Heritage Foundation

मनुष्य के पेट पर पत्थर बाँध कर घसीटा गया ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गोरखपुर में क्रान्ति की लहर

३ दिन की प्रसूता पतोहू घर से बाहर निकाल दी गई !

गोरखपुर में भी ६ अगस्त से लेकर १० या ११ अगस्त तक जिले के सभी प्रमुख काँग्रेसकर्त्ता नजरबन्द बनाकर जेल भेज दिये गये। नेताओं की गिरफ्तारी से जनता में गहरा रोष और असन्तोष फैल गया।

बाँसगाँव

गोरखपुर जिले में बाँसगाँव एक ऐसी तहसील है जिसमें वर्तमान युगके यातायात के साधनों का सर्वथा अभाव है। नेताओं की गिरफ्तारी का समाचार १२ या १३ अगस्त तक तहसील में पहुँचा। तहसील के जिम्मेदार काँग्रेसमैन गिरफ्तार हो गये थे। १६ अगस्त १६४२ को जनता ने अपनी नाराजगी का इजहार किया। मदरिया के प्राइमरी स्कूल के कागज फेंक दिए। नएगाँव के पास सड़क की पुलिया के कुछ ईंट बिखेर दिए गए। गोला कस्बे में पूर्ण हड़ताल रही। एक बड़ा जुलूस निकला। थाने और डाकखाने पर तिरंगा झण्डा फहराया गया। हमारे 'नेताओं को छोड़ो' 'हम ऐसी सरकार नहीं चाहते' नारों से आकाश गूँज रहा था। डाकखाने के पास तार काट दिया गया। गगहा के पास भी सड़क की एक पुलिया तोड़ दी गयी। गैंसीपारके पास तार का एक खम्भा भी गिरा दिया गया, उरुवा बाजार के एक डाकखाने का एक लेटरबक्स गिराकर पीट दिया गया। चौकीदार और कान्स्टेबुल ने, जो वहाँ मौजूद थे, लेटरबक्स पीटनेवालों के अगुवा श्री रामअधार सिंह को पकड़ लिया। उत्तेजित भीड़ने चौकीदार का साफा छीन लिया। कान्स्टेबुल मारे डरके भाग निकला। रामसर्वार चौकीदार और वासुदेव उपाध्याय ने इस घटनाकी सनसनीदार रिपोर्ट की और खून हो जाने की बात भी बतलाई। फिर क्या था फौज की टुकड़ी, गारद तथा बढ़यापार रौजा, देवपार धुरियापार, गोला, वाहपुर, इमलीडीह आदि गाँवों के गुण्डे और जरायमपेशा के ४००-५०० लागों के हमराह अबूफजर साहेब पुलिस कप्तान गोरखपुर, रामसहाई लाल नायब तहसीलदार, बाँसगाँव, सन्तप्रसाद सिंह थानेदार थाना सिकरा गंज घटना स्थल उरुवा बाजार में आ धमके। उरुवा कस्बेके बनिये लूटे और पीटे गये। मसउदीन साहेब देवराजपारने लूटका बड़ा हिस्सा लिया।

गाँव और घरों में आग

परसा गाँव में भी यही हालत हुई। तिलक नायक के घर को छोड़कर गाँव के बाकी सब घर लूट लिए गए। ७ घरों में आग लगाई। ये घर जलकर भस्म हो गए। गाँव के १० आदमियों पर गहरी मार पड़ी। ६ आदमियों पर मुकदमे चलाए गये। इस गाँव का आन्दोलन से कोई सम्बन्ध भी नहीं था।

लुटेरों की दो टोलियाँ बनीं। एक टोली के नेता

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सन्तप्रसाद सिंह थानेदार सिकरीगंज और नायब तहसीलदार बाँसगाँव थे, जिन्होंने सिकरीगंज थाना के गाँवों में लूट और धाँधली जारी रखी। दूसरी टोलीने अबूजफर साहेब कप्तान पुलिस के नेतृत्व में गोला थाना के गाँवों पर छापा मारना शुरू किया। पहली टुकड़ी ने मरची और बथुवा गाँवों को लूटा। लालसा पाण्डे की अच्छी मरम्मत हुई। और उनका घर लूट लिया गया। वे पकड़ कर जेल भेज दिए गये। ३ दिन की प्रसूता उनकी पतोहू घर से बाहर निकाल दी गई। बथुआ नामक गाँव भी बुरी तरह से लूटा गया। लोग बन्दूक के कुन्दों और बेतों से पीटे गये। पशुओं की भी लूट मची।

दूसरी टुकड़ी ने खोपापार पर हमला किया। गाँव के मुखिया पण्डित रामलखन पाण्डेय और उनके दोनों पुत्रों को बेंत और बन्दूक के कुन्दों से पीटकर बेहोश कर दिया गया। हिन्दी साहित्य विद्यालय खोपापार की इमारत में आग लगा दी गई। पं० रामवली मिश्र की पत्नी श्रीमती कैलाशवती देवी का झोंटा पकड़कर उन्हें घर से बाहर निकाल दिया गया। उन्हें नङ्गी कर देने का हुक्म हुआ, किन्तु साड़ीका ऊपरी हिस्सा फड़वाकर उनकी इज्जत बचा ली गई। मकानका सारा सामान लूट लिया गया। मकान की छतें गिरा दी गईं। विद्यालय के लड़कों को पीटकर भगा दिया गया। विद्यार्थियों के कपड़े छीन लिए गये। विद्यालय की सारी सम्पति जलाकर खाक कर दी गई। श्री पं० रामवली मिश्र के घर में मिट्टी का एक चिराग भी नहीं बचा। श्रीमती कैलाशवती देवी ३ महीने तक हाथ से पानी पीती रहीं। केदारनाथ पाण्डेय और रामलग्न पाण्डेय का घर लूट लिया गया, उनके मकानों की छतें भी गिरा दी गयीं। इस लूट में इस गाँव का ४० हजार नुकसान हुआ। श्री केदारनाथ पाण्डेय को इतनी चोट लगी थी कि ३ महीने तक वे चारपाई पर पड़े रहे। कोहँड़ी के श्री लाल नारायण चन्दा का घर लूटा गया। उनके कथनानुसार ३५०००) का नुकसान हुआ। इसके बाद गोला गोपापुर ककरही और पड़ौली पर हमला हुआ और लूट पाट हुई।

लूट-मार का बाजार गर्म

श्री पं० रामलखन शुक्लःककरही को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। उनका ६०००) का मकान जलाकर भस्म कर दिया गया। कुल १११६४ का नुक्सान कूता गया। श्री रामलखन शुक्ल प्रसिद्ध काँग्रेस कार्यकर्त्ता हैं। उनका परिवार एक कुलीन परिवार है। आज उनका सारा कुटुम्ब एक झोपड़ी में गुजर कर रहा है। गोपालपुर में उदितराका घर जलाया और लूटा गया। पड़ौली का वनिया भी लूटा गया। गोला कस्बे से लूट का भय दिखलाकर बीसों हजार नाजायज रकम वसूल की गई। साल भर मुकदमे चले। गोला का प्रसिद्ध मारवाड़ी पुलिस की मार और बेइज्जती के भय से कस्बा छोड़कर हमेशा के लिए बाहर चला गया।

मदरिया के रामअलख सिंह का घर लूटा और जलाया गया। मदरिया और उसके आस पास के गाँवों से १०००) सामूहिक जुर्माना वसूल किया गया। रामअलख और बलराम को ५०) जुर्माना और १०-१० बेंत की सजा दी गयी।

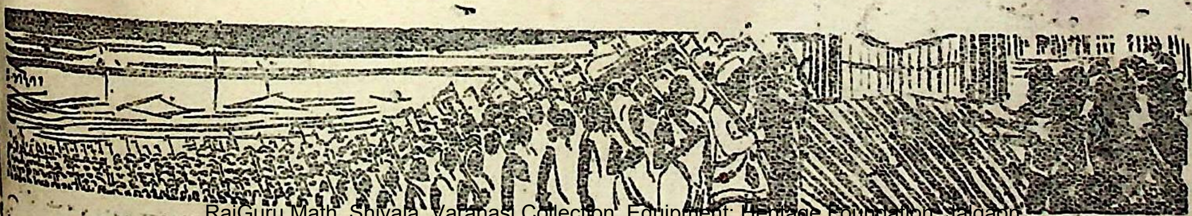

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

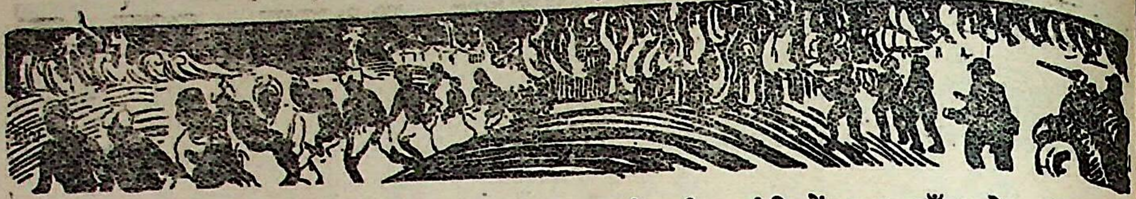

ऊरुवा का साँसत-घर

सन्तप्रसाद थानेदार सिकरीगंज का खेमा महीनों उरुवा बाजार में गड़ा रहा। इलाके भरके प्रतिष्ठित लोग पकड़-पकड़ कर वहाँ लाये जाते थे और उन्हें पीट पीट कर मुँह माँगी रकम वसूल की जाती थी। जो जरा भी चूँ चपड़ करता वह महन्त चचाई राय के बंगले की कोठरी में बन्द कर दिया जाता और बुरी तरह पीटा जाता। रामआगार सिंह घुघरा के ऊपर, सरकार की जय बोलने से इनकार करने पर, तीन दिन तक मार पड़ती रही। फूँकने और लूटने की धमकी देकर दुवरा, अमोड़ा आदि गाँवों से पचीस मन गेहूँ, चावल तथा बकरे और घी लिए गए। इसके अलावा ४२०२) नकद भी वसूल किया गया।

खोपापार

सालों इस गाँव के लोगों को पुलिस आतंकित करती रही। बीसियों बार गाँववाले पीटे गये। औरतों को भाग-भाग कर दूसरे गाँवों में जाना पड़ा। इनके ऊपर इसलिए यह विपत्ति ढाही जाती रही कि गाँववाले श्री रामवली मिश्र को, जो फरार थे, पकड़वाते नहीं, उनके मकान की दीवार गिराते नहीं और उनकी पत्नी कैलाशवती देवी को गाँव से भगाते नहीं। २ साल तक कैलाशवती देवी को बड़ा कष्ट रहा। खेती-बारी बिल्कुल नहीं हो पाई। पुलिस रात को घर में घुसने की बराबर कोशिश करती रही।

इस तहसील में कुल १२ घर जलाये गए १०३ घरों की छतें नष्ट की गईं, ७६ घर लूटे गये। जेल जाने वालों की संख्या ८० और कुल नुकसान २३४६७६ रु० १० आना का कूता गया।

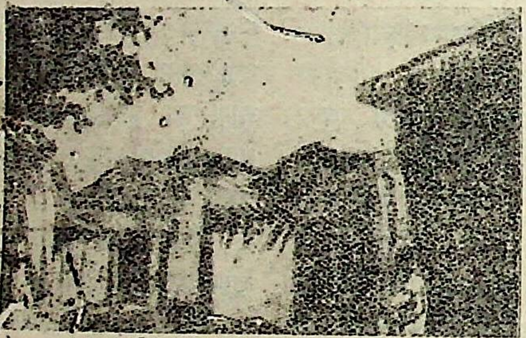

सैनिकों द्वारा जलाया गया एक मकान

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सिसई

यह गाँव खुखनू स्टेशन से १ मील की दूरी पर है। इस गाँव में दो जमींदार हैं और सब किसान हैं। गाँव के किसान काँग्रेस के अनन्य भक्त हैं और काँग्रेस की इसी भक्ति के कारण १९४२ में सरकारी दमन का शिकार इस गाँव को होना पड़ा। २८ अगस्त १९४२ को नायक तहसीलदार, सहजनवा कानूनगो, कुर्कअमीन और देवरिया के जमादार ४ या ५ चपरासियों के साथ सामूहिक जुर्माना वसूल करने के लिए सिसई गाँव में आये। ३००) जुर्माना तत्काल गाँववालों से वसूल करने का हुक्म हुआ। लोगों ने जुर्माना देने से इनकार कर दिया। फिर क्या था, लोगों से डण्डे और घूसे के बल से जुर्माना वसूल किया जाने लगा। सदू तेली, फौजदार कोइरी और मूल कोइरी की घूसे और लाठियों से खूब मरम्मत हुई। गाँव के लोग उमड़ पड़े और उन्होंने भी सरकारी कर्मचारियों की खूब मरम्मत की।

कुछ देर बाद फौज ने आकर, जिसमें अधिकांश बलूची थे, गाँव को घेर लिया। गाँव के सभी लोग—पुरुष, स्त्री और बच्चे भाग निकले। श्री रामायणजी मुख्तार गिरफ्तार कर खुखनू स्टेशन लाए गए। फौज का आदमी इनपर गोली चलाने के लिए अपने कप्तान के हुक्म की प्रतीक्षा कर रहा था। इन्होंने वीरता से सीना खोल दिया और ललकार कर कहा कि मारो गोली सीने पर। कप्तान को सुबुद्धि आयी और गोली मारने का हुक्म नहीं हुआ और ये जेल भेज दिये गये। गाँव के २५ आदमी गिरफ्तार हुए। २५ आदमियों को २—२ साल की सजा हुई और उन्हें १२—१२ बेंत भी लगे। १६ या १७ घर जलाकर खाक कर दिये गये और मकानों में से बर्तन, जेवर, कपड़ा और अन्न फौज के लिये उठा ले गये। १५ हजार रुपये के नुकसान का अनुमान है। मशीनगन लगाकर लोगों को डराया धमकाया गया। अमानुषिक अत्याचार की सीमा उस समय पार कर गयी जब कि दर्जनों स्त्रियों के साथ इन बलूची फौजियों ने बलात्कार किया। यह सब कुछ हो चुकने के बाद गाँव के जमींदार श्री........, मुखिया और........और चौकीदार ने ११५०) गाँववालों से वसूल किया और केवल ३ सौ रुपया गवर्नमेण्ट को दिया।

देऊघाट

भटनी स्टेशन से १ मील की दूरी पर देऊघाट एक गाँव है। पण्डित गोपीनाथ मिश्र इस गाँव के प्रतिष्ठित जमींदार हैं। वे न तो कांग्रेसजन हैं और न सरकारी कर्मचारियों की चापलूसी में रहते हैं, पूजा-पाठ करनेवाले शान्त व्यक्ति हैं। इस गाँव में ३ या ४ मील तक न तो लाइन उखाड़ी गई थी और न तार कटे थे। फिर भी, २६ अगस्त १९४२ को ८ बजे रात को कैप्टन मूर, पिस्तौल लिए अँग्रेज डाक्टर और ६ सिपाही बंदूकें लिए हुए गाँव में आ धमके। कैप्टन मूर ने पण्डित गोपीनाथ मिश्र को पकड़ कर ४०००) जुरमाना माँगा। पण्डितजी ने पूछा—'किस बात का जुर्माना? हमलोग तो इस बात का पहरा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दे रहे थे कि कोई उपद्रव आसपास न हो। फिर भी ५००) हम अभी दे रहे हैं; शेष रकम के लिए हमें समय चाहिए।" कैप्टन मूरने कहा—'अभी रुपया लाओ'। 'फौरन लाओ' कहकर वे किवाड़ तोड़ कर घर में घुस गये। स्त्रियाँ कोठे पर ऊपर की मंजिल पर चढ़ कर रोने और चिल्लाने लगीं। गाँव के लोग पण्डितजी के घर डाका पड़ा समझ कर इकट्ठे हो गये। पण्डितजी ने लोगों से दूर ही रहने की प्रार्थना की। दो आदमी, फ़ज़ल मियाँ और रामलगन तेली, को गोली मार दी गयी। रामलगन तेली बूढ़ा था। उसकी कमर झुकी हुई थी। साहब ने उसे कहा कि सीधे खड़े हो। वह सीधे खड़ा कैसे हो सकता था जब कि उसकी कमर झुकी हुई थी। इसी अपराध पर वह बन्दूक का निशाना बना दिया गया। गाँववाले बाहर निकल गये और कैप्टेन मूर तथा उनके आदमी १ हजार मन गल्ला, ७० या ८० वक्स कपड़ा और बर्तन लूटकर ले गये और ५०००) जुरमाना भी वसूल किया। कुल मिलाकर ३५ हजार का माल लूटा गया।

भाटपार मालबारी

१८ अगस्त ४२ को भाटपार में जनता की भीड़ पर भाटपार के सब-इंस्पेक्टर पुलिस ने गोली चलायी, जिससे लाल चंद हरिजन और सरवन नोनिया की मृत्यु हो गई। १६ अगस्त को भाटपार बाजार लूटा गया। सामूहिक जुर्माना में लोगों से जबरदस्ती बंदूक की नोकपर पचास हजार रुपया वसूल किया गया। इस लूट खसोट में श्रीगाँधी आश्रम की सारी सम्पत्ति फूँक दी गई। बाजार के व्यापारियों में सर्वश्री केदारनाथ मारवाड़ी, डाक्टर सरजू प्रसाद, दूधनाथ, रामअवतार, छेदीलाल की दुकानें लूटी गईं। श्री केदारनाथ की जबानी मालूम हुआ कि उनकी दुकान से ३० या ३५ हजार का माल लूटा गया। २० अगस्त को मालबारी गाँव में महावीर, शिवनन्दन, सरयू भगत, बाबूराम, राजाभगत आदि लोगों का घर फूँका गया। ८० आदमियों को बाँध कर और उन्हें पीटकर एक गड्ढे में डाल दिया गया। घरों में से सामान, अन्न बर्तन, कपड़ा सब लूट लिया गया। १० आदमी जेल भेजे गये। किसानों के जेल चले जाने पर स्थानीय जमींदारों ने किसानों को उनके खेतों से बेदखल कर दिया, घर फूँक दिये गये। रेलवे लाइन के किनारे के गाँवों पर सामूहिक जुर्माना लगाया गया और जबरदस्ती वसूल किया गया। जनता बराबर शान्त और अहिंसक रही।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आज़मगढ़ भी पीछे न रहा !

डेढ़ वर्ष का दुधमुँहा बच्चा गोदी में ही गोली से मार दिया गया !!

आज़मगढ़ में भी अन्य जिलों की भाँति ही, पुलिस ने जिला काँग्रेस कमेटी के दफ्तर पर अधिकार कर लिया तथा प्रमुख काँग्रेस कार्यकर्त्ताओं में से जो लोग नगर में थे गिरफ्तार कर लिये गये। फ़लत: १० अगस्त को विरोध स्वरूप सारे शहर में हड़ताल रही और प्रात:काल एक विशाल जुलूस निकला जिसमें सभी वर्ग के लोग एकत्र थे। ज्योंही जुलूस अस्पताल के पास पहुँचा सशस्त्र पुलिस, सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलिस और सिटी मजिस्ट्रेट के साथ खड़ी दिखाई पड़ी। मजिस्ट्रेट ने आगे बढ़ने से रोक और कचहरी की ओर जाने से मना किया। पर तब तक न तो जनता को बम्बई के उपद्रव का पता था और न एमरी के भाषण का। अत: जुलूस अबतक एकमात्र प्रदर्शनात्मक ही था। उधर अधिकारियों को होनेवाले उपद्रवों का पता था। अत: वे लोग सशंक थे। वे पूर्णतया गोली चलाने को तैयार होकर आये थे। जनता में तनिक भी उत्तेजना न थी; फिर भी लोग इस निषेध से डट गये। बहुत सम्भव था कि गोली चल जाती पर नवयुवक मैजिस्ट्रेट ने बुद्धिमानी से काम लिया और उसने जुलूस जाने की इजाजत दे दी। जुलूस लौट कर कर्बला के मैदान में एक विशाल सभा के रूप में बदल गया।

उग्र रूप में आन्दोलन का प्रारम्भ

उसके बाद ही आन्दोलन के उग्र रूप का समाचार आया और जिले भर में आन्दोलन ने अपना भीषण स्वरूप धारण कर लिया। तार का काटना और पटरी का हटाना आरम्भ हो गया। आज़मगढ़ स्टेशन के निकट लोग एक मालगाड़ी उलटने में सफल हुए। रानी की सराय के पास एक पैसिंजर ट्रेन के इञ्जन को बेकाम कर दिया। दोहरी घाट से लेकर मऊ और मऊ से शाहगंज के बीच पचासों जगह रेलवे लाइनें उखाड़ी गयीं। बीसों डाकखानों को लोगों ने लूट लिया और फूँक दिया। इन सब कार्यों में जनता सदैव शान्तिमय उपायों से काम लेती रही। उसके बाद जनता का ध्यान थानों पर राष्ट्रीय झण्डे लगाने की ओर गया और आन्दोलन ने उग्र रूप धारण किया।

रामपुर चौकी पर कब्जा

१४ अगस्त की आधी रात को घोसी तहसील में फतहपुर काँग्रेस मण्डल के किसानों की एक सभा हुई और एक मील पर स्थित रामपुर चौकी पर अधिकार करने का निश्चय किया गया। १५ अगस्त

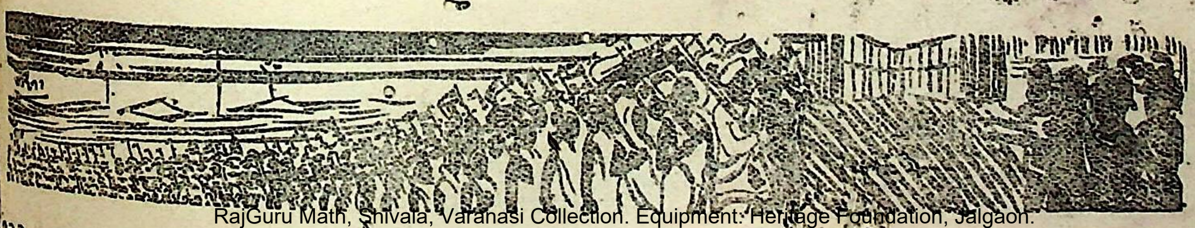

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

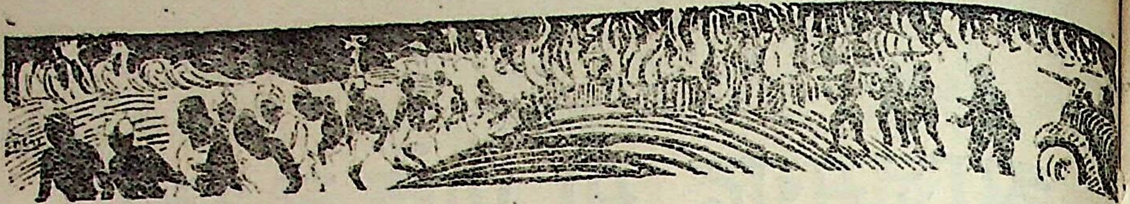

के प्रातःकाल ८ बजे एक हजार की भीड़ ने रामपुर चौकी पर अपना अधिकार कर लिया। चौकी के सिपाही पहले ही भागकर मधुवन के थाने में चले गये थे। जनता ने चौकी के सामान जलाने के बाद वहाँ के डाकखाने के कागजात को जला दिया। पर उत्तेजना में जनता की कर्त्तव्य-बुद्धि नष्ट नहीं हुई थी। उस दिन उस डाकखाने में २५ मनीआडर आये थे। उन मनीआडरों को रुपये सहित जनता ने पोस्टमास्टर के हवाले किया कि वह उसे बँटवा दे।

मधुवन थाने की घटना

डाकखाना फूँककर भीड़ बस्ती नामक ग्रामके कच्चे पोखरेपर पहुँची। वहाँ पहलेसे ही १० हजार की भीड़ एकत्र थी। यह भीड़ उन भूखे किसानों की थी जो ६ सौ बोरा चीनी बेलथरा स्टेशन पर खड़ी मालगाड़ी से लूटकर लाये थे। फलतः उपस्थित जनता ने छककर शर्बत पिया। इसके लिए गाँववालों ने चना और कुम्हारों ने ३६ नाद दिये थे। शर्बत पीकर भीड़ आगे बढ़ी और आगे चलने पर पश्चिम तथा दक्षिणसे कई हजार किसानों की टोलियाँ आकर मिल गयीं। इस प्रकार एक बजते बजते ये लोग मधुबन थानेपर झण्डा लगाने बढ़े। उसी समय बोबीपुर मण्डल, दुबारी मण्डल तथा घोसी मण्डल की भी जनता वहीं पहुँच गयी। इस प्रकार ६०—६५ हजार जनता वहाँ एकत्र हो गयी। लोग हाथी पर राष्ट्रीय नारों के साथ थानेपर पहुँचे और सर्वश्री रामवृक्ष चौबे, मंगलदेव शास्त्री और सुन्दर पाण्डेय, भीड़को थानेसे कुछ दूर पर रोककर थानेदार के पास गये और कहा कि ब्रिटिश शासन खतम हो गया अब जनता का राज्य है। आप आत्मसमर्पण कर दीजिये, हम थानेपर झण्डा लगायेंगे। थानेदार ने ऐसा करने से इनकार किया। ये नवयुवक नेता वापस लौट आये। भीड़ थानेकी ओर बढ़ने लगी।

उधर थाने में भीड़ के आने की खबर पहले ही पहुँच चुकी थी। संयोगवश या सूचना पाकर जिला मजिस्ट्रेट श्री न्यूटन भी भीड़ आनेसे कुछ देर पहले थानेमें पहुँच गये थे। फलतः जनसमूह के आनेसे पहले ही १४ सशस्त्र सिपाही, दो थानेदार और कुछ चौकीदार थानेके भीतर तैनात कर पूरी मोर्चाबन्दी कर ली गयी थी।

अस्तु, भीड़के आगे बढ़ते ही गोली दगनी आरम्भ हुई और लगातार एक बजे से तीन बजे तक निहत्थी जनता पर गोली चलती रही। जनता गोली की परवाह न कर आगे बढ़ती गयी, भागनेवाले वहाँ कम लोग थे। फलतः प्राप्त आँकड़ोंके अनुसार ३४ आदमी तो तत्काल वीरगति को प्राप्त हुए और असंख्य घायल हुए और इन घायल होनेवालों में भी एक सप्ताह के भीतर ४२ आदमी मर गये। इस प्रकार ७६ आदमियों की मौत अबतक निश्चित रूप से ज्ञात हो चुकी है। पर अनुमान किया जाता है कि उनकी वास्तविक संख्या इसके दूनेसे कम न होगी। आतंक के कारण लोगों ने अपने परिवार के मरने वालों के नाम व पते जानबूझ कर छिपाये और अब भी बताना नहीं चाहते। यह भी कहा जाता है कि घायल होनेवालों में दूर के स्थान के लोग भी थे जिनमें से कुछ अपने गाँवपर जाकर अवश्य मर गये

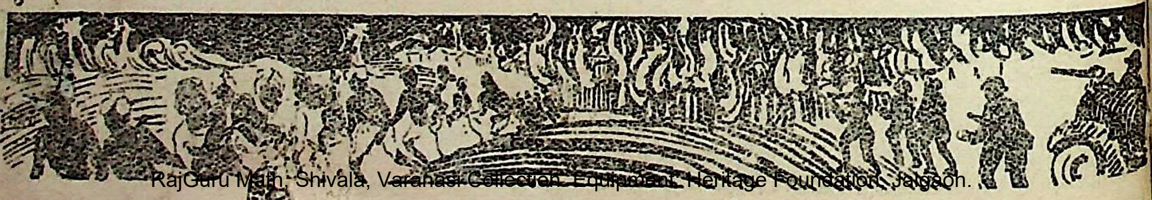

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होंगे। ऐसे लोगों की संख्या का पता लगाना कठिन ही नहीं असम्भव भी है।

इतना होते हुए भी शांतिपूर्वक भीड़ आगे बढ़ती गयी और एक मोर्चे पर खड़े सिपाही की बन्दूक लपक कर छीन ली। कदाचित वह झण्डा लगाने और थाने पर अधिकार करने में भी सफल हो जाती पर किसी ने इस आशय की खबर फैला दी कि सैनिक मशीनगन लेकर आ पहुँचे हैं। फलतः उस समय जनता ने वापस ही जाना उचित समझा। उस समय तक जिस उत्साह के साथ जनता डटी रही, कहा जाता है कि उसकी भूरि भूरि प्रशंसा श्री न्यूटन ने पीछे अपने कुछ मिलनेवालों से की थी। गोली खाकर मरने या घायल होने वालों में शायद ही कोई हो जिसकी पीठ में चोट लगी हो।

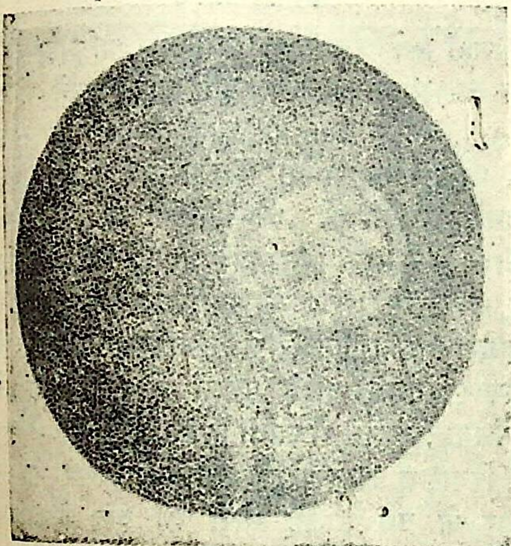

परातों में भी संगीनों के निशाने!

मऊ में क्रान्ति की लहर

मऊ इस जिले का एक बहुत बड़ा व्यापारिक कस्बा है। वहाँ १० से १३ अगस्त तक हड़ताल जुलूस और सभाओं का दौरदौरा रहा। १४ अगस्त को विद्यार्थियों का जुलूस स्टेशन पर गया। वहाँ पर पुलिस ने लाठी चार्ज किया। फलतः आन्दोलन ने उग्र रूप धारण किया तो यहाँ की जनता ने १४ अगस्त की शाम को नोटीफाइड एरिया के दफ्तर पर आक्रमण किया और उसे फूंक दिया। दूसरे दिन १५ अगस्त को जनता का विशाल समूह थाने की ओर झण्डा लगाने के लिए बढ़ा। रास्ते में पुलिस ने उसे रोका। पुलिस का आरोप है कि जनता ने क्रुद्ध होकर ढेला चलाया। जनता का कहना है कि इस प्रकार की अशान्ति नहीं हुई थी। जो भी हो जब जनता ने रुकने से इनकार किया तो पुलिस ने गोली चलायी जिसके फलस्वरूप श्री दुक्खाराम तत्काल शहीद हो गये, श्री कालिका प्रसाद बाद में अस्पताल में जाकर मरे। घायल होनेवालों की संख्या भी काफी थी।

मऊ के निकट एक इन्दारा नामक रेलवे स्टेशन है। स्टेशन के पास ही १४ अगस्त को दोपहर में जनता की एक विशाल सभा हो रही थी। उसी समय मऊ से स्पेशल ट्रेन द्वारा गोरी सेना की एक टुकड़ी पहुँची और सभा में बैठी शान्त और निहत्थी जनता पर गोली चलाना आरम्भ कर दिया। जनता इस अचानक आक्रमण के लिए तैयार न थी। फलतः भाग खड़ी हुई। फिर भी सैनिकों की रक्त पिपासा शान्त न हो सकी। उन्होंने भागती जनता

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का डेढ़ मील तक पीछा किया। फलस्वरूप एक व्यक्ति घटनास्थल पर मर गया और १७-१८ आदमियों को अधिक चोट आयी। सामान्य चोट खाने वालों की कोई गिनती नहीं। जिस समय यह काण्ड हो रहा था उसी समय पास के गाँव से एक स्त्री अपने खेत की ओर जाने को निकली। एक गोरे सैनिक ने उसे ही लक्ष्य कर गोली चला दी जो उसकी गोद के डेढ़ वर्ष के बालक को लगी और वह तत्काल मर गया।

तरवा थाना काण्ड

१४ अगस्त को ही ७-८ हजार की जनता तरवा के थाने पर अधिकार करने के लिये चली। इससे पहले निकट के गाजीपुर जिले में खादात थाने के थानेदार और एक कांस्टेबुल को उत्तेजित जनता ने जला डाला था। इससे यहाँ के थानेदार सशंक थे। ज्यों ही भीड़ थाने पर पहुँची भीड़ के नेता श्री तेजबहादुर सिंह कुछ आदमियों के साथ थाने पर पहुँचे और थानेदार से आत्मसमर्पण की माँग की। उधर जनता ने देखा कि थाने के सिपाही गोली चलाने की तैयारी कर रहे हैं। फलतः परिणाम की प्रतीक्षा किये बिना ही जनता ने पीछे से थाने में घुस कर सिपाहियों को बेकाबू कर दिया और उनकी बन्दूकें छीन लीं। फलतः विवश होकर जनता के सम्मुख थानेदार को अपने सिपाहियों के साथ आत्मसमर्पण कर देना पड़ा। जनता ने थाने के सभी कागज्ञात नष्ट कर दिये और थाने पर झण्डा लगा दिया। पश्चात् कैद किये गये लोगों के संबंध में विचार करने के लिये अदालत कायम हुई। न्यायाधीश श्री जद्दूभर नायक एक वयोवृद्ध अपढ़ सज्जन बनाये गये। जब बन्दी रूप में थानेदार श्री शाहजहाँबख्श उनके सामने उपस्थित किये गये तो उन्होंने थानेदार को अभय देते हुए कहा—"थानेदार भइया! तोहार कुछ ना बिगरी। तू तनिको घबड़ियो मत।" और वे सही सलामत इलाके से बाहर कर दिये गये। आज भी उस क्षेत्र में श्री जद्दू भर के इस न्याय-वाक्य की चर्चा होती रहती है।

महाराजगंज थाने पर कब्जा

महाराजगंज के थाने पर भी दो हजार की जनता ने जाकर अपना अधिकार कर लिया। वहाँ हवालात में बन्द कैदियों को रिहा कर दिया और झण्डा फहरा दिया।

काझा-काण्ड

जहाँ उत्तेजित जनता थानों पर अधिकार करने और डाकखानों को जलाने और तार काटने में रत थी वहाँ वह जनता की सम्पत्ति के प्रति सतर्क भी थी। पर जनता अपना धैर्य काझा स्थित स्टरमर बहनों की सम्पत्ति के प्रति न रख सकी। स्टरमर बहन अंग्रेज हैं और उनकी यह सम्पत्ति १८५७ के स्वातन्त्र्य आन्दोलन के बाद देशभक्त जमींदारों से छीनकर खैरख्वाही के पुरस्कार स्वरूप उनके पूर्वजों को दी गयी थी। ये बहनें स्वतः इंग्लैंड मे रहती हैं पर उनका एक मैनेजर यहाँ रियासत की देखरेख करता है। उसका शासन बिहार के उन निलहे गोरों की याद दिलाता है जिसके अत्याचार से वहाँ के किसान त्राहि-त्राहि कर उठे थे। इस जमींदारी का कोई किसान न तो मैनेजर

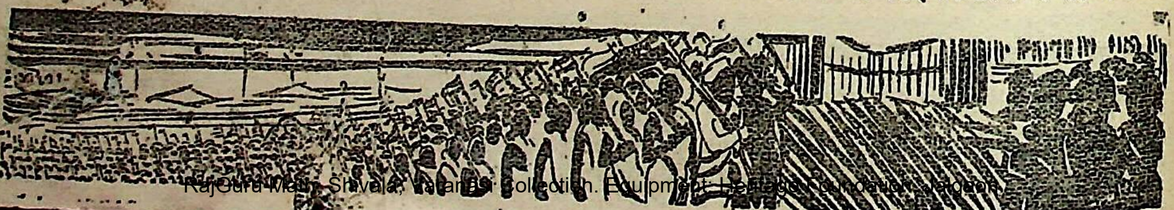

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

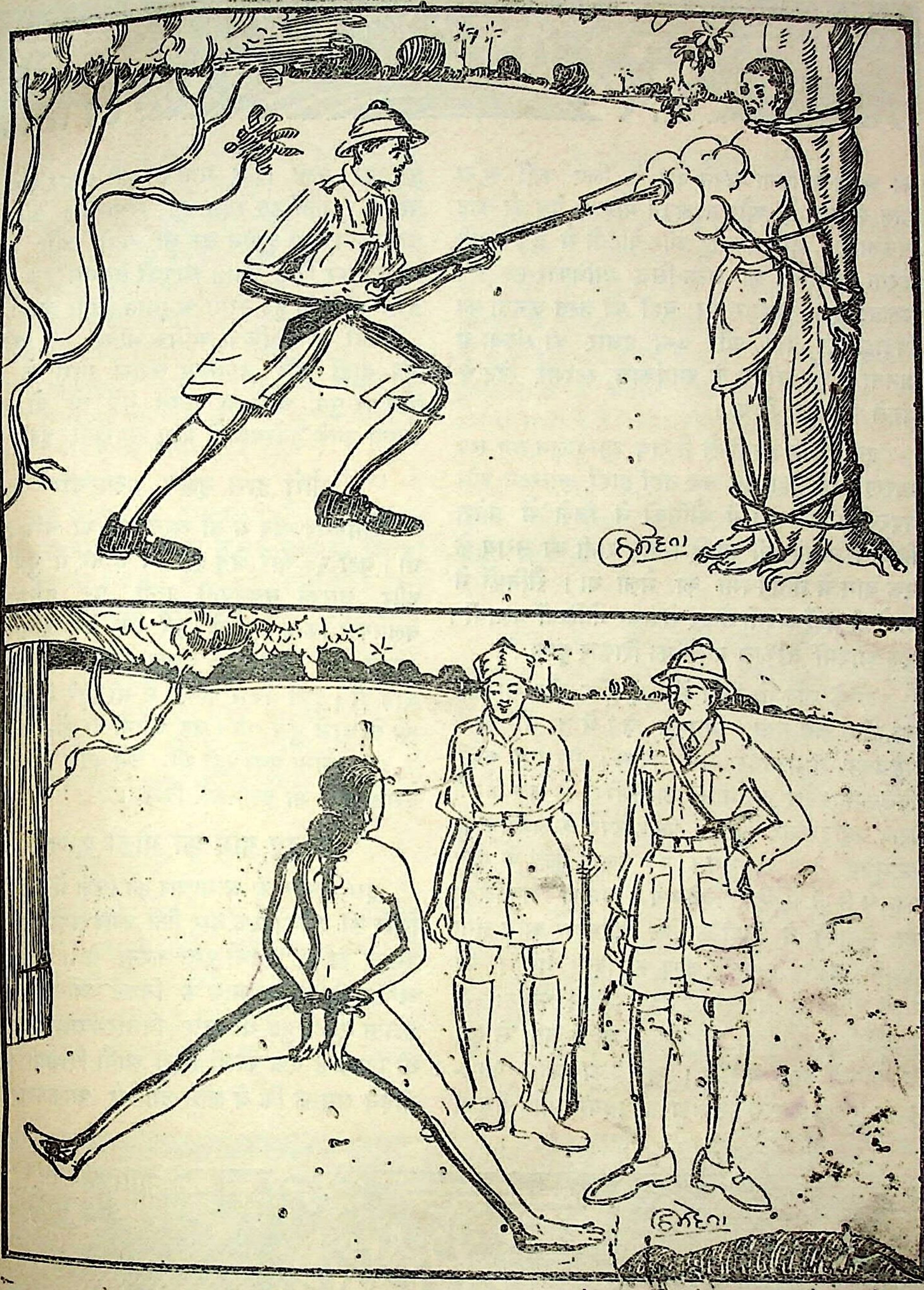

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की आज्ञा के बिना अपने पशु के लिए कहीं खूँटा गाड़ सकता है और न अपने मौरूसी पेड़ को काट सकता है। गाँव की बहू और बेटियों से छेड़ खानी करना कारिन्दों का जन्म-सिद्ध अधिकार-सा है। फलतः इस अवसर पर वहाँ की त्रस्त जनता का विद्रोह फूट पड़ा और ७-८ हजार की संख्या में जनता ने १६ अगस्त के सायंकाल स्टरमर स्टेट के बंगले पर धावा किया।

इस प्रकार इस जिले में जब आन्दोलन उग्र रूप धारण कर रहा था तब यहाँ हार्डी, जान्स्टन और नेदरसोल के नेतृत्व में सैनिकों ने जिले में प्रवेश किया। नागपंचमी का दिन था। रानी की सराय के एक बाग में नागपंचमी का मेला था। सैनिकों ने आते ही वहाँ अपनी मोटर रोककर गोलियाँ चलायीं। एक आदमी तत्काल गोली का शिकार हुआ।

इसके बाद तो जिले में लूट, फूँक और मारपीट का ताँता लग गया। मधुबन क्षेत्र में तो सैनिकों ने पहुँचकर लंकाकाण्ड मचा दिया। सूरजपुर के सुविख्यात रईस वर्तमान काशीनरेश के कुल के श्री शिव बहादुरसिंह का २५ हजार रुपये के लगभग का आभूषण उठा ले गये। २० हजार मूल्य के झाड़ फानूस मिट्टी में मिला दिये गये। उनकी अट्टालिका को सैनिकों ने मिट्टी का तेल छिड़ककर आग लगा दिया। उसका दरवाजा बन्द कर दिया गया। घर में से लोगों को निकलने न दिया गया। फलतः उक्त सज्जन के ८ और १० वर्षीय दो बच्चों ने छत से कूद कर अपनी जान बचायी। खाद का कार्य करनेवाला गुरुकुल जलाकर राख कर दिया गया। समूचा कुतुबपुर जला दिया गया। इसी प्रकार मऊ में वहां के सुप्रतिष्ठित रईस श्री राधारमण अग्रवाल का मकान तथा दूकान लूट ली गयी और घरको नष्टभ्रष्ट कर दिया गया। आपकी लगभग एक लाख रुपये की हानि हुई, ऐसा अनुमान किया जाता है।

यहाँ की प्रतिक्रिया अधिक भीषण रही क्योंकि जब हार्डी और जानस्टन सशस्त्र गोरों के साथ थाने पर पुनः अधिकार करने गये तो दो हजार जनता उनके मुकाबले के लिए आ खड़ी हुई।

गोरों द्वारा नृशंस अत्याचार

रामनगर गाँव में तो अत्याचार की चरम सीमा थी। वहाँ २० गोरे चेतू हरिजन के घर में घुस गये और उसकी नवयुवती पत्नी पर कल्पनातीत बलात्कार किया। इसके पूर्व कि उन हत्यारों से उसकी रक्षा की जा सके उसने स्वतः यह दुनियाँ छोड़ दी। इसी प्रकार काझा में भी गोरे सैनिक एक स्त्री के घरमें घुस गये। वह अपनी दो छोटी बच्चियों के साथ खाना पका रही थी। उसे पकड़ लिया और उसके साथ भी बलात्कार किया।

पटवध ग्राम का गोली काण्ड

इस प्रकार के अत्याचार को जिले में होते देख जिले की जनता एक बार फिर उभड़ पड़ी। इस बार उसका उद्देश्य अपनी रक्षा करना था। फलतः २३ अगस्त को पटवध ग्राम के निकट आस पास की जनता एकत्र हुई थी और विचार-विमर्श कर रही थी कि उन्हें एक फौजी लारी आती दिखायी पड़ी। भीड़ने समझा कि वे लोग उन पर आक्रमण करने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Lucknow

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आ रहे हैं। फलतः वे लोग सड़क घेर कर खड़े हो गये और लारियों को घेर लिया। प्रतिरोध का पूर्ण साधन अपने पास न देख उन्होंने कहा कि हम लोग किसी प्रकार की हानि पहुँचाने नहीं आये हैं। हम वापस जाते हैं, आप लोग चले जायँ। भीड़ने कहा पहले वापस जावो तब हम हटेंगे। पर भीड़ कुछ दूर गयी होगी कि सैनिकों ने गोली चलानी शुरू कर दी। फलस्वरूप तीन आदमी और पासके ही खेत में चरती हुई एक भैंस और एक सुअर तत्काल मर गये। घायल भी काफी लोग हुए।

इसी प्रकार २३ अगस्त को अतरौलिया के डाक बङ्गले के पास श्री रामचरित्र सिंह के सभा-पतित्व में दो बजे दिन में एक सभा हो रही थी जिसमें लगभग ५ हजार की जनता एकत्र थी। इतने में एक सबडिविजनल मजिस्ट्रेट फौज लेकर पहुँचे और सभा को भंग होने की आज्ञा दी। सभा भंग नहीं होने पर गोली चलाई गई। फलस्वरूप खीरीडीहा के श्री देवराज शर्मा तत्काल मौत के शिकार हुए और उसी गाँव के श्री देवनाथ शर्मा कुछ दिनों बाद मर गये। और अनेक लोग बुरी तरह घायल हुये।

जनता दमन से भी न दबी

अत्याचारों द्वारा जब जनता दबा दी गयी तो प्रत्यक्षतः वह दब-सी गयी जान पड़ने लगी पर वस्तुतः दबी नहीं और उसका कार्य जारी रहा। नवम्बर १९४२ में एकाएक एक दिन रात को जनता की बहुत बड़ी भीड़ने खुरहट स्टेशन पर धावा किया।

आन्दोलन में अपार क्षति

इस आन्दोलन के दमन करने में २०५ मकान फूँके गये। अकेले मधुबन के क्षेत्र में १५० फूँके गये। जिला कांग्रेस कमेटी द्वारा एकत्र आँकड़े के अनुसार ३ लाख ५२ हजार की हानि लूट फूँक से हुई। जिले पर १ लाख ६० हजार जुर्माना हुआ, १०७ के लगभग आदमी मरे। घायलों की संख्या असंख्य है। ३८० व्यक्तियों पर मुकदमा चला जिनमें से २३१ को ६ मास के काले पानी तक की सजा दी गयी। हार्डीने तो कितने ही निरपराध लोगों को पकड़ कर बेंत लगवाये जिनकी कड़ी आलोचना सेशन जजने अपने फैसले में की थी।

अमिला में श्री अलगूराय शास्त्री की भावज ने जो वीरता दिखाई, वह भी इस आन्दोलन की एक स्मरणीय घटना है। सेना उनके मकान को फूँकने पहुँची। जब उनके ७६ वर्ष के बूढ़े पिता को बन्दूक के कुन्दों से चोट पहुँचाकर सैनिक मकान में घुसे और मकान का सारा सामान कमरों में से निकाल कर आँगन में होली जलानी चाही, तो उस समय शास्त्रीजी की भावज उन सामानों के ऊपर डटकर बैठ गईं और बोलीं—"पहले मुझे फूँको, पीछे, सामान फूँकना।" उनकी निर्भीकता देखकर गोरों की हिम्मत न हुई कि वे आग लगाते। अतः बिना आग लगाए ही कुछ सामान लेकर वे जाने लगे। उस समय भी उन्होंने उनके हाथ से सामान छीन कर निर्भीकता का परिचय दिया।

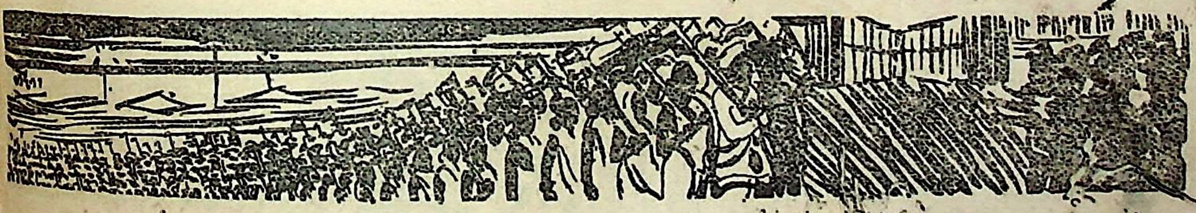

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गाजीपुर में क्या हुआ ?

पानी की जगह कुल्हड़ में पेशाब दिया गया !

कांग्रेस के नेताओं की गिरफ्तारी का समाचार जब गाजीपुर नगर में पहुँचा तो वहाँ भी उसी प्रकार की प्रतिक्रिया हुई जिस प्रकार अन्यत्र हुई थी। १० अगस्त को गिरफ्तारी की खबर मिलने पर नगर में पूर्ण हड़ताल रही, जुलूस निकला और सभा हुई। उसके बाद के दो-तीन दिनों तक जिले के कोने-कोने में शान्तिमय तरीकों से विरोध का प्रदर्शन होता रहा। किन्तु जब समाचार-पत्रों में बम्बई से उग्र रूप में विरोध प्रदर्शन के समाचार आये और लोगों ने एमरी का भाषण पढ़ा तो लोगों के रुख में एकदम परिवर्तन हो गया। जनता ने एकदम विकराल रूप धारण कर लिया।

यातायात नष्ट

जिले भर में यातायात के सभी साधन नष्ट करने का प्रयत्न आरम्भ हुआ। तार काट डाले गये। तार के खम्भे उखाड़ डाले गये। जिले के प्राय: सभी डाकखाने नष्ट कर दिये या जला डाले गये। सड़कों पर के पुल भी यत्रतत्र तोड़ डाले और रेल के प्राय: सभी स्टेशन जला डाले गये। आरम्भ में तो लोगों ने रेलगाड़ियों पर अधिकार कर लिया था, बिना जनता की आज्ञा के ड्राइवर रेलगाड़ियाँ नहीं ले जा सकता था। गाजीपुर की जनता ने रेलगाड़ियों पर ही सवार होकर राजवाड़ी (बनारस) का हवाई अड्डा और जौनपुर के कुछ स्टेशनों को नष्ट किया था। पीछे उसने कई इञ्जनों को बेकाम कर दिया और रेल की पटरियाँ उखाड़कर यातायात के साधन एकदम नष्ट कर दिये गये। स्टेशनों पर युद्ध सामग्री से भरी जो मालगाड़ी मिली उसे जनता ने नष्ट कर दिया। नन्दगंज स्टेशन पर जनता को सैनिकों का सामना करना पड़ा। सैनिकों ने निहत्थी जनता पर अन्धाधुन्ध गोलियाँ चलायीं जिसके फलस्वरूप कितने आदमी मरे यह कहा नहीं जा सकता। पर अनुमान किया जाता है कि कम से कम ७०-८० आदमी तो निश्चय ही मरे। घायलों की संख्या कई सौ अनुमान की जाती है। सादात और जमानिया स्टेशन पर भी जनता को गोलियों का सामना करना पड़ा। दोनों जगह एक-एक नवयुवक गोलियों के शिकार हुए।

जिले के थानों पर कब्जा

यातायात के साधन नष्ट करने के साथ-साथ लोगों का ध्यान सरकारी इमारतों पर झण्डा लगाने और पुलिस-विभाग पर अधिकार करने की ओर गया। फलस्वरूप कई हजार की संख्या में जनता ने एकत्र होकर जिले के प्रत्येक थाने पर आक्रमण किया। प्राय: सभी स्थानों पर पुलिस ने जनता के सम्मुख आत्मसमर्पण कर दिया। कई थानों की पुलिस ने तो अपनी बन्दूकों तथा अन्य हथियार भी सौंप दिये। ऐसे स्थानों पर थानों की इमारतें या तो नष्ट कर दी गयीं या जला दी गयीं। पर कुछ ऐसे भी स्थान थे जहाँ अधिकारियों ने आत्मसमर्पण नहीं किया।

सादात थाने की घटना

१५ अगस्त को गाजीपुर नगर में विद्यार्थियों का बहुत बड़ा जलूस निकला। यह जलूस कोतवाली पर झण्डा फहराना चाहता था। पर पुलिस ने उसे रोक कर उस पर लाठी-चार्ज किया। इसी प्रकार सादात

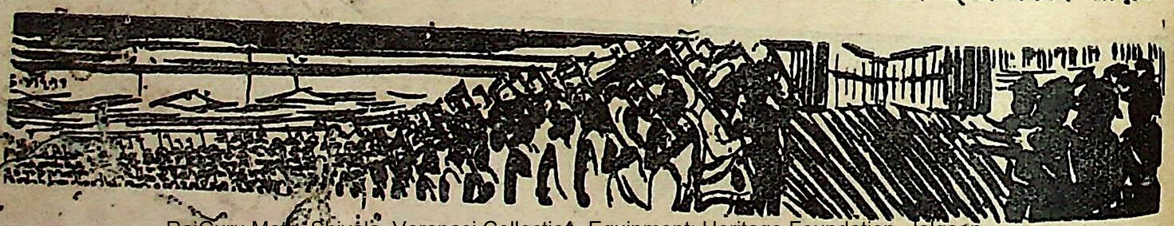

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

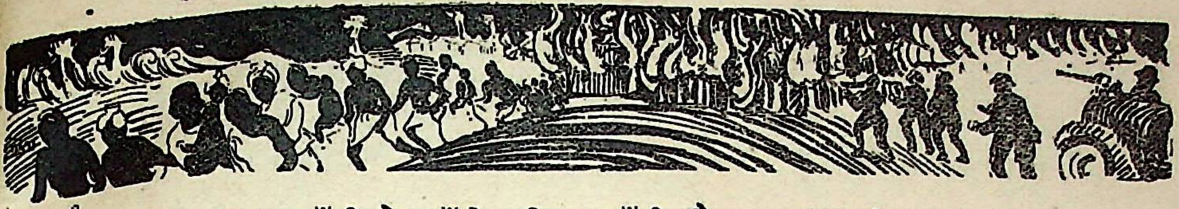

के थाने पर जब जनता पहुँची तो वहाँ के अधिकारियों ने भीड़ पर गोलियाँ बरसायीं। जनता ने पूर्ण शान्ति के साथ गोलियाँ खायीं। पर जब गोलियाँ समाप्त हो गयीं और थानेदार और सिपाही निशस्त्र हो गये तब उन्हें आत्मसमर्पण करना पड़ा। पर उस समय जनता शान्त न रह सकी। उसकी प्रतिहिंसा की प्रवृत्ति जाग उठी। उसने उन्हें थाने में बन्द कर जला दिया जिससे थानेदार और एक सिपाही जल मरे।

मुहम्मदाबाद गोलीकाण्ड

इसके बाद कचहरियों की बारी आयी। सैदपुर के तहसीलदार तथा सब-डिविजनल अफसर ने जनता के हाथ आत्मसमर्पण कर दिया और जनता ने इमारत पर झण्डा फहराकर अपने विजय का प्रदर्शन किया। पर मुहम्मदाबाद में जनता को गोलियों का सामना करना पड़ा जिसमें ६ वीर काम आये।

शेरपुर की जनता की वीरता

गाजीपुर जिले के इस आन्दोलन में शेरपुर की जनताने सबसे अधिक भाग लिया और उसे ही सब से अधिक त्याग भी करना पड़ा। शेरपुर ग्राम गाजीपुर नगर से लगभग १८ मील पूरब और बलिया जानेवाली पक्की सड़क के दक्षिण तीन मीलपर गङ्गा के किनारे स्थित है। बरसात के दिनों में बरसात के पानी तथा गङ्गा की बाढ़ के कारण यह गाँव एक द्वीप सदृश हो जाता है। आन्दोलन के दिनों में इसकी यही अवस्था थी। वह प्रायः जिले के अन्य भागों से कटा हुआ था; अतः यहां खबर देर से पहुँची और जब पहुँची तो उसकी प्रतिक्रिया भीषण रूपसे हुई।

१४ अगस्त को इस गाँवकी जनताने मुहम्मदाबाद के रेलवे स्टेशन और शहबाज-कुली के हवाई अड्डे पर धावा किया। रेलवे स्टेशन पर अधिकार कर लिया। अड्डे पर भीड़ को गोलियों का सामना करना पड़ा। फलस्वरूप नेता श्री यमुना गिरि घायल होकर गिर पड़े और गिरफ्तार कर लिए गये। जब शाम को यह खबर गाँव में पहुँची तो लोगों में एक सनसनी फैल गयी और लोग क्रुद्ध हो उठे। उसी समय लोगोंने एकत्र होकर हवाई अड्डे-पर अधिकार करने का दृढ़ निश्चय किया। फलस्वरूप आधी रात को जब काली घटा छायी हुई थी, रह रहकर बूँदा-बाँदी भी हो रही थी, ५०० आदमी गाँव से बाहर निकले। इन लोगों को तीन मीलों तक कहीं नाव से नाला पार करना पड़ा, कहीं नावके अभाव में तैरना पड़ा और कहीं घुटने भर और कहीं छाती भर पानी में घुसकर जाना पड़ा। पर ये विघ्न-बाधायें उन्हें रोक न सकीं और सुबह होते-होते ये लोग हरिहर पहुँचे और वहाँ की जनता को साथ लेकर बढ़े। पर जब अड्डे पर पहुँचे तो मालूम हुआ कि अधिकारी पहले ही अड्डा छोड़कर चले गये हैं। अतः अड्डे को नष्ट-भ्रष्टकर लोग गाँव को लौटे। इस प्रकार यह गाँव नित्य कहीं-न-कहीं विध्वंसात्मक कार्य शान्तिमय-ढंग से करता रहा।

मुहम्मदाबाद में अहिंसक जनता पर गोली

१८ अगस्त को लोगों ने मुहम्मदाबाद के तहसील पर अधिकार जमाने का निश्चय किया

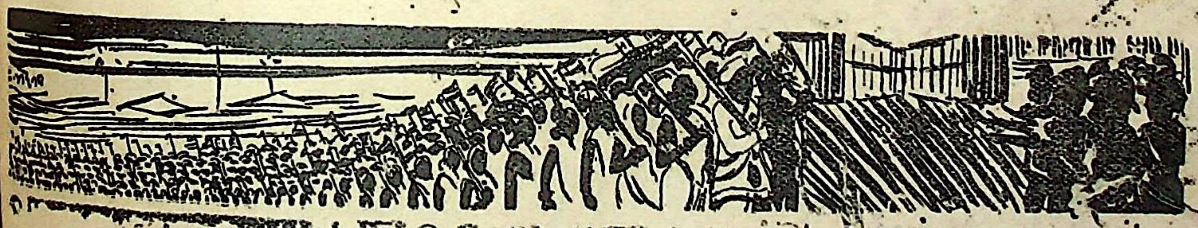

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और १००० आदमियों का जत्था गांव से बाहर निकला। पानीवाला रास्ता तय कर जत्थे के नवयुवक नायक डाक्टर शिवपूजन राय ने जनता से कहा कि कोई भी अपने साथ लाठी, डण्डा या अन्य किसी किस्मका अस्त्र न ले चले। लोगों से उसने अहिंसात्मक ढंगं से रहने की अपील की और तहसील की ओर रवाना हुए। तहसील पर पहुँचकर ३० युवकों की एक टोली पीछे की ओर से घुसने के लिए अलग होगयी और शेष लोग डाक्टर शिवपूजन रायके नेतृत्वमें सामने के फाटक से घुसने के लिए चले। छोटी टोली तहसील पर नारा लगाती हुई पहुँची और तहसील के भीतर घुस गयी। घुसते ही पुलिस ने, जो पहले से ही तैयार थी, गोली चलाना आरम्भ कर दिया। इतने में बड़ी टोली पहुँची। फलस्वरूप, डाक्टर शिवपूजन राय तथा उनके साथ ५ अन्य सर्वश्री वशिष्ठनारायण, वंशनारायण, राजाराम राय, ऋषिश्वर राय, नारायण राय, तत्काल वीर गति को प्राप्त हुए। श्री वंशनारायण राय और श्री रामबदन उपाध्याय की मृत्यु अस्पताल में हुई। घायलों की संख्या असंख्य थी। किन्तु अधिकारियों को गोली चलाकर ही सन्तोष नहीं हुआ। उन्होंने शहीदों की लाश को नदी में फेंक दिया। इस प्रकार जनता पराजित हो गयी पर इस पराजय में भी उसकी जीत थी। दूसरे दिन तहसील तथा थाने के अधिकारी वर्ग तहसील और थाना छोड़ शहर चले गये।

तीन दिनों का स्वातंत्र्य

इस प्रकार शासन को पंगु बना कर तीन दिन १९, २० और २१ अगस्त को जनता ब्रिटिश शासन से मुक्त होकर स्वतंत्र रही और जिले में स्थान-स्थान पर कांग्रेस कार्यकर्ताओं के उद्योग से जनता की शान्ति एवं सुरक्षा की व्यवस्था पंचायत द्वारा होने लगी। उन तीन दिनों की जो सुन्दर व्यवस्था थी वह यद्यपि अब कहानी बन गयी है तथापि उसे बखानते आज भी लोग नहीं अघाते। पर यह अलौकिक सुख अधिक दिनों तक नहीं रहा। तीन दिन के बाद ही ब्रिटिश सैनिकों ने 'नेदरसोल और हार्डी के नेतृत्व में जिले में प्रवेश किया।

स्त्रियों के गहने बलात् उतारे गये

रेल का रास्ता नष्ट हो चुका था। अतः इन लोगों ने बनारस जिले में गोमती नदी को पार किया और इस जिले में प्रवेश करते ही रामपुर गाँव के निहत्थे लोगों के ऊपर टूट पड़े और बुरी तरह लोगों को पीटा, लूटा और घर जलाया, फिर तो यह जिले के कोने-कोने में होने लगा। शेरपुर में तो इन लोगों के अत्याचार की सीमा ही नहीं थी। २९ अगस्त को बलूची सेना स्टीमर द्वारा रामपुर पहुँची। जनता को उनके आने की खबर पहले ही लग गयी थी। पहले तो लोग लाठी के बल पर मुकाबला करने की तैयारी करने लगे पर कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने उनके जोश को सम्हाला और लोगों ने हिंसात्मक विरोध की भावना त्याग दी। सेना ने गाँव में प्रवेश कर अन्धाधुन्ध गोली चलाना आरम्भ कर दिया जिससे दो आदमी श्री रमाशंकर लाल और श्री शोभाराम मरे और सैकड़ों घायल हुये। फिर लूट की बारी आयी जो सुबह सात बजे से शाम को सात बजे तक लूट होती रही और लगभग ३ लाख की सम्पत्ति लूटी गयी। स्त्रियों के शरीर परसे गहने जबरदस्ती उतारे

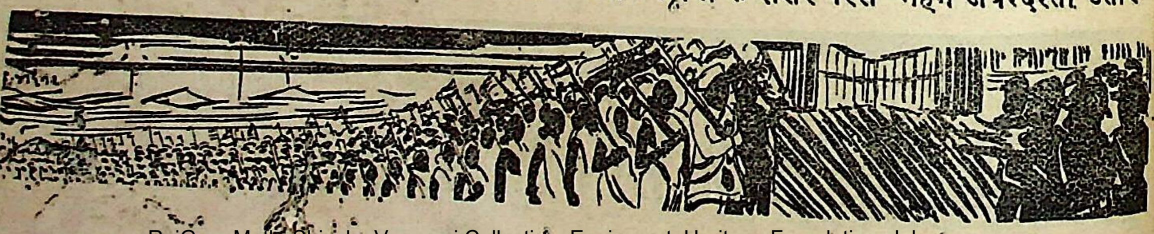

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गये जिसके कारण उनके नाक कान कट गये । उनके साथ जिस प्रकार का व्यवहार किया उसका उदाहरण यह है कि श्रीमती राधिका देवी को सिपाहियों ने पानी के गढ़े में ढकेल दिया जहाँ वे डूब मरीं ।

गहमर में अत्याचार

गहमर गाँव की कहानी भी इसीसे मिलतीजुलती है। १ सितम्बर को प्रातःकाल बहुत बड़ी संख्या में बलूची सेनाने गाँव में प्रवेश किया और गाँव को घेर लिया। फिर गोली चलाना आरम्भ किया जिसके फलस्वरूप श्री दूधनाथ सिंह और दारोगा सिंह शहीद हो गये। अनेक लोग घायल हुए। राजाराम सिंह की छावनी को डाइनामाइट लगाकर उड़ा दिया गया। इसके बाद लूट-फूँक की बारी आयी । स्त्रियों के नाक कानके गहने छीन लिए गये। इस गाँव में लगभग एक लाख रुपये की सम्पत्ति लूट ली गयी और नष्ट की गयी।

कासमाबाद, सादात, नन्दगंज मर्दह के आस-पास प्रायः सभी गाँवों की यही अवस्था रही। सभी जगह में जिस घृणित ढंग से अत्याचार किये गये, उनका सत्य एवं विस्तृत विवरण स्वतंत्र भारत में ही सम्भव होगा।

नन्दगंज थाने के अन्तर्गत एक गाँव की घटना है। २४ अगस्त १९४२ को चार यूरोपियन सैनिक करीब १५० सशस्त्र सैनिकों के साथ पहुँचे। साथ में नन्दगंज थाने का दारोगा भी था। गाँव के लोगों को बन्दूकों के बल पर हुक्म दिया गया कि वे गाँव छोड़ कर कच्ची सड़क पर, जो उस गाँव के समीप से होकर जाती है, इकट्ठे हो जाँय। कुछ सैनिकों को वहीं छोड़कर चारों यूरोपियन अन्य सैनिकों के साथ गाँव में घुसे। स्त्रियों को धमका कर घरों से बाहर निकाला गया। उनके शरीर पर के सभी गहनों को जबर्दस्ती उतार लिया गया। इसके बाद लूट-पाट शुरू हुई। सभी घर लूटे गए और फिर करीब २० घरों में आग लगा दी गई। तब सैनिक सड़क पर आए। १२ वर्ष से कम उम्र के बच्चों को हटा दिया गया। इसके बाद गाँव के सभी लोगों के कपड़े उतरवा लिए गए। उन्हें मेढ़क की तरह बैठ जाने का हुक्म दिया गया। बाँस के एक डण्डे को कुछ हिस्सों में तोड़ कर प्रत्येक मनुष्य की नंगी पीठ पर पाँच-पाँच बार मारा गया। एक मनुष्य ने इसका विरोध किया तो उसे पेड़ में बाँध कर २० डण्डे मारे गए। इसके बाद गाँव के तीन अन्य मनुष्यों के साथ उसे भी सैनिक गिरफ्तार कर ले गए।

यह बात याद रखने की है कि उपरोक्त गाँव के समीप जनता ने किसी भी प्रकार का लूट-पाट या तोड़-फोड़ नहीं किया था।

काशी से एक पत्रकार श्री विक्रमादित्य सिंह एक चपरासी के साथ १९ अगस्त को पूर्वी जिलों की वास्तविक स्थिति का पता लगाने के लिए साइकिल से रवाना हुए। उनका वर्णन है कि रास्ते में उन्हें जितने गाँव मिले सभी अत्यधिक आतंकग्रस्त थे। पुलिस गाँव के गाँव लूट रही थी और आग लगा रही थी। उन्हें जगह जगह सड़कें कटी हुई और पुल टूटे हुए मिले। बेचारे बड़ी मुश्किल से अपना परिचय-पत्र रास्ते में मिलने वाले फौजी

Jangamwadi Math, Shaiva, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अफसरों को दिखाते हुए, गाजीपुर जिले के सैदपुर भीतरी तक पहुँच सके ! वहाँ मिस्टर नेदरसोल, जो बाद में अपनी इन करतूतों के पुरस्कार स्वरूप बनारस के कमिश्नर बना दिये गये, अपने दलबल सहित उपस्थित थे और उनकी मौजूदगी में गाँव लूटे-जलाये जा रहे थे, लोगों को पेड़ों से बाँधकर कोड़े लगाये जा रहे थे और परिवार के पुरुषों के सामने ही उनकी बहू-बेटियों की इज्जत लूटी जा रही थी। श्री विक्रमादित्यसिंह और उनके चपरासी भी वहाँ से बचकर आगे नहीं जा सके। उन दोनों को पकड़ कर मिस्टर नेदरसोल के सामने पेश किया गया। मिस्टर नेदरसोल ने उनका परिचय पत्र देखा और फिर कहा "Oh ! I see, you work in the "Aj" that bloody paper edited by bloody Kamalapati ! you can not be let off !" (ओह ! समझा तुम उस बदमाश आज अखबार में काम करते हो, जिसका सम्पादक वही कमलापति है। तुम्हें जाने नहीं दिया जा सकता।) बस, इसके बाद क्या पूछना था ! बेचारे विक्रमादित्यजी और उनके चपरासी पर मार पड़ने लगी। घण्टों मार खाने के बाद जब वे बेहोश हो गये तो उन्हें हवालात में बन्द कर दिया गया। होश आने पर उन्होंने देखा कि उन्हीं के साथ बन्द एक सज्जन, जो देखने में बड़े सम्पन्न परिवार के मालूम होते थे, पहरे के कांस्टेबिल से पानी माँग रहे हैं। इसके जवाब में उक्त कांस्टेबिल ने एक कुल्हड़ में पेशाब कर उन्हें थमा दिया। उनके साथ हवालात में लगभग ३० व्यक्ति और बन्द थे। किसी का अपराध यह था कि उसके बेटे ने आन्दोलन के भाग लिया था, तो किसी का यह अपराध था कि उसके भाई ने अन्दोलन में भाग लिया था। सबको दोपहर के तपती धूप में घण्टों मुर्गा बनाया जाता था और उसके बाद लात-जूते और घूसे तथा लाठियों से मारा जाता था। सभी व्यक्ति एक से एक धनी और हाथीनशीन थे। इनमें ऐसे लोग भी थे जो सरकार-परस्ती के लिए अपने क्षेत्र में प्रसिद्ध थे।

बन्दियों को मार पीट लेने के बाद उन्हें सुनाया जाता था कि उनके घर की बहू-बेटियों को किस तरह खुले मैदान में हजारों आदमियों के सामने बेइज्जत किया गया और उनके घर को किस प्रकार लूटकर उसमें आग लगा दी गयी।

सामूहिक जुर्माने की वसूली

इन सब के साथ सामूहिक जुर्माने की वसूली के लिए जो कुछ किया गया, वह भी किसी हिटलरी अत्याचार से कम नहीं है। एक बार खूब मजे में लोगों को लूट लेने और घर-बार जला डालने के बाद लोगों पर सामूहिक जुर्माना किया गया। जिस गाँव से कम रकम वसूल होती थी या वसूल होने में देर होती थी, उन गाँवों पर वही अत्याचार किये जाते थे जो आन्दोलन को कुचलने के लिए किये गए।

Rajguru Math, Shivala Varanasi Collection. Equipment Heritage Foundation Funding

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डेढ़ बरस का

बच्चा उलटा लटकाकर जलाया गया

स्त्रियों को केश पकड़कर घसीटा गया !!

९ अगस्त को काशी में समाचार पहुँचा कि काँग्रेस के सभी बड़े नेता गिरफ्तार कर किसी अज्ञात स्थान को भेज दिए गए। इस समाचार को सुनते ही काशी की जनता विक्षुब्ध हो उठी। प्रतिक्रिया स्वरूप बात की बात में सारे शहर में हड़ताल हो गई।

उसी दिन तीसरे पहर काशी हिन्दू-विश्व-विद्यालय के छात्रों का एक जुलूस वहाँ से चलकर दशाश्वमेध आया और वहाँ से काँग्रेस के अन्य कार्य-कर्त्ताओं के साथ नारे लगाता हुआ टाउन हॉल पहुँचा तथा सभा के रूप में परिणत होगया। विश्व-विद्यालय के प्रोफेसर डॉक्टर गैरोला की अध्यक्षता में सभा का कार्य प्रारंभ हुआ। सभा में बम्बई अधिवेशन का ८ अगस्त-वाला प्रस्ताव दुहराया गया और उसी के अनुकूल भविष्य के आन्दोलन का कार्यक्रम तैयार किया गया। इसके बाद सभा भंग हो गई।

दूसरे दिन, १० अगस्त को, तत्कालीन भारत-मंत्री मि० एमरी का दमनात्मक वक्तव्य सामने आया और उसके अनुसार कुछ और काँग्रेस-कार्यकर्त्ता गिरफ्तार हुए। इस पर काशी में तथा जिले में बैठकें हुईं और हड़ताल तथा सरकारी इमारतों पर राष्ट्रीय-झण्डा लगाने का कार्यक्रम निश्चित किया गया।

तदनुसार शहर के विभिन्न मुहल्लों से जुलूस निकले। विश्व-विद्यालय के छात्रों का एक जुलूस वहाँ से चल कर आया और जनता के साथ मिल कर एक होगया। इसके बाद यह जुलूस दीवानी-फौजदारी कचहरी की तरफ चला।

पहला लाठी-चार्ज

फौजदारी अदालत के अहाते में उस समय पुलिस के साथ सुपरिण्टेण्डेंट श्री निगम, रायबहादुर रमाकान्त, अतिरिक्त जिला मैजिस्ट्रेट पं० ओंकारनाथ मिश्र और लाइन-इंस्पेक्टर मि० टीजडेल उपस्थित थे। जुलूस के वहाँ पहुँचते ही वह पुलिस द्वारा रोक दिया गया। अधिकारियों ने जुलूस को लौट जाने की आज्ञा दी; किन्तु, पूर्ण अहिंसावादी वीरों ने लौटने से इनकार कर दिया। इस पर मैजिस्ट्रेट महोदयने लाठी-चार्ज को आज्ञा दी और मि० टीजडेलने पहला प्रहार किया। फिर तो लाठियोंकी वर्षा होने लगी। अन्तमें जुलूस तितर-बितर हो गया। यह काशी में तत्कालीन पहला दमन था। इस समाचार ने शहर तथा जिले में भयानक विक्षोभ उत्पन्न कर दिया।

अदालत पर तिरंगा झण्डा

यह लाठी-चार्ज सरकार की चुनौती के रूप में ग्रहण किया गया। फलस्वरूप दूसरे दिन ११ अगस्त को छोटे-छोटे जत्थे शहर में घूमते और 'पुलिसवाले हमारे भाई हैं', 'हम आजाद हैं', इत्यादि नारे लगाते रहे। उधर विश्व-विद्यालय के छात्रों ने एक वृहत् जुलूस तैयार किया। यह जुलूस सरकारी इमारत पर झण्डा लगाने तथा लाठी और दमन का सामना करने के लिए कमर कस कर, तैयार हो, अदालत की तरफ फिर बढ़ा।

कोई दस हजार की संख्या का वह जुलूस उस दिन बड़ा ही भयानक था। सभी के चेहरे पर प्रतिशोध की भावना थी। कुछ लोगों का कहना है कि उस दिन जिला मैजिस्ट्रेट मि० फिनले डर कर शान्त हो गए थे और कुछ का कहना है कि वे उस दिन दयालु थे। जो हो, उस दिन के जुलूस ने वहाँ पहुँच कर दीवानी और फौजदारी अदालत की दोनों इमारतों पर तिरंगा झण्डा फहराया। अधिकारी सशस्त्र होने पर भी शान्त रहे।

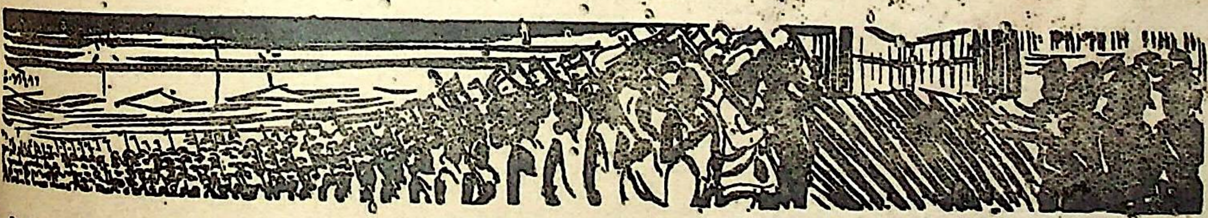

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नाजियों की बर्बरता भी मात !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

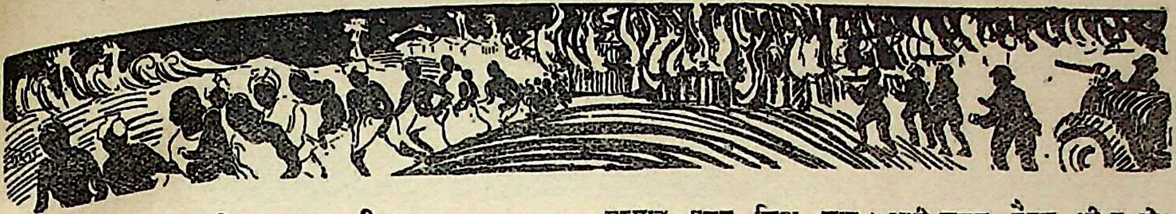

छात्र की अनुपम वीरता

उस छात्र की प्रशंसा किए बिना नहीं रहा जा सकता, जिसने अनुपम साहस के साथ दीवानी इमारत पर झण्डा फहराया। बात यों हुई कि जुलूस के पहुँचने के पहले ही खबर पाते ही अधिकारियों ने समूची इमारत की सभी राहें बंद करवा ली थीं। फलतः जब कई छात्र ऊपर पहुँचने में असमर्थ रहे, तो अधिकारी व्यंग्य की मुस्कुराहट से गर्व प्रकट करने लगे। यह भाव एक वीर दुबले-पतले छात्र को सह्य न हुआ और वह झण्डा लेकर आगे आया। इमारत की खड़ी दीवार पर निकले हुए ईंटों के सहारे वह साहसी युवक ऊपर चढ़ने लगा। पहले तो लोगों ने समझा कि वह ऊपर न चढ़ पावेगा; फिर कुछ ऊँचाई पर पहुँचने पर लोगों ने समझा कि वह छात्र गिर कर अपनी जान गँवाना चाहता है। लेकिन, जब उसने क्रमशः ऊपर पहुँच कर पताका-दण्ड (Flag-Pole) पर तिरंगा झण्डा फहरा ही दिया तो दस हजार जनता के कण्ठ से निकले जय-घोष से अधिकारियों का हृदय दहल उठा।

लाठी और गोली

१२ वीं अगस्त को जितने भी जुलूस काशी के विभिन्न मुहल्लों से निकले, उन सबको लाठी और गोली का सामना करना पड़ा। एक दिन प्रथम की उनकी विजय और अधिकारियों की सहनशीलता ने उनके हौसले बढ़ा दिए थे। फिर तो इस तरह का दमन हुआ, जो आगे की घायलों की तालिका से विदित होगा।

दशाश्वमेध-काण्ड

दूसरे दिन १३ अगस्त को कांग्रेस-कार्यकर्ताओं ने विचार किया कि दशाश्वमेध से एक जुलूस निकाल कर टाउन-हॉल में सभा को जाय और घायल तथा मृत वीरों के प्रति सम्मान प्रकट किया जाय। अभी जुलूस तैयार भी न हो पाया था कि सशस्त्र पुलिस के सहित अतिरिक्त मैजिस्ट्रेट वहाँ आ धमके। पहले तो लाठी-चार्ज हुआ, जिसमें जुलूस के संयोजक श्री विन्ध्येश्वरी पाठक और रामाकान्त मिश्र घायल हुए। जुलूस सत्याग्रही रूप में बीच सड़क पर बैठ गया। कहते हैं, इसी समय एकत्र जनता पर कुछ पुलिसवालों ने पत्थर चला दिए। इस पर उन्मत्त जनता भी पत्थर फेंकने लगी। फिर क्या था, पुलिस ने २६ राउण्ड गोलियाँ चलाईं। धड़ाधड़ लाशें गिरने लगीं। मजा यह था कि कानून के अनुसार पुलिस ने कभी पैर पर गोली नहीं चलाई; सदा ऊपरी धड़ पर गोलियाँ चलाई गईं। घायल गोदौलिया अस्पताल भेजे गए।

शहर से जिले में

शहर में व्यर्थ शक्ति का अपव्यय देख कर आन्दोलनकारी देहात की तरफ बढ़े। राह में जितनी भी इमारतें मिलीं, उन्हें तोड़ा, जलाया और बरबाद किया गया। जिले के प्रायः सभी स्टेशन लूटे, जलाए और बर्बाद किए गए। इसके बाद नौकरशाही का दमन-चक्र चला। चोलापुर, धानापुर आदि स्थानों में केवल झण्डा लगा देने के प्रश्न पर दमन का वह नग्न नृत्य हुआ कि उसे देख कर पशुता भी काँप उठती।

बच्चे की निर्मम हत्या

बनारस जिले की एक घटना है। एक गाँव के लोगों पर पुलिस को सन्देह हुआ कि वे विध्वंस-कार्यों के लिए जिम्मेदार हैं। उस गाँव पर सामूहिक जुर्माना किया गया। एक दरिद्र किसान के दरवाजे फौज जुर्माना वसूल करने गई

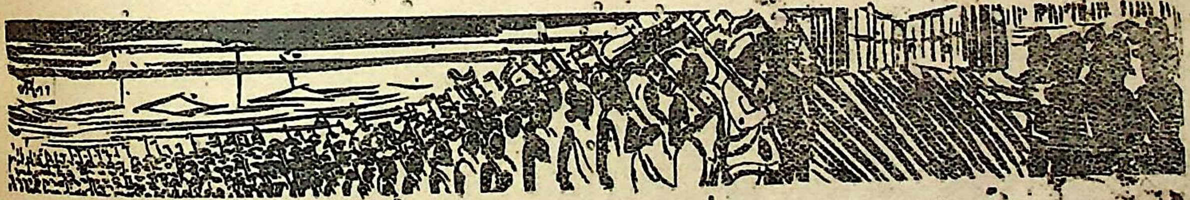

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उस किसान ने जुर्माना अदा करने के लिए मुहलत माँगी। पर मुहलत देने के बजाय उसके डेढ़ बरस के बच्चे को पकड़ लिया गया और माँ-बाप की आँखों के सामने जलती आग में उसे लटका दिया गया।

छात्राएँ घसीटी गईं

जब काशी हिन्दू विश्व-विद्यालय पर कब्जा करने के लिए फौज पहुँची तो वहाँ के विमेन्स-होस्टल में रहनेवाली छात्राओं के साथ जो व्यवहार हुआ, उससे बढ़कर किसी शर्मनाक घटना की कल्पना भी नहीं की जा सकती। छात्राओं को पकड़-पकड़ कर घसीट कर कमरों से बाहर निकाला गया। उन्हें कपड़ा लत्ता तक साथ नहीं ले जाने दिया गया और सड़क पर दर-दर भटकने के लिए छोड़ दिया गया।

गाँव के गाँव जला डाले गए

पूर्वी जिलों में तो ऐसी-ऐसी घटनाएँ हुईं, जिनकी कल्पना तक नहीं की जा सकती। शांत, असहाय और निरीह जनता को हर प्रकार से अपमानित और उत्तेजित किया गया। जबतक सरकार की ओर से ऐसी घटनाएँ नहीं हुईं तबतक जनता पूर्ण शांत थी। जब उसने देखा कि उसकी अहिंसा के कारण सरकार उसे कायर और भयभीत समझने लगी है, उसकी माँ-बेटियों की इज्जत खतरे में पड़ी है, तो उसने भी इसका समुचित उत्तर देना शुरू किया। पर यह ध्यान में रखने की बात है कि जनता ने सरकारी अत्याचारों का जवाब देने का जो प्रयास किया, उसमें भी उसने 'यथासंभव' अहिंसात्मक उपायों से ही काम लिया। सरकार की पागलपूर्ण हिंसा के सामने जनता की ओर से कहीं-कहीं भूले-भटके जो हिंसा हो गई, वह नहीं के बराबर है। नेदरसोल-मार्शस्मिथ एंड कंपनी के नेतृत्व में, संयुक्त प्रांत के गवर्नर सर मॉरिस हैलेट के आदेशानुसार गाँव के गाँव जला डाले गए; गरीब किसानों के रुपए, पैसे, गहने अनाज, सभी लूट लिए गए। स्त्रियों को सरे आम नंगा कर पीटा गया और भी न जाने क्या-क्या हुआ। शायद हिटलर के जर्मनी में भी इतने अत्याचार न हुए होंगे। इतना सब कुछ करने के बाद भी सरकार जनता पर ही हिंसा का सारा दोष मढ़ती रही।

जनता को उभाड़ा गया

बनारस जिले का ही एक उदाहरण देखिए। धानापुर थाने के सामने करीब ५ हजार किसानों का प्रदर्शन हुआ। किसानों ने यह प्रार्थना की कि उन्हें थाने पर तिरंगा झंडा फहराने की अनुमति दे दी जाय। पर थानेदार ने जनता की इस माँग का शांतिपूर्वक उत्तर देने के बजाय, कुछ अतिरिक्त कांस्टेब्लों को, जो वहाँ मौजूद थे, बाजार लूटने के लिए भेज दिया और थाने पर बची सशस्त्र पुलिस को गोली चलाने की आज्ञा दे दी। उधर बाजार के लूटे जाने और इधर गोली चलने से जनता का क्रोध अपनी सीमा को पार कर गया और भीड़ में से कुछ लोगों ने, जो अपने को नियंत्रित न रख सके, थानेदार पर हमला कर दिया। इस मुठभेड़ में थानेदार, एक हेड कांस्टेबल और एक कांस्टेबल मारा गया। जनता का कहना है कि उसके लगभग २० आदमी इस घटना में मारे गए; जब कि सरकार केवल अपने तीन आदमियों का ही नाम बताती है। इसके सिवा बाजार की लूट-पाट में जनता की लाखों की सम्पत्ति लुट गई, उसकी कोई चर्चा सरकारी-रिपोर्टों में नहीं है।

तीसरे दिन संयुक्त-प्रांत के गवर्नर सर मॉरिस हैलेट के सलाहकार मि० मार्शस्मिथ और नेदरशोल के नेतृत्व में वहाँ फौज पहुँची और उसने जो कुछ किया, उसका वर्णन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लेखनी द्वारा नहीं होसकता। इसके बाद धानापुर और आस-पास के गाँवों के लगभग १५० आदमियों को गिरफ्तार कर उन पर हत्या और अग्निकाण्ड का मुकदमा चलाया गया। ४० आदमियों को फाँसी तथा बाकी लोगों को कैद की लम्बी सजा दी गई।

सरकार की ओर से इतना अधिक उत्तेजित किए जाने के बाद ही जनता ने उसका जवाब देना शुरू किया। जनता ने शांतिपूर्वक सड़कें काट दीं, पुल उड़ा दिए और रेल की पटरियाँ उखाड़ दीं, जिससे सरकारी फौज और पुलिस अधिक संख्या में आकर उसे परेशान न कर सके। जनता ने जो कुछ भी किया, वह आत्म-रक्षा के लिए ही किया और इस कारण उसे किसी भी प्रकार हिंसा नहीं कहा जा सकता।

२३ स्थानों पर २००२ गोलियाँ

नौकरशाही के इन अत्याचारों की रिपोर्ट तैयार करने के लिए नगर तथा जिला कांग्रेस कमीटी ने एक 'अगस्त जाँच कमीटी' नियुक्त की थी। इस कमीटी ने २०० पूरे टाइप पृष्ठों की एक रिपोर्ट ५ महीने की जाँच के बाद तैयार की है। रिपोर्ट के अनुसार २३ जगहों पर २००२ बार गोली चली, जिसमें १८ व्यक्ति मरे तथा ८५ व्यक्ति सख्त घायल हुए। ७ व्यक्तियों को कोड़े लगाने की आज्ञा दी गई। आन्दोलन के समय मि० सिविलियन्स लोल, हार्डी और लैन द्वारा जिन आदमियों को बेंत लगाने की सजा दी गई, उन्हें अपनी सजा के विरुद्ध अपील करने की न तो सुविधा दी गई और न समय। फौरन ही उन्हें दण्ड दे दिया गया और वह भी बड़ी निर्दयता से। रिपोर्ट में कहा गया है बेंत लगाने का दण्ड सदा जेल की सीमा के अन्दर दिया जाता है; किन्तु १८ आदमियों को सार्वजनिक रूप से एक मेले में बेंत लगाए गए, जहाँ पर हजारों की संख्या में किसान उपस्थित थे।

रिपोर्ट के अनुसार ११७ आदमियों को, जिनमें अधिकांश विद्यार्थी थे, जिले से बाहर निकाल दिया गया। चार आदमियों को अपने ही निवास-स्थान पर नजरबंद रखा गया। ३०६ स्त्री-पुरुष गिरफ्तार किए गए और उन्हें नजरबन्द किया गया। ५६३ आदमियों को तीन महीने की कैद से लगाकर मौत तक की सजाएँ दी गईं। २०३ आदमी पुलिस की हाजत में रखे गए और बाद में छोड़ दिए गए; क्योंकि उनके अभियोग साबित नहीं हो सके।

रिपोर्ट में स्त्रियों पर किए जानेवाले अत्याचारों का रोमांचक वर्णन है। कहते हैं, सैयदरजा गाँव में स्त्रियों पर भी गोली चलाने की आज्ञा दी गई। इस गाँव में कुछ स्त्रियों को पुलिस की हवालात में भी रखा गया। रिपोर्ट में कहा गया है कि इस अर्से में पुलिसवालों ने स्त्रियों के साथ बलात्कार भी किया; किन्तु, हमलोग नाम तथा इस संबंध का अन्य विस्तृत विवरण प्रकाशित नहीं करेंगे, क्योंकि उससे लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होने की संभावना है।

जिन स्त्रियों का अपमान हुआ है तथा जिनका सतीत्व नष्ट किया गया है, वे बड़ी दर्दनाक कहानी सुनाती हैं। उन्हें पुलिस द्वारा पाँच दिनों तक बन्द रखा गया। केश पकड़ कर उन्हें घसीटा गया और उनसे डंड-बैठक लगाने के लिए कहा गया। उनमें से कई ने घर से बाहर बच्चों को जन्म दिया।

रिपोर्ट के अनुसार बनारस शहर और जिले पर २,५६,८७७ रुपया सामूहिक जुर्माना किया गया था; लेकिन, इससे कई गुना अधिक रकम जनता से वसूल की गई।

आगे चलकर रिपोर्ट में कहा गया है कि आदमियों को बिना वारंट के जेल भेज दिया जाता था। फूलपुर वाले मामले में तो सजा हो जाने के कई महीने बाद वारन्ट बनाए गए थे। कई मामलों में जब सेशन-जज ने नीचे की अदालतसे फाइल माँगी तो जिलाधीश ने कह दिया कि रेकार्ड खोगए हैं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जौनपुर में क्रान्ति की लपटें

पुरुषों को नपुंसक बनाया गया !

१० अगस्त सन् १९४२ के प्रातःकाल नगर में यह खबर बिजली की भांति दौड़ गयी कि पिछली रात बम्बई में एकत्र कांग्रेस के लोकप्रिय नेताओं तथा कांग्रेस कार्यसमिति के सभी सदस्यों को सरकार ने गिरफ्तार कर लिया । नगर में कांग्रेस नेताओं की गिरफ्तारी शुरू होगयी ।

छात्रों के जुलूस पर गोली

स्थानीय स्कूलों के छात्रों का अदालतों पर घेरा शुरू हो गया । इनकी चारों ओर जनसमुद्र ही उमड़ा दिखाई देता था । नगर की शेष पुलिस इनको तथा खजाने की रक्षा कर रही थी । पहले दिन तो जुलूस कचहरियों का कार्य बन्द कराकर लौटा । दूसरे दिन छात्रों के जुलूस पर गोली चली । कई छात्र आहत हुए । तीसरे दिन फिर जुलूस गया । अबकी बार कई छात्र-नेता गिरफ्तार किये गये ।

उस समय छोटे बालकों का साहस अनुपम और दर्शनीय था । छात्रों को छुड़ाने के लिए सात-सात आठ-आठ वर्षके बालक जेल के लोहे के सदर-फाटक पर चढ़ गये और कहने लगे कि जबतक गिरफ्तार छात्र छोड़े नहीं जाते तबतक हम नहीं हटेंगे । पुलिस बन्दूक तानकर खड़ी थी । किन्तु जिला मजिस्ट्रेट ने बुद्धिमानी दिखायी । गिरफ्तार छात्रों को छोड़ दिया । एक भयङ्कर दुर्घटना होते-होते बची ।

जिला भर में आग की लपट

अभी तक तो आन्दोलन केवल नगर में हड़ताल तक ही सीमित था । किन्तु तीन चार दिन बाद जब भारत-मंत्री श्री श्री एमरी ने कांग्रेस के कार्यक्रम में तार काटना, सड़क खोदना, पुल तोड़ना और रेलको पटरी उखाड़ना आदि बताया, तो बस जनता का मार्ग स्पष्ट हो गया । बम्बई में भी कांग्रेस नेताओं की गिरफ्तारी के विरोध में जनता द्वारा तार और पेड़ काटकर यातायात के जो मार्ग अवरुद्ध किए गये थे, उनसे भी स्पष्ट संकेत मिल रहा था । फिर तो स्थान स्थान पर तार काटना, सड़क खोदना, पुल तोड़ना, सरकारी बीज गोदाम लूटना शुरू हो गया । लगभग एक सप्ताह तक इस जिले में जनता का ही राज्य दिखाई दे रहा था ।

भीषण दमन का दौरदौरा

इसके एक सप्ताह बाद कि प्रान्तीय गवर्नर श्री मारिस हैलेट मोटर द्वारा लखनऊ से बलिया जाते हुए जौनपुर उतरे । आपने जिला मजिस्ट्रेट तथा हाकिम परगना लोगों की सभा बुलायी । कहा जाता है कि इसमें आपने उन्हें आन्दोलन दबाने तथा जनता को सदा के लिए पाठ पढ़ाने के उद्देश्य से उस पर मनमाने जुल्म और अत्याचार करने का मौखिक आदेश दिया । इसके साथ आपने यह अभय वचन भी दिया कि सरकारी कर्मचारियों पर इस संबंध में कोई मुकदमा आदि न चल सकेगा । युक्तप्रान्त के गवर्नर का एक आर्डिनेन्स भी निकला जिसमें कहा गया था कि रास्ते में जाता हुआ यदि कोई व्यक्ति पुलिस या सैनिक अधिकारी द्वारा पूछताछ के लिए पुकारने या रोकने पर न रुके, तो उसे गोली मारी जा सकती है । इस प्रकार फौजी शासन स्थापित हो गया । लारियों में हथियार बन्द फौजी सिपाही घूमने लगे । सुदूर गाँवों में जाने की तो हिम्मत न पड़ती थी, किन्तु सड़कों पर जाते व्यक्तियों को गोली का शिकार बनाते । गान्धी टोपी और खद्दर का कुर्ता पहने व्यक्तियों के प्राण सङ्कट में पड़ गये ।

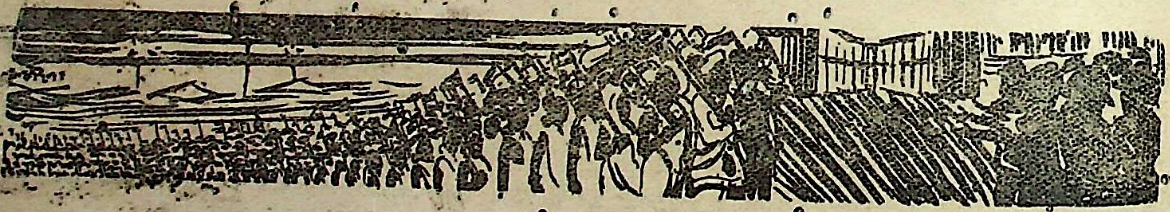

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धनिया मऊ के पास श्री जमींदार सिंह नामक नवयुवक विद्यार्थी ने इन कायरों को गोलियों का सीना खोलकर मुकाबिला किया और मृत्यु को प्राप्त हुए। इनके और भी साथी वहाँ मारे गये। नृशंसता की हद्द हो गयी जब बख्शा थाने में दो आदमी पेड़ से बाँध दिए गये और शाम को उसी दशा में उन्हें गोलियों का लक्ष्य बनाया गया। कुछ लोगों ने प्राण बचाने के लिए तालाब में घुसकर डुबकी लगाई, लेकिन जैसे ही उनका सिर पानी के ऊपर आया, गोली का निशाना बनाया गया। जनता को बेंत लगवाये गये और कितने घर फूँक दिये गये। किसान हाईस्कूल, प्रतापगंज हाईस्कूल आदि जला दिये गये। अन्य प्रकार से जनताको कष्ट दिये गये। माताओं और बहनों की इज्जत ली गयी। उन्हें नङ्गी करके और पैर फैलाकर घण्टों खड़ा किया गया।

अधिकारी प्रतिहिंसा के भावसे ओतप्रोत

मछली शहरके कांग्रेसप्रेमी श्रीगंगा साहु की कपड़े की दूकान और घर इसलिए लूट लिया गया कि उन्होंने मछली शहर के डाकखानेपर तिरंगा झण्डा लगानेवाली जनता को जलपान करानेके अपने कार्यपर पश्चात्ताप नहीं प्रकट किया। आपकी कपड़ेकी दूकान के सभी वस्त्र सड़कोंपर फेंक दिये गये, घरके गहने और तिजोरी तोड़कर लूट ली गयी। आपकी पत्नी के पैरके कड़े भी उतरवा लिये गये। कहा जाता है कि एक अधिकारीने आज्ञा दी कि यदि कड़े नहीं निकलते तो पैर काट लो। और यह सब काण्ड उच्च और उत्तरदायी सरकारी अफसरों की उपस्थिति में हुआ कहा जाता है। फरार क्रांतिकारियों को जीवित पकड़ने की अपेक्षा उन्हें गोलीसे मरा हुआ लानेका भी आदेश दिया गया था।

अबोध युवक गोलीका शिकार

मड़ियाहू के निकट पालीके पास सैनिक लारी गश्त करती पहुँची। स्मरण रहे कि पालीका बीज गोदाम लूट लिया गया था। लॉरीके पहुँचते ही गाँवकी स्त्रियाँ मक्के के खेतमें जा छिपीं। मुखबिरने पुलिस अधिकारी को इशारा किया कि सामने अमुक मकान के पास फरार अभियुक्त श्री केदार खड़े हैं। दुर्भाग्यसे केदारके पास औरेला गाँव का क्षत्रिय युवक, जिसका गौना अभी हालमें हो आया था, खड़ा था। पुलिसने गोली चलायी। श्रीकेदार तो तुरत लेटकर बच और भाग गये किन्तु उक्त युवक गोलीका शिकार हुआ।

आन्दोलन के दिनों में अंग्रेज अधिकारी अपनी बुद्धि कितनी खो बैठे थे, यह निम्नलिखित घटना से पता चलता है। शहर के एक धोबी का नवयुवक पुत्र गदहे पर कपड़ा रखे हुए आरहा था। पीछे-पीछे उसकी स्त्री थी। उक्त युवक लाल रंग की कमीज और नेकर पहने था, जो किसी छात्र द्वारा धुलनेके लिए दी गयी थी। अहमद खाँकी मण्डी (रुहट्टेकेआगे) के पास उसके पहुँचते ही इधरसे सैनिक लारी पहुँची, जिसमें पुलिस कप्तान भी थे। पुलिस कप्तानने मोटर रोककर उसे रुकने के लिये कहा। वह भागकर एक मकान में घुसा। अंग्रेज कप्तान भी उसके पीछे दौड़ा और पिस्तौल से दो बार गोली चलायी। किन्तु वह साफ बच गया। अंत में उसे गिरफ्तार कर लिया गया तथा गदहे पर का कपड़ा लारी में रखवा दिया गया। बाद में धोबी के चाचा के जो उक्त कप्तान का धोबी था, निवेदन करनेपर वह छोड़ दिया गया।

तलाशी में पुलिस की मनमानी

जौनपुर के श्री राजदेव उपाध्याय वकीलके शिकारा स्थित मकानकी तलाशी में पुलिस खाने-पीनेका सब सामान (बर्तन-अन्न आदि) उठा ले गयी। यहाँ तक कि एक बटलोही तक नहीं छोड़ी। तलाशी उनके फरार भाई का पता लगाने के लिए हुई थी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पुंसत्वहीन के नृशंस उपाय

दमन का एक नया उपाय इस जिले में निकाला गया था, जो कदाचित् एक डिप्टी कलक्टर और एक थानेदार के मस्तिष्क की उपज था। इसका नाम 'करेण्ट' है। यह बिजली का करेण्ट नहीं, अपितु दमनका वह गुप्त अस्त्र है, जो वीरों के छक्के छुड़ा देता है। इससे मनुष्य नपुंसक और शक्तिहीन हो जाता है। जिसको करेण्ट लगाना होता है, उसको सीधा पैर फैलाकर बैठा दिया जाता है। दो आदमी उसके दोनों हाथों को दोनों ओर सीधा फैलाते हैं। एक आदमी उसका सिर पकड़कर घुटनों के सहारे सीधा बैठाये रहता है। इसके बाद दो आदमी उसके दोनों पैर पकड़कर बलपूर्वक पीछे की ओर घुमा देते हैं। इससे नाभि और मूत्रेन्द्रिय से खून आजाता है। इस प्रकार उस मनुष्य का जीवन सदा के लिए नष्ट हो जाता है। लगभग ढाई सौ मनुष्यों को इसका शिकार बनाया गया।

———

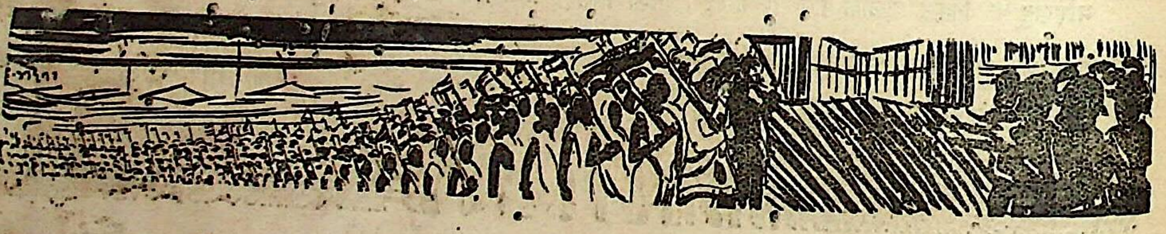

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बर्बरता की रोमांचकारी कहानी

त्रिवेणी तट पर रक्त-स्नान !

गाँधी टोपियाँ पैरों से मसली गईं और उनपर थूका गया !!

नेताओं की गिरफ्तारी के समाचार को सुनते ही एलाहाबाद शहर में ९ अगस्त को हड़ताल होगई। विद्यार्थियों ने भी हड़ताल की। अपराह्न में एक लम्बा जुलूस निकाला गया। पुलिस ने स्थानीय कांग्रेस-नेताओं को गिरफ्तार कर लिया। कांग्रेस-कमेटियों के दफ्तरों की तलाशी ली गई और उन्हें बन्द कर दिया गया।

नौ और दस अगस्त को विद्यार्थियों ने लम्बे जुलूस निकाले। पुरुषोत्तमदास पार्क और मुहम्मदअली पार्क में विशाल सभाएँ हुईं। लेकिन, सरकारी कर्मचारी चुप्पी साधकर बैठे रहे।

११ अगस्त को एक बड़ा-सा जुलूस फिर विश्व-विद्यालय से निकला। म्यो होस्टल तक पहुँचते ही 'शान्ति के ठेकेदारों' की भीड़ दीख पड़ी। जुलूस के साथ लड़कियाँ भी थीं। ठीकेदारों के प्रधान ने जरा अकड़ कर और घृणा-सी दिखाते हुए कहा, "अफसोस है कि आपलोग औरतों को आगे कर चलते हैं जोर दिखाने।" तुरन्त ही उन्हें उत्तर मिला — "अच्छा तो उन्हें निकल जाने दीजिए और फिर आप अपना जोर दिखा लें।" बातें चल ही रही थीं कि लोग आगे निकलने लगे। कुछ घबराकर पुलिस-ऑफिस ने पूरे जोर से कहा "लाठी चलाओ"। किन्तु, सिपाही जहाँ के तहाँ अचल रहे, लाठियाँ जमीन चूमती रहीं। झुँझला कर अफसर ने तीन-चार बार 'चार्ज' कहा, किन्तु व्यर्थ। कुछ विद्यार्थियों ने जरा हँसकर पूछा, "बस हो चुका?" और जुलूस आगे बढ़ गया।

अभी तक जनता के सामने कोई निश्चित कार्य-क्रम नहीं था। लोग अधिकृत आदेशों या कांग्रेस से नेतृत्व की प्रतीक्षा कर रहे थे। लेकिन, तत्कालीन परिस्थिति में वह संभव नहीं था। शाम को विश्व-विद्यालय के यूनियन-हॉल में, जो आन्दोलन का केन्द्र बन गया था, सभा हुई और यह निश्चय हुआ कि दूसरे दिन अर्थात् १२ अगस्त को दो रास्तों से दो जुलूस चलें और मुहम्मदअली पार्क में पहुँचें और वहीं आखिरी फैसला कर लिया जाय। यह तय पाया गया कि एक जुलूस गवर्नमेण्ट हाउस से होकर जाय और एक कचहरी होकर।

इसके बाद १२ अगस्त को क्या हुआ, वह एक प्रत्यक्षदर्शी (श्री यदुवीर सिंह) से ही सुनिए।

"मैंने जौहर के विषय में केवल पुस्तकों में पढ़ा था—उसका एक काल्पनिक चित्र भी बना चुका था किंतु उसे कभी स्वयं भी देखना होगा यह सोच भी न सका था। रात किसी प्रकार प्रभातकी प्रतीक्षा में बीती। मुझे ऐसा लगता था कि जैसे वीर क्षत्रिय अंतिम बाजी खेलने के लिए केशरिया वस्त्र धारण कर किले के फाटक खोल देते थे और क्षत्राणियाँ जौहर की प्रज्वलित अग्निमें हँसते-हँसते कूद पड़ती थीं वैसी ही परिस्थति थी।

रक्त की होली

एक ओर सशस्त्र सैनिक शासनसत्ता और दूसरी ओर थे ये अल्हड़ युवक और युवतियाँ जो तुले थे रक्त के छीटों से होली खेलने को।

यूनियनहाल में ऊषा की लाली के साथ ही 'जय हे! जय हे! भारत भाग्य विधाता' का मधुर स्वर गूंजने लगा। दस बजते-बजते तिल रखने की जगह न रही। अनुपम दृश्य था। युवक देख रहे थे अपनी अबलाओं की कोमलता को और संगीनों की कठोरता को तथा दोनों में सन्तुलन कर रहे थे। जीवित चंडी की मूर्त्तियां तथा सशक्त अबलायें देख रही थी फहरते हुए तिरंगे को जिसका मान तीन दिनों तक उन्होंने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निभाया था। आज परीक्षा का समय था। वे मानों उससे बल चाहती थीं और वह अपने हाथ हिलाकर उन्हें अपनी ओर बुला रहा था। सहस्रों कण्ठोंने एक साथ कहा—'इसकी शान न जाने पाये, चाहे जान भले ही जाये' और गूंज उठा एक दृढ़ स्वर 'कि बोले मा! तुमि अबले'। सारा वातावरण उत्साह

अमर शहीद पद्मधर

और हर्षसे भरा था। लोग एक दूसरे से गले मिल रहे थे। अन्तिम प्रयाण था न?

मेरे लिए वह एक अमूल्य घड़ी थी। निश्चय हुआ कि कचहरीसे जाने वाले जुलूस का नेतृत्व मुझे सौंपा जाय।

लगभग बारह बजे हम कचहरी पहुँच गये। सामने पुलिस निशाना साधे हुए खड़ी थी। सबको समझा दिया गया था कि गोली चलते ही रुमाल के इशारे पर लेट जायँ और फिर रुमाल का इशारा पाते ही आगे बढ़ें। गोली चलने के समय लड़कियों को पीछे हटा देने का भी निश्चय कर लिया था। वे कुछ दूर ही पर थे कि पुलिस ने कंकड़ बरसाना प्रारम्भ कर दिया। कुछ समीप पहुँचते ही उन्होंने लड़कियों के हाथ से झंडा छीनने की चेष्टा की। सभी लड़कियाँ एक साथ उसी झंडे को पकड़ कर खड़ी हो गईं। उधर पुलिस छीनने के लिए जोर लगा रही थी और इधर ये बचाने के लिए। वे घसिटती जा रही थीं किंतु झंडा नहीं छोड़ रही थीं।

अचानक लाठियाँ बरस पड़ीं, हमारे हाथ दोनों हठात् ही सिर के ऊपर जाकर उसकी रक्षा करने लगे। किन्तु पहली लाठी के तड़ाक से पड़ते ही जैसे चेतना द्वार एक झटके से खुल गया। चौंककर बोला 'इन्हें पीछे हटाओ, झण्डा छीन लो।' लड़के दौड़ पड़े।

लाठी के बाद गोली वर्षा

लाठीवालोंने बन्दूकवालों को सामना देने के लिए भागना प्रारंभ किया। भीड़ भी भड़क चली और फिर मची खून की होली। लेटने का और फिर बढ़ने का नियम चल रहा था। सबके लेटने पर पीछे से घुड़सवार डण्डे चलाते थे। आगे बन्दूकें, पीछे घुड़सवार और बीच में थे पावनज्ञ के होता। अकेले घूम घूमकर रुमाल हिलाते देखकर किसी ने कहा—'अब चलाओ'। अचानक मुझे एक धक्का लगा और मैं जमीन पर था। सुन पाया केवल फिर बन्दूकों के चलने की आवाज और यह कि बगल में कोई मेरा नाम लेकर कह रहा है, बिदा! इन्कलाब जिन्दा...' मैं घूम पड़ा। रक्त के तेज प्रवाह से मेरे भी कपड़े भीग रहे थे और वहां की भूमि...। पहचानते ही चीख पड़ा मेरा लाल था। लाल लहू में स्नान कर स्वतंत्रता देवी की आराधना कर रहा था। आह! कितना संतोष झलकता था उसके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चेहरे पर लगता था उनींदे स्वप्न में मुस्कुरा रहा है। वह जैसे मुझसे पूछ रहा था—'क्या अब भी जीने के लिए लड़ना आवश्यक है।'

पागलकी तरह पूरी टोली उमड़ चली, रूमाल भिगाया गया उसी रक्तमें, तिरंगे को डुबोया गया, मस्तक पर रोलियाँ लगीं और गोलियों की बौछार में भी बढ़ना जारी रहा। लेटना मना था, रूमाल न जाने कहाँ था। एक पर एक घायल गिर रहे थे और रेंगते हुए वीरतापूर्वक बढ़ते जा रहे थे। सहसा इतना समीप पहुँच गये कि गोली चलाना असम्भव था। कलक्टर आदि घबराये थे। टिड्डी दल की भाँति लड़कियाँ फिर टूट पड़ीं और उनके घोड़ों की बाग थामकर लटक गयीं। हार कर उन्होंने अनुमति दी जुलूस को अपनी इच्छानुसार जाने के लिए। यह एक महान विजय थी और इसका सम्पूर्ण श्रेय था शहीद पद्मधर को।"

चिनगारी सुलग उठी

इधर विद्यार्थियों पर गोली का चलना था और उधर वे, जो इसे 'लड़कों का जोश' कह कर अवहेलना और उपहास करते थे, पागल हो गए। विप्लव अपनी पूर्ण सत्ता से राज्य कर रहा था। तार कट रहे थे। पुलिस की लारियाँ और रायलमेल जल रहे थे, कोतवाली पर जनता अधिकार करनेपर तुली थी—भयानक दृश्य था। आग कचहरी से जो सुलगी थी धधक उठी। उसकी लपटें सारे प्रयाग को लपेट चुकी थीं। सड़कों परयों ही गोली चलायी जा रही थी—निहत्थोंपर, निरीह राहियों पर। अबोध बच्चों और अबलाओं को आतंक का शिकार बनाया जा रहा था।

भयंकर लाठी-प्रहार

जब गोली चलाने की खबर शहर में पहुँची तो हजारों आदमी सड़कों पर आगए और जुलूस में शामिल होगए। भारी लाठीप्रहार के पश्चात क्लाक टावर के पास जुलूस भंग कर दिया गया। जवाहर स्क्वायर में जलूस फिर इकट्ठा हुआ और फिर उस पर लाठी-प्रहार किया गया। यहाँ से जुलूस लोकनाथ चौराहे पर चला गया जहाँ कोतवाली पर अधिकार करने के लिए दूसरी भीड़ एकत्र थी। मीरगञ्ज में ई० आ० आर० के बुकिङ्ग आफिस को लूटने के बाद जनता की भीड़ कोतवाली की तरफ बढ़ी और भरे हुए ठेलों तथा लकड़ी के तख्तों की उसने सड़क पर दीवार खड़ी कर दी। जब बलूची सैनिकों से भरी हुई फौजी लारियाँ वहाँ पहुँची तो भीड़ ने उन पर पत्थर फेंके। सैनिकों ने चारों ओर गोलियाँ चलायीं। लेकिन जनता ने सड़क पर जो दीवार खड़ी की थी उसकी आड़ में उसने अपनी रक्षा की।

तब एक पुलिस सार्जन्ट दूसरे मार्ग से सैनिकों को इस 'दीवार' के पीछे ले गया। अब भीड़ गोलाबारी के लिये सामने पड़ी। भीड़ के नेता राजन की छाती पर गोली लगी और वह तुरन्त मर गया। लोग इधर-उधर भागने लगे, लेकिन भागते हुओं पर भी सैनिकों ने गोलियाँ चलाईं। रमेश मालवीय नामक स्कूल का एक बहादुर विद्यार्थी जो जनता से न भागने के लिए अपील कर रहा था, घटनास्थल पर ही गोली से मर गया। ननका मेहतर भी मारा गया।

उसी दिन संध्या काल से कुछ देर पहले कुछ विद्यार्थी सी० पी० यू० पी० छात्रावास के पास खड़े थे। वे कुछ नहीं कर रहे थे। इतने में ही एक फौजी लारी उधर से गुजरी। एक सैनिक ने एक विद्यार्थी पर अपनी गोली का निशाना लगाया। लेकिन, गोली विद्यार्थी को न लग कर एक घास छीलनेवाले को लगी और वह वहीं मर गया।

अगस्त १३ तथा १४ को कर्फ्यू लगा दिया गया था और सशस्त्र सैनिकों से भरी हुई लारियाँ सड़कों पर गश्त लगा

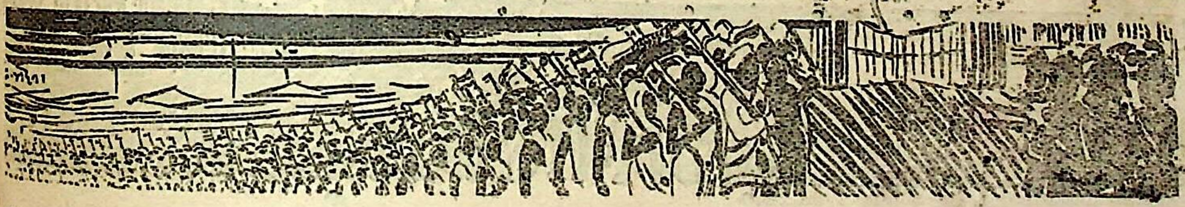

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनेकों युवकों को जंगलू बनना पड़ेगा। उस दिन का दृश्य करुणोत्पादक था। जनता शांत हुई—पर क्रोध से लाल हो रही थी।

जब अहमदनगर किले से महात्मा गांधी छूटकर प्रथम बार वर्धा ३ अगस्त ४४ को आये थे तो उन्होंने वह स्थान देखा जहाँ जंगलू ने ११ अगस्त ४२ को अपना मस्तक चढ़ाया था। गांधी जी ने श्रद्धांजलि समर्पित की।

जंगलू सिर्फ २८ वर्ष का नवयुवक था और उसकी तीन संतानें थीं। जंगलू की मृत्यु के बाद वे तीनों संतानें उस जगह पहुँच गईं जहाँ जंगलू गया था। उसकी गायें भी मर गईं और आज उसका बूढ़ा पिता कभी-कभी अपने वीर पुत्र की याद में गरम गरम दो आँसू ढुलका देता है।

जिस स्थान पर वह गोली खाकर मरा था वहाँ उसकी स्मृति के लिए एक पत्थर गड़ा हुआ है जो मूक भाषा में कह रहा है कि ११ अगस्त को यहाँ पर इतिहास का निर्माण हुआ था।' जंगलू मरा नहीं है किन्तु उसकी आत्मा नवयुवकों के हृदय में समा गई है जो उसी पथ पर चलने के लिए प्रेरणा दिया करती है।

गिरफ्तारी

संत विनोबा, दादा धर्माधिकारी किशोरलाल अग्रवाला, आचार्यनायकम्, शिवराजू, चूड़ीवाले आदि सब गिरफ्तार हो गए। जनता भयभीत थी। जिसे मन में आया पकड़ा—चाहे उसने कसूर किया हो या नहीं। गिरफ्तारियाँ जारी थीं। कांग्रेस के बिजली के खंभों पर लटके बोर्ड हटवा दिये गये थे। ताकि कोई उसमें कुछ लिख न सकें। लड़कों ने सड़कों पर लिखना शुरू किया। दीवालों पर बुलेटिन चिपकने लगे। घरों में बुलेटिन आने लगे। पर्चे बँटने लगे। सब में लिखा रहता था—'करो या मरो।' जनता में जोश था। वर्धा में १४४ धारा जारी थी। ५६ वीं धारा भी लगा दी गई थी। इतना ही नहीं करफ्यूआर्डर जारी हो गया था। कोई शाम को ६ बजे से घर के बाहर नहीं निकल सकता था। पुलिस का पहरा जारी था। वह सड़कों पर निर्भयता के साथ बंदूकें लिए घूम रही थी। मिलिटरी के सिपाही भी आ गए थे। पुलिस से भरी मोटर लारियाँ शहर में घूमा करती थीं। वे लाठियाँ लिये हुए रहते थे। जहाँ कोई रास्ते में मिला—उतर कर दो-चार लाठियाँ जमा दीं और चलते बने। कोई सुनवाई नहीं। सुने भी कौन?

एक दिन की बात है। एक मोटर सिपाहियों से भरी हुई आई। उनके हाथों में लाठियाँ थीं। सड़कें स्मशान के समान सूनसान दिखाई दे रही थीं। अगर कोई मानव प्राणी दिखाई देता तो उस पर लाठियाँ टूट पड़तीं। धोखे से उस दिन एक अहीर सामने से चला आ रहा था। ज्योंही पुलिस ने उसे देखा सब उस पर टूट पड़े। बरसने लगीं लाठियाँ उस पर—वह चिल्ला रहा था कि मैंने क्या किया है—मैंने क्या किया है—पर कौन सुनता है लाठियों के आगे। वह बिचारा आखिर बेहोश होगया।

कोई भी क्यों न दिखाई दे—लाठियाँ बरसाना बायें हाथ का काम था। बड़े-बड़े व्यापारियों को उनकी दूकानों में घुस घुस कर पीटा गया। देहातों से जो लोग आते थे उन्हें भी खूब तंग किया गया। यह सब कुछ हो रहा था; किन्तु राष्ट्रीय तिरंगा झंडा गर्व के साथ लहराता था। छोटे-छोटे बच्चे कहते थे कि 'शान न इसकी जाने पावे—चाहे जान भले ही जावे।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विद्रोही महाकोशल

मि० हेवेटसन उसे जिन्दा ही गड़बाना चाहते थे !

क्रान्ति की लपटों से महाकोशल भी अछूता न बचा। आजादी के महान् यज्ञ में उसने भी आहुतियाँ चढ़ाईं। नौकरशाही ने उसे कुचलने के लिए, जिस दमन नीति से काम लिया, उसे सुनकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

जबलपुर में श्रीगुलाब सिंह के शहीद होने के बाद ही क्रान्ति की लपटों ने विशाल रूप धारण कर लिया और फिर तो चारों ओर विद्रोह की आग भड़क उठी।

बैतूल के तीन स्थानों में गोलियाँ चलायी गईं, जिनके नाम ये हैं—घोड़ा डोंगरी, प्रभात और नाहिया पट्टन।

घोड़ा डोंगरी में गोंड़ लोग निवास करते हैं। वे लोग निष्कपट शान्ति-प्रेमी और सरल स्वभाव के हैं। कांग्रेस नेताओं की गिरफ्तारी के विरोध में की गई एक सभा में हजारों की तादाद में जनता इकट्ठा थी। सैनिक तथा अतिरिक्त पुलिस सहायता के लिए बुलायी गई थी। ये लोग एक स्पेशल ट्रेन द्वारा गाँव में पहुँचे। उस स्पेशल ट्रेन में पुलिस के कई सौ आदमी भरे हुए थे। सभा शान्तिपूर्वक समाप्त हो गई। पर जब लोग घरों को वापस जा रहे थे तो अकस्मात् जंगलात के डिपो में आग लग गई। ठीक उसी समय सैनिकों तथा पुलिस के आदमियों ने भागती हुई भीड़ पर गोली चलायी।

जो गवाहियाँ हुई हैं उनसे इस बात का पता लगाना कठिन है कि पहले गोलियाँ चलीं या पहले आग लगी। फिर भी साधारण रूप से यही कहा जाता है कि आग गोलियाँ चलाने के विरोध लगायी गयी।

गोली लगने से वीरशाह गोण्ड घायल होकर गिर पड़ा। मरने के पहले बूट की जो ठोकर उसे मारी गई और जितनी दुष्टता का व्यवहार उसके साथ किया गया, उसे हम युगों तक न भुला सकेंगे। मि० हेवेटसन ने अत्यन्त निर्लज्जतापूर्वक उसे लात से मारा। उसके शरीर से रक्त की धारा बह रही थी। उसी हालत में टाँग खींच कर उसे घसीटा गया। मि० हेवेटसन उसे जीवित अवस्था में ही गड़वा देना चाहते थे। लेकिन, भगवान् ने उनकी अभिलाषा पूरी नहीं की और वीरशाह की आत्मा गुलामी की जंजीरों को तोड़ कर अनन्त में विलीन हो गई।

गोलीकाण्ड के फलस्वरूप ७ और आदमी घायल हुए। उनके पाँवों में जो घाव हुए, उन्होंने उन्हें जीवन भर के लिए पंगु बना दिया है। प्रभात पट्टन में गोली चलने से महादेव नामक व्यक्ति मारा गया और कई घायल हुए।

नाहिया में यह हुआ कि २५ अगस्त १९४२ को मोण स्कूलों तथा ग्राम पंचायतों की चीजें जला दी गयीं। इस घटना के दो दिन बाद नायब तहसीलदार मि० अकराम तथा पुलिस सब-इन्सपेक्टर श्री गुलाब सिंह नाहिया पहुँचे।

वे लोग मालगुजारीन तपीबाई के मकान में ठहरे और उन्होंने सिपाहियों तथा पुलिस के आदमियों को यह आदेश दिया कि वे गाँववालों को वहीं बुलावें। इस आदेश के दिये जाने के बाद सारा गाँव नाना प्रकार के अत्याचारों का केन्द्र बन गया। लोगों के साथ दुर्व्यवहार किया गया, घसीटे गये और बुरी तरह अपमानित किया गया।

कुछ सिपाही तथा कानस्टेबिल श्री केला के घर पहुँचे। श्री केला नहा-धोकर खाना खाने के लिए जा रहे थे। जब उनसे यह कहा गया कि उन्हें तपीबाई के यहाँ चलना होगा तब उन्होंने खाना खाने के लिए कुछ समय की मोहलत चाही। इस अनुरोध का फल यह हुआ कि एक सिपाही ने सहसा उन्हें पीटना शुरू किया, जिसके फलस्वरूप वह नीचे गिर पड़े।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उनका लड़का उदज, जो खाना खारहा था, उठ कर बाहर आया और अपने पिता के साथ किये गए दुर्व्यवहार का कारण पूछा। प्रश्न पूछने के 'अपराध' पर उसे तत्काल गोली से मार डाला गया। श्री केला उठ खड़े हुए और रोते हुए उन्होंने यह प्रार्थना की कि उन्हें अपने बेटे की लाश को भीतर ले जाने की आज्ञा दी जाय इस पर इनपर भी गोली चला दी गयी। जिससे वे बुरी तरह घायल हो गये और दो दिन बाद बैतूल अस्पताल में उनकी मृत्यु हो गई।

प्रभात पट्टन में गोली चलने के समय डिप्टी कमिश्नर मि० एफ० के खान घटना स्थल पर उपस्थि थे। एक बहुत बड़ी भीड़ जमा थी। पुलिस ने गोलियां चलायीं और भीड़ ने पत्थर फेंके।

बैतूल जिले में पुलिस ने बड़े अत्याचार किये। लाठियों से जनता को पीटा गया और रिश्वतें ली गयीं। जेलों में जिले के राजनैतिक कैदियों के साथ घोर अमानुषिक अत्याचार किये गये समस्त महाकोशल प्रान्त में दमन का सबसे विकृट रूप बैतूल में ही दिखाई दिया।

नरसिंहपुर सब-डिवीजन के चींचली नामक ग्राममें २४ अगस्त १९४२ को गोली काण्ड हुआ। कांग्रेसी राजबंदीयों को जब पुलिस किसी अनजान दिशामें ले जानें लगी तो कुछ भीड़ इकट्ठी हो गई। नायब तहसीलदार श्री० अग्रवाल ने भीड़को भगानेकी आज्ञा दी। तत्पश्चात् पुलिस और अफसरों ने भागते लोगोंका पीछा किया। गवाहियों में ज्ञात हुआ है कि मन्नाराम नामक व्यक्तिको श्री० शुक्ला ने स्वयं निशाना लगाकर अपने रिवाल्वर द्वारा एक नहीं तीन गोलियाँ मार मौतके घाट उतारा। गिरफ्तारी और फायरिंग के विरोधमें दूसरे दिन आम हड़ताल मनायी गयी। फौज और पुलिस घटनास्थलपर भेजी गई जिसने जबर्दस्ती लाठियाँ चलायीं। लोगोंपर इस बुरी तरह आक्रमण किया गया और उन्हें इतना अपमानित किया गया कि सुखला और प्रेमचन्द्र नामक दो व्यक्ति बेहोश हो गये। वे पागल हो गये और बेहोशी में 'पुलिस आती है, दरवाजा बन्द रखो' आदि चिल्लाते-चिल्लाते एक मास बाद मर ही गये।

सागर जिला महाकोशलके श्रेष्ठ कांग्रेसी जिलों में से है। सन् ४२ में यहाँ से करीब ६०० व्यक्ति जेल गये। गढ़ा-कोठा नामक ग्राममें गोलीकांडके फल-स्वरूप साबूलाल नामक व्यक्ति काम आया। १५ व्यक्तियों... इसी गोलीकांड के सम्बन्ध में मुकदमा चला। लेकिन, जो सबसे अधिक आश्चर्य की बात वह है गढ़ाकोटामें दफा ३४ के अन्तर्गत लोगोंके चालानों का तांता। महीनों तक पुलिस अफसर नित्य चालानों की एक निश्चित संख्या सोच कर निकालते थे और उस आँकड़े को पूरा किये बिना चैन न लेते थे। फिर इन चालानों का मुकदमा सागर में उस दिन होता था जिस दिन गढ़कोटामें बाजार रहता, जिसके कारण बेचारे गरीबोंको बेहद परेशानी और आर्थिक हानि होती थी।

मंडला शहर के प्रमुख कांग्रेस कर्ताओं को ९ अगस्त १९४२ के एक हफ्ते के अन्दर ही गिरफ्तार कर लिया गया था। १५ अगस्त को जिस दिन मंडला में गोलीकांड हुआ, उस दिन सुबह जगन्नाथ हाई स्कूल मंडला के कुछ विद्यार्थी स्कूल में पिकेटिंग करना चाहते थे। उसी दिन एक आम सभा फतह दरवाजा के पास के मैदान में बुलाई गई थी। सभा के दरम्यान जब मन्नूलाल नामक युवक कांग्रेस-कार्यकर्त्ता अपना भाषण दे रहे थे, उसी समय श्री मालवीय जी ने आज्ञा दी कि पांच मिनट के अन्दर सभी समाप्त हो जानी। चाहिये मन्नूलाल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का भाषण जारी रहा—पुलिस ने मन्नूलाल को गिरफ्तार कर लौरी से जेल भिजवा दिया ।

इसी समय उदयचन्द नामक मैट्रिक क्लास का एक विद्यार्थी अपना बस्ता लिए हुए मिशन कम्पाउन्ड की दीवाल पर खड़ा था । सभा भंग की आज्ञा दुबारा ऐलान की गई । उसका उल्लंघन होने पर पुलिस को लाठी-चार्ज करने का हुक्म मिला और लाठी-चार्ज के शुरू होते ही जनता तितर-बितर होने लगी । उदयचन्द जो सभास्थल से काफी दूर था, उसे भी लाठी का शिकार बनाया गया । सभा भंग होने के बाद जनता ने पुलिस की ओर पत्थर फेंकना आरम्भ किया । आफिसर यहाँ-वहाँ छिप गए । इसी ... य रिजर्व-इन्सपेक्टर मि० फाक्स ने गोली चलाने की आज्ञा दी ।

लाठी की चोट खाया हुआ उदयचन्द भीड़ से काफी फासले पर था और जिस ओर से पत्थर आ रहे थे उस ओर जोर-जोर से चिल्ला रहा था कि पत्थर मत फेंको और शांत रहो । जब पुलिस ने उससे भागने के लिये कहा तो उसने जवाब दिया कि मैं नहीं भागूंगा । उसने यह भी कहा कि पुलिस यदि उसे गोली मारना चाहे तो मार दे । इतना कह कर वह वीर सीना खोलकर खड़ा हो गया । गोली चली और वह जमीन पर लोट गया । लगभग २५ मिनट तक उसके पास कोई न गया । जनता के कुछ लोग आगे बढ़े, लेकिन उन्हें मौत की धमकी देकर भगा दिया गया । बाद में ६ पुलिस वाले उसे लाठियों पर टांग कर अस्पताल ले गए । वहाँ भी जनता को जाने की सख्त मुमानियत कर दी गई । रात के दो बजे वह वीर परलोक सिधारा ।

सरकारी अफसरों का यह काम अनावश्यक ही नहीं असंगत भी था । मन्नूलाल की तरह उदयचन्द भी गिरफ्तार किया जा सकता था, क्योंकि वह सभास्थल से काफी दूर अकेला खड़ा था, । उसे गिरफ्तार करने में कोई खतरा भी न था—न पत्थरों का डर था और न भीड़ का—क्योंकि वह तो अकेला ही था ।

यह तो हुई केवल हत्या की बात । आश्चर्य तो यह है कि इसके बाद भी सरकारी अफसरों ने अपने बचाव के लिए कोई कसर न रखी; क्योंकि जब उदयचन्द के पिता और उसके रिश्तेदार उसकी लाश लेने गये तो यह कहा गया कि वे यह लिख कर दें कि उदयचन्द को जुलूस में गोली लगी—तभी लाश मिलेगी । पिता के हृदय में और क्या ठेस लग सकती थी ?

मंडला के कुछ प्रमुख नागरिक अधिकारियों के पास गये ... जब तक उदयचन्द के पिता ने यह लिखकर न दिया कि वह जुलूस में मारा गया—तब तक उसे लाश न मिली । त्रिलोकचन्द (उदयचन्द का पिता) गोली-कांड के समय सभा-स्थल पर उपस्थित न था, फिर भी उसे यह लिखकर देना ही पड़ा ।

२० अगस्त १९४२ को बारासिवनी में गोली चलाई गयी । गोली-काण्ड के पहले लाठी-चार्ज भी हुआ । परिणामस्वरूप कई लोग घायल हुए और एक की मृत्यु भी तत्क्षण हुई । यदि अधिकारीवर्ग चाहता, तो बिना गोली चलाये भी परिस्थिति काबू में आ सकती थी । लेकिन, जब सारे देशमें आतंक छाया था, तो यहाँ के अधिकारी क्यों चूकनेवाले थे ।

उस दिन बारासिवनी में जो दृश्य उपस्थित था, उसे भुलाना मुश्किल है । पुलिस ने श्री राजमलजी सुराणा की दूकान पर धावा बोल दिया । शायद उन्हें शक था कि जुलूस से भगाये गये लोग उनकी दूकान में छिपे हैं । दूकान के दरवाजे तोड़ डाले गये, और पुलिस और निहत्थी जनता से ऐसा संघर्ष हुआ कि कमजोर दिल लोग बेहोश होगये । कुछ

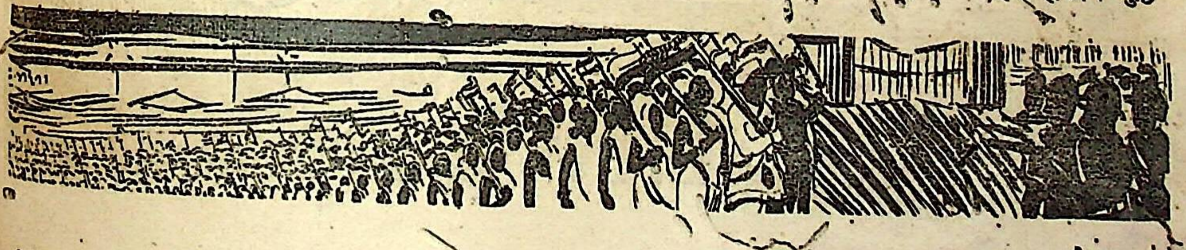

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

घायल तो इस काण्ड के बहुत दिन पीछे तक आवेश में चिल्ला उठते थे, 'पुलिस आ गयी।'

काशीबाई बारासिवनी की एक बड़ी उत्साही कार्यकर्त्री हैं। २० अगस्त १९४२ को वे तीन अन्य कार्यकर्ताओं के साथ गिरफ्तार कर ली गयीं। कई और कांग्रेसजनों के साथ वह पुलिस लारी में करगाटोला मौजा भेजी गयीं। वहाँ पहुँचकर काशीबाई पर लाठियाँ बरसाई गईं। उनकी साड़ी के चिथड़े-चिथड़े हो गये और सिर फूट गया। तब श्री० दुबे पुलिस अफ़सर ने काशीबाई के पिता चेतरामजी को बुलवाया। ऊल-जलूल बातों के बाद चेतरामजी को भी लाठियों का इनाम दिया गया; क्योंकि उनकी पुत्री देश-प्रेम के अपराध में गिरफ्तार की गयी थीं। काशीबाई को तो इतना मारा गया कि उसके परिणाम स्वरूप वह मूर्छित होकर गिर पड़ीं और इसी हालत में उनके पास से ७०) रु० नगद और करीब २००) मूल्य के जेवरात निकाल लिए गये। ये जेवर और रकम उन्हें आज तक वापस नहीं मिले।

अधिकारियों ने गुस्से से पागल होकर देशभक्तों की गाँधी-टोपियों और काशीबाई की साड़ी के टुकड़े जलवा दिये। राष्ट्रीय झण्डे को पैर से कुचला गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सतारा ने

सरकार की चुनौती का जवाब दिया

नमक मिलाये पानी में चमड़े को डुबा कर प्रहार !

९ अगस्त को सवेरे राष्ट्रीय-नेताओं की गिरफ्तारी का समाचार जनता को मालूम हुआ। सतारा ने भी अपने कर्त्तव्य का पालन किया। बम्बई भारतीय कांग्रेस-कमीटी की बैठकों से लौटे हुए कार्य-कर्त्ताओं ने जिले में कुछ दूसरा ही दृश्य देखा। इस बार का सतारा उस समय का सतारा नहीं रह गया था, जब वे बम्बई गये रहे थे। जनता का क्रोध उबल रहा था। उसके नेताओं को सरकार से समझौता करने में अपनी रचनात्मक योग्यता का उपयोग करने का अवसर नहीं दिया गया। उसके नेताओं को इतना भी अवसर नहीं दिया गया कि वे यह बतावें की "भारत छोड़ो" प्रस्ताव का वास्तविक अर्थ क्या है। जनता अपनी कटुता का यही कारण बता रही थी। नेताओं की गिरफ्तारी से जनता ने समझा कि सरकार उसे युद्ध के लिए चुनौती दे रही है और उसे भी इस चुनौती के उत्तर में कुछ करना चाहिए। ९ अगस्त के बाद पहिले हफ्ते में कार्यकर्त्ताओं ने गाँव-गाँव में घूमकर सभाएँ कीं और जनता उनका सन्देश सुनने के लिए हजारों की संख्या में एकत्र हुई। [illegible] स्कर के लोहे के कारखाने के मजदूरों ने अपने आप हड़ताल कर दी और एक महीने के लिए कारखाने को बन्द कर देना पड़ा। बम्बई से लौटे हुए कार्य-कर्त्ताओं को जनता ऐसी दृष्टि से देखती थी, मानो वे तीर्थ यात्रा से लौट आये हों। लोग उनके पास जाकर पूछते थे। "गांधीजी ने बैठक में क्या कहा?" "वहां वे कैसे दिखाई [illegible] थे?" "क्या वे बुढ्ढे हो गये हैं?" और अन्त में सजल नेत्रों से वे पूछते "गांधी जी क्यों गिरफ्तार कर लिये गये?"

शांतिपूर्ण प्रदर्शन

जनता ने ताल्लुका की कचहरियों पर शांतिपूर्ण धावा बोलकर अपने विरोध का प्रदर्शन किया। ताल्लुका कचहरियों पर कांग्रेस के झन्डे फहराये गये और "अगस्त प्रस्ताव" दुहराया गया। ऐसे ही प्रदर्शनों में से एक के अवसर पर एक पुलिस अफसर ने आकर प्रदर्शनकारियों के नेताओं को गिरफ्तार कर लिया और सशस्त्र पुलिस भीड़ पर टूट पड़ी। संगीन से [illegible] पाण्डुरंग देशमुख नामक कार्यकर्ता घायल होगये। बस, इतना काफी था, जनता को उभाड़ने के लिए।

नेता ने जनता से कहा—"हमारा काम सफल हो गया, हम विजयी हो गये अब आपलोग घर जाइए। मैं जानता हूँ कि इस समय हम इतने शक्तिशाली हैं कि हम गिरफ्तार करनेवालों को ही गिरफ्तार कर सकते हैं; किन्तु हमारा यह उद्देश्य नहीं है। गांधी जी ने हमसे "करने या मरने" को कहा है; किन्तु उन्होंने साथ ही अहिंसा का पालन भी करने को कहा है। यदि आप हिंसा का कोई कार्य करेंगे तो महात्मा जी दुखी होंगे। इसलिए आपलोग शांतिपूर्वक घर लौट जाइए।"

यह गांधीजी की कसम थी। जनता ने उसका पालन किया अनुशासित रूप से। लोग शांतिपूर्वक अपने अपने घर चले गये। यह कराड की घटना है। इसके बाद पाटन का धावा हुआ। यह भी शांतिपूर्ण प्रदर्शन हुआ।

३ सितम्बर को ता[illegible]गांव के किसानों ने तासगांव के ताल्लुका कचहरी पर धावा किया। यह अभूतपूर्व प्रदर्शन था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

४ हजार प्रदर्शनकारियों ने पूर्ण अनुशासित सेना के रूप में धावा किया। सभी यह अनुमान कर रहे थे कि जनता का राज्य स्थापित होने ही वाला है। प्रदर्शनकारियों के काबू में ही पूरी स्थिति थी। वे जो चाहते कर सकते थे। किन्तु, वे जानते थे कि "हिंसा से गांधी जी का दिल दुखेगा" इसलिये, केवल भण्डाभिवादन कर वे लौट आये।

बाहुज में करीब १५०० आदमियों ने प्रदर्शन किया। उनके नेता थे वाझगांव के श्री परशुराम धर्मे। इस ३५ वर्ष के युवक को १९४० में व्यक्तिगत सत्याग्रह के लिए चुना गया था; किन्तु, परिवार में किसी की बीमारी के कारण वे सत्याग्रह न कर सके। ९ सितम्बर को वे एक बैलगाड़ी पर सवार होकर बाहुज गये और वहाँ प्रदर्शन में सम्मिलित हो गये। कारण, बीमारी के कारण वे पैदल नहीं चल सकते थे। थोड़ी ही दूर पर पुलिस ने जुलूस को रोक दिया। परशुराम के हाथ में झण्डा था। पुलिस ने गोली चलायी और तीन बुलेट परशुराम के सीने में घुस गये और वे वहीं शहीद हो गये।

दूसरे दिन इस्लामपुर में जनता और पुलिस में मुठभेड़ हुई। इसमें प्रदर्शनकारियों के नेता थे श्री पाण्डु मास्टर, जो आज प्रसिद्ध फरार हैं और जिनकी गिरफ्तारी के लिए कई हजार रुपए इनाम की घोषणा की गयी थी। श्री पाण्डु मास्टर को एक जिम्मेदार पुलिस अफसर के सामने बेंत लगाये गये। उन्हें गिरफ्तार करने से पूर्व जनता को तितर-बितर हो जाने की आज्ञा दी गयी। उत्तेजित [illegible] भी जनता तितर-बितर [illegible] गयी और प्रदर्शन [illegible] गया। आधे घण्टे बाद कचहरी के पास खड़े लोगों के [illegible] छोटे दलों को तितर-बितर करने के लिए गोली चलायी गयी। [illegible]बारा [illegible]टे नामक किसान गोली खाकर वहीं मर गया और किर्लोस्कर कारखाने के इंजीनियर श्री पण्ड्या अस्पताल लेजाये जाते समय रास्ते में मर गये। दूसरे तीन आदमी भी सख्त घायल हुए। बाहुज और इस्लामपुर के गोलीकांड से जनता के दिल में जलती हुई आग में घी पड़ गया। इन प्रदर्शनों में १५०० से ज्यादा आदमी पकड़े गये। एक सौ से अधिक अधिक आदमी फरार घोषित किये गये और उनकी गिरफ्तारी के लिए कई हजार रुपयों के इनाम की घोषणा की गयी"।

सामूहिक जुर्माना

सतारा में भी इस [illegible] का प्रयोग किया गया। एक-एक गाँव पर बीस-बीस हजार तक जुर्माना लगाया गया। इस जुर्माना को बसूलने के लिए नौकरशाही ने घोर अमानुषिक अत्याचार किए। सिपाही चारों ओर से घेरा डाल देते हैं, गाँववालों को आदेश दिया जाता है कि इतने...

...घण्टोंमें पूरी रकम अदा कर दो। तरस तो तब आता है जब इस बातका खयाल होता है कि देहातके गाँवोंमें पाखाने नहीं होते। सैनिक गाँवके लोगोंको बाहर नहीं जाने देते; मवेशियोंका चारा लाना भी बन्द कर देते हैं। गाँववालोंको अपनी स्त्रियोंका जेवर दूसरे गावों या बाजारोंमें जाकर और बेचकर रुपया लाने भरकी आज्ञा दी जाती है। सुपान गाँवमें घण्टे भरमें ही दस हजार रुपये वसूल कर लिये गये। भारतीय [illegible] मजदूरोंकी भयङ्कर गरीबीमें सामूहिक जुर्मानेका यह बोझ सह्य होता है। यह है बीसवीं सदीमें अंग्रेजी सरकार—जो फासिस्टों और नात्सियोंको नृशंस-बर्बर कहनेमें दम नहीं लेती—शिवाजीके सतारेमें सभ्य व्यवहार का नया नमूना!

दमन का रूप

कराद और बहादुर[illegible]के की हवालातों में कैदियों के प्रति जो दुर्व्यवहार किया गया, उसके कारण उन्हें नरकका नाम दिया गया है। [illegible] नामक नया अस्त्र चल पड़ा—नमक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मिलाये पानी में चमड़े को डुबाकर कैदियोंपर प्रहार किया जाता था। धुएँ और गर्म पानीका भी प्रयोग किया गया। करादके पाण्डुरङ्ग विष्णु पटिल पर सुंदरो का खुली सड़कपर प्रयोग किया गया। काटेवाड़ी गाँवके चार वृद्धोंको एक कतार में बैठाकर उनके सर पर एक पत्थरकी पटरी रख दीगयी और चार लड़कों को उसपर चढ़ने को कहा गया। काटेवाड़ी गाँवके आठ-आठ सालके छोटे बालकों—श्री शिवराम कोर्दे और श्री गणपत कोर्दे-को पुलिस ने बुरी तरह पीटा। तासगाँव ताल्लुके अस्सी वर्षके वृद्ध श्री चामापा पारमाने को इतना सताया गया कि वे मूर्छित हो गये।

यह दर्दनाक हालत उन [illegible] की थी जिनके भाई-बंधुओं ने सिरेनिका, लीबिया तथा इटली आदि स्थानों में जर्मनों के छक्के छुड़ाये थे।

दमन की भी एक सीमा होती है। सभ्य राष्ट्रों में प्रायः इसके संबंध में भी कानून होते हैं और पुलिस को मनमानी करने का अधिकार नहीं प्राप्त होता। पर सतारा में जैसा भयङ्कर अत्याचार निरपराध नागरिकों पर किया गया, वैसा प्राचीन बर्बर जातियों के काल में ही सुनने को मिलता है। श्री बाटलीवाला ने साप्ताहिक 'बाम्बे क्रानिकल' में लिखते हुए बताया था कि पुलिस आधी रात के समय गाँव में जा [illegible] लोगों की स्त्रियों एवं बहनों को पकड़कर गाँवके बाहर एकान्त में ले जाती और वहाँ तरह-तरह से डरा-धमका कर उन्हें अपने पति या भाई के बारे में बतलाने को बाध्य करती थी। यही नहीं, उनका सतीत्व भी हरण किया जाता था। उन्होंने सप्रमाण ऐसे दो उदाहरण दिये हैं जिनमें फरार व्यक्तियों की स्त्रियों और बहनों पर पुलिस द्वारा बलात्कार किया गया। अम्बक गाँव के फरार श्री खादेव पाटिल की स्त्री श्रीमती चन्द्रा बाई ने पुलिस अफसर के व्यवहार से लज्जित होकर निराश हो कुएँ में कूदने का प्रयत्न किया। उनका कहना है कि पुलिस जब स्त्रियों को वापस लौटाती थी तो वे मुँह छिपाकर रोने-सिसकने लग जाती थीं।

अंग्रेजी सरकार की सभ्य नीति का एक और उदाहरण उसके बन्दियों के प्रति किये गये व्यवहार से मिलता है। सतारा में पुलिस की निगाह के अपराधी यदि पुलिस के हाथ पड़ें तो पहले उनको अच्छी तरह मरम्मत की जाती थी। श्री पाटलीवाला ने ऐसा भी उदाहरण दिया है जिसमें चार पाँच व्यक्तियों को पुलिस ने मारते-मारते अधमरा बना दिया। फिर भी उन लोगों ने पुलिस के मन की बातों को नहीं स्वीकार किया। इस भयङ्कर चोट के कारण एक व्यक्ति की मृत्यु हो गयी और शेष इस लायक भी नहीं रहे कि तीन-चार दिनों तक कचहरी में मजिस्ट्रेट के सामने पेश किये जा सकें।

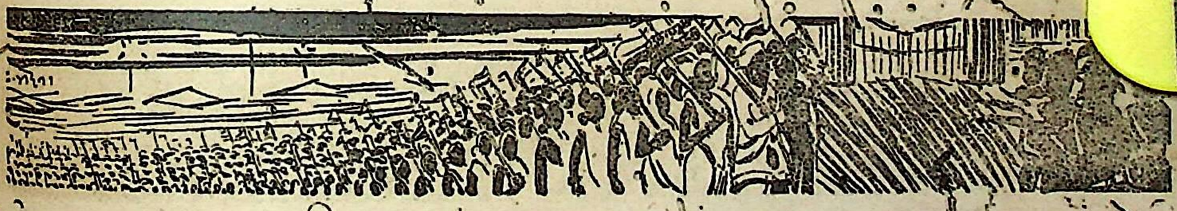

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कोल्हापुर में राक्षसी अत्याचार

काशीबाई के गुप्तांगों में मिर्चें भर दी गईं !!

काशीबाई हणवर

कोल्हापुर रियासत की पुलिस का एक [illegible]सा कारनामा दे[illegible] के सामने आया है, जिसे सुनकर प्रत्येक सभ्य मनुष्य शर्म से आँखें नीची कर लेगा।

[illegible] इस प्रकार बतायी जाती है कि १४ अक्टूबर [illegible] को पुलिस दारोगा इंगवले कुछ कान्स्टेबलों के साथ [illegible]खावल गाँव गया और वहाँ से काशीबाई हणवर नामक स्त्री को पकड़ लाया। काशी[illegible] के पुत्र मल्ला हणवर को पुलिस अगस्त आन्दोलन के [illegible] गिरफ्तार करना चाहती थी, मगर वह तभी से [illegible]रार था। दारोगा इंगवले ने काशीबाई से मल्ला का पता पूछा और [illegible] उसने नहीं बताया तो कहा जाता है कि उसे नंगा करके पिटवाया [illegible]। काशीबाई के पति और दूसरे [illegible] पुत्र भी उस समय वहीं मौजूद [illegible]। उन्हें भी पीटा गया। काशीबाई को तीन बार चमड़े के कोड़े से पीटा गया। कहा जाता है कि उसके गुप्तांगों में मिर्चें भर दी गईं, जिसके कारण काशीबाई को खून बहने लगा और उसे गर्भपात होगया।

इस घटना के बाद काशीबाई ने पुलिस में रिपोर्ट लिखवाई और राज्य के प्रधानमंत्री मि० मिचल से भी शिकायत की। मगर, कहीं कोई सुनवाई नहीं हुई। जब अखबारों में शोर मचा तब लीपापोती करने के लिये मि० मिचल ने श्री रागे नामक पुलिस अफसर को जाँच करने के लिए नियुक्त कर दिया। रागे ने जाँच करके फैसला दिया कि कोई गंभीर बात नहीं हुई है।

तब, कोल्हापुर राज्य परिषद् ने मामले को अपने हाथों में लिया और बम्बई के भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्री बी० जी० खेर की अध्यक्षता में एक जाँच-समिति नियुक्त की। इस समिति में चार प्रमुख वकील थे और एक महिला कार्यकर्त्री।

समिति ने अनेक व्यक्तियों की गवाही ली, जिनमें राज्य के कुछ छोटे अफसर भी शामिल थे और अन्त में इस परिण[illegible]म पर पहुंची कि काशीबाई की सब शिकायतें सही हैं। अपनी रिपोर्ट में समिति ने बताया है कि कोल्हापुर पुलिस के असिस्टेंट सुपरिण्टेण्डेण्ट श्री निंबालकर ने समिति के सदस्य श्री करमाकर से बातचीत करते हुए स्वीकार किया है कि पुलिस पर जो अभियोग लगाये गये हैं, वे सही हैं; मगर अब किसी तरह मामले को दबा देना ही अच्छा है।

इस रिपोर्ट के प्रकाशित होने के बाद भी राज्य ने अपराधी अफसरों को कोई दण्ड नहीं दिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सिंध ने भी अपना कर्त्तव्य पूरा किया

विद्यार्थियों के साथ अप्राकृतिक व्यभिचार करने की चेष्टा !!

आजादी की इस लड़ाई में सिंध भी पीछे न रहा। बम्बई में कांग्रेस-नेताओं की अचानक और अविवेक-पूर्ण गिरफ्तारी की प्रतिक्रिया यहाँ भी हुई। कांग्रेस-कार्यकर्त्ताओं और देश प्रेमियों को चुन-चुन कर नौकरशाही ने जेल के सीखचों में बन्द कर दिया। फलस्वरूप जनता में काफी उत्तेजना फैली। विरोध में प्रदर्शन हुए, हड़ताल कर दी गई। विद्यार्थियों ने स्कूल कालेज छोड़कर आन्दोलन का मोर्चा लिया। इस आन्दोलन को दबाने के लिए पुलिस और फौज ने ऐसे-ऐसे घोर अमानुषिक अत्याचार किए, जिन्हें सुनकर ही रोंगटे खड़े होजाते हैं।

इस संबंध की विस्तृत रिपोर्ट अभी प्रकाशित नहीं हुई है; लेकिन, जो भी मालूम हुआ है, उसे पढ़कर रोमांच हो आता है।

आन्दोलन छिड़ने के बाद नौकरशाही ने जो दमनचक्र चलाया उसकी भयानकता को देखकर कराची के प्रतिष्ठित 'इंडयन मर्चेंट्स चेम्बर' और 'वायर्स एंड शिपर्स [illegible]' ने अपनी एक संयुक्त बैठक की और इन अत्याचारों की जाँच के लिए एक कमेटी नियुक्त की। इस कमेटी में मुसलमान भी थे। काफी जाँच पड़ताल के बाद कमीटी ने एक रिपोर्ट प्रकाशित की। रिपोर्ट में कहा गया है—"...पुलिस द्वारा सताए गए अनेक व्यक्तियों की गवाही से हम इसी नतीजे पर पहुँचे हैं कि पुलिस जनता के साथ, खासकर १२ अगस्त सन् १९४२ के दिन, बड़ी बुरी तरह पेश आई और तथाकथित आन्दोलन कारियों को दबाने के लिए उसने आवश्यकता से अधिक बल का प्रयोग किया; और साथ ही उसने ऐसे व्यक्तियों को भी, जो किसी भी प्रदर्शन में भाग नहीं लेरहे थे, अन्धाधुंध चोटें पहुँचाई।

रिपोर्ट में आगे कहा गया है:—"...पुलिस ने सिर्फ भीड़ को तितर-बितर करने के लिए ही लाठियों का प्रयोग नहीं किया; वरन् अपने उचित कार्यों के लिए जाते हुए पैदल व साइकिल पर सवार लोगों को भी उसका शिकार बनाया। वे वाचनालय, रेस्टोराँ और क्लब-घरों में भी घुस गए और वहाँ बैठे लोगों को अंधाधुंध पीटा और उनमें से कुछ को गिरफ्तार भी कर लिया। उन्होंने छोटे-छोटे बच्चों को खदेड़-खदेड़ कर पीछा किया और लाठी से घायल कर दिए ...लोगों के जनाने घर में भी वे घुस पड़े..."

कराची में नौकरशाही के इन नमकहलालों ने नंगे होकर नाचा। मासूम बच्चों तक को उन्होंने नहीं छोड़ा। कुछ छोटे छोटे बच्चों ने खेल-खेल में एक जुलूस निकाला। इसके बाद वे अपने-अपने घरों में चले गए। पुलिस पीछा करती करती उनके घरों के अन्दर [illegible] गई और उनकी मा-बहनों के सामने उन्हें बुरी तरह पीटा।

कोड़े [illegible]

स्कूल के विद्यार्थियों पर, जिनकी उम्र [illegible] से १४ वर्ष तक की थी, कोड़ों की मार पड़ी। कोड़ों की यह सजा देने का ढंग भी बड़ा अमानुषिक था। साथियों के सामने नंगा कर उन्हें एक 'टिक-टिकी' से बाँध दिया जाता था और फिरङ्गकी खुली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चूतड़ों पर कोड़ों से आघात किया जाता था। उन्हें इतनी मार पड़ती थी कि उनकी चूतड़ कभी-कभी एकदम लहूलुहान हो जाती थी।

अप्राकृत व्यभिचार

कराची के व्यापारियों द्वारा नियुक्त कमिटी ने एक ऐसी बात का उल्लेख किया है, जिसे सुनकर प्रत्येक सभ्य मनुष्य का मस्तक शर्म से नीचे झुक जायगा।

रिपोर्ट में कहा गया है —

"कुछ सताए गए बच्चों ने, जिनमें अधिकांश विद्यार्थी [illegible]ार प्रतिष्ठित नागरिकों के लड़के हैं, कमेटी के सामने बताया है कि थाने में काफी थप्पड़ घूँसे और ठोकरें लगाने के बाद उन्हें एक कमरे में लेजाया गया और पीठ के बल लिटा दिया गया। सादा लिबास पहने एक आदमी उनकी छाती पर बैठ [illegible] दूसरे आदमी ने उनके पैरों को ऊपर उठा लिया और [illegible] के बाद उनके नंगे पैरों पर बेंत लगाई गई। उनमें से अधिकांश को दस से लेकर बीस बेंतें लगाई गईं।"

पुलिस अफसरों के जूतों पर उनसे नाक रगड़वाई गई और इसके बाद एक ऐसा अमानुषिक कार्य हुआ, जिसे सुनकर आप घृणा से मुँह फेर लेंगे। रिपोर्ट में कहा गया है कि एक पुलिस ने अप्राकृतिक व्यभिचार करने के लिए एक लड़के को चुन लिया।

रिपोर्ट में लिखा है —

"कमीटी का ध्यान एक ऐसी घटना की ओर भी आकर्षित किया गया है, जिसमें एक पुलिस-अफसर ने एक रंगरूट को, थाने में गिरफ्तार कर लाए गए, लड़कों में से किसी को भी चुन लेने को कहा। (इन लड़कों की थप्पर घूँसों आदि से पहले ही पूजा [illegible]), कहते हैं, उस रंगरूट ने सचमुच अफसर के आज्ञा का पालन किया। जबर्दस्ती घसीट कर वह एक लड़के को दूसरे कमरे में लेगया और बलपूर्वक उसके पैजामे और अंडर-वियर को उतार डाला। लेकिन, उस लड़के ने काफी शोर-गुल मचाया और उस राक्षस की इच्छा पूरी नहीं होसकी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ष्टी और चिमूर की दर्द-कहानी

सच्चे 'ब्लैक-होल' की कथा

१९४२ के स्वतंत्रता-आन्दोलन को कुचलने के लिए आष्टी—मध्य प्रान्त के दो गाँवों में—नौकरशाही ने जो अमानुषिक अत्याचार किए, उनका दूसरा दुनिया के इतिहास में शायद ही मिले।

...वों में निरीह अबलाओं पर किए गए अत्याचारों ...र्ट डा० मुंजे और दूसरी रिपोर्ट श्रीमती रामाबाई ...यार की थी और प्रान्त के गवर्नर के पास दाखिल ...संबंध में निष्पक्ष जाँच करने की माँग की थी। ...निराधार और झूठी कह कर दबा ...। लेकिन पकड़ती गई। नौकरशाही का दिल दहल उठा। ...पर, इस संबंध की खबरें छापने पर, प्रतिबंध लगा ...। विरोध-स्वरूप हिन्दुस्तान के समस्त अखबारों ने ...। प्रो० भंसाली के अनशन ने देश में हलचल मचा ...अंत में सरकार को झुकना पड़ा। वायसराय की कौंसिल ...न सदस्य, माननीय अणे, खुद चिमूर गए और वहाँ की ...की दर्द-कहानी सुनकर उन्हें भी कहना पड़ा—"जो ...चाहिए था, वह भी यहाँ हुआ। ईश्वर ...ह अवश्य इसका न्याय करेगा।"

गोली और लाठी

...अगस्त को आष्टी में जब नेताओं की गिरफ्तारी ...र पहुँचा तो जनता ने जुलूस निकाला और गाँव के ...तिरंगा झण्डा लगाने के लिए वे चल पड़े। जुलूस के ...लाएँ थीं। थाने के समीप जुलूस के पहुँचने पर ...ने उन्हें रोका और 'माँ-बहनों के सामने गन्दी ...सा की। लेकिन, जनता धैर्य-पूर्वक आगे बढ़ती ही गई। मदोन्मत्त पुलिसवालों को यह कब सहन था। उन्होंने बिना किसी हिचकिचाहट के लाठियों तथा गोलियों के प्रहार से उनके बढ़ते कदमों को रोका।

छटपटाते घायल भाइयों के आर्तनाद ने युवकों के हृदय में प्रतिहिंसा की ज्वाला जाग्रत कर दी। उनका धैर्य छूट गया और वे भूखे शेर की तरह टूट पड़े अन्यायी टुकड़ेखोरों पर। फलस्वरूप छः ग्रामीण और तीन पुलिसवाले घटनास्थल पर मारे गये और सैंकड़ों घायल हुए। पुलिस मैदान से भाग खड़ी हुई और तिरंगा झण्डा थाने पर शान से लहरा उठा।

उसी रात गोरे सिपाहियों का एक दल गाँव में आ धमका। लोगों को बुरी तरह मारा पीटा। दूसरे दिन उन्हें बिना भोजन पानी के धूप में खड़ा रखा और फिर रात को जानवरों के कोठों में ठूँस कर जानवरों की तरह भर दिया। इसके बाद लगभग एक महीने तक वहाँ जो नारकीय अत्याचार हुए, उन्हें सुनकर ही आँखों में खून उतर आता है।

अनेक बेकसूर लोग गिरफ्तार किये गये, जिनमें अधिकांश की उम्र २० वर्ष से भी कम थी। ५२ मनुष्यों को कालेपानी की सजा हुई और तीन को फाँसी का हुक्म सुनाया गया। अन्त में इनकी सजा आजन्म कारावास में बदल दी गई।

चिमूर

चंदा जिले में वरोरा से ३... ... चिमूर गाँव है। करीब ६००० लोगों की छोटी-सी बस्ती है। ... अगस्त से ही वहाँ सभाएं होने लगीं; जुलूस निकलने लगे। १६ अगस्त को नाग-पंचमी थी। प्रातःकाल गाँव के लोगों का दल प्रभात-फेरी के लिए निकला। जुलूस में करीब ४०० स्त्रियाँ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और सौ बच्चे भी थे। सभी पूर्णतः अनुशासित एवं अहिंसक थे। गांव के सभी प्रमुख रास्तों पर पुलिस मोर्चा जमाए हुए थी। जुलूस रोक दिया गया। फिर गोलियों की वर्षा हुई। लोग जहाँ थे, वहीं बैठ गए। फिर भी गोलियाँ चलती रहीं। कुछ स्त्रियां और बच्चे भी गोलियों के शिकार हुए। तब तो जनता का धैर्य छूट गया। उन्होंने सामना किया और हत्यारों को मैदान छोड़ कर भागने को मजबूर होना पड़ा। जनता क्रोध से पागल होरही थी। दो पुलिसवाले उसकी चपेट में आगए और उन्हें अपने जीवन से हाथ धोना पड़ा।

इसके बाद सड़क काट डाली गई, रास्ते पेड़ गिरा कर रोक दिए गए।

बाद में फौज वहाँ पहुँची और उसने निरस्त्र जनता पर ऐसे-ऐसे अत्याचार किए कि जिन्हें सुन कर ही खून उबल आता है।

फौज के वहाँ पहुँचने तक अधिकांश गाँव खाली हो गया था। गांव में सिर्फ बूढ़े, बच्चे और स्त्रियां रह गई थीं। तीसरे दिन इन सभी लोगों को कड़कती धूप में कई घण्टे खड़ा रखा गया। एकदम सीधा खड़ा रहने का हुक्म हुआ। जरा भी झुकने, हटने या फिर पानी मांगने पर फौजी बूट की ठोकर का सामना करना पड़ता था। जो बेहोश होकर गिरता, उसे इतनी ठोकरें पड़तीं कि उसकी बेहोशी और घण्टों बढ़ जाती।

ब्लैक-होल

कलकत्ते की काल-कोठरी के संबंध में अब यह पूर्ण रूप से तय होगया है कि वह अंगरेजों की मनगढ़न्त है। दूसरों पर लांछन लगानेवाली इसी नौकरशाही ने ब्लैक-होल की घटना खुद सच्ची कर दिखा दी। शाम के दो सौ से अधिक लोगों को लगभग १५ फुट x २५ फुट लंबे कानी-हौस में ठूँस कर भर दिया गया। के भूखे प्यासे लोग 'पानी-पानी' भी नहीं चिल्ला सके और बेहोश हो गये।

बलात्कार

नौकरशाही के पिट्ठुओं को इतने से ही संतोष न हुआ। गोरी फौज के सिपाही और पुलिस के कर्मचारी तोड़-तोड़ कर घरों में घुस गये और वहाँ अकेली औरतों पर ऐसे घोर अत्याचार किए कि जिसे सुनकर ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं। १२ वर्ष की बालिकाओं से लेकर ५५ वर्ष की माताएँ, जितनी इन नर-पिशाचों को मिलीं, किसी को नहीं छोड़ा। ऐसी कई रोमांचकारी कहानियां हैं, जहाँ छोटे बच्चों को अपनी [illegible] की मूँठें मार कर उन्हें बेहोश कर गिरा दिया गया है। यह दमनचक्र महीनों में चलता रहा। कितने लोग गोलियों के शिकार हुए, औरतों ने लज्जावश आत्म-हत्या कर ली। फिर न्याय का [illegible] वाली सरकार ने कितनों पर मामला चलाया। उनमें से ७० से भी अधिक पुरुषों को कालेपानी की सजा देकर जेलों में ठूँस दिया।

—o—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गस्त-क्रान्ति का महान सेनानी

स्त-क्रान्ति के सेनापतियों में से अपूर्व साहस, विलक्षण द्धिक योग्यता आदि गुणों का सबसे अधिक परिचय को मुग्ध एवं चकित करने वाले व्यक्ति श्री जयप्रकाश हैं।

समय अगस्त आन्दोलन आरंभ हुआ जयप्रकाश के हजारीबाग सेंट्रल जेल में नजरबन्द थे। देश में की अन्तिम लड़ाई छिड़ी हुई थी। स्वतंत्रता की काने के लिए दीवाने देशभक्त आगे बढ़ रहे थे। प्रकाश जेल के सीखचों के भीतर यह सब बेबस लता रहे। उसकी वीर ... यह कैसे सहन ती थी। वे मौका ढूँढ़ने लगे। ९ नवंबर १९४२ की तरह देश में यह खबर फैली कि जयप्रकाश पहरेदारों की आँखों में धूल झोंक कर जेल से भाग

नवम्बर ९४२ का दिन और दिवाली की रात्रि बजे रात की हाजिरी ली जा चुकी थी। दिवाली ह करने के लिए राजबंदी बैरकों में बन्द नहीं किए कुछ रास-रंग मचाने का निश्चय हो चुका था और र जेल की दीवार फाँदने की योजना भी। ... ण सिंह (बिहार के प्रधान-मंत्री), श्री अनुग्रहनारायण र्थ मंत्री) और श्री रामवृक्ष बेनीपुरीजी भी थे। समा- केसी प्रकार की कमी नहीं थी। इसीलिए अधिकारियों ओर ध्यान देने का अवसर नहीं मिला। पूर्वयोजित के अनुसार जयप्रकाश ने अपने पाँचों साथी (श्री रामानंद गेन्द्र शुक्ल, सूर्यनारायण सिंह, गुलाबचंद्र गुप्त और म सिंह) बुलाये, एक मजबूत और लंबी रस्सी साथ रस्सी के बदले धोती की सहायता समीचीन जान और जयप्रकाश बाबू धोती से ही निकले ऐसा विश्वास जाता है।)

वार लाँघते हुए और सब तो निकल गये खैरियत से, राजी को गहरी चोट आई। उन्हें एक साथी ने अपने ले लिया और इस प्रकार कुछ देर बाद वे खतरे से बाहर हो गये और अपने कूदने के स्थान पर एक मामूली कमजोर और छोटी रस्सी छोड़ गये।

जेल से भाग जाने के बाद तत्काल ही जेल के अधिकारियों को पता नहीं लगा। कहा तो ऐसा जाता है कि ३६ घंटे के बाद उनकी गिनती में पहले पहल 'घाटा' जान पड़ा। प्रतिदिन बैरिकों में कोई सोता रहता—वक्त पड़ने पर खानेवालों में अपना नम्बर भी रख लेता था। किन्तु ३६ घंटे के बाद रहस्य खुल ही गया। जब जेल के प्रधान अधिकारी को यह समाचार दिया गया कि ६ कम हैं और इनमें जयप्रकाश तो ... ही। अतः सब उनके ही साथ भाग गये होंगे—यही अशंका ही साधारण ठहरायी गयी। जाँच करने पर बात सच निकली। किन्तु अब प्रश्न उठा कि आखिर वे भाग कैसे गये! विशेषज्ञ बुलाया गया। छोटी और कमजोरी रस्सी ने उसे कुछ दूसरा पता बताया और उसने यह निर्णय दिया कि जयप्रकाशजी मुख्य फाटक से ही सन्तरियों की आँखों में धूल झोंक कर गये। खैर, जयप्रकाशजी कैसे निकले यह उनके निकलने के बाद भी रहस्य है, इसके साथ-ही-साथ समूची नौकरशाही के लिए चुनौती भी!

बात आई श्रीकृष्ण बाबू पर। जेल के अधिकारियों ने उन पर इन व्यक्तियों के छिपा लेने का आरोप लगाया। श्री बाबू इससे अपरिचित थे या नहीं यह तो जाना न जा सका; किन्तु उन्होंने सरकार के ऊपर एक दूसरा गंभीर आरोप लगाया कि उसने हमारे इन ६ साथियों को किसी अज्ञात स्थल को हटा दिया। श्रीबाबू के इस गंभीर आरोप की गहरी प्रतिक्रिया आरम्भ हो गयी। सरकार के पुरस्कार घोषित करने के बाद भी अविश्वास सर्वथा दूर नहीं हुआ। खैर, जयप्रकाश अपने साथियों सहित सकुशल निकल गये। जेल के बाहर दो सशस्त्र रक्षकों के साथ एक मोटरकार इनकी प्रतीक्षा कर रही थी। राँची तक वे इसी मोटर से गये। आगे उसका निभना कठिन था, इसलिए मोटर भी जलाकर खाक कर दी गयी। अब पैदल ही यात्री करते हुए गया की ओर चले। बीहड़ पथ—बस्ती

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant 2

का बचाव। बड़ी कठिन समस्या थी। चार दिनों तक भोजन से भी भेंट न हुई। पाँचवें दिन एक जंगल में पहुँचे और वहाँ जंगली फल और झरने का पानी पीकर क्षुधा शांत की। इस यात्रा-पथ में और भी अनेक जंगल और पहाड़ मिले। पैदल चलते-चलते, काँटों और झाड़ियों से उलझते-उलझते उनकी दशा बुरा हो गयी थी। पाँवों में छाले पड़-पड़ के फूट गये थे, जो निरन्तर पीड़ा देते रहते थे। फिर भी चलना था और वे चलते गये।

धीरे-धीरे गया तक पहुँच गये। अबतक इन्होंने अपनी पोशाकें नहीं बदली थीं। गया पहुँचने पर इसकी समस्या और भी उग्र हो गयी। किन्तु जयप्रकाशजी के पास सौ रुपये का नोट था। उसीको व्यय करके कपड़े खरीदे गये। अब शरण की समस्या थी। याद आया उनका एक साथी यहीं है और जेल के बाहर है। वहीं किंचित् विश्राम का अवकाश मिला।

अब समस्या आयी काम करने की। तय यह रहा कि देश का दौरा कर आग को फिर उभाड़ना चाहिये, जो युक्तप्रांतीय जिलों में सुलग रही थी। जयप्रकाशजी बनारस आये। यहाँ नगर में उन्हें काफी छात्र मिले, कुछ सहायक भी। उत्तर भारत के आन्दोलन का पूरा विवरण लेकर और अगस्त-आन्दोलन के नेताओं को निश्चित आदेश देकर उन्होंने रीवाँ के पथ से अन्यत्र गमन किया।

बीच में कांग्रेस वर्किंग कमेटी के स्थान पर काम करनेवाली निर्देशक मण्डली से भी उनका परिचय हुआ। कुछ समय तक वे भी निर्देशकों में रहे; किन्तु कुछ मतभेदों के कारण उनको पदत्याग कर देना पड़ा।

अब उन्होंने देश का दौरा करके अगस्त आन्दोलन के नेताओं से मिलकर नया कार्यक्रम बनाने का निश्चय किया। बम्बई में जाकर उन्होंने अच्युत पटवर्धन से मुलाकात की, जो उस समय पश्चिमी भारत को एक नये ही ढाँचे में ढालने का यत्न कर रहे थे। अरुणा आसफअली उस समय कलकत्ते में थीं और वहीं थे डाक्टर राममनोहर लोहिया। धीरे-धीरे काम होना आरम्भ हो गया। किन्तु इसके लिये समय-समय पर कार्यकर्त्ताओं को आपस में मिलना और उसके लिये ट्रेनिंग देना आवश्यक था। ब्रिटिश भारत की अंगुल-अंगुल भूमि गुप्तचरों के पाँव तले आ चुकी थी। इसलिये, कार्यकर्त्ताओं की तैयारी के लिए नेपाल की सीमा का विचार हुआ। अप्रैल सन् १९४३ में नेपाल-राज्य के एक [illegible] में कार्यकर्त्ताओं का पहला सम्मेलन हुआ और उसी समय [illegible] द हिन्द दस्तेका निर्माण शुरू हुआ। दस्ते के लिये

अफसर और शिक्षक भी चुन लिये गये। आजाद हिन्द [illegible] निशान 'तीन बाण' माना गया था, जो स्वतन्त्रता, [illegible] एक राष्ट्र का द्योतक था।

इस दस्ते को सभी प्रकार की शिक्षा दी जाती थी। [illegible] मारी, छापामार लड़ाई आदि सभी कौशल इसे सिखा[illegible] थे। संघटित फौज की ही भाँति इसकी मार्चिंग [illegible] जिसे क्रांति के गीतों से गति दी जाती थी। [illegible] दस्तेका प्रसिद्ध गान 'क्रांति का उद्‌बोधन' था। [illegible] कार्रवाई धीरे-धीरे सजग रूप से होने लगी। किन्तु [illegible] सरकार की भाँति ही नेपाल सरकार भी ऐसे संघटन [illegible] थी। गुप्तचरों द्वारा यह समाचार उसे मिल चुका [illegible] जयप्रकाश और उनके साथियों को गिरफ्तार करने [illegible] में पड़ी। २४ मई १९४३ को जयप्रकाशजी के साथ [illegible] लोहिया, श्यामनन्दन सिंह, डाक्टर बैजनाथ सिंह एवं [illegible] सिंह गिरफ्तार कर लिये गये। हनुमान नगर में [illegible] जाने का बन्दोबस्त कर सरकार कुछ निश्चिन्त हुई। [illegible] चला था कि भारत सरकार नेपाल सरकार पर उनको [illegible] करके भारत भेज देने के लिये दबाव डाल रही है। [illegible] गिरफ्तारी के बाद ही कैम्प में इसकी खबर पहुँची कि [illegible] सेना सीमा पर मौजूद है और जयप्रकाशजी उसके [illegible] दिये जानेवाले हैं। साम, दाम, दण्ड, भेद से [illegible] अधिकारियों को अनुकूल करने का प्रयत्न किया गया [illegible] सारे यत्न व्यर्थ गये और अंग्रेजी सेना और करीब [illegible] कैम्प के नायकों को यह विश्वास हो गया कि अगर [illegible] से आज रात ही इन्हें छुड़ा नहीं लिया गया तो नेपाली [illegible] उन्हें कल ही ब्रिटिश-सरकार के हवाले कर देगी और [illegible] बाद क्या होगा पता नहीं। बर्बर और युगों से गुला[illegible] वृत्ति रखनेवाली स्वतन्त्र (?) भारतीय रियासतों का [illegible] ही क्या और उसकी दृष्टि में इन जानों का मूल्य ही क्या।

नायकों का आपसी सम्मेलन हुआ और यह त[illegible] कि छापा मारकर नेताओं को छुड़ा लिया जाय। त[illegible] चार-पाँच नवयुवक गुप्तचर भेजे गये। दिनभर पूरी प[illegible] का उन्होंने अध्ययन कर नायकों को खबर दी। थोड़े-से [illegible] के अतिरिक्त कैम्प के सभी सैनिक इस हमले में स[illegible] थे। कई दल बनाकर नगर में प्रवेश किया गया। एक [illegible] जेल की दाहिने ओर के एक मकान में आग लगा [illegible] 'दौड़ो, दौड़ो, आग बुझाओ,' 'जान बचाओ' का शोर आरम्भ किया। शोर सुनते ही जेल के सन्तरी [illegible] आग बुझाने चल पड़े। जेल पर बहुत ही कम सन्तरी [illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किसी भी सन्तरी में उस समय इतनी
...ले और बचे हुए किसी भी सन्तरी में उस समय इतनी नहीं थी कि आखिर आग बुझाने के लिये करना क्या था। बहरहाल सबका मन उधर ही था कि दूसरे दलने कर दिया। जेल का सन्तरी तत्काल ही मार दिया गया। हवलदार ने बन्दूक की आवाज सुनकर ऊपर से गोली आरम्भ कर दी। हवलदार पर आखिरी निशाना लगा वह भी नीचे आगया। इतने में आग लगानेवाला भी आ पहुँचा और 'मारो' 'पकड़ो' का जबरदस्त शोर लगा। जेल के सन्तरियों ने समझा कि बाहर हजार से आदमी नहीं हैं और सब सशस्त्र भी हैं। इसलिये उनको ...त ही नहीं हुई आगे बढ़ने की।

जेल का फाटक तोड़ दिया गया। गोली लगने से रोशनी ...ली थी, इस अवस्था में जयप्रकाशजी और उनके साथियों ...गने में कोई खास अड़चन नहीं पड़ी।

इसमें एक ही भेद पड़ा। जेल के भिन्न-भिन्न बैरकों में ये लोग थे। इसलिये भिन्न-भिन्न दलों द्वारा बाहर लाये गये। ...काशजी ने लोहिया को निकलते नहीं देखा। इसलिए उन्हें ...हुआ कि वह गोली से मारे गये। उनके मनस्ताप की ...सीमा नहीं थी। वे रास्तेपर आँसू बहाते आये—'हमने ... एक बहादुर साथी खो दिया—खो दिया लोहिया को। ऐसा ...ज सैनिक मिल कहाँ सकेगा?' दल के अन्य लोगों को ठीक ...न था, जो सान्त्वना देते।

...बात यह थी कि लोहिया सबसे पीछे जेलसे निकले। दस्तेके ... जब उनके पास पहुँचे तो वे कोई चीज टटोलने लगे। ... आँख (चश्मा) कहीं खो गयी थी। सैनिक जल्दी मचा ...थे और लोहिया विलम्ब कर रहे थे। अन्तमें झुँझला ... भी बैठे कि 'भाई, जल्दी कोई और कर सकता है ... नहीं।' सैनिकों ने उनका रवैया देख उन्हें कन्धे पर ले लिया और बाहरी सैनिक सहायता आते-आते फिर तो खतरेसे बाहर हो गये। इसके बाद जयप्रकाशजी ने वह जंगल छोड़ दिया और दक्षिण चले गये। वह स्थान भी निरापद नहीं था; इसलिए उसे भी छोड़ना पड़ा।

जेलसे निकलने के दूसरे या तीसरे दिन जयप्रकाशजी एक नदी पारकर रहे थे। नाव छोटी ही थी। किनारेपर पहुँचने के पहले ही दूसरे किनारेसे छूटकर एक और नाव उनकी नाव से आ लगी। जयप्रकाशजी ने देखा कि ये लोग सशस्त्र सैनिक हैं और उन्हें गिरफ्तार करने आये हैं। उन्होंने सिपाहियों को कुछ क्षण सोचनेके लिए कहा और उन्हें भली-भाँति समझाया। आश्चर्य यह देखने में आया कि उनकी बात मानकर सिपाहियों ने हवलदार के कहनेपर भी उनको गिरफ्तार नहीं किया।

इसी बीच वे एक बार बंगाल पहुँचे। बंगाल की सरकार ने उन्हें पकड़ने का पूरा प्रबंध कर लिया, किन्तु गारदके पहुँचने के पहले ही वे वहाँसे टल गये। देश के दौरे का दूसरा कार्यक्रम बनाकर वे पुनः दौरा करने लगे और इस बीच उन्हें किसीने नहीं देखा। हाँ, बंगाल, बिहार, युक्तप्रांत, दिल्ली और पंजाबकी गिरफ्तारियों से यह पता चलता है कि वे कभी उधर गये थे और उन्हें आश्रय देनेके अभियोग में सन्देह से सरकार ने बहुत से लोगोंको गिरफ्तार भी कर लिया। किन्तु जयप्रकाश हाथ नहीं आये।

इस दौड़ धूपमें जयप्रकाशजी को एक दिन भी विश्राम का अवसर नहीं मिला। उनका स्वास्थ्य गिर गया। अपने कार्य-क्रम को आगे बढ़ाने और एक क्षणके विश्राम के लिए उन्होंने काश्मीर जानेका निश्चय किया। उन्हें लाहौर के रास्ते जाना था। वे अमृतसर में ही गिरफ्तार कर लाहौर भेज दिये गये।

—,—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अगस्त-विस्फोट की एक चिनगा[री]

"अगस्त की वह संध्या, बम्बई का ग्वालिया तालाब। कांग्रेस कार्य-समिति के प्रस्ताव पर विचार-विमर्श हो चुका था। वहीं मंच के पीछे शान्त और सरल चेहरेवाली एक स्त्री बहुत सतर्क होकर लोगों से बातें कर रही थी, कभी यहां, कभी वहां खड़े व्यक्तियों से। खुफिया पुलिसवाले भी सतर्कता से चक्कर लगा रहे थे, किन्तु उन्हें क्या पता था कि यह अबला नहीं बला है! इस स्त्री में इतना पराक्रम और साहस कहां होगा? अरुणा के हृदय की ज्वाला वे न परख सके। उसकी ओर से वे निश्चिन्त-से होगए। दूसरे दिन यह समाचार मिला कि नेतागण गिरफ्तार कर लिए गए, फिर भी उस मंच के पास जन-समुदाय एकत्र था। पुलिस अश्रु-गैस का प्रयोग और लाठी-चार्ज कर रही थी; किन्तु यह अबला, शक्ति-रूप धारिणी अरुणा, जरा भी विचलित न हुई। वह मंच पर जा खड़ी हुई। उसने एक जोशीला भाषण दिया, विद्रोह और उत्साह से भरा हुआ। वह भाषण चिनगारी का काम कर गया, जनता में देश-प्रेम की विकट ज्वाला सुलग गई। जिन्होंने [इ]स दृश्य को देखा है, वे उस क्षण को कभी नहीं भूल सकते। एक स्त्री में इतना विद्रोह, इतना साहस और पराक्रम हो सकता है—कोई कल्पना नहीं कर सकता!

और उस क्षण के बाद से अरुणा का कोई पता न[हीं]। यहां-वहां विद्रोह के बादलों में बिजली-सी चमक कर न जाने कहां छिप गई।

इस बीच खुफिया पुलिस सदा ही उसके पीछे पड़ी थी। विदेशी सरकार ने उसे 'फ़रार' घोषित कर उसकी गिरफ्तारी के लिए ५०००) का इनाम नि[का]ला था। किन्तु उसकी गिरफ्तारी के लिए सभी नगरों में [खु]फिया पुलिस के कर्मचारी [ल]गे थे उनकी अपेक्षा वह अधिक फुर्तीली [और] चालाक बनी रही। उसके संकटपूर्ण जीवन की वास्तविक कहानी तो केवल तभी प्रकाश में आ सकेगी जब वह स्वयं उसे प्रकट [करे]गी।

फिर भी कितनी ही कहानियां तो बहुत प्रसिद्ध हैं। एक घटना है कि उसे गुप्त रूप से पता चला कि वह जिस [स्थान में] छिपी है उस स्थान का रहस्य प्रकट हो गु[का है।] ऐसे ऐन मौके पर अब वह क्या करे? स्थान परिवर्तन त[त्काल] आवश्यक था। उस दिन के प्रातःकालीन समाचार प[त्र में] एक विज्ञापन था कि एक अंग्रेज परिवार किसी यूरोपियन [महिला] को भाड़े पर रखने को तैयार है। टैक्सी ले वह तुरत उस [पते] पर पहुँची। उक्त अंग्रेज महिला अरुणा के व्यक्तित्व [के] जादू से ऐसी मुग्ध हुई कि उसने केवल 'यूरोपियन' की र[ट] की कैद हटाकर उसे अपने यहाँ रख लिया। पुलिस ने अपने हाथ लगी चिड़िया को इस भाँति उड़ जाते देख अपना [सिर] पीट लिया।

और एकबार की घटना यों बतायी जाती है। अ[रुणा] बहुत अस्वस्थ थी। अतिसार के कारण सूखकर ठठरी [हो] गयी थी, रक्ताल्पता की भी शिकायत थी। लोगों ने उसे फु[सला]कर एक बुजुर्ग मित्र के यहाँ कुछ दिन रहने और चिकित्[सा] करने के लिए राजी कर लिया। अपने छिपे साथियों के बहु[त] जोर देने पर बड़े बेमन से वह इसके लिए राजी हुई। दू[सरे] ही दिन अरुणा के मेजमान का एक मित्र, जो एक अत्य[न्त] उच्च-पदस्थ सरकारी [अधिकारी] था, बिना सूचना के ही [व]हाँ आ टपका। परिवार के साथ मैत्री होने के कारण वह भी[तर] घर में चला आया। इस विद्रोहिणी को अपने सम्मुख देख [व]े और अरुणा के मेजमान—दोनों ही अवाक रह गए। क्ष[ण] भर के लिए बड़ी घबराहट का वातावरण उत्पन्न हो गया। किन्तु, अरुणा ने ही उक्त घबराहट दूर की। उसने मुस्कुरा कर उसका स्वागत किया, बैठने के लिए कुर्सी दी और उससे [बा]तें उसी ढंग से बातें [कीं] मानो दिल्ली के अपने मकान में उसका स्वागत कर रही हो। घबराहट जाती रही। कहते हैं कि उ[स] समय दोनों में बड़ी मनोरंजक बातें हुई। उक्त अधिकारी [ने] पुलिस को इसकी सूचना देने के स्थान पर कहा, "मेरा य[ह] सौभाग्य है कि मैं कुछ क्षणों तक 'जीवित इतिहास' के सम्मुख [रह]ता रहा।"

सन् १९४२ के आन्दोलन में अरुणा ने क्या किया [यह] भविष्य का इतिहास ही बतावेगा। का० यूसुफ मेहर[अली के] शब्दों में—"[१८५]७ की वीरांगना थी महारानी लक्ष्मीबाई औ[र] सन् १९४२ की वीरांगना हैं अरुणा आसफअली।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-7.

'४२ के विद्रोह में

कांग्रेस के ब्राडकास्ट का रहस्य

सन् १९४२ में अगस्त-आंदोलन छिड़ जाने के बाद, रेडियो से किस प्रकार ब्राडकास्ट किये जाते थे, इसका विवरण कुमारी ऊषा मेहताने, जो ब्राडकास्ट में भाग लेती थीं और जो हालमें यरवदा सेण्ट्रल जेलसे छूटी हुई हैं, प्रेस प्रतिनिधियों को दिया है।

मैं डा० राम मनोहर लोहिया को अपनी श्रद्धाँजलि अर्पित करती हूँ, क्योंकि वही उस संगठन के प्राण थे। आन्दोलन के पहले ही रेडियो पर काम करने का मैंने निश्चय कर लिया था। मुझे और मेरे साथियों को इस बातका पूरा विश्वास था कि हमलोग अपने दलके किन्हीं व्यक्तियों के गिरफ्तार हो जाने के बावजूद आंदोलन को जारी रखने के सिलसिले में देशवासियों को रेडियो से आवश्यक निर्देश ब्राडकास्ट करने में सफल होंगे। इसी विचार से प्रेरित होकर मैं इस काम पर काफी लगन के साथ काम करने लगी। उस वक्त मुझे और कोई काम पसन्द नहीं आता था।

इस कामको शुरू करनेमें मुझे और मेरे दोस्तोंको अपनी जेब से ही रुपये खर्च करने पड़े। सबसे पहला ब्राडकास्ट २० अगस्त ४२ को हुआ। इसे और भी सुचारु रूपसे चलानेके लिए हमने डा० राममनोहर लोहिया से अपना सम्पर्क स्थापित किया। उस समय वह फरार थे और छिप कर बम्बई में काम कर रहे थे। इस समय से दिसम्बर महीने तक, रेडियो के बन्द होनेतक, उन्होंने ही ब्राडकास्ट के भाषण लिखे। कभी-कभी श्री अच्युत पटवर्धन या मैं ही लिखा करती। ब्राडकास्ट करने वालों में एक कुमारी कुमा [illegible] भी थीं, जो कुछ समय तक एलफिन्स्टन कालेज (बम्बई) में प्रोफेसर रह चुकी हैं। पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार करना चाहा, किन्तु प्रमाण [illegible] में गिरफ्तार न कर सकी।

हमलोग शाम के वक्त रेडियो पर ब्राडकास्ट किया करते थे। पहले तो भाषण जबानी ब्राडकास्ट किये जाते थे, पर पता चला कि रेडियो में कुछ गड़बड़ी के कारण उनको लोग साफ नहीं सुन पाते, अतः पीछे उनके रेकार्ड बजाये जाने लगे। उन रेकार्डों में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के '४२ के अधिवेशन वाली 'स्पीचें' भी रहती थीं। 'वन्देमातरम्' गानके बाद ब्राडकास्ट बन्द कर दिया जाता था। पहले एक ही बार ब्राडकास्ट हुआ करता था, पीछे दो बार किया जाने लगा।

पहले हमलोगों के पास सिर्फ एक 'ट्रान्समिटर' था। लेकिन, बादमें हमें उससे भी मजबूत एक और 'ट्रान्समिटर' मिला। यह बम्बई के एक प्रसिद्ध वकील के दामाद के घरमें रखा गया। पीछे पता चला कि उक्त सज्जनने भयसे सारा सामान पुलिसके हवाले कर दिया। इतना ही नहीं, उन्होंने पुलिसको बहुत-सी मूल्यवान बातें बता दीं।

मेरी गिरफ्तारी के दिन मुझे इस बात का पता चल गया था कि पुलिस धावा करनेवाली है। मैंने डा० लोहिया से इसकी बाबत पूछा, लेकिन उन्होंने इस बात पर जोर देते हुए कहा कि "ब्राडकास्ट का काम जारी रहना ही चाहिए, हां, यदि तुम अपनी गिरफ्तारी से डरती हो, तब खुद सोच लो।" मेरे सभी दोस्तों ने उस दिन वहां जाने से मना किया, लेकिन मैं किसी की बात न मानकर वहाँ चली गई।

मेरा काम खतम हो गया था और 'वन्देमातरम्' गान शुरू हुआ कि तबतक दरवाजे पर किसी के खटखटाने की आवाज आयी। कई कमरों के बाद मेरा कमरा था, जहाँसे मैं ब्राडकास्ट किया करती थी। मैं रेकर्ड बजाने में व्यस्त थी। उसी समय दरवाजा तोड़कर पुलिस कमरे में घुस गई। मुझसे रेकार्ड बन्द कर देने के लिए कहा गया, [illegible] वे पुलिस कर्मचारी [illegible] कल-पुर्जेके सम्बन्ध में कुछ नहीं जा[illegible] तबतक मेरा एक साथी आगे बढ़ा और उसने रेकार्ड ब[illegible] दिया। बादमें पता चला कि वह खुफिया विभाग का आ[illegible] था। इतने में कमरेमें सहसा बिलकुल अन्धकार छा ग[illegible] बिजलीकी लाइन 'फ्यूज' कर दी गई, और मैं गिरफ[illegible] की गयी। मुझे जेलमें डा० लोहिया का यह संदेश मि[illegible] उस दिन ब्राडकास्ट करनेके लिए भेजकर मैंने [illegible] था बुरा, इसका निर्णय एक दिन इतिहास ही करेगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मिदनापुर—सरकार ने गरीब जनता से खूब बदला लिया....!

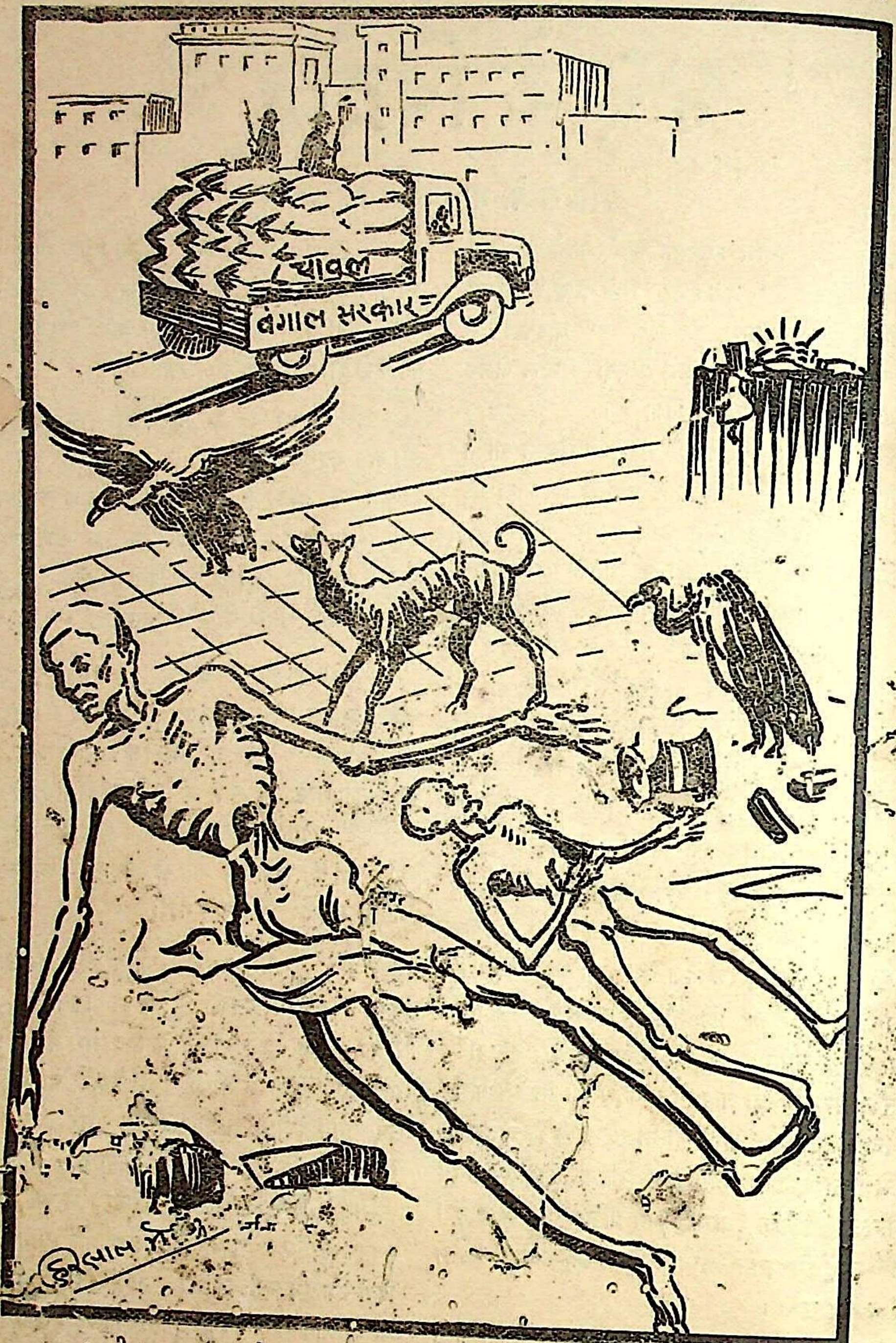

"...९ अगस्त के बाद क्रूर दमन और सामूहिक जुर्मानों का जो चक्र चला, उसने जिले की जनता की हिम्मत तो... उसके बाद बवण्डर और बाढ़ आई और [illegible] अकाल ने सारे जिले को [illegible]बीन कर दिया। ...हम दक्षिण की ओर समुद्र के पास के गाँवों को देखने के लिए चल पड़े। 'पगडण्डी पर हड्डियाँ ...ुष्यों की हड्डियाँ, जानवरों की नहीं।' 'एक बार पास की एक झाड़ी में किसी के कुछ चबाने ...। देखा, एक कुत्[illegible] खोपड़ी [illegible] रहा था।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमारा 'नेताजी'-साहित्य

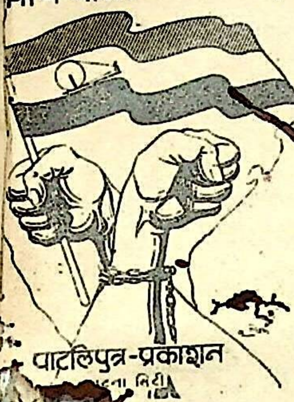

सुभाष बोस जिन्दाबाद !

(संग्रहणीय अलबम)

नेताजी सुभाषबोस और आज़ाद हिन्द फौज के २० विभिन्न चित्रों का संग्रह। सभी मोटे आर्ट-पेपर पर विभिन्न रंगों में छापे गए हैं। मोटे डुप्लेक्स-बोर्ड पर छापा तिरंगा कभर।

मूल्य १॥)

आज़ाद हिन्द फौज

(द्वितीय संस्करण)

आज़ाद हिन्द फौज और सरकार का रोमांचक इतिहास। आर्ट-पेपर पर छपे दर्जनों चित्र। सुन्दर छपाई, तिरंगा कवर। (पाँच हजार प्रतियाँ महीने भर में समाप्त होगईं।)

मूल्य १)

मुकद्दमा आज़ाद हिन्द फौ...

...शाहनवाज, सहगल और ढिल्लन पर लाल किले में च... तैयार हुआ। आर्ट-पेपर पर छपे दर्जनों चित्र, आकर्षक कव...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust: Funding IKS-MoE-Grant-2

रानी झाँसी रेजीमेएट

आज़ाद हिन्द फौज के सैनिकों के साथ कंधे से कंधा भिड़ा कर भारत की आज़ादी के लि- लड़नेवाली वीर महिला सैनिकों के कार्य-कलापों का सच्चा और रोमांचक वर्णन। महिला-सेना कै संगठित हुई, मोर्चे पर डटकर कैसे उन्होंने शत्रुओं के दाँत खट्टे कर दिए, आदि-आदि दर्जनों चित्र, आकर्षक तिरंगा कवर।

मूल्य सिर्फ ॥=)

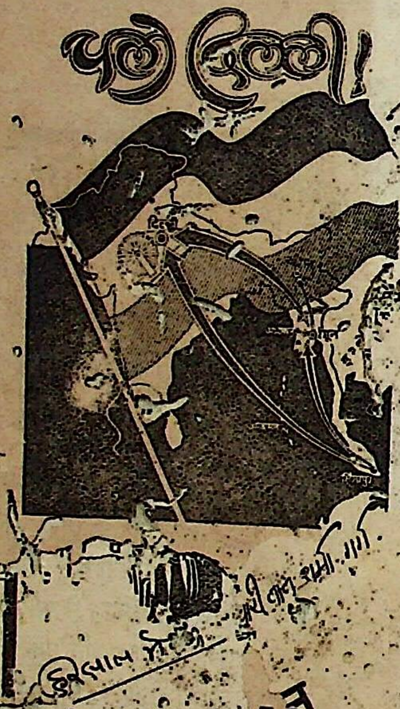

चलो दिल्ली

बर्लिन, तोक्यो, [illegible], रंगून आ... नेताजी द्वारा दिए गए भाषणों, ब्रॉडकास्टों एवं आदेश का अपूर्व संग्रह। मुर्दों में भी जान फूँक देने वाले सचमुच पठनीय हैं। आर्ट-पेपर पर दर्जनों चित्र, सुन्द छपाई, आकर्षक कवर।

मूल्य सिर्फ ॥=)

THE GREAT

... of the Day etc. from Berlin, ... tures on Art-Paper.

Pr... /10/-

...९ अगस्त के बाद क्रूर दमन औ... उसके बाद बवण्डर और बाढ़ आई और... हम, दक्षिण की ओर समुद्र के पास... ष्यों की हड्डियाँ, जानवरों की नहीं। ...देखा, एक कुत्ता...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(बालकों, स्त्रियों एवं साधारण पढ़े-लिखे लोगों को दुनिया का 'क्या, क्यों और कैसे' बताने वाला हिन्दी का एकमात्र ज्ञान-कोष ।)

संपादक

श्रीगिरिधारी लाल शर्मा

'आपका प्रयास स्तुत्य है । मैं आशा करता हूँ कि इ

...नन्द (माननीय

...जी, संयुक्त प्रा

हिन्दी-... ...पक

दको एक...

बाज लोग ...

र हुए और वही

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.